

Lang

4960

# 汉语入门

हान्<sup>४</sup>

यू<sup>३</sup>

रु<sup>४</sup>

मन्<sup>२</sup>

हिन्दी चीनी प्राइमर

4960

हर प्रसाद राय  
合拉普拉沙德雷

SRI RAMAKRISHNA ASHRAMA  
LIBRARY SRINAGAR.

Accession No. ..

49.63

Date ...

20

4

1988





# हिन्दी-चीनी प्राइमर

[देवनागरी लिपि में]

SRI RAMAKRISHNA ASHRAMA  
LIBRARY, SRINAGAR.  
Accession No. 4960  
Date ... 20. 4. 1988

हरप्रसाद राय

गांधी स्मारक निधि

राजघाट, नई दिल्ली



प्रकाशक : मंत्री

गांधी स्मारक निधि

राजघाट, नई दिल्ली-११०००१

संस्करण : प्रथम, अगस्त १९७५

मूल्य : रु० २०.००

मुद्रक : उद्योगशाला प्रेस,  
किंग्सवे, दिल्ली-११०००६

## दो शब्द

विश्व की महान् प्राचीनतम भाषाओं में चीनी का महत्त्वपूर्ण स्थान है। भारत और चीन का पड़ोसी सम्बन्ध भी सदा का है। इसलिए भारत में चीनी भाषा का अध्ययन अपनी भाषा में किया जा सके यह इष्ट है। अब तक भारत में अधिकांश रूप में अंग्रेजी के माध्यम से और रोमन लिपि में चीनी भाषा का अध्ययन हुआ है। आचार्य विनोबा भावे, जो संसार की एकता में विश्वास करते हैं और 'जय जगत्' के प्रेरक हैं तथा संसार की कई भाषाओं का ज्ञान भी रखते हैं, कई बरसों से यह कहते रहे हैं कि दो भाषाओं के लोग एक-दूसरे की भाषा सीखने में तीसरी भाषा का माध्यम लें यह उचित नहीं है। उनके इस विचार को ध्यान में रखते हुए हिन्दी में यह चीनी प्राइमर तैयार की गई है। दूसरा विचार भी, जो विनोबाजी ने ही दिया है, वह है लिपि के सम्बन्ध का। एक भाषा के लोग दूसरी भाषा को अपनी ही लिपि में सीखना प्रारम्भ करें तो आसानी होगी। एक साथ भाषा और लिपि दोनों को सीखने का भार उन पर नहीं पड़ेगा। जिन भाषाओं में सामान्य लिपि का प्रचलन है उन भाषाओं और उनके लोगों में निकटता आसान होती है। जैसे, यूरोप में रोमन लिपि में अनेक भाषाएँ लिखी जाती हैं और अरबी लिपि में अरबी, तुर्की फारसी, उर्दू आदि कई भाषाएँ हैं। इनकी लिपियाँ बिल्कुल एक न होते हुए भी समानता के कारण एक लिपि-परिवार बनाती हैं; चित्रलिपियों के एक परिवार में चीनी, जापानी, कोरियाई तथा अन्य भाषाएँ हैं; इसी प्रकार एक लिपि-परिवार देवनागरी लिपि का है जिसमें 20-25 समृद्ध भाषाएँ हैं। वर्गीय व्यंजन, अकारादि स्वर तथा उनके लिए मात्राओं के उपयोग का विधान सबमें समान है। यह भारत की अधिकांश भाषाओं के अतिरिक्त दक्षिण-पूर्व की कई अन्य देशों की लिपियों पर भी लागू होता है। इस प्रकार चारों लिपि-परिवार—रोमन, अरबी, चित्रलिपि और देवनागरी—मानव-समूहों को निकटता प्रदान करते हैं।

देवनागरी में एक खूबी यह है कि ध्वनि-अनुसारी (फोनेटिक) होने के कारण, उच्चारण के अनुरूप लिख सकने की क्षमता उसमें है। इसलिए चीनी भाषा के उच्चारण को ठीक से समझने में नागरी लिपि रोमन की अपेक्षा



अधिक सुविधाजनक है। यह तो आवश्यक है ही कि जो अनेक विशिष्ट ध्वनियां भाषा-विशेष में रहेंगी उनको व्यक्त करने के लिए कुछ संकेत देव-नागरी में जोड़ने पड़ेंगे और ऐसा प्रयत्न इस पुस्तक में किया गया है। इस मौलिक प्रयास से चीनी शब्दों को नागरी में समझने की सुविधा और वैज्ञानिकता की स्पष्ट प्रतीति होगी।

यह पुस्तक प्रसिद्ध चीनी भाषाविद्, भारत के इथियोपिया-स्थित वर्तमान राजदूत श्री वसंतराव परांजपे के मार्गदर्शन में जवाहरलाल नेहरू विश्व-विद्यालय, दिल्ली के चीनी भाषा के प्राध्यापक श्री हरप्रसाद राय ने बड़े श्रम और निष्ठा से तैयार की है। इस पुस्तक के लिए श्री परांजपे ने अपने बहुमूल्य निर्देशन के अलावा प्रशस्ति के चार शब्द भी लिख भेजने की कृपा की है इसके लिए हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।

महान पड़ोसी राष्ट्र—चीन और भारत—के प्राचीन सांस्कृतिक सम्बन्धों और विज्ञान युग की भावी मधुर सम्भावनाओं की दृष्टि से भारतीय जनता आचार्य विनोबाजी की प्रेरणा से लिखित और प्रकाशित इस पुस्तक का हृदय से स्वागत करेगी, ऐसी आशा है।

देवेन्द्र कुमार



## प्रशस्ति

‘हिन्दी चीनी प्राइमर’ एक सामयिक और स्वागतार्ह प्रकाशन है। हिन्दी के माध्यम से नागरी लिपि में भारतीयों को चीनी भाषा का परिचय कराने का यह शायद अपने ढंग का प्रथम प्रयास है।

भारत का पड़ोसी राष्ट्र चीन, जिसके साथ हमारा सदियों पुराना संबंध है, एक प्राचीन और महान् राष्ट्र है। चीन की संस्कृति उतनी ही पुरानी है, जितनी भारत की है और चीनी भाषा न केवल समृद्ध है, बल्कि तीन हजार वर्षों से भी अधिक से चली आयी साहित्य परम्परा से भी युक्त होने का श्रेय उसे प्राप्त है। चीन ने लाव् च्, खुङ् च्, लि पो और तू फू आदि महान् विचारकों, विद्वानों और लेखकों को जन्म दिया है और ‘पू चिङ्’, ‘छुन् छिउ’ ‘छु त्स्’, ‘शी श्याङ् ची’, ‘हान् पू’ और ‘हुङ् लौ मङ्’ जैसे उत्कृष्ट ग्रंथ भी संसार को दिये हैं।

हाल के वर्षों में चीनी भाषा न केवल साहित्यिक और सांस्कृतिक रूप में बल्कि राजनैतिक भाषा के रूप में भी विकसित हुई है, इसलिए प्रत्येक शिक्षित भारतीय के लिए चीन और चीनी जनता को जाननेके लिए उसे जानना अत्यावश्यक हो गया है। किसी देश तथा वहाँ के वासियों के बारे में जानकारी उनकी भाषा के माध्यम द्वारा ही जानी जा सकती है। क्योंकि जैसा हमारे पूर्वजों ने कहा है, भाषा वह ज्योति है जो संसार का अंधकार मिटाती है।

“इदमंधतमं कृतस्नं जायेत भुवनत्रयम्  
यदि शब्दाह्वयं ज्योतिः आसंसारं न दीप्यते।”

(तीनों लोक अंधकारमय रह जायेंगे यदि शब्द (भाषा) रूपी ज्योति संसार में न जले।)

इसलिए जब किसी भी भाषा का परिचय कराने वाली पुस्तक स्वागत-योग्य है, तब देश की भाषा हिन्दी में, नागरी लिपि में चीनी भाषा की पाठ्य पुस्तक प्रकाशित होती है तो यह विशेष उपलब्धि मानी जाएगी। देवनागरी सम्भवतः विश्व में सबसे अधिक शास्त्रीय लिपि है। क्योंकि अन्य किसी वर्ण-माला की अपेक्षा इसकी वर्णमाला अधिक शास्त्रीय है और इससे भी महत्त्व की बात यह कि स्वरों और व्यंजनों की ध्वनियों को अभिव्यक्त करने की क्षमता-

वाले सुनिश्चित संकेत इसमें हैं। इसी कारण किसी भी भाषा के, जिसमें चीनी भी शामिल है, लिप्यंतरण की आवश्यकता पड़ने पर उसके लिए सर्वाधिक आदर्श विकल्प नागरी को ही माना जा सकता है।

इन दोनों कारणों से, मैं मानता हूँ कि भारत में चीनी भाषा सीखने की इच्छा रखने वालों के लिए यह प्राइमर उपयुक्त और मूल्यवान् सिद्ध होगी।

पाठ्य पुस्तक तैयार करना, खासकर चीनी जैसी भाषा में, कठिन काम है। श्री हरप्रसाद राय ने जिस लगन और परिश्रम से यह पुस्तक लिखी है इसके लिए मैं उनकी सराहना करता हूँ। श्री राय इस काम के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त हैं। आप चीनी भाषा के परिश्रमी अध्येता हैं, संस्कृत भाषा पर भी अच्छा अधिकार रखते हैं और हिन्दी आपकी मातृभाषा है। मैं श्री राय का अभिनन्दन करता हूँ और आपके इस अग्रणी प्रयास की हर प्रकार से सफलता चाहता हूँ।

व० वा० परांजपे

इथियोपिया में भारतीय राजदूत

अदिस अबाबा



## भूमिका

हिन्दी भाषियों के लिए चीनी भाषा शिक्षा पुस्तक तैयार करने का मेरा स्वप्न आज साकार हो रहा है, यह मेरे लिए गर्व की बात है। इस भगीरथ प्रयास के लिये मुझे चुना गया और यह गौरव मुझे प्राप्त हुआ, इसका श्रेय आदरणीय श्री परांजपेजी को है। मैं बीस साल पहले कलकत्ते में रहते समय कुछ चीनियों को हिंदी सिखाया करता था। उस समय चीनी अनुवाद के साथ हिन्दी वाक्यों के पाठ तैयार किये थे। तब से मेरी ख्वाहिश थी कि हिंदी में चीनी की पाठ्य पुस्तक बनायी जाय। हम चंद भारतीय युवक चीनी पढ़ने हांगकांग गये थे। वहाँ के कमीशन की तरफ से श्री परांजपे हमारी देख-भाल करते थे और एक तरफ से वे हमारे अभिभावक भी थे। गत वर्ष जब पूज्य विनोबाजी की ओर से श्री परांजपेजी के पास ऐसी एक पुस्तक तैयार कराने का प्रस्ताव आया तब उन्होंने मुझे इस काम के योग्य समझा। इसलिये मैं उनका आभारी हूँ। मैंने ये पाठ उन्हें दिखाये हैं। पुस्तक शीघ्रातिशीघ्र तैयार करनी थी, इसलिये उनकी सलाह थी कि किसी प्रामाणिक पुस्तक के आधार पर इस पाठ्य पुस्तक का प्रणयन हो। उनके निर्देश के अनुसार येल विश्वविद्यालय के प्रोफेसर गार्डनर ट्यूक्सबरी प्रणीत 'स्पीक चाइनीज़', के आधार पर इसकी रचना की गयी है और इससे काम कुछ सरल हुआ है।

पिछले छः साल से रक्षा मंत्रालय के विदेशी भाषा विद्यालय में सशस्त्र सेना के तीनों अंगों के अधिकारियों, आकाशवाणी के अधिकारियों तथा दूसरे सज्जनों को चीनी भाषा सिखाते समय मुझे यह तजुर्बा हुआ कि चीनी भाषा सिखाने के लिये रोमन लिपि सहायक सिद्ध नहीं होती, बल्कि उसकी तुलना में नागरी लिपि बहुत ही ज्यादा उपयोगी है। इसलिये मैं सभी चीनी ध्वनियों को देवनागरी में लिपिबद्ध करने लगा तथा छात्रों को पढ़ाते समय रोमन लिपि के बजाय नागरी लिपि का व्यवहार करने लगा। छात्रों ने इसका सहर्ष स्वागत किया और कुछ ही समय में मुझे यह दृढ़ प्रत्यय हुआ कि नागरी लिपि किसी भी विदेशी भाषा की शिक्षा के लिये सर्वोत्तम है।

लेकिन यह पाठ्य पुस्तक तैयार करना आसान काम नहीं था। चीनी भाषा में कुछ ऐसी ध्वनियाँ हैं जो भारतीय भाषाओं में नहीं मिलती; उनका



लिप्यन्तरण सर्वजन-ग्राह्य हो इसका ध्यान रखना जरूरी था। परांजपेजी से विचार-विमर्श करने के बाद हमने एक ध्वनि-सूची तैयार की और उसी के आधार पर पुस्तक-निर्माण की तैयारी होती रही। परांजपेजी बीच-बीच में सुझाव देते रहे और तदनुसार हम यथासंभव सुधार करते रहे।

चीनी ध्वनियों का अनुशीलन करते समय मुझे यह प्रतीत हुआ कि भाषातत्त्व की दृष्टि से चीनी भाषा के तीन प्रकार के 'च' और 'छ' हैं और तीनों के उच्चारण-स्थान भिन्न-भिन्न हैं: दन्त्य, मूर्धन्य व तालव्य। तालव्य 'च' और 'छ' केवल 'इ' व 'यू' के साथ ही आते हैं, दूसरे स्थान पर मूर्धन्य रूप का इस्तेमाल होता है, इसलिये हमने इन दोनों जगह एक ही 'च' व 'छ' रखे हैं। लेकिन दन्त्य 'च' या 'छ' का उपयोग हमारे ख्याल से भारत में मराठी आदि कुछ ही भाषाओं में होता है। उर्दू भाषा में 'ज' दन्त्य वर्ण है जिसे नुक्ता की सहायता से व्यक्त किया जाता है। यही कारण है कि हमने यहां नुक्ते की सहायता से 'च' (उदाहरण, चीनी रेखाक्षर, स्वरचिह्न ४ में) और 'छ' (उदाहरण यहां, स्वरचिह्न ३ में) का प्रयोग किया है। 'इ' व 'उ' के मिश्र रूप से बनी ध्वनि 'यू' के लिए भी नुक्ते का उपयोग किया गया है। इ, ई, और उ, ऊ के बीच कोई प्रभेद नहीं रखा गया है। साधारणतया 'इ' या 'उ' का ही प्रयोग किया गया है। केवल जहां नुक्ता लगाया गया है वहीं पर 'ऊ' का प्रयोग हुआ है। लिप्यंतरण के समय हिज्जे में वर्णों की क़िफ़ायत का ध्यान रखते हुए संयुक्त वर्ण का प्रयोग यथासंभव किया गया है। जैसे, प्याव्, इय्वे<sup>२</sup>, 'थ्येन्' आदि।

इस पुस्तक में हमने भाषा के चार स्वरों के लिये १, २, ३ और ४ इन अंकों का प्रयोग किया है। इसके बजाय अलग वर्णों या विशेष चिह्नों के सहारे उन्हें व्यक्त किया जा सकता था। लेकिन इसके लिये और अधिक समय की और विशेष विचार-विमर्श की जरूरत है। उस दिशा में भी हमारा प्रयास जारी रहेगा और आशा है कि यदि वह अधिक उपयोगी लगा तो इसके बाद की पुस्तकों में हम उस तरीके को अपना सकेंगे।

इस पुस्तक में द्यूक्सबरी की पुस्तक 'स्पीक चाइनीज़' का अनुसरण करते हुए हमने प्रत्येक पाठ में ज्यादा से ज्यादा उदाहरण दिये हैं, जिससे छात्रों को अधिक अभ्यास का मौका मिले और साथ-साथ व्याकरण के नियमों के बारे में भी स्पष्ट ज्ञान हो। व्याकरण के भाग पाठ के अनुसार सजाये गये हैं; नियमों को भारतीय छात्रों के अनुकूल बनाकर उनका विश्लेषण किया गया है और विश्लेषण के साथ भी उदाहरण दिये गये हैं जिससे कि विद्यार्थियों को बार-बार उदाहरण-माला देखनी न पड़े। विश्लेषण की सामग्री पेकिंग से

प्रकाशित “माडर्न चाइनीज रीडर” जैसी दूसरी किताबों से भी ली गयी है “इनवर्टेड आब्जेक्ट” के लिये “अपवृत्त कर्म” यह प्रतिशब्द उपरोक्त “रीडर” से ही लिया गया है। व्याकरण-भाग को पूरा स्वतंत्र रूप देने का भरसक प्रयास किया गया है जिससे विद्यार्थी केवल व्याकरण-भाग को पढ़कर भी चीनी भाषा का ज्ञान प्राप्त कर सकें।

“स्पीक चाइनीज” में से हमने पहले बीस पाठों का उपयोग किया है ; बाकी चार का उपयोग बाद के खंडों में कर सकेंगे। इसलिए ‘दूरत्व-बोधक लि<sup>२</sup>’, ‘परिणाम-बोधक संयुक्त-क्रियापद’, ‘सादृश्य व विषमता-बोधक’ आदि कुछ नियमों के उदाहरण इसमें नहीं दे सके हैं।

स्वरों के प्रयोग के संबंध में यह कहना जरूरी है कि चीन की वर्तमान स्वरपद्धति का अनुसरण किया गया है। उनके परिशोधित स्वर-संग्रह ‘फिन्<sup>१</sup> इन्<sup>२</sup> छ<sup>३</sup> हवे<sup>३</sup>’ के अनुसार “फ्रांस” के लिए “फा<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup>” स्वीकार किया गया है, “फा<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup>” (स्पीक चाइनीज) नहीं। “चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>३</sup>,” “मै<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup>” आदि शब्दों में अंत्य स्वर दूसरा स्वर है, शून्य स्वर नहीं।

ऐसी पुस्तक तैयार करने के लिए जहाँ वर्षों की तैयारी चाहिए वहाँ कुछ महीने ही मुझे मिले। आदरणीय श्री परांजपे व गांधी स्मारक निधि के श्री देवेन्द्रभाई की प्रोत्साहपूर्ण अनुप्रेरणा और सलाह के कारण ही यह संभव हुआ। निधि के दूसरे भाइयों का सहयोग सदा याद रहेगा। रक्षा मंत्रालय के विदेशी भाषा विद्यालय के चीनी भाषा द्विभाषी कक्षा के छात्र मुझे जी-जान से सहायता व उत्साह देते रहे। इसलिए मैं उन सबका आभारी हूँ। मेरी धर्मपत्नी कृष्णाजी ने अपनी शारीरिक अस्वस्थता के बावजूद हमेशा मुझे छरेलू समस्याओं से मुक्त रखा और इस कार्य में उत्साह बढ़ाती रहीं यह कम योगदान नहीं था।

इस पुस्तक में त्रुटियाँ बहुत होंगी। विद्यार्थी और गुणी अध्यापक इसे समालोचक दृष्टि से देखें तो कृपया होगी।

जयहिन्द

हरप्रसाद राय

१५ अगस्त १९७५





# विषय-सूची

दो शब्द	देवेन्द्र कुमार
प्रशस्ति	व. वा. परांजपे
भूमिका	हरप्रसाद राय
परिचायक प्रस्तावना	१
पाठ—१	६
पाठ—२	१४
पाठ—३	२७
पाठ—४	२८
पाठ—५	२६
पाठ—६	४०
पाठ—७	६०
पाठ—८	७१
पाठ—९	८०
पाठ—१०	८८
पाठ—११	९८
पाठ—१२	१०७
पाठ—१३	११६
पाठ—१४	१३१
पाठ—१५	१४०
पाठ—१६	१५१
पाठ—१७	१६४
पाठ—१८	१७८
पाठ—१९	१८६
पाठ—२०	२०१
परिशिष्ट १	
व्याकरण संबंधी शब्दों की सूची	२१३
परिशिष्ट २	
चीनी ध्वनियों की रोमन और	
नागरी की सारिणी	२१५
परिशिष्ट ३	
वर्णानुक्रमिक शब्दसूची	२२१



# परिचायक प्रस्तावना

## चीनी भाषा में स्वर और व्यंजन वर्ण

आधुनिक चीनी भाषा की प्रामाणिक भाषण-ध्वनियां पेकिंग-बोली की भाषण-ध्वनियों पर आधारित हैं। पेकिंग-बोली में सात स्वर वर्ण हैं :

अ, आ, इ, उ, ए, ओ, यू

नोट : “यू” जो फ्रान्सीसी और जर्मन भाषाओं में पाया जाता है, हिन्दी में उपलब्ध नहीं है। यह “इ” और “उ” से बना मिश्र स्वर है। उच्चारण करते समय, जिह्वा उसी स्थान पर रहती है, जिस स्थान पर वह “इ” का उच्चारण करते समय रहती हैं, किन्तु ओठों का आकार वैसा होता है जैसा “उ” का उच्चारण करते समय होता है। ओठों को उतना ही गोल रखना चाहिये जितना कि “उ” का उच्चारण करते समय रखा जाता है। इसी अवस्था में “उ” का उच्चारण मुंह से निकालना चाहिये। हम इसे “यू” द्वारा सूचित करेंगे।

पेकिंग-बोली में “य” और “व” इन दो अर्धस्वरों समेत २७ व्यंजन वर्ण हैं :

क ख इ

च छ

त थ न

प फ म फ़



य ऋ (र) ल व श ष स ह ळ (अळ)

च् (त्च) छ् (श्छ) स्च्

चृ छृ षृ

नोट : (१) च, छ : यदि “च” और “छ” के ठीक बाद “इ” या “यू” आए या “इ” या “यू” से बने शब्दांश आए तो “च” और “छ” हमेशा तालव्य वर्ण होते हैं। “श” के बाद भी हमेशा “इ” और “यू” ही आते हैं। दूसरे स्थान पर “च” “छ” और “ष” मूर्धन्य वर्ण होते हैं, अर्थात् “ट”, “ठ”, “ड” के उच्चारण की तरह जिह्वाग्र दांत के पीछे के ऊंचे कठोर तालु को स्पर्श करता है। “चृ” “छृ” और “षृ” ये मिश्र व्यंजन भी मूर्धन्य वर्ण हैं।

(२) “फ” ओष्ठ्य वर्ण है और “फ्र” दन्त्योष्ठ्य।

(३) “ऋ” उच्चारण करते समय इसके साथ कोई स्वर वर्ण नहीं जोड़ना चाहिए। इसका उच्चारण कुछ फ्रान्सीसी भाषा में “ज” जैसा होता है। “ऋ” के ठीक बाद स्वर वर्ण आने से उसे “र” लिखा जाएगा।

(४) “च्” (त्च) अल्पप्राण अघोष संघर्षजन्य है। इसका उच्चारण करते समय जीभ की नोक ऊपरी दंतों के पीछे मसूढ़ों पर दबाइए और सांस झटके के साथ निकलने दीजिये। ज्यादा हवा बाहर न निकालिये।

(५) “छ्” (श्छ) महाप्राण अघोष संघर्षजन्य है। इस ध्वनि का उच्चारण “च्” (त्च) जैसे किया जाता है। अन्तर केवल इतना है कि “छ्” का उच्चारण करते समय सांस एक जोर के झटके के साथ छोड़ी जाती है। इसमें ज्यादा हवा बाहर निकलती है।

(६) “स्च्” अघोष संघर्षजन्य है। इसका उच्चारण करने

के लिये जीभ की नोक को झुकाकर नीचे की दंत-पंक्ति के पीछे लाया जाता है और सांस जिह्वोपरि तथा ऊपरी दंतपंक्ति के बीच के संकरे मार्ग से रगड़ खाकर बाहर निकलती है।

(७) ङ (अङ्ग) एक प्रत्याकुंचन वर्ण है। इसका उच्चारण करते समय जीभ की नोक को ऊपर उठाकर कठोर तालु की ओर से लाया जाता है। इस प्रकार वक्र-जिह्वा से “अ’ सहित ‘ङ’ यानी “अङ्ग” की ध्वनि पैदा होती है। इस ध्वनि का उच्चारण करते समय, मुंह पहले तो थोड़ा खुला रखिये, फिर थोड़ा बंद कीजिये। वैदिक भाषा, आधुनिक उड़िया, मराठी, तमिल आदि भाषाओं में इस वर्ण का प्रयोग होता है। चीनी भाषा में यह केवल अन्त में प्रयुक्त होता है।

### चीनी भाषा के चार स्वर

चीनी भाषा में काष्ठा के विचरण को, मुख्य रूप से उसकी ऊंचाई के चढ़ाव और उतार को, स्वर कहते हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि वैदिक मंत्रों का भी तीन स्वरों के साथ उच्चारण किया जाता है; ये स्वर हैं उदात्त, अनुदात्त और स्वरित।

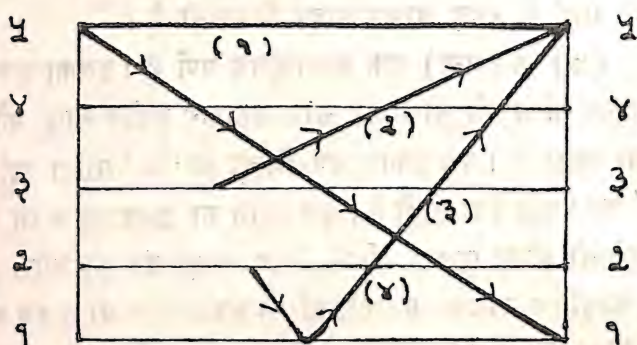
चीनी स्वर सरकते हुए चढ़ते हैं और उतरते हैं, न कि उछलते हुए। चीनी भाषा में हर शब्दांश का एक निश्चित स्वर होता है, इसलिए शब्दांश के निर्माण में स्वर का उतना ही महत्त्व है, जितना स्वरवर्ण और व्यंजनवर्ण का। स्वरों में अन्तर होने के कारण, शब्दों के अर्थ भिन्न हो जाते हैं, हालांकि हिज्जे एक ही रहते हैं।

पेकिंग बोली में चार स्वर होते हैं। काष्ठा के विचरण-विस्तार को नीचे के समान अन्तरालों में विभाजित उदग्र-रेखा पर प्रदर्शित किया जा सकता है :

- ५ उच्च काष्ठा
- ४ मध्य-उच्च काष्ठा
- ३ मध्य काष्ठा
- २ मध्य-निम्न काष्ठा
- १ निम्न काष्ठा



नीचे के चित्र में, पेकिंग-बोली के चार-स्वरों को (१), (२), (३) और (४) द्वारा सूचित किया गया है ।



हम लोग चार स्वरों को सूचित करने के लिये शब्दों के साथ १, २, ३ और ४ इन अंकों का प्रयोग करेंगे । इन्हें यदि शब्द एक स्वर-वर्ण का हो तो उस स्वर के ऊपर रखना चाहिये, या शब्दांश के मुख्य स्वर पर रखना चाहिये ।

अब हम चार स्वरों का विवेचन करेंगे ।

पहला स्वर (५-५) “उच्चस्तरीय” स्वर है । इसका उच्चारण ऊंचाई पर होता है, और बगैर उतार के एक ही स्तर पर रहता है, जैसे “पा<sup>१</sup>” (आठ) “मा<sup>१</sup>” (माता) ।

दूसरा स्वर (३-५) “ऊंचा उठता” स्वर है, यह मध्य काष्ठा (३) से शुरू होकर चढ़ते हुए उच्च काष्ठा (५) तक पहुँचता है, जैसे “पा<sup>२</sup>” (जड़ से उखाड़ना), “मा<sup>२</sup>” (पटुआ, पटसन) ।

तीसरा स्वर (२-१-४) “उतरता और चढ़ता” स्वर है । वह मध्य-निम्न काष्ठा (२) से उतरकर निम्न काष्ठा (१) तक आता है और फिर उठकर मध्य-उच्च काष्ठा (४) तक पहुँच जाता है, जैसे “पा<sup>३</sup>” (दस्ता) “मा<sup>३</sup>” (घोड़ा) ।

चौथा स्वर (५-१) “उतरता” स्वर है । वह ऊंचाई (५) से नीचे की ओर निम्न काष्ठा (१) तक उतरता है, जैसे “पा<sup>४</sup>” (प्रजा-पीड़क, निष्ठुर शासक) “मा<sup>४</sup>” (गाली देना) ।



इन चारों स्वरों को सीखते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिये ।

१. सभी व्यक्तियों के स्वर की काष्ठा एक सी नहीं होती ।
२. स्वर से काष्ठा-विचरण का बोध होता है, स्वर की ध्वनि की तीव्रता से कोई संबंध नहीं होता है ।
३. चारों स्वर लम्बाई में एक दूसरे से भिन्न हैं, विश्लेषण करने से स्पष्ट होता है कि तीसरा स्वर सबसे लम्बा है, और पहला और दूसरा स्वर चौथे स्वर से लम्बा है ।

शून्य स्वर : चीनी भाषा में, जब हम शब्दों को अलग पढ़ते हैं, तो हमेशा उन्हें बल-सहित शब्दांश के रूप में पढ़ते हैं, इसलिये हर शब्द का एक स्वर होता है । बोलचाल में, जब किसी शब्द पर बल नहीं दिया जाता, तो वह अपना मूल स्वर खो बैठता है, और निर्बल और छोटा हो जाता है, यानी उसका स्वर हल्का हो जाता है । इसे शून्य स्वर कहते हैं । हम शून्य स्वर के लिये कोई चिह्न इस्तेमाल नहीं करेंगे ।

## पाठ-१

- क : नि<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> मा ? आप कैसे हैं ? (नमस्ते ।)  
 ख : हाव्<sup>३</sup> । नि<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> मा ? मैं अच्छी तरह हूं । आप कैसे हैं ?  
 क : हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> बहुत अच्छी तरह ।  
 ख : नि<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> ? क्या आप व्यस्त हैं ?  
 क : पु<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> । नि<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> । नहीं । आप ?  
 मा ?  
 ख : वो<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> मैं बहुत व्यस्त हूं ।

### नये शब्द

#### सर्वनाम (सर्व)

वो <sup>३</sup>	मैं, मुझे
नि <sup>३</sup>	तुम (एक वचन)
था <sup>१</sup>	वह (पु०, स्त्रीलिंग)
	उसे (पु०, स्त्रीलिंग)
वो <sup>३</sup> मन्	हम (लोग), हमें
नि <sup>३</sup> मन्	तुम (लोग), तुम्हें (बहुवचन)
था <sup>१</sup> मन्	वे, उन्हें (बहुवचन)

#### विशेषण (वि)

काव् <sup>१</sup>	लम्बा, ऊंचा
माङ् <sup>३</sup>	व्यस्त (होना)

हाव्<sup>३</sup>

अच्छा, ठीक (होना)

## क्रिया विशेषण (क्रि० वि०)

हन्<sup>३</sup>

बहुत, अधिक, ज्यादा

पु<sup>४</sup>

मत, नहीं (निषेधार्थक)

## सहायक शब्द

मा

प्रश्नार्थक सहायक शब्द

## उदाहरण माला

(क) विशेषण के साथ सरल वाक्य (व्याकरण १-२ देखिये)

नमूने : सर्व

(निषेध) वि०

वो<sup>३</sup>माङ्<sup>२</sup> मैं व्यस्त हूँ ।वो<sup>३</sup>पु<sup>४</sup>माङ्<sup>२</sup> मैं व्यस्त नहीं हूँ ।वो<sup>३</sup> काव्<sup>१</sup>वो<sup>३</sup>पु<sup>४</sup> काव्<sup>१</sup>नि<sup>३</sup> माङ्<sup>२</sup>नि<sup>३</sup>पु<sup>४</sup> माङ्<sup>२</sup>था<sup>१</sup> हाव्<sup>३</sup>था<sup>१</sup>पु<sup>४</sup> हाव्<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> मन् माङ्<sup>२</sup>वो<sup>३</sup> मन्पु<sup>४</sup> माङ्<sup>२</sup>नि<sup>३</sup> मन् माङ्<sup>२</sup>नि<sup>३</sup> मन्पु<sup>४</sup> माङ्<sup>२</sup>था<sup>१</sup> मन् माङ्<sup>२</sup>था<sup>१</sup> मन्पु<sup>४</sup> माङ्<sup>२</sup>

(ख) क्रिया विशेषण के साथ (व्याकरण १-३ देखिये ।)

नमूने : सर्व

निषेध-क्रि० वि० वि०

था<sup>१</sup>हन्<sup>३</sup>

काव् वह बहुत लम्बा है ।

नि<sup>३</sup>पु<sup>४</sup>हन्<sup>३</sup>

काव् तुम ज्यादा लम्बे नहीं हो ।

वो<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> काव्<sup>१</sup>वो<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> हन्<sup>३</sup> काव्<sup>१</sup>नि<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> माङ्<sup>२</sup>नि<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> हन्<sup>३</sup> माङ्<sup>२</sup>था<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup>था<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup>





३- था<sup>१</sup> हाव्<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> हाव्<sup>३</sup> ?

वह अच्छा आदमी है या नहीं ? (अथवा वह कैसा है ?)

था<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup>

हां, वह बहुत अच्छा (आदमी) है। (अथवा वह बहुत मजे में है।)

३—सरल प्रश्नों के निषेधार्थक रूप (व्याकरण १-६ (३) देखिये)

नमूने :

सर्व	निषेध-वि०	प्र० स० श०
नि <sup>३</sup>	पु <sup>४</sup> माङ् <sup>२</sup>	मा ? क्या तुम व्यस्त हो ?
वो <sup>३</sup>	पु <sup>४</sup> माङ् <sup>२</sup>	मैं व्यस्त नहीं हूं।
१. वो <sup>३</sup> पु <sup>४</sup> काव् <sup>१</sup> मा ?		क्या मैं लम्बा नहीं हूं ?
नि <sup>३</sup> पु <sup>४</sup> हन् <sup>३</sup> काव् <sup>१</sup>		तुम ज्यादा लम्बे नहीं हो।
२. नि <sup>३</sup> पु <sup>४</sup> माङ् <sup>२</sup> मा ?		क्या तुम व्यस्त नहीं हो ?
वो <sup>३</sup> पु <sup>४</sup> माङ् <sup>२</sup>		नहीं, मैं व्यस्त नहीं हूं।
३. था <sup>१</sup> पु <sup>४</sup> हाव् <sup>३</sup> मा ?		क्या वह अच्छा (आदमी) नहीं है ?
था <sup>१</sup> हन् <sup>३</sup> पु <sup>४</sup> हाव् <sup>३</sup>		वह बहुत खराब (आदमी) है।

### उच्चारण अभ्यास

१-१ का<sup>१</sup> का<sup>१</sup> २-१ का<sup>२</sup> का<sup>१</sup> ३-१ का<sup>३</sup> का<sup>१</sup> ४-१ का<sup>४</sup> का<sup>१</sup>  
 १-२ का<sup>१</sup> का<sup>२</sup> २-२ का<sup>२</sup> का<sup>२</sup> ३-२ का<sup>३</sup> का<sup>२</sup> ४-२ का<sup>४</sup> का<sup>२</sup>  
 १-३ का<sup>१</sup> का<sup>३</sup> २-३ का<sup>२</sup> का<sup>३</sup> ३-३ का<sup>३</sup> का<sup>३</sup> ४-३ का<sup>४</sup> का<sup>३</sup>  
 १-४ का<sup>१</sup> का<sup>४</sup> २-४ का<sup>२</sup> का<sup>४</sup> = २-३ का<sup>२</sup> का<sup>३</sup>

३-४ का<sup>३</sup> का<sup>४</sup> ४-४ का<sup>४</sup> का<sup>४</sup>

## व्याकरण

१-१. उद्देश्य और विधेय क्या है यह हम सभी को पता है ॥ आधुनिक चीनी भाषा में विधेय के विन्यास के अनुसार वाक्य मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं : (१) क्रिया-विधेय वाक्य (२) विशेषण-विधेय वाक्य, और (३) विशेष्य-विधेय ( या सारभूत-विधेय ) वाक्य ।

जो शब्द किसी व्यापार, व्यवहार अथवा परिवर्तन का विधान करता है, उसे क्रिया कहते हैं । क्रिया-विधेय वाक्य में विधेय उद्देश्य द्वारा सूचित किसी प्राणी या वस्तु के व्यापार, व्यवहार या परिवर्तन के बारे में बताता है । यह ध्यान में रखना चाहिये कि चीनी भाषा में क्रिया का रूप परिवर्तन नहीं होता है, अर्थात् क्रिया का धातु रूप नहीं होता, या उसके साथ कोई कृत् तद्धित जैसे प्रत्यय नहीं लगते । उदाहरण स्वरूप, हिन्दी के “मैं हूँ”, “वह है”, “वे हैं”, और “तुम हो” चीनी भाषा के अनुसार “मैं होना”, “वह होना”, “वे होना” और “तुम होना” होंगे । अर्थात् क्रिया का एक ही रूप होता है, और यह क्रिया पुरुष, वचन और काल के परिवर्तन के साथ-साथ रूपान्तरित नहीं होती, सदा एक-सी रहती है ।

१-२. विशेषण : जो शब्द किसी प्राणी अथवा वस्तु का गुण या रूप प्रगट करता है, वह विशेषण कहलाता है, जैसे, माङ्<sup>१</sup> (व्यस्त), काव्<sup>१</sup> (लम्बा) । विशेषण जब विधेय के रूप में प्रयुक्त होता है, तब ऐसे वाक्य को विशेषण-विधेय वाक्य कहते हैं । इस तरह के वाक्य में, हिंदी में अनुवाद करते समय वाक्य के अन्त में “होना” क्रिया प्रयुक्त होती है, जैसे, वो<sup>३</sup> माङ्<sup>२</sup> “मैं व्यस्त हूँ”, था<sup>३</sup> काव्<sup>१</sup> “वह लम्बा है” । लेकिन चीनी भाषा के विशेषण-विधेय वाक्य में “होना” क्रिया का प्रयोग कभी नहीं होता । यह चीनी भाषा की विशिष्टता है ।



१-३. क्रिया-विशेषण : हिन्दी और अंग्रेजी की तरह, चीनी क्रिया-विशेषण भी क्रिया, विशेषण या किसी और क्रिया-विशेषण की विशेषता बताने के लिये प्रयुक्त होता है। जैसे, “पु<sup>४</sup>” निषेधार्थक क्रिया-विशेषण है, और “हन्<sup>३</sup>” मात्रावाचक क्रिया-विशेषण है। उदाहरण के लिये: वो<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> काव्<sup>१</sup>, था<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> काव्<sup>१</sup>।

हिन्दी की तरह, चीनी क्रिया-विशेषण क्रिया के पहले लगाया जाता है। (इस क्षेत्र में अंग्रेजी के साथ इसके प्रभेद पर ध्यान देना चाहिये।)

१-४. सर्वनाम : सर्वनाम का प्रयोग संज्ञा की तरह ही होता है, और वह संज्ञा के स्थान पर भी प्रयुक्त होता है; जैसे, वो<sup>३</sup>, नि<sup>३</sup>, था<sup>१</sup>। चीनी संज्ञा या सर्वनाम के साथ कोई विभक्ति जोड़ी नहीं जाती, यानी चीनी भाषा में शब्दों का रूप परिवर्तन नहीं होता, उदाहरण के लिये “था<sup>१</sup>” इस शब्द का अर्थ है “वह” (पुल्लिंग), “वह” (स्त्रीलिंग), “वह” (नपुंसकलिंग), अर्थात् तीनों लिंगों में इसका रूप एक ही रहेगा।

पुरुषवाचक शब्दों को बहुवचन बनाने के लिए इसके अन्त में “मन्” प्रत्यय जोड़ा जाता है; जैसे,

वो <sup>३</sup>	मैं, मुझे	वो <sup>३</sup> मन्	हम (लोग), हमें।
नि <sup>३</sup>	तुम, तुम्हें	नि <sup>३</sup> मन्	तुम (लोग), तुम्हें।
था <sup>१</sup>	वह (पु०, स्त्री०, नपुं०)	उसे, उसने	
	था <sup>१</sup> मन्	वे (लोग), उन्हें।	

१-५. सहायक शब्द : सहायक शब्द का किसी अन्य शब्द, वाक्यांश या वाक्य का कोई विशेष व्यापार या स्वरूप बनाने के लिये प्रयोग किया जाता है। जैसे, सहायक “मा” वाक्य के अन्त में जोड़ने से वाक्य प्रश्नार्थक बन जाता है।

१-६. प्रश्नार्थक वाक्य : चीनी भाषा में निम्नलिखित उपायों से प्रश्नार्थक वाक्य बनाये जाते हैं :

(१) सहज और साधारण तरीका है वाक्य के अन्त में प्रश्न-वाचक सहायक शब्द “मा” जोड़ना । इस प्रकार के वाक्य में “मा” के जोड़ने से शब्दों के विन्यास में कोई परिवर्तन नहीं होता, जैसे :—

विधानार्थक वाक्य—था<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> वह अधिक व्यस्त है ।

प्रश्नार्थक वाक्य—था<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> मा ? क्या वह अधिक व्यस्त है ?

(२) दूसरे प्रकार के प्रश्नार्थक वाक्य का रूप वैकल्पिक होता है । उसमें एक ही वस्तु के सकारार्थक तथा निषेधार्थक, दोनों पक्ष साथ-साथ रखे जाते हैं । प्रश्न का उत्तर देते समय दोनों में से कोई भी चुना जा सकता है । उच्चारण करते समय वाक्य के सकारार्थक भाग पर जोर देना चाहिये; जैसे,

नि<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> ? आप ठीक हैं या नहीं ?  
(या क्या आप सकुशल हैं ।)

नि<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> ? आप व्यस्त हैं या नहीं ?  
(या क्या आप व्यस्त हैं ?)

हिन्दी में भी इस तरह के वाक्य प्रचलित हैं, ऊपर के अनुवाद देखिये ।

(३) तीसरे प्रकार में निषेधार्थक वाक्य के अंत में सहायक शब्द “मा” लगता है; जैसे,

विधानार्थक वाक्य—था<sup>१</sup> पु<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> वह व्यस्त नहीं है ।

प्रश्नार्थक वाक्य—था<sup>१</sup> पु<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup> मा ? क्या वह व्यस्त नहीं है ?

१-७. प्रश्नोत्तर : प्रश्न का उत्तर देते समय बक्ता की इच्छानुसार सकारार्थक या निषेधार्थक दोनों रूपों में से कोई भी



चुना जा सकता है; जैसे,

प्रश्न : था<sup>१</sup> काव्<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> काव<sup>१</sup> ? क्या वह लम्बा है ?

(वह लम्बा है या नहीं ?)

उत्तर : १-था<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> काव्<sup>१</sup> । हां, वह बहुत लम्बा है ।

२-था<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> काव<sup>१</sup> । नहीं, वह लम्बा नहीं है ।

अगर जवाब से साफ-साफ पता चल जाए तो उत्तर देते समय पूरे वाक्य को दुहराना नहीं पड़ता; जैसे,

प्रश्न : नि<sup>३</sup> माङ्<sup>२</sup> मा ? क्या तुम व्यस्त हो ?

उत्तर : १-माङ्<sup>२</sup> हां (या हां, मैं व्यस्त हूं)

२-पु<sup>४</sup> माङ्<sup>२</sup> नहीं (या नहीं, मैं व्यस्त नहीं हूं)

हिन्दी में उत्तर देते समय जहां “हां” या “नहीं” का प्रयोग होता है उस क्षेत्र में यह ध्यान में रखना चाहिये कि चीनी भाषा में “हां” और “नहीं” के प्रतिशब्द इन अर्थों में जवाब देते समय इस्तेमाल नहीं होते ।

१-८. “पु<sup>४</sup>” : “पु<sup>४</sup>” एक निषेधार्थक क्रिया-विशेषण है। वाक्य को निषेधार्थक रूप देने के लिये क्रिया या विशेषण के पहले “पु<sup>४</sup>” जोड़ा जाता है; जैसे—

नि<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> माङ्<sup>२</sup> मा ?

वो<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> माङ्<sup>२</sup> ।

था<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> हन्<sup>३</sup> काव्<sup>१</sup> ।

१-९. तीसरे स्वर का परिवर्तन : अगर तीसरे स्वर के बाद, एक और तीसरा स्वर आए, तो पहला तीसरा स्वर दूसरा स्वर हो जाता है। (लिखने में अब भी उस पर तीसरे स्वर का चिन्ह लगाया जाता है।) जैसे, हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> = हन्<sup>२</sup> हाव्<sup>३</sup>, नि<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> = नि<sup>२</sup> हाव्<sup>३</sup>। अगर साथ-साथ तीन तीसरे स्वर आए तो सिर्फ अन्तिम स्वर ही तीसरे स्वर में पड़े जाते हैं; जैसे, वो<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> = वो<sup>२</sup> हन्<sup>२</sup> हाव्<sup>३</sup>।



## पाठ-२

क : नि<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup> मा ?

क्या तुम अखबार खरीदना चाहते हो ?

ख : वो<sup>३</sup> पु<sup>२</sup> याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup> ।

नहीं, मैं अखबार खरीदना नहीं चाहता ।

क : नि<sup>३</sup> पु<sup>२</sup> खान्<sup>४</sup> पाव्<sup>४</sup> मा ?

क्या तुम अखबार नहीं पढ़ते ?

ख : पु<sup>२</sup> खान्<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> पू<sup>३</sup> ।

नहीं, मैं नहीं पढ़ता । मैं किताबें पढ़ता हूँ ।

क : नि<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> पू<sup>३</sup> मा ?

क्या तुम किताब खरीदोगे ?

ख : पु<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> । पू<sup>३</sup> थाय्<sup>४</sup> क्वै<sup>४</sup> ।

नहीं, मैं किताब नहीं खरीदूंगा । किताबों की कीमत बहुत ज्यादा है ।

क : नि<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> ?

क्या तुम कलम खरीदोगे ?

ख : मै<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup> क्वै<sup>४</sup> पु<sup>२</sup> क्वै<sup>४</sup> ?

क्या अमरीकी कलम कीमती हैं ?

क : पु<sup>४</sup> तौ<sup>३</sup> क्वै<sup>४</sup> ।

सारे कीमती नहीं हैं ।

ख : तौ<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> मा ?

क्या सारे देखने में अच्छे हैं ?

क : तौ<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> ।

हाँ, सभी देखने में अच्छे हैं ?

नि<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> पु<sup>२</sup> याव्<sup>४</sup> ?

तुम्हें चाहिए या नहीं ?

ख : वो<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> ।

हाँ, चाहिए ।

क : नि<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> चुङ्क्वो<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> मा? क्या तुम चीनी कलम नहीं खरीदोगे ?

ख : पु<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> नहीं ।

### नये शब्द

#### संज्ञा (सं)

पु <sup>४</sup>	किताब, पुस्तक
पाव् <sup>४</sup>	अखबार, समाचार पत्र
पि <sup>३</sup>	कलम, पेन्सिल, कोई भी लेखनी
चुङ्क्वो <sup>३</sup>	चीन (देश)
मै <sup>३</sup> क्वो <sup>३</sup>	अमरीका (संयुक्त राष्ट्र)
इन् <sup>४</sup> तु <sup>४</sup>	भारत

#### क्रिया-विशेषण (क्रि० वि०)

थाव् <sup>४</sup>	अतिरिक्त, ज्यादा, अत्यधिक
तौ <sup>४</sup>	सब, सारा; उभय, दोनों

#### विशेषण (वि०)

हाव् <sup>३</sup> खान् <sup>४</sup>	देखने में सुन्दर, खूबसूरत
क्वै <sup>४</sup>	कीमती

#### क्रिया (क्रि०)

याव् <sup>४</sup>	चाहना
माय् <sup>३</sup>	खरीदना
खान् <sup>४</sup>	देखना, पढ़ना (अखबार आदि)

## उदाहरण माला

(क) क्रि० कर्मवाक्य

नमूने : कर्ता क्रि० कर्म

नि<sup>३</sup> मन् माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup> मा ? क्या तुम (लोग) समाचार पत्र खरीदोगे ?वो<sup>३</sup> मन् पु माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup> नहीं, हम नहीं खरीदेंगे ।

कर्ता	(निषेध)	क्रि०	कर्म	(स० शब्द)
वो <sup>३</sup>	(पु <sup>३</sup> )	याव् <sup>४</sup>	पू <sup>१</sup>	(मा)
नि <sup>३</sup>	(पु <sup>४</sup> )	माय् <sup>३</sup>	पाव् <sup>४</sup>	(मा)
था <sup>१</sup>	(पु <sup>२</sup> )	खान् <sup>४</sup>	पि <sup>३</sup>	(मा)

१. नि<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> पू<sup>१</sup> मा ? वो<sup>३</sup>  
पु<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पू<sup>१</sup>क्या तुम किताब खरीदोगे ?  
नहीं मैं नहीं खरीदूंगा ।२. नि<sup>३</sup> मन् याव्<sup>४</sup> पि<sup>३</sup> पु<sup>२</sup> याव्<sup>४</sup> ?

क्या तुम (लोग) कलम चाहते हो ?

वो<sup>३</sup>मन् याव्<sup>४</sup> पि<sup>३</sup>

हां, हम कलम चाहते हैं ।

३. नि<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> पु<sup>२</sup> खान्<sup>४</sup> चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>३</sup>

तुम चीनी समाचारपत्र पढ़ते हो

पाव्<sup>४</sup> ? वो<sup>३</sup> पु<sup>२</sup> खान्<sup>४</sup> चुङ्<sup>१</sup>  
क्वो<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup> । वो<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> इन<sup>४</sup> तु<sup>४</sup>  
पाव्<sup>४</sup> ।

या नहीं? मैं चीनी समाचारपत्र नहीं पढ़ता । मैं भारतीय समाचारपत्र पढ़ता हूं ।

४. था<sup>१</sup> मन् याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup>,  
पु<sup>२</sup> याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पू<sup>१</sup> ।

वे समाचारपत्र खरीदना चाहते हैं । किताब खरीदना नहीं चाहते ।

५. नि<sup>३</sup> मन् पु<sup>४</sup>माय्<sup>३</sup> इन<sup>४</sup> तु<sup>४</sup>  
पि<sup>३</sup> मा ? वो<sup>३</sup> मन् पु<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup>

क्या तुम (लोग) भारतीय कलम नहीं खरीदोगे ? हम



इन<sup>४</sup> तु<sup>४</sup> पि<sup>३</sup> । इन<sup>४</sup> तु<sup>४</sup> पि<sup>३</sup>  
थाय्<sup>४</sup> क्वै<sup>४</sup> ।

भारतीय कलम नहीं खरी-  
देंगे । भारतीय कलम बहुत  
कीमती हैं ।

६. नि<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> माय<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> मा ?

क्या तुम कलम खरीदना  
चाहते हो ?

वो<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> ।

हाँ, मैं खरीदना चाहता हूँ ।

### (ख) क्रियाविशेषण “तौ” का प्रयोग

नमूने :

(१-४) वो<sup>३</sup> मन् तौ<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup>

हम सब लोग समाचारपत्र  
खरीदते हैं ।

(५-८) वो<sup>३</sup>मन् पु<sup>४</sup> तौ<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup>

हममें से सब लोग समा-  
चारपत्र नहीं खरीदते हैं ।  
(यानी कुछ लोग खरीदते  
हैं) ।

(९-१०] वो<sup>३</sup> मन् तौ<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup>

हममें से कोई भी समाचार-  
पत्र नहीं खरीदता है ।

१. नि<sup>३</sup> मन् तौ<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> मा ?

आप कैसे हैं ?

२. वो<sup>३</sup>मन् तौ<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> माङ्<sup>३</sup>

हम सभी बहुत व्यस्त हैं ।

३. नि<sup>३</sup>मन् तौ<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पू<sup>३</sup> मा ?

क्या तुम सभी किताब खरी-  
दना चाहते हो ?

४. इन<sup>४</sup> तु<sup>४</sup> पि<sup>३</sup> तौ<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> क्वै<sup>४</sup>

सभी भारतीय कलम बहुत  
कीमती हैं ।

५. था<sup>३</sup>मन् पु<sup>४</sup> तौ<sup>३</sup> काव्<sup>३</sup>

उनमें से सभी लम्बे नहीं हैं ।

६. नि<sup>३</sup>मन् पु<sup>४</sup>तौ<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> पाव्<sup>४</sup> मा ?

क्या तुममें से सभी समा-  
चारपत्र नहीं पढ़ते ?

७. था<sup>१</sup>मन् पु<sup>४</sup> तौ<sup>१</sup> खान्<sup>४</sup> पू<sup>१</sup>      उनमें से सभी किताब नहीं पढ़ते ।
८. इन्<sup>३</sup>तु<sup>४</sup> पू<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> तौ<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> क्वै<sup>४</sup> मा<sup>३</sup>?      क्या सभी भारतीय किताबें बहुत कीमती नहीं हैं ?
९. वो<sup>३</sup>मन् तौ<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> हन् लै<sup>४</sup>      हम सब अधिक थके हुए नहीं हैं ।
१०. वो<sup>३</sup>मन् तौ<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> पाव्<sup>४</sup>      हममें से कोई भी समाचार पत्र नहीं पढ़ता ।

### व्याकरण

२-१. क्रियापद (विधेय)-वाक्य का शब्द-क्रम : क्रियापद-वाक्य का शब्द-क्रम अंग्रेजी जैसा होता है । निम्नलिखित शब्द-क्रम इसका मूलभूत आधार माना जाता है :

कर्ता (उद्देश्य)      क्रिया-पद      कर्म      (क० क्रि० कर्म)

१. वो<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> पू<sup>१</sup>      मैं किताब पढ़ता हूँ ।

२. था<sup>१</sup> याव्<sup>४</sup> माय<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> वह कलम खरीदना चाहता है ।

हिन्दी के क्रियापद-वाक्य के साथ इसके प्रभेद का ध्यान रखना चाहिए । हिन्दी में क्रियापद कर्म के बाद प्रयुक्त होता है ।

२-२. याव्<sup>४</sup> : “याव्<sup>४</sup>” क्रियापद है, लेकिन यह एक सहायक क्रिया भी है । सहायक क्रिया की कुछ विशेषताएं हैं । उसका प्रयोग क्रियापद और क्रियाविशेषण के पहले किया जाता है, लेकिन दुहरा कर नहीं किया जाता और उसके बाद कोई प्रत्यय या संज्ञावाचक कर्म नहीं आता । सहायक-क्रिया मुख्य क्रियापद को कार्य सम्पादन करने में सहायता देती है या उसकी कमी पूरी करती है, जैसे,

नि<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> पि<sup>३</sup> मा<sup>३</sup> ?

क्या तुम कलम चाहते हो ?

(क्रिया-पद)

नि<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> मा ? क्या तुम कलम खरीदना चाहते हो ?

(सहायक क्रिया)

यहाँ “याव्<sup>४</sup>” मनोगत इच्छा या इरादा सूचित करता है ।

२-३. कर्म के साथ वैकल्पिक प्रश्नार्थक वाक्य : अगर वाक्य में कर्म हो तो वैकल्पिक प्रश्नार्थक वाक्य का शब्द-क्रम दो प्रकारका होता है :—

(१) कर्म या तो सकारार्थक क्रियापद और निषेधार्थक क्रियापद के बीच में आ सकता है । जैसे :—

नि<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup> पु माय्<sup>३</sup> ? क्या तुम समाचारपत्र खरीदोगे?  
(अथवा तुम समाचारपत्र खरी-  
दोगे या नहीं) ?

इस तरह के वाक्य अधिक इस्तेमाल किये जाते हैं ।

(२) या क्रियापदों के बाद आ सकता है, जैसे,

नि<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup> ? क्या तुम समाचारपत्र खरीदोगे?



## पाठ-३

बो<sup>३</sup>मन् यो<sup>३</sup>प्याव्<sup>३</sup>। था मै<sup>३</sup> यौ। हमारे पास कलाई घड़ियां हैं।  
उसके पास नहीं हैं।

था<sup>१</sup> छिड़<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>मन् कै<sup>३</sup>था<sup>१</sup>प्याव्<sup>३</sup>। वह एक कलाईघड़ी देने के  
वो<sup>३</sup>मन् कै<sup>३</sup> था पु<sup>५</sup> कै<sup>३</sup> था<sup>१</sup>? लिए हमसे अनुरोध कर रहा  
वो<sup>३</sup> मन् पु<sup>५</sup> कै<sup>३</sup> था<sup>१</sup>। है। हम उसे घड़ी दें या नहीं?  
नहीं, हम नहीं देंगे।

था<sup>१</sup> याव्<sup>५</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>मन् छ्येन्<sup>२</sup>। वह हमें पैसे देना चाहता है।  
वो<sup>३</sup>मन् पु<sup>५</sup> याव्<sup>५</sup> छ्येन्<sup>२</sup>, वो<sup>३</sup> मन् हम पैसे नहीं चाहते (क्योंकि)  
यो<sup>३</sup> छ्येन्<sup>२</sup>। हमारे पास पैसे हैं।

प्याव्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup>। वो<sup>३</sup>मन् तौ<sup>१</sup> शि<sup>३</sup> कलाई घड़ी अच्छी होती है।  
ह्वान्<sup>१</sup>प्याव्<sup>३</sup>। प्याव्<sup>३</sup>हाव्<sup>३</sup>खान्<sup>५</sup>, हम सब लोग कलाई घड़ी  
ये<sup>३</sup> पु<sup>५</sup> हन्<sup>३</sup> क्वै<sup>५</sup>। पसन्द करते हैं। कलाई घड़ी  
सुन्दर होती है, और ज्यादा  
कीमती भी नहीं होती।

### नये शब्द

#### गणना-वाचक अंक

इ<sup>१</sup>—एक

अळ<sup>५</sup>—दो

सान्<sup>१</sup>—तीन

स्च्—चार

ऊ<sup>३</sup>—पाँच

ल्यु<sup>५</sup>—छः

छि<sup>१</sup>—सात

पा<sup>१</sup>—आठ

## इत्यादि

च्यु<sup>३</sup>—नौअळ<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup>—बीसषृ<sup>३</sup>—दसअळ<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup> इ<sup>१</sup>—इक्कीस, इत्यादिषृ<sup>३</sup> इ<sup>१</sup>—ग्यारहषृ<sup>३</sup> अळ<sup>४</sup>—बारह, आदि

## संज्ञा (सं०)

छ्येन्<sup>३</sup>—घन, पैसा (पैसे)प्याव्<sup>३</sup>—कलाई घड़ी

## क्रिया विशेषण (क्रि० वि०)

ये<sup>३</sup>भी. और क्रिया (क्रि.)कै<sup>३</sup>—देनायौ<sup>३</sup>—के पास होनामै<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup>—के पास नहीं होना(यौ<sup>३</sup> का निषेधार्थक रूप)शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>१</sup>—पसन्द करना या होनाछिङ्<sup>३</sup>—निमंत्रित करना, कृपया, पूछना, निवेदन करनाश्ये<sup>४</sup>-श्ये—धन्यवाद देना या करना, धन्यवाद

## उदाहरण-माला

## (क) मुख्य और गौण कर्म युक्त वाक्य

कर्ता	निषेध	क्रि०	गौण कर्म	मुख्य कर्म
वो <sup>३</sup>	(पु <sup>४</sup> )	कै <sup>३</sup>	नि <sup>३</sup>	छ्येन् <sup>३</sup>
वो <sup>३</sup> मन्		याव् <sup>४</sup> कै <sup>३</sup>	नि <sup>३</sup> मन्	षू <sup>१</sup>
”		” ”	था <sup>१</sup>	चुङ् <sup>१</sup> क्वो <sup>३</sup> पि <sup>३</sup>
”		” ”	था <sup>१</sup> मन्	मै <sup>३</sup> क्वो <sup>३</sup> पाव्
था <sup>१</sup>	(पु <sup>४</sup> )	कै <sup>३</sup>	वो <sup>३</sup>	षू <sup>१</sup>
था <sup>१</sup> मन्		याव् <sup>४</sup> कै <sup>३</sup>	वो <sup>३</sup> मन्	प्याव् <sup>३</sup>
छिङ् <sup>३</sup> नि <sup>३</sup>		कै <sup>३</sup>	वो <sup>३</sup>	पि <sup>३</sup>

- |                    |                 |                     |                     |
|--------------------|-----------------|---------------------|---------------------|
| नि <sup>३</sup> मन | कै <sup>३</sup> | था <sup>१</sup>     | प्याव् <sup>३</sup> |
| "                  | "               | वो <sup>३</sup> मन् | छ्येन् <sup>२</sup> |
| "                  | "               | था <sup>१</sup> मन् | पू <sup>१</sup>     |
१. था<sup>१</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> । वो<sup>३</sup> श्ये<sup>४</sup>- उसने मुझे (एक) कलम दी ।  
श्ये था<sup>१</sup> । मैंने उसे धन्यवाद दिया ।
  २. था<sup>१</sup> मै<sup>२</sup> यौ छ्येन्<sup>२</sup> । वो<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> उसके पास पैसे नहीं हैं । मैं उसे  
कै<sup>३</sup> था<sup>१</sup> छ्येन्<sup>२</sup> । पैसे देना चाहता हूँ ।
  ३. नि<sup>३</sup> मन् कै<sup>३</sup> था<sup>१</sup> छ्येन् पु<sup>४</sup> तुम (लोग) उसे पैसे दोगे या  
कै<sup>३</sup> ? नहीं ?
  ४. था<sup>१</sup> याव्<sup>४</sup> मै<sup>२</sup> क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup> । वह अमरीकी कलम चाहता था ।  
वो<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> था<sup>१</sup> चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup> । मैंने उसे चीनी कलम दी  
(अथवा वह अमरीकी कलम  
चाहता है । मैं उसे चीनी कलम  
दूंगा) ।
  ५. छिङ्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> मन् पि<sup>३</sup>, कृपया तुम हमें कलम दो और  
ये<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> मन् प्याव्<sup>३</sup> । कलाई घड़ी भी दो ।
  ६. था<sup>१</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> पू<sup>१</sup>, पु<sup>४</sup> कै<sup>३</sup> वह मुझे किताब देगा (या दे  
वो<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> । रहा है), कलम नहीं देगा (या  
नहीं दे रहा है)

### (ख) अपवृत्त वाक्य

नमूने :

कर्म	कर्ता	क्रि०
पू <sup>१</sup> , पाव् <sup>४</sup>	वो <sup>३</sup> तौ <sup>१</sup>	खान् <sup>४</sup> मैं किताब और समाचार पत्र दोनों पढ़ता हूँ ।

१. चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>२</sup> पू<sup>१</sup>, मै<sup>२</sup> क्वो<sup>२</sup> पू<sup>१</sup>, मैं चीनी और अमरीकी दोनों



वो<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> खान्<sup>४</sup> ।

(भाषाओं की) किताबें पढ़ता हूँ ।

२. मै<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup>, चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup> अमरीकी या चीनी कलम, मैं वो<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> कोई भी नहीं खरीदूंगा ।

३. पू<sup>१</sup>, पाव्<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> याव्<sup>४</sup> मैं किताब और समाचार पत्र माय्<sup>३</sup> । पि<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> दोनों खरीदना चाहता हूँ । मैं माय्<sup>३</sup> । कलम भी खरीदना चाहता हूँ ।

४. चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>२</sup> पाव्<sup>४</sup>, नि<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> तुम चीनी समाचारपत्र पढ़ते हो पु<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> ? या नहीं ?

५. पि<sup>३</sup>, नि<sup>३</sup> मन् तौ<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup> मा ? क्या तुम सभी के पास कलम है?

६. चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>२</sup> पू<sup>१</sup>, नि<sup>३</sup> मन् तौ याव्<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> मा ? क्या तुम सभी लोग चीनी किताब पढ़ना चाहते हो ?

### व्याकरण

३-१ द्विकर्मक क्रियापद-वाक्य का गौण कर्म :

जिस वाक्य में विधेय एक क्रियापद और दो कर्मों से बनता है उसे द्विकर्मक क्रियापद-वाक्य कहते हैं । चीनी भाषा में क्रियापद कर्म के पहले आता है, और गौण कर्म (जो आमतौर पर प्राणी-बोधक शब्द होता है) मुख्य कर्म (जिससे आमतौर पर किसी वस्तु का बोध होता है) के पहले आता है; जैसे,

वो<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> पू<sup>१</sup> मैं तुम्हें किताब देता हूँ ।

(शाब्दिक : मैं देता हूँ तुम्हें किताब)

‘वो<sup>३</sup>’ कर्ता है, ‘कै<sup>३</sup>’ क्रियापद, ‘नि<sup>३</sup>’ गौण कर्म और ‘पू<sup>१</sup>’ मुख्य कर्म । हिन्दी और चीनी भाषा में द्विकर्मक क्रियापद विधेय-वाक्य में तुलनात्मक शब्द-क्रम इस प्रकार हैं :

हिन्दी : कर्ता (उद्देश्य)	गौण कर्म	मुख्य कर्म	क्रियापद
मैं	तुम्हें	किताब	देता हूँ

चीनी : कर्ता (उद्देश्य)	क्रियापद	गौण कर्म	मुख्य कर्म
वो <sup>३</sup>	कै <sup>३</sup>	नि <sup>३</sup>	पू <sup>१</sup>
(मैं)	(देता हूँ)	(तुम्हें)	(किताब)

३-२. एकाधिक कर्म : जब किसी क्रियापद के साथ दो या ज्यादा कर्म होते हैं (मुख्य और गौण कर्म नहीं), तब उस क्रियापद को सभी कर्मों के साथ दुहराते समय विधेय के साथ 'ये<sup>३</sup>' का प्रयोग किया जाता है; जैसे,

वो<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> पू<sup>१</sup>, ये<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> पाव्<sup>४</sup> मैं किताब पढ़ता हूँ, समाचार-पत्र भी पढ़ता हूँ।

था<sup>१</sup> याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup>, वह अमरीकी कलम खरीदना  
ये<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> चुङ्क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup>। चाहता है, चीनी कलम भी  
खरीदना चाहता है।

३-३. ये<sup>३</sup> : 'ये<sup>३</sup>' एक क्रिया-विशेषण है, और इसे भी विधेय के पहले रखा जाता है। अतः यह कभी नहीं कहना चाहिए—ये<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup>, ये<sup>३</sup> प्याव्<sup>४</sup> पु<sup>३</sup> शि<sup>३</sup> त्वान्<sup>१</sup>, इत्यादि।

३-४. अपवृत्त कर्म : हम लोग यह पहले सीख चुके हैं कि चीनी भाषा में क्रियापद विधेय-वाक्य का सामान्य शब्दक्रम इस प्रकार है :

कर्ता (उद्देश्य) — (क्रिया-विशेषण रूपी विशेषता-सूचक)  
क्रिया—कर्म

लेकिन किन्हीं अवस्थाओं में कर्म कर्ता (उद्देश्य) के पहले रखा जा सकता है और इस अवस्था में वह कर्म वाक्य का विषय बन जाता है। वाक्य में कर्म पर जोर देने के लिए हम कर्म को अपनी जगह से हटा कर वाक्य के शुरू में रख सकते हैं; जैसे,

पू<sup>१</sup> वो<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup>, ख<sup>३</sup>पू पाव्<sup>४</sup> वो<sup>३</sup> मैं किताब पढ़ता हूँ,  
पु<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup>। लेकिन समाचारपत्र नहीं पढ़ता।



यदि कर्म संयुक्त कर्म हो, बहुवचन में हो अथवा श्रेणीबद्ध हो तो विधेय के (अथवा क्रियापद के) पहले क्रियापद विशेषण 'तौ' का प्रयोग करना पड़ता है; जैसे

पू<sup>१</sup>, पाव<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup>, तौ<sup>१</sup>, खान्<sup>४</sup>      मैं किताब और अखबार दोनों पढ़ता हूँ ।

पू<sup>१</sup>, प्याव<sup>३</sup>, पि<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup>      किताब, कलाई घड़ी या कलम,  
पु<sup>४</sup> शि<sup>३</sup> ह्वान्<sup>१</sup> ।      मुझे (इनमें से) कोई भी पसन्द नहीं है ।

३-५. तौ<sup>१</sup> : 'तौ' के हिन्दी अर्थ हैं 'सब' (सभी) । हिन्दी में 'सब' का प्रयोग विशेषण, विशेष्य या सर्वनाम के रूप में होता है, लेकिन चीनी भाषा में 'तौ' एक सीमावाचक क्रियाविशेषण है । चीनी भाषा में क्रियाविशेषण (हिन्दी की तरह) क्रिया के पहले आता है; जैसे,

वो<sup>३</sup> मन् तौ<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> हाव<sup>३</sup>      हम लोग बहुत अच्छी तरह हैं ।  
था<sup>१</sup> मन् तौ<sup>१</sup> पृ श्येन्<sup>३</sup> षङ् ।      वे सभी अध्यापक हैं ।

जहां तक अर्थ का प्रश्न है, 'तौ' उसी वाक्य में आए हुए प्राणियों तथा वस्तुओं की ओर संकेत करता है । वाक्यरचना में उसका स्थान उद्देश्य के बाद और विधेय के पहले होता है; जैसे,

था<sup>१</sup> मन् तौ<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> हन्<sup>३</sup> हाव<sup>३</sup>      वे सभी अधिक ठीक नहीं हैं ।  
मै<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup>, चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup>      हम लोग अमरीकी कलम और  
वो<sup>३</sup> मन् तौ<sup>१</sup> याव<sup>४</sup> माय<sup>३</sup> ।      चीनी कलम दोनों खरीदना चाहते हैं ।

अगर ऐसे वाक्य का कर्ता एक वचन में हो तो 'तौ' अपवृत्त कर्म से सम्बन्ध रखता है; जैसे,

पू<sup>१</sup>, पाव<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> खान्<sup>४</sup>      मैं किताब और अखबार दोनों पढ़ता हूँ ।



अगर कर्ता बहुवचन में हो तो संदर्भ से वाक्य का अर्थ-निर्णय होगा; जैसे,

पू<sup>१</sup>, पाव<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup> मन् तौ<sup>१</sup> खान्<sup>४</sup> हम किताब और समाचारपत्र दोनों पढ़ते हैं । (अथवा हम सभी किताबें और समाचारपत्र पढ़ते हैं ।)

३-६. ग्यारह से निन्यानवे तक के गणनावाचक अंकों की गणना: हिन्दी की तरह चीनी भाषा में संख्या गिनने के लिए दशमिक प्रणाली का उपयोग किया जाता है । इ<sup>१</sup>, अळ<sup>४</sup>, सान्<sup>१</sup>, स्च्<sup>४</sup>, ऊ<sup>३</sup>, ल्यु<sup>४</sup>, छि<sup>१</sup>, पा<sup>१</sup>, च्यु<sup>३</sup> और षृ<sup>३</sup> के अलावा षृ<sup>३</sup> इ<sup>१</sup>, षृ<sup>३</sup> अळ<sup>४</sup> आदि अंक भी हैं । ११ से ९९ तक के अंक निम्नलिखित तीन तरीकों से बनते हैं :

(१) ग्यारह से उन्नीस तक के अंक जोड़ से बनते हैं :

१० धन १, बराबर है ११ 'षृ<sup>३</sup>इ<sup>१</sup>'

१० धन २, बराबर है १२ 'षृ<sup>३</sup>अळ<sup>४</sup>'

१० धन ६, बराबर है १६ 'षृ<sup>३</sup>च्यु<sup>३</sup>'

(२)-२०, ३०, ४०, ५०, ६०, ७०, ८०, ९० गुणन द्वारा बनाए जाते हैं :

१० को २ से गुणा करने से २० हो जाता है 'अळ<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup>'

१० को ३ से गुणा करने से ३० होता है—'सान्<sup>१</sup> षृ<sup>३</sup>'

१० को ५ से गुणा करने से ५० होता है—'ऊ<sup>३</sup> षृ<sup>३</sup>'

(३) दसियों के बीच के अंक पहले गुणा करके, फिर जोड़ कर बनाए जाते हैं :

दस को दो से गुणा करके और फिर दो जोड़ कर २२ बनता है  $(10 \times 2 + 2)$  'अळ<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup>-अळ<sup>४</sup>'

दस को दो से गुणा करके और फिर छः जोड़ कर २६ बनता है  $(10 \times 2 + 6)$  'अळ<sup>४</sup>-षृ<sup>३</sup>-ल्यु<sup>४</sup>'

३-७. मै<sup>२</sup> : 'मै<sup>२</sup>' एक विशेष क्रियापद-विशेषण है जो 'यौ<sup>३</sup>' के साथ प्रयुक्त होकर उसे निषेधार्थक बनाता है। 'यौ<sup>३</sup>' का निषेधार्थक रूप है 'मै<sup>२</sup> 'यौ<sup>३</sup>' न कि 'पु<sup>४</sup> यौ<sup>३</sup>'। 'यौ<sup>३</sup>' के साथ 'पु<sup>४</sup>' कभी प्रयुक्त नहीं होता।

३-८. ये<sup>३</sup> और पु<sup>४</sup> : 'पु<sup>४</sup>' की तरह 'ये<sup>३</sup>' भी क्रियाविशेषण है, लेकिन जहाँ दोनों साथ-साथ होते हैं वहाँ 'ये<sup>३</sup> पु<sup>४</sup>' के पहले आता है। 'पु<sup>४</sup>' के ठीक बाद ही क्रिया आती है। शब्द-क्रम इस तरह होगा :

कर्ता पुं<sup>४</sup> क्रि. क. ये<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> क्रिया कर्म

वो<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> षू<sup>४</sup>, ये<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> पाव्<sup>४</sup> मैं किताबें नहीं पढ़ता,  
और न तो अखबार।  
(अथवा अखबार भी नहीं पढ़ता)।

## पाठ-४

रन् रन् तौ शि ह्वान् प्याव् हर आदमी कलाई घड़ी पसन्द  
खपृ रन् रन् पु तौ यौ करता है, लेकिन हर आदमी  
प्याव् के पास कलाई घड़ी नहीं है।

यौत रन् यौ प्याव्, यौ त रन् कुछ लोगों के पास कलाई  
मै यौ घड़ियां हैं; कुछ लोगों के पास  
नहीं हैं।

यौ त रन् शि ह्वान् ता कुछ लोग बड़ी कलाई घड़ी  
प्याव्, यौ त रन् शि ह्वान् पसन्द करते हैं, कुछ लोग छोटी

श्याव् प्याव्। वो यौ ल्याङ्क कलाई घड़ी। मेरे दो अच्छे  
हाव् फङ् यौ। था मन् ल्याङ्क मित्र हैं। उन दोनों के पास  
रन् तौ यौ प्याव्। कलाई घड़ियां हैं। इस मित्र के

चेक फङ् यौ यौङ्क ता प्याव्। पास एक बड़ी कलाई घड़ी है।  
था प्वो ता प्याव् हाव्। वह कहता है कि बड़ी घड़ी  
अच्छी होती है।

नैक फङ् यौ यौङ्क श्याव् उस मित्र के पास एक छोटी  
प्याव्। कलाई घड़ी है।

था प्वो श्याव् प्याव् हाव्। वह कहता है कि छोटी कलाई  
घड़ी अच्छी होती है।

वो प्वो ता प्याव् श्याव् प्याव् मैं कहता हूं बड़ी घड़ी छोटी



ती<sup>१</sup> हाव्<sup>३</sup> ।

घड़ी दोनों ही अच्छी होती हैं ।

नि<sup>३</sup> ष्वो<sup>१</sup> नै<sup>३</sup>क हाव्<sup>३</sup> ?

तुम किसको अच्छी कहते हो ?

### नये शब्द

(गतिशील) क्रि० वि० निश्चयवाचक सर्वनाम

ख <sup>३</sup> ष	लेकिन	चे <sup>४</sup> (च <sup>४</sup> )	यह (यहां)
		ने <sup>४</sup> (ना <sup>४</sup> )	वह (वहां), दूसरा
		नै <sup>३</sup>	कौन सा ?

मापक शब्द (मा०)

विशेषण (वि०)

क	(प्राणियों अथवा वस्तुओं से संबद्ध)	ता <sup>४</sup>	बड़ा
		श्याव् <sup>३</sup>	छोटा
पन् <sup>१</sup>	प्रति, (किताबों से संबद्ध)	त्वे <sup>४</sup>	ठीक (होना)
			गुद्व (होना)

संज्ञा (सं)

क्रिया (क्रि०)

रन् <sup>२</sup>	आदमी	ष्वो <sup>१</sup>	कहना
फड् <sup>२</sup> यौ	दोस्त, मित्र	तुड् <sup>३</sup>	समझना
च्वो <sup>१</sup> च्	मेज़		
इ <sup>३</sup> च्	कुर्सी		
यौ <sup>३</sup> त	कुछ, कोई-कोई		
रन् <sup>२</sup> रन् <sup>२</sup>	हर आदमी (केवल कर्ता के रूप में), प्रत्येक व्यक्ति		

### उदाहरण माला

(क)—निश्चयार्थक सर्वनाम-युक्त संज्ञा

नि० सर्व०-मापक	संज्ञा	नि० सर्व०-मापक	संज्ञा
चे <sup>४</sup> - क	रन् <sup>२</sup>	चे <sup>४</sup> क	च्वो <sup>१</sup> च्
ने <sup>४</sup> - क	फड् <sup>२</sup> यौ	ने <sup>४</sup> क	इ <sup>३</sup> च्
नै <sup>३</sup> - क (?)	पि <sup>३</sup>	नै <sup>३</sup> क (?)	इ <sup>३</sup> च्

१. चे<sup>१</sup>क च्वो<sup>१</sup>च् थाय्<sup>१</sup> श्याव् । यह मेज बहुत छोटी है ।  
 नि<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup> ता च्वो<sup>१</sup>च् मै<sup>२</sup> यौ<sup>३</sup> ? तुम्हारे पास बड़ी मेज है या नहीं?
२. वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>क फङ्<sup>३</sup> यौ । मेरे दो मित्र हैं । यह मित्र धन-  
 चे<sup>१</sup>क यौ<sup>३</sup>छ्येन्<sup>३</sup>, ने<sup>१</sup>क मै<sup>२</sup> यौ वान हैं, (लेकिन) वह धनवान  
 छ्येन्<sup>३</sup> । नहीं है ।
३. ने<sup>१</sup>पन्<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>हाव्<sup>३</sup>, ख्<sup>३</sup>पृ चे<sup>१</sup> वह किताब अच्छी नहीं है, लेकिन  
 पन्<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> । यह बहुत अच्छी है ।
४. चे<sup>१</sup>क रन्<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> प्याव्<sup>३</sup> । इस आदमी के पास कलाई घड़ी  
 ने<sup>१</sup>क रन्<sup>३</sup>ये<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> प्याव्<sup>३</sup> । है । उस आदमी के पास भी  
 रन्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup> प्याव्<sup>३</sup> । घड़ी है । प्रत्येक आदमी के पास  
 घड़ी है ।
५. यौ<sup>३</sup>त रन्<sup>३</sup>शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>१</sup> चे<sup>१</sup>क, कुछ लोग इसको चाहते हैं । कुछ  
 यौ<sup>३</sup>त रन्<sup>३</sup>शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>१</sup> ने<sup>१</sup>क । उसको चाहते हैं । तुम बताओ  
 नि<sup>३</sup> प्वो<sup>१</sup> नि<sup>३</sup> शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>१</sup> तुम कौन सा चाहते हो ।  
 नै<sup>३</sup>क ?

### (ख) अंक-युक्त संज्ञा

अंक	मापक	संज्ञा	अंक	मापक	संज्ञा
इ <sup>२</sup>	क	रन् <sup>३</sup>	च्यु <sup>३</sup>	क	रन् <sup>३</sup>
ल्याङ् <sup>३</sup>	क	फङ् <sup>३</sup> यौ	पृ <sup>२</sup>	क	रन् <sup>३</sup>
सान् <sup>१</sup>	क	पि <sup>३</sup>	पृ <sup>२</sup> इ <sup>२</sup>	क	रन् <sup>३</sup>
स्व् <sup>१</sup>	क	रन् <sup>३</sup>	चि <sup>३</sup>	क	रन् <sup>३</sup>
ऊ <sup>३</sup>	क	प्याव् <sup>३</sup>	इ <sup>१</sup>	पन् <sup>३</sup>	पू <sup>१</sup>
ल्यु <sup>१</sup>	क	च्वो <sup>१</sup> च्	ल्याङ् <sup>३</sup>	पन् <sup>३</sup>	पू <sup>१</sup>
छि <sup>२</sup>	क	इ <sup>३</sup> च्	चि <sup>३</sup>	पन् <sup>३</sup> (?)	पू <sup>१</sup>
पा <sup>२</sup>	क	इ <sup>३</sup> च्			

नभूने :

१. वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> इ<sup>२</sup> क फङ्<sup>३</sup> यौ ।

मेरा एक मित्र है । उसके

- था<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> पास दो किताबें हैं ।
२. था<sup>१</sup> ष्वो<sup>१</sup> था<sup>१</sup> याव्<sup>१</sup> माय्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup> क ता<sup>१</sup> वह कहता है कि वह एक  
च्वो<sup>१</sup> च् । नि<sup>३</sup>मन् यौ<sup>३</sup> मै<sup>२</sup> यौ<sup>३</sup> ? मेज़ खरीदेगा । तुम्हारे  
पास मेज़ है या नहीं ?
३. वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> प्याव्<sup>३</sup> । था<sup>१</sup> ये<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> मेरे पास कलाई घड़ी है ।  
प्याव्<sup>३</sup> । वो<sup>३</sup>मन् ल्याङ्<sup>३</sup>क रन्<sup>२</sup>तौ<sup>१</sup> उसके पास भी है । हम  
यौ<sup>३</sup> प्याव् । दोनों के पास कलाई  
घड़ी है ।
४. था<sup>१</sup> याव्<sup>१</sup>कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>मन् स्च्<sup>१</sup>क इ<sup>३</sup>च्, वह हमें चार कुर्सियां और  
इ<sup>३</sup>क श्याव्<sup>३</sup>च्वो<sup>१</sup>च् । एक छोटी मेज़ देना  
चाहता है ।
५. था<sup>१</sup> ष्वो<sup>१</sup> था<sup>१</sup>यौ<sup>३</sup> स्च्<sup>१</sup>क प्याव्<sup>३</sup> । वह कहता है उसके पास  
वो<sup>३</sup> याव्<sup>१</sup> छिङ्<sup>३</sup> था<sup>१</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> चार कलाई घड़ियां हैं । मैं  
इ<sup>३</sup>क । उससे एक मांगना चाहता  
हूँ ।
६. वो<sup>३</sup> याव्<sup>१</sup>माय्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>क इन्<sup>१</sup>तु<sup>१</sup> प्याव्<sup>३</sup>, मैं एक भारतीय कलाई  
ख<sup>३</sup>षू वो<sup>३</sup> मै<sup>२</sup> यौ छ्येन्<sup>२</sup> । घड़ी खरीदना चाहता  
हूँ लेकिन मेरे पास पैसे  
नहीं हैं ।

(ग) — निश्चयवाचक सर्वनाम और अंक-युक्त संज्ञा

नि०	अंक	मापक	संज्ञा	नि०	अंक-मापक	संज्ञा
सर्व०				सर्व०		
चे <sup>१</sup>	इ <sup>३</sup>	क	रन् <sup>२</sup>	चे <sup>१</sup>	इ <sup>३</sup> -पन् <sup>३</sup>	षू <sup>१</sup>
ने <sup>१</sup>	ल्याङ् <sup>३</sup>	क	फङ् <sup>३</sup> यौ	ने <sup>१</sup>	ल्याङ् <sup>३</sup> -पन् <sup>३</sup>	षू <sup>१</sup>
नै <sup>३</sup>	सान् <sup>१</sup>	क	पि <sup>३</sup>	नै <sup>३</sup>	सान् <sup>१</sup> पन् <sup>३</sup>	षू <sup>१</sup>
नै <sup>३</sup>	स्च् <sup>१</sup>	क	रन् <sup>२</sup>	नै <sup>३</sup>	स्च् <sup>१</sup> पन् <sup>३</sup>	षू <sup>१</sup>



ने<sup>३</sup> ऊ<sup>३</sup> क प्याव्<sup>३</sup> ने<sup>३</sup> ऊ<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>  
 ने<sup>३</sup> ल्यु<sup>३</sup> क च्वो<sup>३</sup> च् ने<sup>३</sup> छि<sup>३</sup> क इ<sup>३</sup> च्

१. ने<sup>३</sup>ल्याङ्<sup>३</sup> क इन्<sup>३</sup>तु<sup>३</sup>रन्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>क उन दोनों भारतीयों में से एक  
 यौ<sup>३</sup>छयेन्<sup>३</sup>, इ<sup>३</sup>क मै<sup>३</sup>यौ छयेन्<sup>३</sup>। धनवान है, दूसरा गरीब है।  
 (या एक धनवान है, एक  
 गरीब है।)

२. चे<sup>३</sup>सान्<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> पू<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup>हाव्<sup>३</sup> ख<sup>३</sup> ष ये तीनों किताबें बहुत अच्छी  
 तौ<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> क्वै<sup>३</sup>। हैं, लेकिन सभी बहुत कीमती  
 हैं।

३. चे<sup>३</sup>षू<sup>३</sup>क रन्<sup>३</sup>तौ<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> खान्<sup>३</sup> ये सभी दस आदमी चीनी  
 चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup> किताब पढ़ना चाहते हैं।

४. वो<sup>३</sup>हन्<sup>३</sup>शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>३</sup> ने<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> मैं उन दोनों आदमियों को बहुत  
 क रन्<sup>३</sup>, ख<sup>३</sup>षू वो<sup>३</sup> फङ्<sup>३</sup>यौ पु<sup>३</sup> पसन्द करता हूं, लेकिन मेरा  
 शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>३</sup> था<sup>३</sup>मन्<sup>३</sup>। दोस्त उन्हें पसन्द नहीं करता।

५. चे<sup>३</sup>ल्याङ्<sup>३</sup>कइ<sup>३</sup>च् वो<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>-माय्<sup>३</sup>। मैं इन दोनों कुर्सियों को नहीं  
 वो<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> ने<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> क। खरीदूंगा। मैं उन दोनों को  
 खरीदूंगा।

था<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>

था<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>

था<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>

था<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>

था<sup>३</sup> या<sup>३</sup>व् मा<sup>३</sup>य् चे<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>

था<sup>३</sup> या<sup>३</sup>व् खान्<sup>३</sup> चे<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>

था<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> शि<sup>३</sup> ह्वान्<sup>३</sup> चे<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>

वो<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>३</sup> चे<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>

वो<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> चे<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>

रन्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> शि<sup>३</sup> त्वान्<sup>३</sup> चे<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>  
 रन्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> याव्<sup>३</sup> खान्<sup>३</sup> चे<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>  
 रन्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> याव्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> चे<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>

### व्याकरण

४-१ संज्ञा : सर्वनाम की तरह (देखिए व्याकरण नोट १-४) संज्ञा को बहुवचन बनाने के लिए उसके बाद 'मन्' जोड़ा जा सकता है। लेकिन केवल पुरुषवाचक संज्ञाओं के बाद ही 'मन्' जोड़ा जा सकता है, जैसे 'वो<sup>३</sup>मन्' 'नि<sup>३</sup>मन्' आदि। अन्य संज्ञाओं के साथ 'मन्' नहीं लग सकता। हम 'षू<sup>३</sup>मन्' (किताबें), 'पाव्<sup>३</sup>मन्' (पत्रिकाएं) नहीं कह सकते।

४-२ संज्ञा कर्ता और कर्म दोनों ही रूप में प्रयुक्त हो सकती है। सर्वनाम की तरह संज्ञा के साथ भी कोई विभक्ति या प्रत्यय नहीं जोड़ा जाता। जब प्राणियों अथवा वस्तुओं की संख्या या परिमाण बताने की आवश्यकता होती है, तब संज्ञा के साथ संख्या या परिमाण-वाचक शब्द लगाया जाता है; जैसे कि हम कहते हैं,

चो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup>क प्याव्<sup>३</sup> मेरे पास तीन कलाई धड़ियाँ हैं।  
 था<sup>१</sup> याव्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> वह दो किताबें खरीदना चाहता है।

४-३ मापक शब्द : जिन शब्दों से प्राणियों अथवा वस्तुओं की संख्या-इकाइयों या परिमाण-इकाइयों का बोध होता है उन्हें संज्ञा-मापक शब्द कहते हैं। संज्ञा-मापक शब्द के पहले आमतौर से अंक या निश्चयवाचक सर्वनाम या दोनों होते हैं, और इसके बाद संज्ञा स्वयं आती है या अनुपस्थित रहकर भी अपने को सूचित करती है (उदाहरणमाला १, २, और ३ देखिए)। हिन्दी में भी ऐसे मापक शब्दों के दृष्टान्त हैं—“एक जोड़ा जूता”, “दो ताव कागज़”, “पक्षियों का झुंड” इत्यादि।

मापक शब्द 'क' का प्रयोग सबसे व्यापक है, क्योंकि



इसका प्रयोग प्राणियों के सम्बन्ध में भी हो सकता है (उदाहरण के लिए 'रन्' का मापक शब्द 'क' है), और उन वस्तुओं के साथ भी हो सकता है जिनका कोई अपना विशेष मापक शब्द नहीं है। यहाँ तक कि वह किसी भी अन्य विशेष मापक शब्द के स्थान पर प्रयुक्त हो सकता है, जैसे :

इ<sup>३</sup>क रन्<sup>३</sup>—एक आदमी। षू<sup>२</sup> अळ<sup>३</sup>क पि<sup>३</sup>—बारह पेन्सिलें। (हिन्दी की भोजपुरी बोली में ऐसे ही मापक शब्द हैं। "ठो (ठे)": एक ठो आदमी, चार ठो किताब (बही), पांच ठो रुपैया। कहीं कहीं "गो" भी प्रयुक्त होता है। बंगला भाषा में "टा", "टी", "खाना", "खानी" बहु-प्रचलित हैं)।

अनेक संज्ञाओं के अपने विशेष मापक शब्द निश्चित किये हुए हैं, इसलिए इनके साथ ये निर्धारित मापक शब्द जोड़ना अनिवार्य है। 'पन्<sup>३</sup>' एक ऐसा मापक शब्द है जो 'षू<sup>१</sup>' (किताब) के साथ प्रयुक्त होता है।

नि<sup>३</sup> याव<sup>३</sup> माय<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> ? तुम कितनी किताबें खरीदना चाहते हो ? (अथवा तुम किताब की कितनी प्रतियां खरीदना चाहते हो ?)

वो<sup>३</sup> याव<sup>३</sup> माय<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup>। मैं तीन (प्रतियां) खरीदना चाहता हूँ।

आधुनिक चीनी भाषा में आमतौर पर कोई भी अंक (जैसे इ<sup>१</sup>) या कोई निश्चयवाचक सर्वनाम (जैसे 'वे' और 'ने') सीधे संज्ञा के साथ प्रयुक्त नहीं हो सकता। उसके और संज्ञा के बीच हमेशा एक मापक शब्द का प्रयोग होना चाहिए। उदाहरण के लिए, हम 'इ<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>' या 'ने<sup>३</sup> इ<sup>३</sup> च्' नहीं कह सकते क्योंकि 'इ<sup>१</sup>' और 'ने<sup>३</sup>' के बाद एक मापक शब्द आना चाहिए। जैसे, इ<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> और ने<sup>३</sup> क इ<sup>३</sup> च्।



४-४ निश्चयवाचक सर्वनाम चे<sup>४</sup> और ने<sup>४</sup> : निश्चयवाचक सर्वनाम ऐसे प्राणियों अथवा वस्तुओं को सूचित करता है जिनका संकेत पहले दिया गया हो। इन शब्दों का प्रयोग करते समय निम्न-लिखित बातें ध्यान में रखनी चाहिए :

१. यदि किसी मापक शब्द के पहले कोई निश्चयवाचक सर्वनाम और अंक आये तो निश्चयवाचक सर्वनाम अंक के पहले रखना चाहिए। जैसे :

था<sup>१</sup> याव्<sup>४</sup> चे<sup>४</sup> सान्<sup>१</sup> क पि<sup>३</sup> वह इन तीन कलमों को चाहता है। (उदाहरण माला ३ देखिए।)

२. मापक शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम या अंक के साथ सीधे जोड़ दिया जाता है। जैसे :

चे <sup>४</sup> क पि <sup>३</sup>	यह कलम
ने <sup>४</sup> क रन् <sup>३</sup>	वह आदमी
सान् <sup>१</sup> पन् <sup>३</sup> षू <sup>१</sup>	तीन आदमी

यदि कोई अंक या निश्चयवाचक सर्वनाम न हो तो संज्ञा के पहले कोई मापकशब्द नहीं रह सकता। उदाहरण के लिए हम यह कभी नहीं कह सकते कि 'क<sup>४</sup>रन्<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup>'।

३. कुछ ऐसी संज्ञाएं भी हैं जिनके अंदर खुद ही मापक शब्द सी प्रकृति अथवा कार्य मौजूद रहता है, इसलिए उनके पहले अंक या निश्चयवाचक सर्वनाम होते हुए भी मापक शब्द लगाने की जरूरत नहीं होती। जैसे 'इ<sup>४</sup> न्येन्<sup>३</sup>' (एक साल) (पाठ १३ देखिए) और 'चे<sup>४</sup>ख<sup>४</sup>' (यह पाठ)।

४-५ प्रश्नार्थक शब्द : पिछले पाठों में हम लोग तीन प्रकार

के प्रश्नार्थक वाक्य सीख चुके हैं (पाठ १) । अब हम प्रश्नवाचक सर्वनाम के प्रयोग से बने हुए वाक्यों का विवेचन करेंगे । 'नै' और 'चे' ऐसे दो सर्वनाम हैं । इनका प्रयोग करते समय दो बातें ध्यान में रखनी चाहिए ।

वाक्य में प्रश्नवाचक सर्वनाम का प्रयोग करके प्रश्न किया जाता है । इसलिए जिस स्थान पर उत्तर अपेक्षित हो उसी स्थान पर प्रश्नवाचक सर्वनाम रखना चाहिए । जैसे :—

नि <sup>३</sup> याव् <sup>४</sup> नै <sup>३</sup> क पि <sup>३</sup>	तुम कौन सा कलम चाहते हो ?
वो <sup>३</sup> याव् <sup>४</sup> चे <sup>४</sup> क पि <sup>३</sup>	मैं इस कलम को चाहता हूँ ।
नि <sup>४</sup> माय् <sup>३</sup> चि <sup>३</sup> पन् <sup>३</sup> षू <sup>३</sup> ?	तुम कितनी किताबें खरीदोगे ?
वो <sup>३</sup> माय् <sup>३</sup> सान् <sup>३</sup> पन् <sup>३</sup> षू <sup>३</sup> ।	मैं तीन किताबें खरीदूंगा ।
नै <sup>३</sup> पन् <sup>३</sup> षू <sup>३</sup> हाव् <sup>३</sup> ?	कौन सी किताब अच्छी है ?
चे <sup>४</sup> पन् <sup>३</sup> षू <sup>३</sup> हाव् <sup>३</sup> ।	यह किताब अच्छी है ।

ऊपर के वाक्यों में एक ही शब्द 'नै' दो भिन्न-भिन्न स्थानों पर यानी उद्देश्य और विधेय के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है ।

४-६ लुप्त संज्ञा : यदि संज्ञा द्वारा सूचित प्राणी अथवा वस्तु का उल्लेख संदर्भ में स्पष्ट रूप से पहले ही किया जा चुका हो तो अंक या निश्चयवाचक सर्वनाम तथा मापक शब्द के बाद आने वाली संज्ञा छोड़ी जा सकती है । जैसे :

नि <sup>३</sup> माय् <sup>३</sup> नै <sup>३</sup> क पि <sup>३</sup> ?	तुम कौन सा कलम खरीदोगे ?
वो <sup>३</sup> माय् <sup>३</sup> चे <sup>४</sup> क ।	मैं यह कलम खरीदूंगा ।
नि <sup>३</sup> याव् <sup>४</sup> चि <sup>३</sup> क पि <sup>३</sup> ?	तुम कितने कलम चाहते हो ?
वो <sup>३</sup> याव् <sup>४</sup> ऊ <sup>३</sup> क ।	पाँच । (अथवा मैं पाँच कलम चाहता हूँ ।)

४-७ विशेषण : विशेषण का विधेय के रूप में प्रयोग हम पहले ही सीख चुके हैं (पाठ १) । विशेषण किसी प्राणी या वस्तु का



रूप प्रगट करता है। अतः यह विशेष्य की विशेषता बताने के लिए भी प्रयुक्त होता है, जैसे, 'ता<sup>२</sup> च्चो<sup>१</sup> च्' (बड़ी मेज), 'श्याव्<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> च्' (छोटी कुर्सी), 'हाव्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup>' (अच्छा आदमी), 'हाव्<sup>३</sup> फड्<sup>३</sup>यौ' (अच्छा मित्र) इत्यादि।

४-८ क्रिया विशेषण (क्रि० वि०) ख<sup>३</sup> षु : क्रिया विशेषणों का प्रयोग क्रियापद के पहले और कर्त्ता के बाद होता है अर्थात् इनका स्थान विधेय में होता है, 'हन्<sup>३</sup>', थाय्<sup>३</sup>, 'तौ<sup>१</sup>', 'ये<sup>३</sup>' आदि इन्हीं क्रिया विशेषणों में से है। लेकिन कुछ क्रिया विशेषण ऐसे होते हैं जो क्रियापद के पहले भी प्रयुक्त होते हैं और वाक्य के कर्त्ता के पहले भी। ख<sup>३</sup> षु उन्हीं क्रिया विशेषणों में से एक है। जैसे :

वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup> ख<sup>३</sup> षु था<sup>१</sup> मै<sup>३</sup>यौ छ्येन्<sup>३</sup>

इस वाक्य को हम ऐसे भी लिख सकते हैं : 'वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup>, था<sup>१</sup> ख<sup>३</sup> षु मै<sup>३</sup>यौ छ्येन्<sup>३</sup>

४-९ विशेषण के रूप में सर्वनाम और संज्ञा : कुछ संज्ञाएं तथा सर्वनाम जिनका प्रयोग विशेषण के समान किया जाता है, अपने कर्त्ताओं के (अर्थात् केंद्रीय शब्दों के) इतने अखण्डनीय भाग होते हैं कि वे अब स्थायी शब्दसमूह बन गए हैं। ऐसी सूरत में किसी सहायक शब्द की जरूरत नहीं होती। जैसे, 'चुड्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup>' (चीनी आदमी, चीन का वासी) 'वो<sup>३</sup> फड्<sup>३</sup>यौ (मेरा मित्र), 'था<sup>१</sup>-मन् फड्<sup>३</sup> यौ' (उनके मित्र)।

४-१० 'इ<sup>३</sup>' का स्वर : पु<sup>३</sup> की तरह अंक 'इ<sup>३</sup>' का स्वर बदलता रहता है:

१-अगर वह अकेले हो, या उस बड़ी संख्या में हो जिसका हर इकाई नाम नहीं पढ़ा जाता, जैसे १६४०,०१५२१, या किसी बड़ी संख्या के अंत में हो, जैसे, अठ्<sup>३</sup> षुइ<sup>३</sup>, तो उसका उच्चारण पहले स्वर में होता है।

२- अगर उसके बाद पहले, दूसरे या तीसरे स्वर का कोई



शब्दांश आए या शून्य स्वर का कोई शब्दांश आए जो मूलतः पहले, दूसरे या तीसरे स्वर का हो, तो उसका उच्चारण चौथे स्वर में होता है। जैसे, इ<sup>१</sup>पन्<sup>३</sup>षू<sup>१</sup> (एक किताब), इ<sup>१</sup> चाङ्<sup>१</sup>चृ<sup>३</sup> (एक ताव कागज़)।

३. अगर उसके बाद चौथे स्वर का कोई शब्दांश आए या शून्य स्वर का कोई शब्दांश आए जो मूलतः चौथे स्वर का हो, तो 'पु<sup>१</sup>' की तरह उसका उच्चारण दूसरे स्वर में होगा। जैसे 'इ<sup>१</sup>क रन्<sup>३</sup>' ('क' मूलतः चौथे स्वर का है)। जब संख्या के ऊपर जोर दिया जाता है तब स्वर का यह परिवर्तन अधिक स्पष्ट होता है।

मापक शब्दयुक्त इ<sup>१</sup> का अर्थ 'एक' है, न कि 'एक कोई' और इस अर्थ में इस पर पढ़ते समय जोर नहीं दिया जाता। जैसे : 'वो<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> इ<sup>१</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>' (मैं एक किताब खरीदना चाहता हूँ)।

"एक" के अर्थ में 'इ<sup>१</sup>क' की 'इ<sup>१</sup>' छोड़ी जा सकती है और केवल 'क' से ही 'इ<sup>१</sup>' (एक) का अर्थ समझा जाएगा।

४-११ 'छि' और 'पा' के स्वर : 'छि' और 'पा' भी पहले स्वर में हैं; लेकिन जब उनके बाद चौथे स्वर का कोई शब्दांश आए या शून्य स्वर का कोई शब्दांश आए जो मूलतः चौथे स्वर का हो, तो उनका उच्चारण दूसरे स्वर में होता है। जैसे : 'छि<sup>१</sup>क रन्<sup>३</sup>' (सात आदमी) 'ति<sup>१</sup> पा<sup>३</sup> ख<sup>३</sup>' (आठवाँ पाठ)। अगर उनके बाद पहले, दूसरे या तीसरे स्वर का कोई शब्दांश आए तो उनका स्वर नहीं बदलता। जैसे : 'छि<sup>१</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>' (सात किताबें), 'पा<sup>१</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>' (आठ किताबें)। 'पु<sup>१</sup>' और 'इ<sup>१</sup>' की तरह 'छि<sup>१</sup>' और 'पा<sup>१</sup>' पर जोर देने पर स्वर का परिवर्तन अधिक स्पष्ट होता है।

## पाठ-५

क—निन्<sup>२</sup> क्वै<sup>४</sup> शिङ्<sup>४</sup> ?

ख—वो<sup>३</sup> शिङ्<sup>४</sup> वाङ्<sup>३</sup> ।

निन्<sup>२</sup> क्वै<sup>४</sup> शिङ्<sup>४</sup> ?

क—वो<sup>३</sup> शिङ्<sup>४</sup> चाङ्<sup>३</sup> ।

नेक<sup>४</sup> रन्<sup>३</sup> शिङ्<sup>४</sup> ष<sup>३</sup>म्मा ?

ख—था<sup>१</sup> शिङ्<sup>४</sup> याङ्<sup>३</sup> ।

क—था<sup>१</sup> ष<sup>४</sup> त<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> रन्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> ष<sup>४</sup> ?

ख—पु<sup>३</sup> ष<sup>४</sup>, था<sup>१</sup> ष<sup>४</sup> ईङ्<sup>४</sup> क्वो<sup>२</sup> रन्<sup>३</sup>

क—वाङ्<sup>३</sup> श्येन्<sup>१</sup> षङ्<sup>३</sup>, निन्<sup>२</sup> ये<sup>३</sup> ष<sup>४</sup>

ईङ्<sup>४</sup> क्वो<sup>२</sup> रन्<sup>३</sup> मा<sup>१</sup> ?

ख—पु<sup>३</sup> ष<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup> ष<sup>४</sup> फा<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> रन्<sup>३</sup>

क—नि<sup>३</sup>मन् यो<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> यौ ?

ख—वो<sup>३</sup>मन् यो<sup>३</sup>सान्<sup>१</sup> क श्याव्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup>-

च्<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> क नान्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च्<sup>३</sup> ई<sup>३</sup> क

न्य<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च्<sup>३</sup> ।

क—नि<sup>३</sup>मन् श्याव्<sup>३</sup> च्ये<sup>३</sup> च्याव्<sup>३</sup> ष<sup>३</sup>म्मा ?

ख—था<sup>१</sup> च्याव्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> षङ्<sup>३</sup>

क—वाङ्<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> मा<sup>१</sup> ?

ख—हन<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup>, श्ये<sup>४</sup>-श्ये

क हाय्<sup>३</sup> च्<sup>३</sup> मन् तौ<sup>१</sup> हाव्<sup>३</sup> मा

ख—ती<sup>१</sup> हाव्<sup>३</sup>

आपका शुभनाम (कुलनाम) ?

मेरा नाम वाङ् है ?

आपका शुभनाम ?

मेरा नाम चाङ् है ।

उस आदमी का नाम क्या है ?

उसका नाम याङ् है ।

क्या वह जर्मनी निवासी है ?

नहीं, वह अंग्रेज है ।

मि० वाङ्, क्या आप भी

इंग्लैंडवासी हैं ?

नहीं, मैं फ्रांस का निवासी हूँ ।

क्या आप बाल-बच्चेदार हैं ?

हमारे तीन बच्चे हैं, दो लड़के

हैं और एक लड़की ।

आपकी पुत्री का नाम क्या है ?

उसका नाम मेइषङ् है ।

श्रीमती वाङ्, कैसी हैं ?

वे बड़े मजे में हैं । धन्यवाद ।

बच्चे सारे कैसे हैं ?

सभी सकुशल है ।

## नये शब्द

श्येन् <sup>१</sup> -षङ् (सं०)	महाशय, साहबजी, अध्यापक, भद्र- पुरुष, सज्जन, श्रीमानजी, पति के लिए शिष्ट प्रयोग ।
थाय् <sup>२</sup> -थाय् (सं०)	महिला, साहिबा, महोदया, बीबी, श्रीमती, पत्नी के लिए शिष्ट प्रयोग ।
श्याव् <sup>३</sup> च्ये (सं०)	कुमारी, पुत्री या किसी भी लड़की के लिए शिष्ट प्रयोग ।
(श्याव् <sup>३</sup> ) हाय् <sup>३</sup> च् (सं०)	बच्चा
शिङ् <sup>४</sup> (सं०)	कुलनाम
षै <sup>२</sup> (सं०)	कौन
षम् <sup>२</sup> (मा) — षम्मा (सं०)	क्या
तुङ् <sup>१</sup> शि (सं०)	वस्तु, चीज, विषय
क्वो <sup>२</sup> (सं०)	देश, राज्य
नान् <sup>२</sup> (सं०, वि०)	पुरुषसम्बन्धी, पुरुष (पुल्लिंग)
न्यु <sup>३</sup> (सं० वि०)	स्त्री, स्त्रीजातिसम्बन्धी (स्त्रीलिंग)
पृ <sup>४</sup> (योजक क्रि०)	होना (है, हैं, हूँ)
च्याव् <sup>४</sup> (योजक क्रि०)	नाम होना
शिङ् <sup>४</sup> (योजक क्रि०)	का (कुल) नाम
वेन् <sup>४</sup> (क्रि०)	पूछना
चृ <sup>१</sup> ताव् (क्रि०)	जानना
क्वै <sup>४</sup> शिङ् <sup>४</sup>	आपका शुभ (कुल) नाम ?

## उदाहरणमाला

(क) — योजक युक्त वाक्य (अथवा समीकरणात्मक वाक्य)



नमूने :—

सर्व० यो० क्रि० सं०।सर्व०

था<sup>१</sup>      षू<sup>५</sup>      षै<sup>२</sup>      वह (वे) कौन हैं (हैं) ?  
 चे<sup>५</sup> (क)      षू<sup>५</sup>      ष<sup>२</sup>म्मा      यह क्या है ?  
 था<sup>१</sup>      शिङ्<sup>५</sup>      ष<sup>२</sup>म्मा      उसका (कुल) नाम क्या है ?  
 ने<sup>५</sup> (क)      च्याव्<sup>५</sup>      ष<sup>२</sup>म्मा      उस (चीज) का नाम क्या है ?  
 (अथवा वह क्या है)

१. निन्<sup>२</sup> क्वै<sup>५</sup> शिङ्<sup>५</sup> ? वो<sup>३</sup> शिङ्<sup>५</sup>      आपका शुभनाम ? मेरा नाम  
 वाङ्<sup>२</sup>      वाङ्<sup>२</sup> है । (अथवा मैं वाङ्<sup>२</sup> हूँ ।)
२. ने<sup>५</sup>क रन्<sup>२</sup> षू<sup>५</sup>षै<sup>२</sup> ? था<sup>१</sup> षू<sup>५</sup>      वह आदमी कौन है ? वह मि०  
 वाङ्<sup>२</sup> श्येन्<sup>५</sup>षङ्<sup>५</sup> ।      वाङ्<sup>२</sup> (श्री वाङ्<sup>२</sup>) है ।
३. ने<sup>५</sup>क रन्<sup>२</sup> षू<sup>५</sup> नि<sup>३</sup>फङ्<sup>२</sup>यौ ।      कौन आदमी तुम्हारा मित्र है ?  
 ने<sup>५</sup>क रन्<sup>२</sup> षू<sup>५</sup> वो<sup>३</sup>फङ्<sup>२</sup>यौ ।      वह आदमी मेरा मित्र है ।
४. ने<sup>५</sup>क रन्<sup>२</sup> षू<sup>५</sup> ष<sup>२</sup>म्मा रन्<sup>२</sup> ?      वह आदमी कौन है ? वह  
 था<sup>१</sup> षू<sup>५</sup> चाङ्<sup>२</sup> श्येन्<sup>५</sup>षङ्<sup>५</sup> ।      चाङ्<sup>२</sup> साहब है ।
५. था<sup>१</sup> शिङ्<sup>५</sup> ष<sup>२</sup>म्मा ? था<sup>१</sup>      उसका नाम क्या है ? उसका  
 शिङ्<sup>५</sup> ली<sup>३</sup>      नाम ली है ।
६. था<sup>१</sup> षू<sup>५</sup> मै<sup>३</sup>क्वो<sup>२</sup> रन्<sup>२</sup> । षू<sup>५</sup>      वह अमरीकी आदमी है । सच ?  
 मा ? षू<sup>५</sup> ।      हाँ ।
७. था<sup>१</sup> पु<sup>२</sup> षू<sup>५</sup> फ्रा<sup>३</sup>क्वो<sup>२</sup> रन्<sup>२</sup>मा ?      क्या वह फ्रांस देश का निवासी  
 था<sup>१</sup> पु<sup>२</sup> षू<sup>५</sup> फ्रा<sup>३</sup>क्वो<sup>२</sup> रन्<sup>२</sup> ।      नहीं है ? नहीं, वह फ्रांस देश का  
 निवासी नहीं है ।

(ख) निश्चयवाचक शब्दयुक्त संज्ञा, सर्वनाम के साथ

१. वो<sup>३</sup> ने<sup>५</sup>क फङ्<sup>२</sup>यौ शिङ्<sup>५</sup> ली<sup>३</sup>      मेरे उस मित्र का नाम ली है ।

२. था<sup>१</sup> ने<sup>१</sup>क<sup>१</sup> प्याव<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> हाव<sup>३</sup> उसकी वह कलाई घड़ी बहुत  
खान्<sup>४</sup> सुन्दर है ।
३. वो<sup>३</sup> मन चे<sup>१</sup>क हाय<sup>२</sup>च् हन्<sup>३</sup> हमारा यह बच्चा किताब पढ़ना  
शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>१</sup> खान्<sup>४</sup> षू<sup>१</sup> बहुत पसन्द करता है ।
४. वो<sup>३</sup> पु<sup>१</sup>शि<sup>३</sup> ह्वान्<sup>१</sup> वो<sup>३</sup> चे<sup>१</sup>क पि<sup>३</sup> मेरा यह कलम मुझे पसंद नहीं है ।
५. नि<sup>३</sup> याव<sup>४</sup> पु<sup>२</sup> याव<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> वो<sup>३</sup> तुम मेरी यह किताब देखना  
चे<sup>१</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> चाहते हो या नहीं ?
६. वो<sup>३</sup>मन् चे<sup>१</sup>क च्वो<sup>१</sup>च् थाय<sup>४</sup> श्याव<sup>४</sup> हमारी यह मेज बहुत छोटी है ।
७. नि<sup>३</sup>मन् चे<sup>१</sup> ल्याङ्क इ<sup>३</sup>च् हन्<sup>३</sup> तुम्हारी ये दोनों कुर्सियाँ बहुत  
हाव<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> । क्वे<sup>४</sup> पु<sup>२</sup> क्वे<sup>४</sup> ? सुन्दर हैं । क्या वे कीमती हैं ?

### द्रुत-पाठ

- |  |   |
|--|---|
| चे <sup>१</sup> षू <sup>४</sup> ष <sup>२</sup> म्मा ?                          | था <sup>१</sup> षू <sup>४</sup> षै <sup>२</sup> ?   |
| चे <sup>१</sup> क षू <sup>४</sup> ष <sup>२</sup> म्मा ?                        | ने <sup>१</sup> क रन् <sup>२</sup> षू <sup>४</sup> षै <sup>२</sup> ?                                  |
| चे <sup>१</sup> क तुङ्शि षू <sup>४</sup> ष <sup>२</sup> म्मा ?                 | षू <sup>४</sup> चाङ् श्येन् <sup>१</sup> षङ्  |
| षू <sup>४</sup> पि <sup>३</sup>  | था <sup>१</sup> षू <sup>४</sup> चाङ् श्येन् <sup>१</sup> षङ्  |
| चे <sup>१</sup> षू <sup>४</sup> पि <sup>३</sup>                                | था <sup>१</sup> षू <sup>४</sup> नै <sup>३</sup> क्वो <sup>२</sup> रन् <sup>२</sup> ?                  |
| चे <sup>१</sup> षू <sup>४</sup> चुङ्क्वो <sup>२</sup> पि <sup>३</sup>          | था <sup>१</sup> षू <sup>४</sup> चुङ्क्वो <sup>२</sup> रन् <sup>२</sup> ।                              |
| चे <sup>१</sup> क षू <sup>४</sup> चुङ्क्वो <sup>२</sup> पि <sup>३</sup>        | था <sup>१</sup> पु <sup>२</sup> षू <sup>४</sup> ऋ <sup>४</sup> पन् <sup>३</sup> रन् <sup>२</sup> मा ? |
| चे <sup>१</sup> क तुङ्शि षू <sup>४</sup> चुङ्क्वो <sup>२</sup> पि <sup>३</sup> | चाङ् श्येन् <sup>१</sup> -षङ् पु <sup>२</sup> षू <sup>४</sup> ऋ <sup>४</sup> पन् <sup>३</sup>         |
|  | रन् <sup>२</sup> मा ?   |
| चे <sup>१</sup> क तुङ्शि षू <sup>४</sup> चुङ्क्वो <sup>२</sup>                 | चाङ् श्येन् <sup>१</sup> षङ् षू <sup>४</sup> चुङ्क्वो <sup>२</sup>                                    |
| पि <sup>३</sup> मा ? षू <sup>४</sup>   | रन् <sup>२</sup> ।  |





चीनी क्रियाओं का काल या वचन के साथ कोई परिवर्तन (यानी धातुरूप) नहीं होता। अतः एकवचन वाचक बहुवचन वाचक उभय प्रकार के शब्दों के साथ 'षू' अपरिवर्तित रूप से ही प्रयुक्त होता है; जैसे,

वो <sup>३</sup> षू	मैं हूँ
वो <sup>३</sup> मन् षू	हम हैं।
नि <sup>३</sup> षू	तुम हो।
नि <sup>३</sup> मन् षू	आप (लोग) हैं।
था <sup>१</sup> षू	वह (पु०, स्त्री०, नपु०) है।
था <sup>१</sup> मन् षू	वे (पु०, स्त्री०, नपु०) है।
वो <sup>३</sup> षू रयेन्'षङ्	मैं अध्यापक हूँ।
वो <sup>३</sup> मन् षू रयेन्'षङ्	हम अध्यापक हैं।
नि <sup>३</sup> षू रयेन्'षङ्	तुम अध्यापक हो।
था <sup>१</sup> षू रयेन्'षङ्	वह अध्यापक है।

यह ख्याल में रखना चाहिए कि 'षू' जिसे हिन्दी में 'है', 'हूँ', 'हो', या 'हैं' के रूप में अनुवाद किया जाता है चीनी भाषा में विधेय या कर्म के पहले प्रयोग किया जाता है। लेकिन हिन्दी में 'है' 'हूँ' 'हैं' इत्यादि वाक्य के अन्त में लगते हैं। "होना" अंग्रेजी "टू बी" का अर्थ है। इसके अनेक कार्यों में से एक है योजक के रूप में प्रयुक्त होता, लेकिन चीनी 'षू' का केवल योजक के रूप में ही प्रयोग होता है। जैसे, 'वह यहाँ है' अंग्रेजी में 'ही इज हियर' होगा लेकिन चीनी भाषा में "था<sup>१</sup> चाय् च'ळ" होगा।

५-३ पुरुषवाचक-निश्चयवाचक शब्दयुक्त संज्ञा के साथ सर्वनाम निश्चयवाचक शब्द संज्ञा के साथ जोड़ा जाता है, यह हम जान चुके हैं (पाठ ४, व्याकरण नोट ४-४)। इस शब्द समूह के साथ किसी और पुरुषवाचक सर्वनाम या संज्ञा का भी प्रयोग हो सकता

है। ऐसे पुरुषवाचक सर्वनाम या संज्ञा को हमेशा निश्चयवाचक सर्वनाम से पहले आना चाहिए। ऐसा पुरुषवाचक सर्वनाम या संज्ञा विशेषण का स्थान लेता है; और कर्त्ता (अर्थात् केन्द्रीय शब्द) के साथ इसका सम्बन्ध प्रायः स्वामित्वबोधक या अन्य प्रकार का सम्बन्धबोधक होता है; जैसे,

वो<sup>३</sup> चे<sup>१</sup>क पी<sup>३</sup> मेरी यह कलम  
था<sup>१</sup>मन् ने<sup>१</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>क श्याव्<sup>३</sup>च्ये उनकी वे दो कन्याएँ  
श्येन्<sup>१</sup>षङ् (त) चे<sup>१</sup> ईपन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> अध्यापक महोदय की किताब।

५-४ क्वै<sup>१</sup> शिङ्<sup>१</sup> : 'क्वै<sup>१</sup> शिङ्<sup>१</sup>' 'नि<sup>३</sup> शिङ्<sup>१</sup> ष<sup>३</sup>म्मा' का शिष्ट प्रयोग है। 'निन्<sup>३</sup> क्वै<sup>१</sup> शिङ्<sup>१</sup>', 'श्येन्<sup>१</sup>षङ् क्वै<sup>१</sup> शिङ्<sup>१</sup>' दोनों एक ही अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। जवाब में अपना कुल नाम बताना चाहिए। 'नि<sup>३</sup> च्याव्<sup>१</sup> ष<sup>३</sup>म्मा' या 'नि<sup>३</sup> च्याव्<sup>१</sup> ष<sup>३</sup>म्मा मिङ्<sup>३</sup>च्' बच्चों या अपने से छोटे से अथवा समान वय या पद के आदमी से जिनके साथ नियम निष्ठता का संबंध नहीं है, उनके निजी नाम पूछने के लिए प्रयुक्त होता है। इसके जवाब में पूरा नाम भी बताया जा सकता है।

५-५ निन्<sup>३</sup> : 'निन्<sup>३</sup>', 'नि<sup>३</sup>' का आदरसूचक रूप है। दोनों ही मध्यम पुरुष एकवचन हैं। जब हम किसी व्यक्ति के प्रति सम्मान या आदर प्रगट करना चाहते हैं तो 'निन्<sup>३</sup>' का प्रयोग करते हैं। साधारणतया इसके बाद बहुवचनवाचक 'मन्' का प्रयोग नहीं होता।

५-६ कुलनाम (अथवा उपनाम) : चीनी भाषा में कुलनाम के बाद ही पदवी (यानी श्री, श्रीमान्, श्रीमती, डा०, आचार्य आदि) का प्रयोग होता है; जैसे, 'याङ्<sup>३</sup> श्येन्<sup>१</sup>षङ् (श्री या मि. याङ्)', 'वाङ्<sup>३</sup> थाय्<sup>१</sup> थाय् (श्रीमती या मिसेज वाङ्)', 'चाङ्<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup> च्ये' (कुमारी चाङ्)। हिन्दी में भी कुछ उपाधि-शब्द

कुलनाम या नाम के बाद भी प्रयुक्त होते हैं। जैसे, सिंहजी, चौधरी साहब, इन्दिराजी, इत्यादि।

५-७ विभिन्न देशों के नाम : चीनी भाषा में देश का नाम उन संबद्ध देशों का पहला शब्दांश लेकर उनके सदृश शब्दांश से बनाये जाते हैं। अक्सर ये नाम एक ही शब्दांश के होते हैं। और इसलिए उनके अन्त में 'क्वो' (देश) इस शब्द का प्रयोग होता है। जैसे,

अमरीका	मै <sup>३</sup> क्वो <sup>२</sup>
इंग्लैंड	ईङ् <sup>१</sup> क्वो <sup>२</sup>
फ्रांस	फ्रा <sup>३</sup> क्वो <sup>२</sup>
जर्मनी (द्युत्स ल्यांङ्)	त <sup>३</sup> क्वो <sup>२</sup>

अगर किसी देश का नाम दो शब्दांशों से बना हो तो अन्त में 'क्वो' का प्रयोग नहीं होता जैसे; 'भारत' (सिन्धु-हिन्दु-इन्तु) 'इन्<sup>४</sup> तु<sup>४</sup>', 'सोवियत देश' (रूस देश) 'सु<sup>१</sup> ल्येन्<sup>३</sup>' (यू. एस. एस. आर. का अनुवाद), 'चीन देश' (चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>२</sup>) 'चुङ्<sup>१</sup>' (मध्य, बीच) और 'क्वो' (देश) से बना हुआ है। और 'जापान' (क्व<sup>४</sup> पन्<sup>३</sup>) 'क्व' (सूर्य) और 'पन्<sup>३</sup>' (मूल, जड़) से बना हुआ है।



## पाठ-६

चाङ् वाङ् श्येन् षङ्, नि यौ वाङ् साहब, आपके पास पैसे हैं  
छयेन् मै यौ ? या नहीं ?

वाङ् यौ । नि याव् त्वो षाव् ? हैं । आपको कितने चाहिए ? दो  
ल्याङ् ख्वाय् छयेन् कौ डालर पर्याप्त हैं या नहीं ?  
पू कौ ?

चाङ् नि यौ उ ख्वाय् मै यौ ? क्या आपके पास पाँच डालर हैं ?  
वो याव् माय् इ चाङ् मैं एक चित्र खरीदना चाहता  
हूँ । हूँ ।

वाङ् कै नि ष्ट ख्वाय् छयेन् । मैं आपको दस डालर दे रहा हूँ ।  
छिङ् नि माय् ल्याङ् कृपया दो चित्र खरीदिये । मैं  
चाङ्, वो ये याव् इ चाङ् भी एक प्रति चाहता हूँ । (या  
मुझे भी एक प्रति चाहिए ।

### लो की दुकान पर चाङ् साहब

चाङ् लो श्येन् षङ्, नि मन् माय् लो साहब, क्या आप चित्र  
हूँ पु माय् ? बेचते हैं ?

लो माय्, नि याव् षम्मा हाँ, हम बेचते हैं । आपको कैसा  
हूँ ? चित्र चाहिए ?

चाङ् नि मन् यौ षम्मा हूँ ? आपके पास कौन-से चित्र हैं ?

- ली<sup>१</sup> चुङ्<sup>१</sup>क्वो<sup>२</sup> ह्वाळ<sup>३</sup> मै<sup>४</sup>क्वो<sup>३</sup> हमारे पास चीनी और अमरीकी  
ह्वाळ<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup>मन् तौ<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup>, चित्र दोनों हैं। यह ठीक है या  
चे<sup>४</sup>चाङ् हाव<sup>३</sup> पु<sup>४</sup>हाव<sup>३</sup> नहीं ?
- चाङ्<sup>१</sup> त्वो<sup>१</sup>षाव् छयेन्<sup>२</sup> ? इसकी कीमत क्या है ?
- ली<sup>३</sup> ल्यु<sup>४</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> छयेन्<sup>३</sup> । छः डालर ।
- चाङ्<sup>१</sup> ल्यु<sup>४</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> छयेन्<sup>३</sup> थाय्<sup>४</sup> ववै<sup>४</sup> । छः डालर बहुत ज्यादा है ।
- ली<sup>३</sup> निन्<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> त्वो<sup>१</sup>-षाव् छयेन्<sup>२</sup> आप कितना देंगे ?
- चाङ्<sup>१</sup> वो<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> चाङ्<sup>१</sup> । मुझे दो चाहिए, दो के लिए मैं  
ल्याङ्<sup>३</sup> चाङ् वो<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> आपको नौ डालर दूंगा ।  
च्यु<sup>३</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> ।
- ली<sup>३</sup> पृ<sup>२</sup>ख्वाय्<sup>४</sup> छयेन्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> दस डालर में आपको चाहिए  
पु<sup>२</sup> याव्<sup>४</sup> । तो लीजिए ।
- चाङ्<sup>१</sup> हाव<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> पृ<sup>२</sup>ख्वाय्<sup>४</sup> छयेन्<sup>३</sup> ठीक है, लीजिए दस डालर ।
- ली<sup>३</sup> चाय्<sup>४</sup> च्येन्<sup>४</sup> नमस्ते
- चाङ्<sup>१</sup> चाय्<sup>४</sup> च्येन्<sup>४</sup> नमस्ते (फिर मिलेंगे)

### नये शब्द

इ<sup>२</sup> कुङ्<sup>४</sup> (कि० वि०)

च्यु<sup>४</sup> (कि० वि०)

पाय्<sup>३</sup> (संख्या)

छयेन्<sup>१</sup> (संख्या)

वान्<sup>४</sup> (संख्या)

लिङ्<sup>३</sup> (संख्या)

पान्<sup>४</sup> (संख्या)

त्वो<sup>१</sup> षाव् (संख्या)

कुल

केवल, फौरन, अभी

सौ

हजार

दस हजार

शून्य (नोट देखिये)

आधा

कितना

ख्वाय्<sup>४</sup> (मा०)

माव्<sup>२</sup> (मा०)

फन्<sup>१</sup> (मा०)

चाङ्<sup>१</sup> (मा०)

चृ<sup>३</sup> (सं०)

ह्वाळ<sup>४</sup> (सं०)

इ<sup>१</sup>त्याळ<sup>३</sup> (मा०)

कौ<sup>४</sup> (वि०)

माय्<sup>४</sup> (क्रि०)

चाय्<sup>४</sup> च्येन्<sup>४</sup>

हाव्<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> हाव्<sup>३</sup>

डालर

डालर का एक दशांश, दस सेंट

सेन्ट

कागज, चित्र, मेज आदि के लिए

मापक शब्द

कागज

चित्र, तस्वीर

थोड़ा सा

काफी, पर्याप्त, यथेष्ट

बेचना

नमस्ते (अथवा फिर मिलेंगे)

ठीक है या नहीं (ठीक है न ?)

(इसके बारे में आप क्या कहते हैं ? ऐसा ही होगा आदि।)

### उदाहरणमाला

(क) —पैसे की गिनती १ से १०० डालर तक

डालर	दस सेंट	सेंट
अंक मापक संज्ञा	अंक मापक संज्ञा	अंक मापक संज्ञा
इ <sup>१</sup> ख्वाय् <sup>४</sup> छयेन् <sup>४</sup>	इ <sup>४</sup> माव् <sup>२</sup> छयेन् <sup>२</sup>	इ <sup>४</sup> फन् <sup>१</sup> छयेन् <sup>२</sup>
ल्याङ् <sup>३</sup> ख्वाय् <sup>४</sup> छयेन् <sup>१</sup>	ल्याङ् <sup>३</sup> माव् <sup>२</sup> छयेन् <sup>२</sup>	ल्याङ् <sup>३</sup> फन् <sup>१</sup> छयेन् <sup>२</sup>
सान् <sup>१</sup> " "	सान् <sup>१</sup> " "	सान् <sup>१</sup> " "
स्च् <sup>४</sup> " "	स्च् <sup>४</sup> " "	स्च् <sup>४</sup> " "
उ <sup>३</sup> " "	उ <sup>३</sup> " "	उ <sup>३</sup> " "
ल्यु <sup>४</sup> " "	ल्यु <sup>४</sup> " "	ल्यु <sup>४</sup> " "
छि <sup>१</sup> " "	छि <sup>१</sup> " "	छि <sup>१</sup> " "



पा <sup>१</sup>	खाय् <sup>४</sup>	छयेन् <sup>३</sup>	पा <sup>१</sup>	माव् <sup>२</sup>	छयेन् <sup>२</sup>	पा <sup>१</sup>	फन् <sup>१</sup>	छयेन् <sup>२</sup>
च्यु <sup>३</sup>	"	"	च्यु <sup>३</sup>	"	"	च्यु <sup>३</sup>	"	"
षृ <sup>२</sup>	"	"	षृ <sup>२</sup>	"	"	षृ <sup>२</sup>	"	"
चि <sup>३</sup>	"	"	चि <sup>३</sup>	"	"	चि <sup>३</sup>	"	"

डालर

दस सेंट

सेंट

अंक मापक संज्ञा अंक मापक संज्ञा अंक मापक संज्ञा

पान् <sup>४</sup>	खाय् <sup>४</sup>							.५०	
इ <sup>२</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	लिङ् <sup>३</sup>	—	—	उ <sup>३</sup>	फन् <sup>१</sup>	—	१.०५
इ <sup>२</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	इ <sup>४</sup>	माव् <sup>२</sup>	—	—	—	—	१.१०
ल्याङ् <sup>३</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	अळ <sup>४</sup>	माव् <sup>२</sup>	—	—	—	—	२.२०
सान् <sup>१</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	सान् <sup>१</sup>	माव् <sup>२</sup>	छयेन्	—	—	—	३.३०
स्च <sup>४</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	स्च <sup>४</sup>	माव् <sup>२</sup>	—	ल्यु <sup>४</sup>	फन् <sup>१</sup>	—	४.४६
उ <sup>३</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	उ <sup>३</sup>	माव् <sup>२</sup>	—	छि <sup>१</sup>	फन् <sup>१</sup>	—	५.५७
ल्यु <sup>४</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	ल्यु <sup>४</sup>	माव् <sup>२</sup>	—	पा <sup>१</sup>	फन् <sup>१</sup>	छयेन् <sup>२</sup>	६.६८
छि <sup>१</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	छि <sup>१</sup>	माव् <sup>२</sup>	—	च्यु <sup>३</sup>	फन् <sup>१</sup>	—	७.७९
पा <sup>१</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	पा <sup>१</sup>	माव् <sup>२</sup>	—	स्च <sup>४</sup>	—	—	८.८४
च्यु <sup>३</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	च्यु <sup>३</sup>	माव् <sup>२</sup>	छयेन् <sup>२</sup>	—	—	—	९.९०
षृ <sup>२</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	पान् <sup>४</sup>	—	—	—	—	—	१०.५०
षृइ <sup>२</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	—	—	—	—	—	—	११.००
षृअळ <sup>४</sup>	खाय् <sup>४</sup>	—	लीङ् <sup>२</sup>	—	—	उ <sup>३</sup>	फन् <sup>१</sup>	—	१२.०५

(ख)-१०० डालर से ऊपर के अंक

दस हजार में हजारों में सैकड़ों में दहाई में इकड़ियों में अंक

(—वान् <sup>४</sup> )	(—छयेन् <sup>३</sup> )	(—पाय् <sup>३</sup> )	(षृ <sup>२</sup> )	
इ <sup>१</sup>	पाय् <sup>३</sup>	लीङ् <sup>२</sup>	उ <sup>३</sup>	खाय् <sup>४</sup> छयेन् <sup>२</sup> १०५डा०
अळ <sup>४</sup>	पाय् <sup>३</sup>	इ <sup>१</sup>	षृ <sup>२</sup>	खाय् <sup>४</sup> २१०डा०

सान्<sup>१</sup>पाय्<sup>३</sup>अळ<sup>४</sup>पृ<sup>२</sup>पा ख्वाय्<sup>५</sup>छयेन्<sup>२</sup> ३२८डा७  
 स्च्<sup>५</sup> छयेन्<sup>१</sup> — — ख्वाय्<sup>५</sup>छयेन्<sup>२</sup> ४०००डा०  
 उ<sup>३</sup> छयेन्<sup>१</sup> लोङ्<sup>२</sup> सान्<sup>२</sup>पृ<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>५</sup>छयेन्<sup>२</sup> ५०३०डा०  
 ल्यु<sup>५</sup>छयेन्<sup>१</sup> स्च्<sup>५</sup>पाय्<sup>३</sup> लोङ्<sup>२</sup>ल्यु<sup>५</sup> ख्वाय्<sup>५</sup>छयेन्<sup>२</sup> ६४०६डा०  
 इ<sup>१</sup>वान्<sup>५</sup> — — — ख्वाय्<sup>५</sup>छयेन्<sup>२</sup> १००००डा०  
 ल्याङ्<sup>३</sup>वान्<sup>५</sup> छि<sup>१</sup>छयेन्<sup>१</sup> उ<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup> स्च्<sup>५</sup>पृ<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>५</sup>छयेन्<sup>२</sup> २७५४०डा०

(ग) — 'चि' और 'त्वो'षाव् से बने प्रश्नार्थक वाक्य

- १- चे<sup>१</sup>क मै<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> पि<sup>३</sup> त्वोषाव् इस अमरीकी कलम की क्या  
 छयेन्<sup>२</sup> ? कीमत है ?  
 पा<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>५</sup>छि<sup>१</sup> माव्<sup>२</sup> उ<sup>३</sup> ८ डालर ७५ सेन्ट
- २- नि<sup>३</sup>याव्<sup>५</sup> त्वो<sup>१</sup>षाव् इ<sup>३</sup>च्<sup>५</sup> ? आपको कितनी कुर्सियाँ  
 चाहिए ?  
 वो<sup>३</sup> च्यु<sup>५</sup> याव्<sup>५</sup> अळ<sup>४</sup> पृ<sup>२</sup>क । मुझे केवल बीस कुर्सियाँ चाहिए।
- ३- निन्<sup>२</sup> कै<sup>३</sup> त्वो<sup>१</sup>षाव् छयेन्<sup>२</sup> ? आप कितने डालर देंगे ?  
 वो<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> ल्यु<sup>५</sup> ख्वाय्<sup>५</sup> । मैं छः डालर दूंगा ।
- ४- इ<sup>२</sup>कुङ्<sup>५</sup> चि<sup>३</sup> ख्वाय्<sup>५</sup> छयेन्<sup>२</sup> ? कुल कितने डालर हुए ?  
 इ<sup>२</sup>कुङ्<sup>५</sup> छि<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>५</sup> पान्<sup>५</sup> । ७.५० डालर ।
- ५- च्वो<sup>१</sup>च्<sup>५</sup> इ<sup>३</sup>व्<sup>५</sup> इ<sup>२</sup>कुङ्<sup>५</sup> त्वो<sup>१</sup>- मेज़ और कुर्सियाँ कुल मिला-  
 पाव् छयेन्<sup>२</sup> ? कर कितने हुए ?  
 इ<sup>५</sup> पाय्<sup>३</sup> लोङ्<sup>२</sup> उ<sup>३</sup> ख्वाय्<sup>५</sup>  
 छयेन्<sup>२</sup> । १०५.०० डालर ।
- ६- ने<sup>१</sup>क ता<sup>३</sup>च्वो<sup>१</sup>च्<sup>५</sup> पृ<sup>२</sup>चि<sup>३</sup> वह बड़ी मेज़ कितने डालर की  
 पृ<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>५</sup> ? है ?  
 ल्यु<sup>५</sup>पृ<sup>२</sup> पा<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>५</sup> । ६८ डालर की ।

७- चे<sup>१</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> माय्<sup>१</sup> चि<sup>३</sup> माव्<sup>३</sup> इस किताब की कीमत क्या छयेन्<sup>३</sup> ? है ?

सान्<sup>१</sup> माव्<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> इपन्<sup>३</sup> । ३५ सेन्ट की एक ।

८- नि<sup>३</sup> याव्<sup>१</sup> माय्<sup>३</sup> त्वो<sup>१</sup>षाव् तुम कितने कागज खरीदोगे ? चाङ्<sup>१</sup> चू<sup>३</sup> ?

वो<sup>३</sup> याव्<sup>१</sup> माय्<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> पाय्<sup>३</sup> चाङ्<sup>१</sup> मैं पाँच सौ ताव चाहता हूँ ।

९- नि<sup>३</sup>मन् यौ<sup>३</sup> चि<sup>३</sup>क हाय्<sup>१</sup>चू<sup>३</sup> ? आपके कितने बच्चे हैं ? वो<sup>३</sup>मन् च्यु<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>क । सिर्फ एक ही है ।

### व्याकरण

६-१ १०० से ऊपर के अंकों की गिनती : १०० से ऊपर के अंकों में अन्त की इकाई अक्सर नहीं लिखी जाती । जैसे :

ई<sup>१</sup> पाय्<sup>३</sup> ई<sup>१</sup> (षू<sup>३</sup>) ११०

ल्याङ्<sup>३</sup> छयेन्<sup>१</sup> उ<sup>३</sup> (पाय्<sup>३</sup>) २,५००

ल्यु<sup>१</sup> वान्<sup>१</sup> पा<sup>१</sup> (छयेन्<sup>१</sup>) ६८,०००

६-२ लीड्<sup>३</sup> : अगर अंकों के बीच में एक या एकाधिक शून्य संख्या हो तो 'लीड्' का प्रयोग किया जाता है । जैसे :

ई<sup>१</sup> पाय्<sup>३</sup> लीड्<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> १०५

ई<sup>१</sup> छयेन्<sup>१</sup> लीड्<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> १,००५

ई<sup>१</sup> छयेन्<sup>१</sup> लीड्<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> १,०५०

ई<sup>१</sup> वान्<sup>१</sup> लीड्<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> पाय्<sup>३</sup> १०,५००

टेलीफोन संख्या या टेलीफोन संख्या की तरह किसी और संख्या जैसे, साल का नाम, कमरे या मकान की संख्या बताना हो तो अंकों को १, २, ३, ४ आदि एकक संख्याओं की तरह पढ़ना चाहिए, इकाइयों में नहीं (दसियों, सैकड़ों, हजारों आदि में



नहीं), अगर बीच में एक से ज्यादा शून्य संख्या हो तो हर शून्य संख्या को दुहराना चाहिए। जैसे,

ई<sup>१</sup> लीड्<sup>२</sup> १०

ई<sup>१</sup> लीड्<sup>२</sup> अळ<sup>४</sup> १०२

ई<sup>१</sup> अळ<sup>४</sup> लीड्<sup>२</sup> १२०

पा<sup>१</sup>लीड्<sup>२</sup>लीड्<sup>२</sup>ल्यु<sup>४</sup>लीड्<sup>२</sup> ८०,०६०

अगर संख्या इकाइयों में पढ़ना हो और एक से अधिक शून्य एक-साथ हों तो 'लीड्' एक बार ही प्रयुक्त होता है। उदाहरण के तौर से ऊपर के अन्त में दी गई संख्या ८०,०६० इस तरह लिखी जाएगी, पा<sup>१</sup> वान्<sup>३</sup> लीड्<sup>२</sup> ल्यु<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup>।

६-३ धन की गणना : चीनी भाषा की लिखितरूप में मुद्रा की इकाइयाँ यू.वान्<sup>३</sup> (डालर), च्याव्<sup>३</sup> (दस सेन्ट) और फन्<sup>१</sup> (सेन्ट) हैं। लेकिन बोलचाल की भाषा में इन्हें क्रमशः 'ख्वाय्' 'माव्' और 'फन्' कहते हैं, फन्<sup>१</sup> की राशि इकाई में आती है और अन्तिम इकाई के बाद बहुधा 'छयेन्<sup>३</sup>' शब्द का प्रयोग होता है; जैसे,

उ<sup>३</sup> फन्<sup>१</sup> छयेन्<sup>३</sup> ५ सेन्ट (.०५ डालर)

सान्<sup>१</sup> माव्<sup>३</sup> छयेन्<sup>३</sup> ३० सेन्ट (.३० डालर)

उ<sup>३</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> छयेन्<sup>३</sup> ५ डालर (५.०० डालर)

भिन्न-भिन्न अंकों को एक साथ लिखते या पढ़ते समय बड़ी इकाइयों को पहले और छोटे अंकों को बाद में प्रयोग करना चाहिए, अन्त में 'छयेन्' जोड़ना चाहिए; जैसे,

ई<sup>४</sup> माव्<sup>३</sup> उ<sup>३</sup>फन्<sup>१</sup> छयेन्<sup>३</sup> १५ सेन्ट (.१५ डालर)

षृ<sup>३</sup> अळ<sup>४</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> ल्यु<sup>४</sup> माव्<sup>३</sup> छयेन्<sup>३</sup> १२ डालर ६० सेन्ट

(१२.६० डालर)

११ सेन्ट से ऊपर की संख्याओं को इस तरह लिखना या पढ़ना चाहिए :

इ<sup>०</sup> माव्<sup>२</sup> सान्<sup>१</sup> फन्<sup>१</sup> छयेन्<sup>२</sup>      १३ सेन्ट (.१३ डालर)  
 (षृ<sup>२</sup> सान्<sup>१</sup> फन्<sup>१</sup> छयेन्<sup>२</sup> अशुद्ध है)  
 इ<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>०</sup> उ<sup>३</sup> माव्<sup>२</sup> छयेन्<sup>२</sup> १ डालर ५० सेन्ट (१.५० डालर)  
 (इ<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>०</sup> उ<sup>३</sup> षृ<sup>२</sup> फन्<sup>१</sup> अशुद्ध है)

६-४ धन राशि का संक्षिप्त रूप : संदर्भ में जिन संख्याओं का बोध हो जाता है उन्हें छोड़ दिया जाता है और इस तरह धन-राशि संक्षेप में लिखी जाती है। जब अंकों को भिन्न-भिन्न रूप में लिखना हो तब इस प्रथा का प्रयोग अक्सर किया जाता है। हिन्दी में भी बोलचाल के समय हम २ रुपये ३० पैसे को “दो-तीस”, “चार सौ रुपये” को केवल “चारसौ” कह लेते हैं।

चीनी भाषा में :

इ<sup>०</sup> माव्<sup>२</sup> (छयेन्<sup>२</sup>), अळ<sup>३</sup> माव्<sup>२</sup> उ<sup>३</sup> (फन्<sup>१</sup> छयेन्<sup>२</sup>), सान्<sup>१</sup> ख्वाय्<sup>०</sup> (छयेन्<sup>२</sup>), ल्यु<sup>०</sup> ख्वाय्<sup>०</sup> छि<sup>१</sup> माव्<sup>२</sup> उ<sup>३</sup> (फन्<sup>१</sup> छयेन्<sup>२</sup>), ई<sup>०</sup> पाय्<sup>३</sup> ख्वाय्<sup>०</sup> (छयेन्<sup>२</sup>), उ<sup>३</sup> छयेन्<sup>१</sup> उ<sup>३</sup> पाय्<sup>३</sup> ल्यु<sup>०</sup> षृ<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>०</sup> (छयेन्<sup>२</sup>),

यह ध्यान में रखना चाहिए कि जब धन-राशि के अन्त में धन-राशि का मापक शब्द हो उस मापक शब्द पर जोर देकर पढ़ें।

६-५ ‘चि<sup>३</sup>’ और ‘त्वो<sup>१</sup>षाव्’ : संख्या पूछने के लिए हम ‘चि<sup>३</sup>’ और ‘त्वो<sup>१</sup>षाव्’ का प्रयोग करते हैं। लेकिन, वे हमेशा एक-दूसरे की जगह अदल-बदल कर प्रयुक्त नहीं हो सकते।

- १- ‘त्वो<sup>१</sup>षाव्’ का प्रयोग किसी भी संख्या, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, के विषय में पूछने के लिए किया जा सकता है। लेकिन ‘चि<sup>३</sup>’ का प्रयोग प्रायः एक से नौ तक की संख्याओं के लिए



होता है; जैसे,

नि<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> तुम्हारे पास कितनी किताबें हैं ?

व<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> मेरे पास दो किताबें हैं ।

नि<sup>३</sup> यौ त्वो<sup>३</sup>षाव् (पन्<sup>३</sup>) षू<sup>३</sup> तुम्हारे पास कितनी किताबें हैं ?

व<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> छि<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> पा<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> मेरे पास अठत्तर किताबें हैं ।

दोनों प्रश्नार्थक वाक्यों के जवाब से 'चि<sup>३</sup>' और 'त्वो<sup>३</sup>षाव्' के अर्थ स्पष्ट हैं । अगर किताबों की संख्या अनिश्चित हो तो 'त्वो<sup>३</sup>षाव्' का प्रयोग करते हैं; जैसे,

चे<sup>३</sup>क माय्<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup>षाव् छयेन्<sup>३</sup> इसकी कीमत कितनी है ?

ल्याङ्<sup>३</sup>ख्वाय्<sup>३</sup> पान्<sup>३</sup> अढ़ाई डालर ।

नि<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup>षाव् पि<sup>३</sup> ? तुम कितनी पेंसिलें (अथवा कलम) चाहते हो ?

वो<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup>सान्<sup>३</sup>षू<sup>३</sup>क पि<sup>३</sup> मैं ३० पेंसिलें चाहता हूँ ।

२. षू<sup>३</sup>, पाय्<sup>३</sup>, छयेन्<sup>३</sup> जैसे इकाइयों के साथ चि<sup>३</sup> का प्रयोग होता है; जैसे,

नि<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> तुम्हारे पास कितनी किताबें हैं ?  
(दहाइयों में)

वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> च्यु<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> मेरे पास उनतालीस किताबें हैं ।

नि<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> तुम्हारे पास कितनी किताबें हैं ?  
(दसियों में)

वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>सान्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> मेरे पास तेरह किताबें हैं ।

पहले प्रश्न का जवाब दहाइयों में अर्थात् २० से ६६ तक की संख्या में होगा और दूसरे का ११ से १६ तक की संख्या में ।  
और कुछ उदाहरण :

नि<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> पाय्<sup>३</sup> चाङ्<sup>३</sup> चू<sup>३</sup> तुम कितने सौ कागज खरीदोगे ?



ई<sup>१</sup> छयेन्<sup>१</sup> उ<sup>३</sup> पाय्<sup>३</sup> चाङ्<sup>३</sup> एक हजार पांच सौ ।  
 नि<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> छयेन्<sup>३</sup> खाय्<sup>३</sup> तुम कितने हजार रुपये चाहते  
 छयेन्<sup>३</sup> हो ?  
 छि<sup>३</sup> छयेन्<sup>३</sup> पा<sup>३</sup> पाय्<sup>३</sup> सात हजार आठ सौ ।

- ३- 'त्वो<sup>३</sup>षाव्<sup>३</sup>', संज्ञा के साथ सीधे जोड़ा जा सकता है । लेकिन  
 चि<sup>३</sup> के बाद एक मापक शब्द जरूर आना चाहिए; जैसे,  
 नि<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup>षाव्<sup>३</sup> पू<sup>३</sup> ? तुम कितनी किताबें चाहते हो?  
 नि<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> चि<sup>३</sup>क पि<sup>३</sup> ? तुम्हारे पास कितनी पेन्सिलें हैं।

६-६ कीमत पूछना : किसी चीज की कीमत पूछते समय  
 हिन्दी की तरह चीनी भाषा में भी क्रिया की जरूरत नहीं  
 होती । केवल प्रश्नवाचक शब्द के बाद 'छयेन्<sup>३</sup>' (मुद्रा) जोड़कर  
 इस तरह के प्रश्नवाचक वाक्य बना सकते हैं; जैसे,

त्वो<sup>३</sup>षाव्<sup>३</sup> छयेन्<sup>३</sup> कितने पैसे ?  
 कभी-कभी 'पू<sup>३</sup>' (होना) या 'माय्<sup>३</sup>' (बेचना) या 'याव्<sup>३</sup>' जैसी  
 क्रिया का प्रयोग भी होता है; जैसे,  
 पि<sup>३</sup> पू<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> फ़न्<sup>३</sup> छयेन्<sup>३</sup> ? पेन्सिल कितने पैसे का है ?  
 पि<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup>षाव्<sup>३</sup> छयेन्<sup>३</sup> ? कलम की कितनी कीमत चाहते  
 हो ?  
 चि<sup>३</sup>क श्याव्<sup>३</sup> च्वो<sup>३</sup>ज् माय्<sup>३</sup> छोटी मेज कितने पैसे में बिकेगी ?  
 चि<sup>३</sup> खाय्<sup>३</sup> छयेन्<sup>३</sup> (अथवा कितने में बेचोगे ?)

६-७ 'अळ<sup>३</sup>' और 'ल्याङ्<sup>३</sup>' : चीनी भाषा में अंक 'अळ<sup>३</sup>'  
 और 'ल्याङ्<sup>३</sup>' से एक ही संख्या 'दो' सूचित होती है, लेकिन  
 प्रयोग में, दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं;

- १- दो प्राणी या वस्तु बताने के लिए 'अळ<sup>३</sup>' की जगह 'ल्याङ्<sup>३</sup>'  
 उपयुक्त मापक शब्द के पहले प्रयुक्त होता है; जैसे, ल्याङ्<sup>३</sup>क

रन्<sup>२</sup>, ल्याङ्<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> षू, ल्याङ्<sup>३</sup> चाङ्<sup>१</sup> चृ<sup>३</sup>, ल्याङ्<sup>३</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> छयेन्<sup>२</sup> । इसके कुछ अपवाद हैं; जैसे, अळ<sup>४</sup> चिन्<sup>१</sup> थाङ्<sup>३</sup> (दो 'चिन्' (क्याटी चीनी) और 'अळ<sup>४</sup> न्येन्<sup>१</sup>' (दो वर्ष) ) । लेकिन इन पदों में भी 'अळ<sup>४</sup>' की जगह 'ल्याङ्<sup>३</sup>' का प्रयोग हो सकता है ।

कुछ बड़ी संख्या के साथ दोनों में से किसी एक का प्रयोग हो सकता है; जैसे 'ल्याङ्<sup>३</sup> पाय्<sup>३</sup>' या 'अळ<sup>४</sup> पाय्<sup>३</sup>', 'अळ<sup>४</sup> छयेन्<sup>१</sup>' या 'ल्याङ्<sup>३</sup> छयेन्<sup>१</sup>', 'अळ<sup>४</sup> वान्<sup>४</sup>' या 'ल्याङ्<sup>३</sup> वान्<sup>४</sup>' इत्यादि ।

२- "२०" को सिर्फ 'अळ<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup>' के रूप में पढ़ा जाता है, 'ल्याङ्<sup>३</sup> षृ<sup>३</sup>' के रूप में कभी नहीं पढ़ा जाता । गिनती के वक्त भी गणनावाचक अंक 'अळ<sup>४</sup>' का ही प्रयोग होता है; जैसे, 'अळ<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup> अळ<sup>४</sup>', 'ई<sup>४</sup> पाय्<sup>३</sup> लीड्<sup>२</sup> अळ<sup>४</sup>', 'अळ<sup>४</sup> पाय्<sup>३</sup> अळ<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup>', 'अळ<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup> वान्<sup>४</sup>', 'अळ<sup>४</sup> पाय्<sup>३</sup> वान्<sup>४</sup>' इत्यादि ।

३- अगर किसी बड़ी संख्या के अन्त में २ आता है तो 'अळ<sup>४</sup>' का प्रयोग होता है, 'ल्याङ्<sup>३</sup>' नहीं : 'षृ<sup>३</sup> अळ<sup>४</sup>', 'स्च्<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup> अळ<sup>४</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>'; 'ई<sup>४</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> माव्<sup>२</sup> छयेन्<sup>१</sup>' संक्षेप में 'ई<sup>४</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> अळ<sup>४</sup>' लिखा जायेगा ।

४- बड़ी संख्याओं में बड़ी इकाइयों के लिए 'ल्याङ्<sup>३</sup>' और छोटी संख्याओं के लिए 'अळ<sup>४</sup>' का प्रयोग होता है; जैसे, ल्याङ्<sup>३</sup> छयेन्<sup>१</sup> अळ<sup>४</sup> पाय्<sup>३</sup>, 'ल्याङ्<sup>३</sup> वान्<sup>४</sup> अळ<sup>४</sup> छयेन्<sup>१</sup> सान्<sup>१</sup>', ल्याङ्<sup>३</sup> माव्<sup>२</sup> अळ<sup>४</sup> इत्यादि ।

६-८ लगभग संख्या : दो या तीन को चीनी भाषा में 'दो-तीन' लिखा जाता है, इस तरह की अनिश्चित संख्या दो पड़ोसी अंकों का प्रयोग करके लिखी जाती है; जैसे,

ई<sup>४</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> क रन्<sup>३</sup>

एक या दो आदमी ।

ल्याङ्<sup>३</sup>सान्<sup>१</sup> पन्<sup>३</sup>पू<sup>१</sup>      दो या तीन किताबें ।  
 स्च्<sup>४</sup> उ<sup>३</sup> माव्<sup>२</sup> छयेन्<sup>२</sup>      चालीस या पचालस सेन्ट ।  
 हिन्दी में भी बोलचाल की भाषा में “दो तीन आदमी”, “तीन चार रुपये” इत्यादि प्रयोग होते हैं ।

६-९ ‘वान्’ और ‘वान् वान्’ शब्द समूह : चीनी भाषा में हजार के ऊपर के अंक लाख नहीं हैं, दस हजार यानी ‘वान्’ है । ‘वान्’ के ऊपर के अंक के लिए ‘वान्’ के साथ ‘पू’, ‘पाय्’<sup>३</sup> ‘छयेन्’ और ‘वान्’ का गुणा करके बनते हैं । ‘वान् वान्’ सर्वोच्च संख्या है जिसे ‘ई’ भी कहते हैं । गिनते वक्त हजार के ऊपर की संख्याओं को प्रति चार अंकों की समष्टि में भाग कर लेना चाहिए ।

दस ह० हजार सौ दस दस  
 द० हजार द०ह० दसह० दसह० ह० हजार सैंकड़ा दहाई इकाई

दस									
करोड़		करोड़		(लाख)					
						१	०	०	
					१	०	०	०	
				१	०	०	०	०	
		१	०	०	०	०	०	०	
	१	०	०	०	०	०	०	०	
१	०	०	०	०	०	०	०	०	

६-१० एक एक की कीमत : हिन्दी के “रुपये का एक”, “आठ आने का एक”, जैसे वाक्य चीनी भाषा में इस तरह हो जाते हैं : ई<sup>२</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> छयेन्<sup>२</sup> इ<sup>३</sup>क (ई<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> या इ<sup>४</sup> चाङ् इत्यादि, उ<sup>३</sup> माव्<sup>२</sup> छयेन्<sup>२</sup> इ<sup>३</sup>क (ई<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> या इ<sup>३</sup> चाङ् इत्यादि),



इत्यादि। हिन्दी के 'प्रत्येक को एक', 'प्रत्येक को १० डालर' इस तरह के वाक्य इस तरह कहे जाते हैं : इ<sup>३</sup>क रन्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>क, इ<sup>३</sup>क रन्<sup>३</sup> षृ<sup>३</sup> ख्वाय्<sup>३</sup> छयेन्<sup>३</sup>।

६-११ पान्<sup>३</sup> (आधा) : यह भी एक अंक है। जब इस अंक का प्रयोग मापक शब्द के साथ हो, तो इसके स्थान के बारे में सावधान रहना चाहिए :

१. अगर 'पान्<sup>३</sup>' के साथ किसी और अंक का प्रयोग न किया गया हो, तो साधारण अंकों की तरह इसे भी मापक शब्द के ठीक पहले रखना चाहिए ; जैसे,

पान्<sup>३</sup> चाङ्<sup>३</sup> चृ<sup>३</sup> कागज का आधा टुकड़ा (अथवा  
आधा ताव कागज)

पान्<sup>३</sup> न्येन्<sup>३</sup> आधा साल (न्येन्<sup>३</sup>, पाठ १३)

२- अगर शब्द 'पान्<sup>३</sup>' का प्रयोग अंक के साथ किया जाए तो पूर्णांकों के मापक पूर्णांकों के ठीक बाद ही आते हैं और मापक शब्द के बाद 'पान्<sup>३</sup>'; जैसे,

पूर्णांक	मापक	पान् <sup>३</sup>	कर्ता
ल्याङ् <sup>३</sup>	चाङ् <sup>३</sup>	पान् <sup>३</sup>	चृ <sup>३</sup>

## पाठ-७

लि३ शिन्१ श्येन्१ षड्, निन्२ आय् मि० सिंह क्या आप चीनी  
छृ१ चुड्३ क्वो२ फान्१ मा ? खाना पसंद करते हैं ?

शिन्१ वो३ हन्३ आय् छृ१ । वो३ मैं इसे खुशी से खाता हूँ । हमारे  
हाय् च् ये३ तौ१ आय् छृ । बच्चे भी इसे खुशी से खाते हैं ।

लि३ निन्३ थाय् थाय् ह्वै३ च् वो३ क्या आपकी पत्नी चीनी खाना  
चुड्३ क्वो३ फान् पु३ ह्वै३ ? पकाना जानती हैं ?

शिन्१ ह्वै३ इ३ ल्याळ३ । थोड़ा-सा ।

लि३ निन्३ हाय् च् ये३ ह्वै३ च् वो३ क्या आपके बच्चे भी पकाना  
फान् मा ? जानते हैं ?

शिन्१ हाय् च् पु३ ह्वै३ च् वो३ फान् । बच्चे खाना नहीं पका सकते ।

लि३ नि३ मन् तौ१ ह्वै३ ष्वो१ चुड्१- क्या आप सभी चीनी भाषा  
क्वो३ ह्वै३ मा ? बोलना जानते हैं ?

शिन्१ हाय् च् ह्वै३ ष्वो । वो३ बच्चे जानते हैं । मेरी पत्नी भी  
थाय् थाय् ये३ ह्वै३ ष्वो१ । वो३ जानती है किंतु मैं केवल थोड़ा  
च्यु३ ह्वै३ ष्वो१ इ३ ल्याळ३ । सा ही जानता हूँ ।

लि३ निन्३ थाय् ख३ छि । चुड्३ आप बहुत विनम्र हो रहे हैं ।  
क्वो३ च् निन्३ नड्३ श्ये३ मा ? क्या आप चीनी अक्षर लिख  
सकते हैं ?

शिन् पु नड् । ओह, वो नड् श्ये नहीं मैं नहीं लिख सकता ।

‘इ’ ‘अळ’ ‘सान्’ सान्-कच् । ओह, मैं तीन अक्षर लिख सकता हूँ । एक, दो, तीन ।

लि निमन् आय् छाड् कळमा ? क्या आप लोग गाना पसंद करते हैं ।

शिन् वोमन् हन् आय् छाड् । हमें गाने से प्रेम है ।

लि वोमन् श्येन् चाय् छाड् इ अभी हम लोग थोड़ा सा गायें त्याळ, हाव् पु हाव् ? तो कैसा रहे ?

शिन् निमन् वान् इ छाड् ष- आप लोग किस प्रकार के गाने म्मा कळ ? गाना पसंद करेंगे ?

लि निमन् ह्व् छाड् चुड् क्वो क्या आप चीनी गाना गा सकते कळ मा ? हैं ।

शिन् ह्व् । हाँ, हम गा सकते हैं ।

लि हाव्, वो मन् खइ छाड् अच्छा, तो हम एक चीनी गाना इक चुड् क्वो कळ । गा सकते हैं ।

### नये शब्द

श्येन् चाय् (गतिशील क्रि० वि०)	अभी, इसी वक्त
फ़ान् (सं०)	खाना (पके हुए चावल)
थाड् (सं०)	चीनी, चीनी से बनी मिठाई ।
ह्व् (सं०)	भाषण, बोले हुए शब्द, भाषा, बोली ।
क् (सं०)	अक्षर, (लिखा हुआ अक्षर) चीनी रेखाक्षर ।
ष् (छिड़) (सं०)	काम
माय् माय् (सं०)	व्यापार (खरीदना-बेचना)



क <sup>१</sup> (ळ) (सं०)	गाना
ता <sup>१</sup> रन् <sup>२</sup> (सं०)	जवान, वयस्क (आदमी), बालिग ।
चन् <sup>१</sup> (क्रि० वि०)	सचमुच, ठीक
ख <sup>१</sup> छि (वि०)	विनम्र होना. शराफत दिखाना।
नङ् <sup>२</sup> (सं० क्रि०)	सकना, समर्थ या योग्य होना ।
ह्व <sup>१</sup> (सं० क्रि०)	सकना, जानना (कोई काम )
ख <sup>३</sup> इ (सं० क्रि०)	सकना, (आज्ञा मांगना या देना)
ट्वान् <sup>१</sup> -इ (सं० क्रि०)	चाहना, इच्छुक होना
आय् <sup>१</sup> (क्रि०)	प्यार करना
आय् <sup>१</sup> (सं० क्रि०)	पसंद करना या चाहना
छ् <sup>१</sup> (क्रि०)	खाना
श्ये <sup>३</sup> (क्रि०)	लिखना
ट्वो <sup>१</sup> (क्रि०)	करना, बनाना
छाङ् <sup>१</sup> (क्रि०)	गाना
शिन् <sup>१</sup> (सं०)	कुल नाम, भारतीय पदवी 'सिंह' के लिए प्रयुक्त ।

### उदाहरणमाला

(क) क्रियापद-कर्म-संयुक्त-पद के साथ सहायकक्रिया  
का प्रयोग

बो <sup>१</sup> ह्वा <sup>१</sup>	बात करना (बोलना-भाषा)
खान् <sup>१</sup> -पू <sup>१</sup>	पढ़ना (देखना किताबों का)
श्ये <sup>३</sup> -च् <sup>१</sup>	लिखना (लिखना अक्षरों का)
छ् <sup>१</sup> -फान् <sup>१</sup>	खाना (खाना खाना)

च.वो<sup>४</sup>-फ़ान्<sup>४</sup>

पकाना (खाना बनाना)

छाङ्<sup>४</sup> क<sup>१</sup> (ळ)

गाना (गाना गाना)

नमूना : कर्ता (क)

स०क्रि०

क्रिया-कर्म

नि<sup>३</sup>आय्<sup>४</sup>छाङ्<sup>४</sup> कळ<sup>१</sup>मा ?

क्या आप गाना पसंद करते हैं ?

वो<sup>३</sup>हन्<sup>३</sup> आय्<sup>४</sup>छाङ्<sup>४</sup> कळ<sup>१</sup> ।

मैं बहुत पसंद करता हूँ ।

१- श्याव्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> आय्<sup>४</sup>

बच्चे गाना पसंद करते हैं ।

छाङ्<sup>४</sup> कळ<sup>१</sup> । ता<sup>४</sup> रन्<sup>३</sup> ये<sup>३</sup>

बड़े लोग भी गाना पसंद करते

आय्<sup>४</sup> छाङ्<sup>४</sup> कळ<sup>१</sup> ।

हैं ।

पै<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> आय्<sup>४</sup> छाङ्<sup>४</sup> कळ

कौन गाना पसंद नहीं करता ?

२- चाङ्<sup>३</sup> श्येन्<sup>१</sup> षङ्<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> आय्<sup>४</sup>

मिस्टर चाङ् पढ़ना पसंद करते

खान्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>, था<sup>१</sup> ये<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> आय्<sup>४</sup>

हैं । वह लिखना भी पसंद करते

श्ये<sup>३</sup> च्<sup>३</sup>, ख<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> था<sup>१</sup> पु<sup>३</sup> आय्<sup>४</sup>

हैं । किंतु वह बात करना पसंद

ण्वो<sup>१</sup> ह्वा<sup>४</sup> ।

नहीं करते ।

३- वाङ्<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup> च्ये<sup>३</sup> च्यु<sup>४</sup> आय्<sup>४</sup>

कुमारी वाङ् सिर्फ पढ़ना ही

खान्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> ।

पसंद करती हैं ।

था<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> वान्<sup>४</sup> इ च.वो<sup>४</sup> षू<sup>४</sup>

वह बिल्कुल काम करना नहीं

चाहतीं ।

४- रन्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> ह्वै<sup>४</sup> ण्वो<sup>१</sup> ह्वा<sup>४</sup>, हर कोई बात कर सकता है ।ख<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> पु<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> ह्वै<sup>४</sup> खान्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> । किंतु हर कोई पढ़ नहीं सकता ।५- चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> नङ्<sup>३</sup>

चीनी लोग बहुत काबिल होते

च.वो<sup>४</sup> षू<sup>४</sup> ।

हैं ।

६- ने<sup>३</sup> क रन्<sup>३</sup> चन्<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> ण्वो<sup>१</sup> ह्वा<sup>४</sup>

वह आदमी सचमुच बात करना

जानता है ।

७- वो<sup>३</sup>मन् श्येन्<sup>४</sup>चाय्<sup>४</sup> ख<sup>३</sup>इ क्या हम अभी खाना खा लें ?  
छु<sup>३</sup> फान् मा ?

(ख) विशेषण युक्त कर्म के साथ क्रि०-कर्म से बने संयुक्त पद

नमूना :	कर्ता	क्रि०	विशेषण	कर्म
	नि <sup>३</sup> आय् <sup>४</sup>	छाङ् <sup>४</sup>	ष <sup>३</sup> म्मा	कळ <sup>३</sup> ?
	वो <sup>३</sup> आय् <sup>४</sup>	छाङ् <sup>४</sup>	फा <sup>३</sup> क्वो <sup>३</sup>	कळ <sup>३</sup> ?

आप किस प्रकार के गाने गाना पसंद करते हैं ? फ्रांसीसी गाने ।

- १- नि<sup>३</sup> टवान्<sup>४</sup> इ छु<sup>३</sup> ष<sup>३</sup>म्मा फान्<sup>४</sup>? तुम किस प्रकार का खाना  
खाना चाहते हो ?
- २- नि<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> पु<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> छु<sup>३</sup> इ<sup>४</sup>- क्या तुम थोड़ा-सा भारतीय  
त्याळ<sup>३</sup> इन्<sup>४</sup> तु<sup>४</sup> फान्<sup>४</sup> ? खाना पसंद करोगे ?
- ३- नि<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> च्वो<sup>३</sup> इन्<sup>४</sup> तु<sup>४</sup> फान्<sup>४</sup> क्या तुम भारतीय खाना पकाना  
मा । जानते हो ?
- ४- नि<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> ष्वो<sup>३</sup> ऋपन्<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> क्या तुम जापानी भाषा बोलना  
पु<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> ? जानते हो ?
- ५- नि<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> श्ये<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> क्या तुम चीनी अक्षर लिखना  
च्<sup>४</sup> पु<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> ? जानते हो ?
- ६- श्येन्<sup>४</sup> चाय्<sup>४</sup> नि<sup>३</sup> नङ्<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> क्या तुम अब चीनी अखबार  
चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> पाव्<sup>४</sup> मा ? पढ़ सकते हो ?
- ७- नि<sup>३</sup> नङ्<sup>३</sup> च्वो<sup>३</sup> चे<sup>३</sup> क पु<sup>४</sup> नङ्<sup>३</sup>? क्या तुम यह (काम) कर सकते  
हो ?
- ८- चे<sup>३</sup>-क ह्वै<sup>४</sup> ख<sup>३</sup>इ ष्वो<sup>३</sup> मा ? क्या यह भाषा बोली जा सकती  
है ?

(ग) क्रिया विशेषण के रूप में "हाव्"

- १- चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup>, चीनी बोलना बहुत आसान  
ख<sup>३</sup>पु चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> च्<sup>४</sup> पु<sup>४</sup> हाव्<sup>३</sup> है, किन्तु चीनी अक्षर लिखना  
श्ये<sup>३</sup> । आसान नहीं है ।



- २- चे<sup>१</sup>क<sup>२</sup> षू<sup>३</sup>(छिड्) चन्<sup>१</sup> पु<sup>३</sup> यह काम करना आसान नहीं  
हाव्<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> । है ।
- ३- था<sup>१</sup>ने<sup>२</sup>क<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup>भाय्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> उसका यह व्यापार चलाना  
हाव्<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> । आसान नहीं है ।
- ४- था<sup>१</sup>त<sup>२</sup> ह्वा<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> तुड्<sup>३</sup> । उसकी बोली जल्दी समझ में आ  
जाती है ।
- ५- था<sup>१</sup> ष्वो<sup>१</sup> चे<sup>२</sup>पन्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> वह कहता है कि यह किताब  
माय्<sup>३</sup> । बेचना बहुत आसान है ।
- ६- नि<sup>३</sup>मन्<sup>३</sup> ने<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>क<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup>- आपके वे दो बच्चे सचमुच ही  
च<sup>३</sup> चन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup>खान्<sup>३</sup> । बहुत सुन्दर हैं ।
- ७- यौ<sup>३</sup> त<sup>३</sup> इन्<sup>३</sup> तु<sup>३</sup>कळ<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> कई भारतीय गाने इतने आसान  
हाव्<sup>३</sup> छाङ्<sup>३</sup> । नहीं हैं ।
- ८- श्येन्<sup>३</sup>चाय्<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup>त<sup>३</sup> तुड्<sup>३</sup>शि कई चीजें अभी खरीदना मुश्किल  
पु<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> । है ।

### व्याकरण

७-१ सहायक क्रिया : शब्द भेद की दृष्टि से सहायक क्रियाएं क्रियापद के वर्ग में आती हैं । परन्तु वे अन्य सामान्य क्रियाओं से भिन्न हैं । वे क्रियापद के पहले प्रयुक्त होती हैं (देखिए व्याकरण नोट २-४), लेकिन उनकी अपनी कुछ व्याकरणीय विशिष्टताएं हैं । उनका प्रयोग द्विरुक्ति करके कभी नहीं किया जाता और उनके बाद कोई प्रत्यय या संज्ञावाचक कर्म नहीं आता । उनका प्रयोग क्रिया-विशेषण के पहले किया जाता है । सहायक क्रियाओं का मुख्य कार्य है सम्भावना, योग्यता, इच्छा, मांग या इरादा सूचित करना । यहां हम 'नङ्', 'ह्व', 'ख<sup>३</sup>इ' और 'याव्', इनकी विशेषताओं की व्याख्या करेंगे :

१- 'नङ्' व 'ख' इ' से मनोगत या कायिक योग्यता का अर्थ निकलता है; जैसे,

नि<sup>३</sup> नङ्<sup>३</sup> (ख<sup>३</sup> इ) च<sup>३</sup>वो क्या तुम यह कह सकते हो ?

चे<sup>३</sup> क पु<sup>३</sup> नङ्<sup>३</sup> ?

श्येन्<sup>३</sup>चाय्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> नङ्<sup>३</sup> (ख<sup>३</sup>- क्या तुम अब चीनी अखबार पढ़  
इ) खान्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> सकते हो ?

पाव्<sup>३</sup> मा ?

कभी-कभी किन्हीं विशेष अवस्थाओं में इनसे अनुमति का अर्थ भी निकलता है; जैसे,

वो<sup>३</sup> मन् नङ्<sup>३</sup> (ख<sup>३</sup> इ)वो<sup>३</sup> क्या हम बातें कर सकते हैं ?

ह्वा<sup>३</sup> मा ?

मनाही के अर्थ में :—

वो<sup>३</sup> मन् पु<sup>३</sup> नङ्<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> हम यहां बातें नहीं कर सकते ।

चळ<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> ह्वा<sup>३</sup> ।

(यहां 'पु<sup>३</sup> ख<sup>३</sup> इ' का प्रयोग

नहीं होगा ।)

२- ह्वै<sup>३</sup>: 'ह्वै<sup>३</sup>' क्रियापद है, लेकिन यह एक सहायक क्रिया भी है जिसका प्रयोग क्रियापद या विशेषण के पहले किया जाता है । सहायक क्रिया के रूप में यह मनोगत योग्यता का अर्थ प्रगट करता है । परन्तु यह 'नङ्' से भिन्न है, क्योंकि 'ह्वै<sup>३</sup>' का अर्थ होता है सीखकर प्राप्त किया गया कोई कौशल । इसलिए अर्थ की दृष्टि से यह प्रायः "कुशल होना" और "अधिकार प्राप्त करना" इन अर्थों के समान होता है; जैसे,

था<sup>३</sup> ह्वै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> वह चीनी भाषा बोल सकता  
ह्वा<sup>३</sup> । है ।

‘ह्वै’ से कभी-कभी किन्हीं अवस्थाओं में सम्भावना प्रगट होती है; जैसे,

चे<sup>४</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> पु<sup>२</sup> ह्वै<sup>४</sup> षू<sup>४</sup> था<sup>१</sup> त यह किताब उसकी नहीं हो सकती ।

३- ‘ह्वै’ की तरह ‘याव्’ भी एक क्रियापद है; जैसे,

वो<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> ई<sup>४</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> मैं एक किताब चाहता हूँ ।

सहायक क्रिया के रूप में ‘याव्’ मनोगत इच्छा या इरादा सूचित करता है; जैसे,

था<sup>१</sup> याव्<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> ई<sup>४</sup> पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> वह एक किताब खरीदना चाहता है ।

कभी-कभी वह वस्तुगत आवश्यकता सूचित करता है : इत्ये-षड् याव्<sup>४</sup> हाव्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> ल त न्येन<sup>४</sup> षू<sup>१</sup>—“छात्रों को अच्छी तरह पढ़ाई करनी चाहिए” ।

सहायक क्रियाओं के बारे में कुछ नियम :

१. यदि किसी सहायक क्रिया का प्रयोग वैकल्पिक प्रश्नार्थक वाक्य में करना हो तो सहायक क्रिया का सकारार्थक तथा निषेधार्थक दोनों रूप दे देने से ही काम चल जाएगा; जैसे,

नि<sup>३</sup> नड्<sup>२</sup> पु<sup>४</sup> नड्<sup>२</sup> खान्<sup>४</sup> षू<sup>१</sup> तुम किताब पढ़ सकते हो या नहीं ?

यदि विधेय साधारण और छोटा हो तो सहायक क्रिया के बाद आनेवाला तत्व दोहराया जा सकता है । जैसे :

नि<sup>३</sup> नड्<sup>२</sup> च.वो<sup>४</sup> पु<sup>४</sup> नड्<sup>२</sup> (च.वो<sup>४</sup>) तुम (यह) कर सकते हो या नहीं ?

नोट : इस प्रकार के प्रश्नार्थक वाक्यों में सहायक क्रिया को दोहराना पड़ता है। इसलिए हम “नड्<sup>२</sup> च.वो<sup>४</sup> पु<sup>४</sup> च.वो<sup>४</sup>” नहीं कह सकते ।



२- प्रश्नों का उत्तर देते समय यदि संदर्भ से अर्थ स्पष्ट होता है तो सहायक क्रिया अकेले रह सकती है, मुख्य क्रिया की जरूरत नहीं होती; जैसे,

नि<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> पाव्<sup>४</sup> मा ? क्या तुम अखबार पढ़ना चाहते हो ?

याव्<sup>४</sup> । हां ।

पु<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> । नहीं ।

नि<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> प्वो<sup>४</sup> चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> क्या तुम चीनी भाषा बोल  
ह्वै<sup>४</sup> मा ? सकते हो ?

ह्वै<sup>४</sup> प्वो<sup>४</sup> ई<sup>४</sup> त्याळ<sup>३</sup> । थोड़ा सा बोल सकता हूँ ।

निम्नलिखित सूची से सहायक क्रिया ('नङ्<sup>३</sup>' व 'ख<sup>३</sup> इ')

का प्रयोग साफ-साफ पता चल जाएगा

	सकारार्थक	निषेधार्थक	प्रश्नार्थक
योग्यता	नङ् <sup>३</sup> , ख <sup>३</sup> इ	पु <sup>४</sup> नङ् <sup>३</sup>	नङ् <sup>३</sup> पु <sup>४</sup> नङ् <sup>३</sup> ? नङ् <sup>३</sup> मा ? ख <sup>३</sup> इ मा ?
अनुमति	नङ् <sup>३</sup> ख <sup>३</sup> इ	पु <sup>४</sup> नङ् <sup>३</sup> पु <sup>४</sup> ख <sup>३</sup> इ	नङ् <sup>३</sup> पु <sup>४</sup> नङ् <sup>३</sup> ? नङ् <sup>३</sup> मा ? ख <sup>३</sup> इ पु <sup>४</sup> ख <sup>३</sup> इ ? ख <sup>३</sup> इ मा ?

७-२ क्रिया-कर्म संयुक्त पद (क्रि० क०) : कुछ साधारण वस्तुओं को बतानेवाली क्रियाएं अपने कर्म के साथ मिलकर संयुक्त क्रियापद बन जाती हैं । उनका अकर्मक क्रियापद के रूप में अनुवाद किया जाता है । कर्म का भिन्न रूप से अनुवाद करना नहीं पड़ता । कर्म-रहित क्रियापद की भाँति इससे एक ही विचार का बोध होता है; जैसे, प्वो<sup>४</sup> ह्वै<sup>४</sup>— बोलना, 'छू<sup>३</sup> फान्<sup>४</sup>

—खाना । हिन्दी में भी कभी-कभी कर्म और क्रिया दोनों का प्रयोग होता है और हिन्दी व्याकरण के नियमानुसार इसे कर्म-क्रिया-पद कह सकते हैं । जैसे कि : 'वो<sup>३</sup> खा<sup>१</sup>' का 'बातें करना', बोली बोलना' और 'छृ<sup>१</sup> फ़ान्<sup>१</sup>' का 'खाना खाना' रूप से भी अनुवाद किया जाता है । 'वो<sup>३</sup> याव्<sup>१</sup> छृ<sup>१</sup> फ़ान्<sup>१</sup>' अंग्रेजी में "आई वांट टू ईट" होगा, लेकिन हिन्दी में "खाना खाना चाहता हूँ" या "मैं खाना चाहता हूँ" होगा । ऐसे संयुक्त पद के बाद किसी और कर्म का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए । यदि कोई और विशेष कर्म अपेक्षित हो तो आदतन पहला साधारण अर्थ द्योतक कर्म छोड़ देना पड़ेगा; जैसे :—वो<sup>३</sup> याव्<sup>१</sup> छृ<sup>१</sup> थाड्<sup>३</sup> (मैं मिथी (या मिठाई) खाना चाहता हूँ) की जगह हम यह नहीं कह सकते कि 'वो<sup>३</sup> याव्<sup>१</sup> छृ<sup>१</sup> फ़ान्<sup>१</sup> थाड्<sup>३</sup>' ।

किसी और कर्म की तरह क्रियापद कर्म संयुक्त पद के कर्म के साथ भी विशेषण का प्रयोग हो सकता है; जैसे,

वो<sup>३</sup> छाड्<sup>१</sup> इन्<sup>१</sup> तु<sup>१</sup> कळ<sup>१</sup> मैं भारतीय गाना गाता हूँ ।

हम यह कभी नहीं कह सकते कि 'वो<sup>३</sup> छाड्<sup>१</sup> कळ<sup>१</sup> इन्<sup>१</sup> तु<sup>१</sup> कळ<sup>१</sup>' ।

७-३ एकान्वयी संज्ञा : दो या दो से अधिक संज्ञा साथ-साथ आ सकती हैं । इन्हें एकान्वयी संज्ञा कहते हैं । जैसे :—

वो<sup>३</sup>मन् इन्<sup>१</sup> तु<sup>१</sup> रन्<sup>३</sup> तौ<sup>३</sup> हम सभी भारतीय लोग गाना  
आय्<sup>१</sup> छाड्<sup>१</sup> कळ<sup>१</sup> । पसंद करते हैं ।

इ<sup>३</sup>, अळ<sup>३</sup>, सान्<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> क इ, अळ, सान ये तीन चीनी  
च्<sup>१</sup> हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> श्ये<sup>३</sup> । अक्षर लिखना आसान है ।

७-४ विशेषण का क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयोग : चीनी विशेषण न केवल विशेषण और विधेय के रूप में प्रयुक्त होता है बल्कि क्रिया-विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होता है; जैसे,

था<sup>१</sup> चन्<sup>१</sup> हाव्<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup>

वह सचमुच सुंदर है ।

नै<sup>४</sup> क कळ<sup>१</sup> पु<sup>४</sup> हाव्<sup>३</sup> छाड्<sup>४</sup>

वह गाना गाना सहज नहीं है ।

फान्<sup>४</sup> कौ<sup>४</sup> छृ<sup>१</sup> मा ?

खाना क्या पर्याप्त है ?

(अथवा खाना खाने के लिए पर्याप्त है क्या ?)

इस तरह का क्रिया-विशेषण अन्य क्रिया-विशेषणों की तरह हमेशा मुख्य क्रियापद के पहले प्रयुक्त होता है ।



## पाठ-८

वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> इ<sup>२</sup> क लाव्-फड्<sup>३</sup> यौ  
शिङ्<sup>१</sup> चौ<sup>१</sup> । रन्<sup>३</sup> रन्<sup>२</sup> तौ<sup>१</sup> शि<sup>३</sup>-  
ह्वान्<sup>१</sup> था<sup>१</sup>, ष्वो<sup>१</sup> था<sup>१</sup> षू<sup>४</sup> ई<sup>२</sup>  
क हाव्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> । लाव्<sup>३</sup> चौ<sup>१</sup> चे<sup>४</sup> क  
रन्<sup>३</sup> । हन्<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> ई<sup>४</sup> स्च्<sup>१</sup> था<sup>१</sup> ये<sup>३</sup>  
हन्<sup>३</sup> नङ्<sup>२</sup> च्वो<sup>४</sup> षू<sup>४</sup> ।

मेरे चऊ नाम के एक पुराने  
मित्र हैं । प्रत्येक व्यक्ति उन्हें  
पसन्द करता है और कहता है कि  
वे एक अच्छे आदमी हैं । प्रिय  
चऊ बहुत दिलचस्प व्यक्ति  
हैं, और वे अति योग्य व्यक्ति  
भी हैं ।

ने<sup>४</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> क हाय्<sup>२</sup> च्,   
इ<sup>३</sup> क षू नान्<sup>२</sup> हाय्<sup>२</sup> च्, इ<sup>३</sup> क षू  
न्यू<sup>३</sup> हाय्<sup>२</sup> च् । ने<sup>४</sup> क नान्<sup>२</sup>  
हाय्<sup>२</sup> च् च्यु<sup>४</sup> शि<sup>३</sup> ह्वान्<sup>१</sup> खान्<sup>४</sup>  
षू<sup>१</sup>, खान्<sup>४</sup> पाव्<sup>४</sup> । ने<sup>४</sup> क न्यू<sup>३</sup>  
हाय्<sup>२</sup> च्, शि<sup>३</sup> ह्वान्<sup>१</sup> माय्<sup>३</sup>  
तुङ्<sup>१</sup> शि—माय्<sup>३</sup> इ<sup>२</sup> क पि<sup>३</sup> षू<sup>२</sup>  
अळ<sup>४</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> पान्<sup>४</sup>, माय्<sup>३</sup> ई<sup>३</sup> क  
प्याव्<sup>३</sup> स्च्<sup>४</sup> षू ख्याय्<sup>४</sup> च्यु<sup>३</sup> माव्<sup>३</sup> ।  
माय्<sup>३</sup> इत्याळ<sup>३</sup> चे<sup>४</sup> क, माय्<sup>३</sup>  
इत्याळ<sup>३</sup> ने<sup>४</sup> क, था<sup>१</sup> ष्वो<sup>१</sup> था<sup>१</sup>  
त छ्येन्<sup>२</sup> प्रु<sup>२</sup> कौ<sup>४</sup> ।

उन दोनों बच्चों में से एक  
लड़का है, दूसरी लड़की । वह  
लड़का केवल किताब पढ़ना और  
अखबार पढ़ना पसन्द करता  
है । लड़की चीजें खरीदना ही  
पसन्द करती है । वह साढ़े बारह  
डालर में एक व कलम, चालीस  
डालर नब्बे सेंट में एक कलाई  
घड़ी खरीदी है । थोड़ी सी यह  
चीज खरीदती है, तो थोड़ी-सी  
वह चीज । वह कहती है उसके  
पास पैसे की कमी है ।

## नए शब्द

सं०

सं०

इ <sup>४</sup> स्च्	अर्थ, मतलब	मु <sup>३</sup> छिन्	माता
श्याड <sup>३</sup> श्या	देश (ग्रामीण क्षेत्र)	फु <sup>४</sup> मु <sup>३</sup>	माता-पिता
माव् <sup>४</sup> च्	टोप	क <sup>१</sup> क	बड़ा भाई
फु <sup>४</sup> छिन्	पिता	ति <sup>४</sup> ति	छोटा भाई

सं०

क्रि०

च्ये <sup>३</sup> च्ये	बड़ी बहन	ताय् <sup>४</sup>	पहनना (घड़ी, टोप आदि)
मै <sup>४</sup> मै	छोटी बहन	यौ <sup>३</sup>	होना (अस्तित्व सूचक)
श्यवे <sup>२</sup> षड्	विद्यार्थी	श्यवे <sup>२</sup>	पढ़ना, सीखना
	(सीखने वाला)		

वि०

क्रि० वि०

त्वो <sup>१</sup>	अधिक, बहुत		
षाव् <sup>३</sup>	(मात्रा में) कम,	श्यवे <sup>२</sup>	सीखना
पयेन् <sup>२</sup> इ	सस्ता	शि <sup>३</sup> ह् वान्	पसंद करना

सहायक शब्द (स० श०)

लाव् <sup>३</sup>	पुराना (वर्षों में)	त (द)	संज्ञा और क्रियापद, विशेषतासूचक प्रत्यय
-------------------	---------------------	-------	--

## उदाहरणमाला

(क) विशेषता-सूचक के रूप में संज्ञा

१. सामान्यतः बगैर "त" के

१- वो<sup>३</sup> मन् च्.वो<sup>४</sup> इ<sup>४</sup>ल्याळ<sup>३</sup> (आइए) हम कुछ चीनी भोजन

- चुङ्क्वो<sup>२</sup> फान्<sup>१</sup>, हाव्<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> बनाएं, ठीक है या नहीं ?  
हाव् ?
- २- नि<sup>३</sup> फु<sup>४</sup> छिन् यो<sup>३</sup> चुङ्क्वो<sup>२</sup> क्या तुम्हारे पिता का चीनी कुल  
शिङ् मै<sup>२</sup> यो<sup>३</sup> । नाम है ?
- ३- चे<sup>४</sup> ष्ट<sup>४</sup> पम्मा<sup>३</sup> चृ<sup>३</sup> ? ष्ट<sup>४</sup> त<sup>३</sup> यह किस प्रकार का कागज है ?  
क्वो<sup>३</sup> चृ<sup>३</sup> । यह जर्मन कागज है ?
- ४- था<sup>३</sup> क<sup>३</sup> क ति<sup>४</sup> ति तौ<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> उसके बड़े और छोटे भाई चीनी  
श्यवे<sup>२</sup> (ष्वो) चुङ्क्वो<sup>२</sup> भाषा (बोलना) सीखना चाहते  
ह्वा<sup>४</sup> । हैं ।

## २. सामान्यतः "त" के साथ

- १- नि<sup>३</sup> त इ<sup>४</sup> स्च् हन्<sup>३</sup> त्वै आपका विचार बिल्कुल सही है ।
- २- वो<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> तुङ् नि<sup>३</sup> त ह्वा<sup>४</sup> । मैं आपकी बात नहीं समझ  
रहा हूँ ।
- ३- चे<sup>४</sup> ष्ट<sup>४</sup> षै<sup>२</sup> त इ<sup>४</sup> स्च् नि<sup>३</sup> चृ<sup>३</sup>- यह विचार किसका है, क्या आप  
ताव् मा ? जानते हैं ।
- ४- ने<sup>४</sup> क श्यवे<sup>२</sup> षड् त च्ये<sup>३</sup> च्ये उस विद्यार्थी की बड़ी बहन  
ह्वै<sup>४</sup> छाड्<sup>४</sup> कळ<sup>३</sup>, ख<sup>३</sup> ष्ट गाना जानती है परन्तु उसकी  
था<sup>३</sup> त मै<sup>४</sup> मै पु<sup>३</sup> ह्वै । छोटी बहन नहीं जानती ।
- ५- चुङ्क्वो<sup>२</sup> त श्याङ्<sup>३</sup> श्या क्या चीनी ग्रामीणजन टोप पहि-  
रन्<sup>३</sup> ताय्<sup>४</sup> माव्<sup>४</sup> च पु<sup>३</sup>- नते हैं ?  
ताय् ?
- ६- इ<sup>३</sup> ख्वाय् छ्येन्<sup>३</sup> त थाङ्<sup>४</sup> क्या एक डालर मूल्य की चीनी  
कौ मा ? काफी होगी ?



## ३. वही लुप्त-संज्ञा के बोध सहित

- १- चे<sup>३</sup> क पि<sup>३</sup> षृ<sup>४</sup> वै<sup>३</sup> त ? यह कलम किसकी है ? यह एक  
 षृ<sup>४</sup> इ<sup>३</sup> क इ<sup>३</sup> खे<sup>३</sup> षड् त, पु<sup>३</sup> विद्यार्थी की है, अध्यापक की  
 षृ<sup>४</sup> श्येन्<sup>३</sup> षड् त । नहीं ।
- २- नै<sup>३</sup> ल्याड्<sup>३</sup> चाड्<sup>३</sup> ह्याळ<sup>४</sup> वे दो चित्र किस व्यक्ति के हैं ।  
 षृ<sup>४</sup> षम्मा रन्<sup>३</sup> त ? वो<sup>३</sup> मैं नहीं जानता ।  
 पु<sup>३</sup> चृताव्<sup>३</sup> ।
- ३- नै<sup>३</sup> क षृ<sup>४</sup> नि<sup>३</sup> त ? चे<sup>३</sup> क षृ<sup>४</sup> तुम्हारा कौन सा है ? यह मेरा  
 वो<sup>३</sup> त, नै<sup>३</sup> क षृ<sup>४</sup> नि<sup>३</sup> त । है, वह तुम्हारा है ।
- ४- चे<sup>३</sup> क पु<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> षृ<sup>४</sup> नि<sup>३</sup> त मा ? क्या यह भी तुम्हारा नहीं है ?
- ५- नि<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> खाय्<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup> त तुम कितने डालर मूल्य का  
 चृ<sup>३</sup> ? वो<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> खाय्<sup>३</sup> कागज खरीद रहे हो ? मैं तीन  
 छ्येन्<sup>३</sup> त । डालर मूल्य का खरीद रहा हूँ ।

(ख) संज्ञाएँ जिनकी विशेषता विशेषण द्वारा सूचित होती हैं

१. सामान्यतः बगैर “त” के (साधारण विशेषण)
- १- वो<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> मै शि<sup>३</sup> ह्वान्<sup>३</sup> ताय्<sup>३</sup> मेरी छोटी बहन नए टोप पहि-  
 शिन<sup>३</sup> माव्<sup>३</sup> च् । नना पसंद करती है ।
- २- वो<sup>३</sup> ति<sup>३</sup> ति शि<sup>३</sup> ह्वान्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> मेरा छोटा भाई पुरानी पुस्तकें  
 च्यु<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> । खरीदना पसन्द करता है ।
- ३- न्यु<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> नड्<sup>३</sup> ताय्<sup>३</sup> ता<sup>३</sup> स्त्रियां बड़ी कलाई घड़ियां नहीं  
 प्याव्<sup>३</sup> । पहिन सकती हैं ।
- ४- नि<sup>३</sup> मन् यौ<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> चृ<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> क्या तुम लोगों के पास अच्छा  
 यौ<sup>३</sup> ? कागज है ?
- ५- हाव्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup> । चे<sup>३</sup> क अच्छे लोग अधिक नहीं हैं ।  
 ह्वान्<sup>३</sup> त्वै<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> त्वै<sup>३</sup> ? क्या यह बात सही है ?

- ६- था<sup>१</sup> च्ये च्येषू<sup>२</sup> क हावू<sup>३</sup> श्य वे<sup>३</sup>- उसकी बड़ी बहिन एक अच्छी छात्रा है ।  
षड् ।

## २. सामान्यतः "त" के साथ

- १- अ<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> इ<sup>३</sup> क हन्ता<sup>४</sup>- रूस एक बहुत बड़ा देश है ।  
त क्वो<sup>३</sup> ।
- २- था<sup>१</sup> थाय्<sup>२</sup> थाय्<sup>२</sup> च्यु<sup>३</sup> शि<sup>३</sup>- उसकी पत्नी केवल सुन्दर टोप  
ह्वान्<sup>१</sup> ताय्<sup>२</sup> हावू<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup>त पहिनना पसंद करती है ।  
मावू<sup>३</sup>च् ।
- ३- पु<sup>३</sup> त्वै<sup>३</sup>त षू<sup>३</sup> था<sup>१</sup> पु<sup>३</sup> च.को<sup>३</sup>। वह गलत काम नहीं करता है ।
- ४- चे<sup>३</sup>क हन्श्यावू<sup>३</sup>त तुङ्<sup>३</sup>शि इस छोटी सी चीज का क्या  
च्यावू<sup>३</sup>षेम्मा ? वो<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> चू- नाम है ? मैं नहीं जानता ।  
तावू<sup>३</sup> ।
- ५- चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>यी हन्त्वो<sup>३</sup> चीन में अधिक जापानी लोग  
(त) ऋ<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> (देखिए नहीं हैं ।  
नोट ८-४)
- ६- मै<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> यो<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> षावू<sup>३</sup>(त) अमरीका में चीनी लोग कम  
चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup>रन्<sup>३</sup> (देखिए नोट नहीं हैं ।  
८-४)

## ३. वही—लुप्त संज्ञा के बोध सहित

- १- नि<sup>३</sup> यावू<sup>३</sup> मायू<sup>३</sup> ता<sup>४</sup>त, यावू<sup>३</sup> तुम बड़ा वाला खरीदना चाहते  
मायू<sup>३</sup> श्यावू<sup>३</sup>त ? हो या छोटा वाला ?
- २- ता<sup>४</sup>त फ्येन्<sup>३</sup>इ, श्यावू<sup>३</sup>त ववै । बड़ा वाला सस्ता है, छोटा  
वाला महंगा है ।
- ३- चे<sup>३</sup>क हावू<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup>त षू<sup>३</sup> था<sup>१</sup>त, यह सुंदर दिखनेवाला, उसका

- पुंहाव्<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> त ये<sup>३</sup> ष्<sup>४</sup> था<sup>३</sup> त । है, असुंदर दिखने वाला भी उसका है ।
- ४- श्याव्<sup>३</sup> प्याव्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup>, ख<sup>३</sup> ष्<sup>४</sup> छोटी कलाई घड़ी अच्छी श्याव्<sup>३</sup> त कवै<sup>३</sup> । होती है लेकिन छोटी घड़ी कीमती होती है ।
- ५- चे<sup>३</sup> चाङ्<sup>३</sup> ह्वाळ<sup>४</sup> ष्<sup>४</sup> शिन<sup>३</sup> त, यह चित्र नया है, वह पुराना नै<sup>३</sup> चाङ्<sup>३</sup> ष्<sup>४</sup> च्यु<sup>३</sup> त । है ।

### व्याकरण

८-१ विशेषता सूचक : चीनी वाक्य के शब्दविन्यास के नियमानुसार विशेषता-सूचक को सर्वदा अपने केन्द्रीय शब्द के पहले आना चाहिए या उस शब्द के पहले आना चाहिए जिसकी वह विशेषता बतलाता है । यह विशेषता-सूचक कोई एक शब्द, शब्द-समुदाय वाक्शैली अथवा वाक्यखंड हो सकता है ।

विशेषता सूचित करने में 'त' एक भूमिका अदा करता है; लेकिन हर विशेषण के साथ 'त' का प्रयोग नहीं होता । यहां हम 'त' के प्रयोग की कुछ विधियां बतायेंगे :—

(१) कुछ संज्ञाएं तथा सर्वनाम जिनका प्रयोग विशेषण के रूप में किया जाता है, अपने शब्दों के इतने अखंडनीय भाग होते हैं कि वे सब स्थायी शब्द-समूह बन जाते हैं । ऐसी दशा में सहायक शब्द 'त' का प्रयोग नहीं होता । जैसे :—

वो<sup>३</sup> फङ्<sup>३</sup> यौ, निन् थाय्<sup>४</sup>-थाय्, वो<sup>३</sup> मेन हाय्<sup>३</sup> च्, आदि ।

(२) कुछ संज्ञाओं का प्रयोग इतना सार्वदेशिक है कि वे एक साथ मिलकर अविभाज्य स्थायी शब्दसमूह बन गये हैं और 'त' के प्रयोग की जरूरत नहीं होती; जैसे :—

फ्रान्<sup>३</sup>-छयेन्<sup>३</sup> (भोजन के लिए पैसे), ख रन्<sup>३</sup> (अतिथि),



फ़ान्<sup>४</sup>-चवो<sup>१</sup> (खाने की मेज) क्वो<sup>२</sup>-क<sup>१</sup> (राष्ट्रीय गीत)

जो संज्ञाएं निर्जीव पदार्थों की विशेषता प्रगट करती हैं उनके बाद 'त' का प्रयोग अवश्य होना चाहिये। जैसे :—वो<sup>३</sup>-त व्याव्<sup>३</sup>, था<sup>१</sup>-त-षू<sup>१</sup>, षै<sup>२</sup>त छयेन्<sup>२</sup> आदि। किसी मूल्य-सूचक विशेषता प्रगट करने वाले वाक्यांश के साथ 'त' का प्रयोग जरूरी है जैसे :—उ<sup>३</sup> माव<sup>२</sup> छयेन्<sup>२</sup>-त थाङ्<sup>२</sup>, इ<sup>४</sup> पाय्<sup>३</sup> ख्वाय्<sup>४</sup> छयेन्<sup>२</sup> त षू<sup>१</sup>, आदि।

(३) स्थान-वाचक विशेषता-सूचक संज्ञा के साथ 'त' अक्सर प्रयुक्त नहीं होता। जैसे :—मै<sup>३</sup>क्वौ<sup>२</sup> रन्<sup>२</sup>, चुङ्<sup>१</sup>क्वो<sup>२</sup> पाव<sup>४</sup>, ईङ<sup>१</sup>क्वौ<sup>२</sup> फङ्<sup>२</sup>यौ, आदि।

(४) विशेषण का खास तौर से शब्दांशिक विशेषणों का प्रयोग करते समय आम तौर से 'त' की जरूरत नहीं होती; जैसे :—ता<sup>४</sup> क्वो<sup>२</sup>, हाव्<sup>३</sup> रन्<sup>२</sup> लाव्<sup>३</sup> रन्<sup>२</sup> लाव्<sup>३</sup> थाय्<sup>४</sup>थाय।

संज्ञा और सर्वनाम की तरह कुछ विशेषण भी अपने केन्द्रीय शब्दों के इतने अखंड भाग हो गये हैं कि अब वे स्थायी शब्द-समूह बन गये हैं, जैसे,

ता<sup>४</sup> रन्<sup>२</sup> (प्राप्त-वयस्क, युवा, बालिग), श्याव्<sup>३</sup> रन्<sup>२</sup> (बुरा आदमी, बदमाश) श्याव्<sup>३</sup>-हाय्<sup>३</sup>च् (बच्चा), ता<sup>४</sup>-क<sup>१</sup> (बड़ा भाई), ता<sup>४</sup>च्चे<sup>३</sup> (बड़ी दीदी), आदि।

(५) जब विशेषण के पहले कोई क्रिया विशेषण विशेषतासूचक के रूप में प्रयुक्त होता है तो 'त' का प्रयोग सामान्यतः अपरिहार्य हो जाता है; जैसे :—

हन्<sup>३</sup> लाव्<sup>३</sup>-त रन्<sup>२</sup>, पुहाव्<sup>३</sup>-त- हाय्<sup>३</sup>च्, हाव्<sup>३</sup>-खान्-त ह्वाळ, मै<sup>२</sup>-ईस्च् त षू आदि।

८-२ यदि संदर्भ से यह स्पष्ट हो कि विशेष्य क्या है तो विशेष्य को छोड़ा जा सकता है, लेकिन विशेषण के पश्चात्

आने वाला 'त' किसी भी हालत में नहीं छोड़ा जा सकता, जैसे :—

चे<sup>१</sup> षू<sup>२</sup> षै<sup>३</sup> त ? वो त यह किसका है ? मेरा है ।

चुड<sup>१</sup> ववो<sup>२</sup> षू<sup>३</sup> चुड<sup>१</sup>-ववो<sup>२</sup> रन्<sup>३</sup> त चीन चीनदेशवासियों का है ।

८-३ "त्वो<sup>३</sup>" और "षाव्<sup>३</sup>" यह दोनों बहुत ही प्रचलित विशेषण हैं लेकिन इनके प्रयोग में कुछ विशेषताएं हैं । विधेय के रूप में (तुलना के अर्थ में) इनमें से कोई भी प्रयुक्त हो सकता है और इनके पहले कोई भी क्रिया विशेषण आ सकता है; जैसे :— इय<sup>१</sup>वे<sup>२</sup>षड् त्वो<sup>३</sup> इयेन्<sup>३</sup>-षड् षाव्, इय<sup>१</sup>वे<sup>२</sup>-षड् हन् त्वो इयेन्<sup>३</sup>-षड् हन्<sup>३</sup> षाव् (तुलनात्मक)

लेकिन संज्ञा के विशेषतासूचक के रूप में वे अन्य विशेषणों से भिन्न हैं । हमें 'हन्<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup>', 'हन्<sup>३</sup> षाव्<sup>३</sup>' कहना चाहिए । हम ऐसा नहीं कह सकते कि 'त्वो<sup>३</sup> इयेन्<sup>३</sup>-षड् षू<sup>२</sup> इन्<sup>२</sup>-तु<sup>२</sup> रन्<sup>३</sup>', इसकी अपेक्षा हमें इस प्रकार कहना चाहिये :—'हन्<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup> इयेन्<sup>३</sup>-षड् षू<sup>२</sup> इन्<sup>२</sup>-तु<sup>२</sup> रन्<sup>३</sup> । एक और बात ध्यान में रखनी चाहिए कि 'हन्<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup>' और 'हन्<sup>३</sup> षाव्<sup>३</sup>' के बाद 'त' का प्रयोग वैकल्पिक है, जैसे :—हन्<sup>३</sup>-त्वो<sup>३</sup> (त) रन्<sup>३</sup>, पु<sup>३</sup> षाव्<sup>३</sup> (त) तुड्<sup>१</sup>-शि, आदि । लेकिन हम 'त्वो<sup>३</sup>' त रन्<sup>३</sup> षाव्<sup>३</sup>-त तुड्<sup>१</sup>-शि' इत्यादि कभी नहीं कह सकते ।

८-४ यौ<sup>३</sup> - 'यौ<sup>३</sup>' का अर्थ 'के पास होना' है लेकिन इससे कोई व्यापार प्रगट नहीं होता । इससे स्वामित्व का सम्बन्ध व्यक्त होता है और इसका कर्त्ता हमेशा कोई प्राणिवाचक संज्ञा या सर्वनाम होता है; जैसे :—'वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>' मेरे पास किताब है; 'था<sup>१</sup> मै<sup>२</sup>यौ<sup>३</sup> पि<sup>३</sup>' उसके पास कलम नहीं है ।

लेकिन अगर हम यह बताना चाहें कि किसी स्थान पर कितने प्राणी अथवा वस्तुएं हैं, या किसी निश्चित अवधि में कितनी छोटी

इकाइयां हैं तो भी यौ का प्रयोग होता है। ऐसी दशा में स्थान-  
बोधक शब्द अथवा शब्द समूह कर्त्ता होता; जैसे :—

इन्<sup>१</sup>- तु<sup>२</sup> ये<sup>३</sup> यो<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> प्याव्<sup>३</sup>—भारत में भी अच्छी घड़ियां  
मिलती हैं।

वो<sup>३</sup>मन इ.खे<sup>२</sup> श्याव् यौ<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> त्वो<sup>१</sup> इ.खे-षङ्—हमारे विद्या-  
लय में बहुत छात्र हैं।

अगर 'यौ<sup>३</sup>' के पहले किसी कर्त्ता का प्रयोग न हो तो इसका  
व्यवहार अकर्तृक रूप में होता है और इसका अनुवाद 'है' या 'था'  
होता है, अंग्रेजी में इसका अनुवाद 'देयर इज (वाज)' 'देयर आर  
(वेर)' होता है अर्थात् 'यौ<sup>३</sup>' वाक्य के आरम्भिक अर्थ में प्रयोग  
होता है :—यथा 'यौ<sup>३</sup> ई<sup>३</sup>क रन्<sup>२</sup>-कोई एक आदमी था (है)।

८-५ मै<sup>२</sup>-यौ<sup>३</sup>: 'यौ<sup>३</sup>' का निषेधार्थक रूप 'मै<sup>२</sup> है, मै<sup>२</sup> यौ<sup>३</sup>'  
हमेशा 'मै<sup>२</sup>' के रूप में संक्षिप्त किया जा सकता है जब भी वह  
क्रिया या कर्म के पहले प्रयुक्त हो; जैसे :—

वो<sup>३</sup> मै<sup>२</sup> छयेन्<sup>२</sup>—मेरे पास पैसे नहीं हैं।

था<sup>१</sup> मै<sup>२</sup> लाय्<sup>३</sup>—वह नहीं आया।

लेकिन जब 'मै<sup>२</sup> यौ<sup>३</sup>' का प्रयोग किसी प्रश्न का उत्तर देने के  
लिए अकेले किया जाए तो इसे कभी भी संक्षिप्त नहीं करना  
चाहिये; जैसे :—

था<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup> छयेन्<sup>२</sup> मै<sup>२</sup> यौ ? उसके पास पैसे हैं या नहीं ?

मै<sup>२</sup> यौ<sup>३</sup>—नहीं ?

नोट : चीनी भाषा में ग, ज, द, ब और घ, झ, ञ, ये ध्वनियां  
नहीं हैं। लेकिन उच्चारण करते समय ध्वनि संधि के फल-  
स्वरूप 'त' का 'द' और 'क' का 'ग' जैसे उच्चारण भी  
होता है, विशेषतया मापक शब्द 'क' और विशेषतासूचक  
'त' का।



## पाठ-९

वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>क चुङ्<sup>३</sup> ववो<sup>३</sup>  
फङ्<sup>३</sup>यौ। इ<sup>३</sup>क शिङ्<sup>३</sup>चाङ्<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>क  
शिङ्<sup>३</sup>छन्<sup>३</sup>। शिङ्<sup>३</sup>चाङ्<sup>३</sup>त ने<sup>३</sup>-  
क फङ्<sup>३</sup>यौ यौ<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>क न्यू<sup>३</sup>-  
अळ। था<sup>३</sup>मन् तौ<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup>छूङ्<sup>३</sup>-  
मिङ्<sup>३</sup>।

चाङ्<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup>ह्वा<sup>३</sup>  
ह्वाळ<sup>३</sup>। था<sup>३</sup>ह्वा<sup>३</sup>त ह्वाळ<sup>३</sup>  
रन्<sup>३</sup>रन्<sup>३</sup> तौ<sup>३</sup>शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>३</sup>। ता<sup>३</sup>  
श्याव्<sup>३</sup>च्ये ये<sup>३</sup> श्याङ्<sup>३</sup>श्यवे<sup>३</sup>  
ह्वा<sup>३</sup> ह्वाळ<sup>३</sup>। था<sup>३</sup>ष्वो<sup>३</sup>  
“पा<sup>३</sup>पा, ह्वा<sup>३</sup> ह्वाळ<sup>३</sup> च्चै  
यौ<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>स्च्<sup>३</sup>। वो<sup>३</sup> श्याङ्<sup>३</sup>  
श्यवे<sup>३</sup>इ त्याळ<sup>३</sup>। निन्<sup>३</sup>नङ्<sup>३</sup>  
च्याव्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> मा ?” था<sup>३</sup> फु<sup>३</sup>  
छिन्<sup>३</sup>ष्वो<sup>३</sup>। “वो<sup>३</sup> ह्वा<sup>३</sup>त पु<sup>३</sup>  
हाव्<sup>३</sup>। यौ<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>वै<sup>३</sup>छन्<sup>३</sup>श्येन्<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup>,  
था<sup>३</sup> ह्वा<sup>३</sup>त हन्<sup>३</sup>हाव्<sup>३</sup>।  
नि<sup>३</sup>छिङ्<sup>३</sup> था<sup>३</sup> च्याव्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup>,  
पु<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> मा ?

मेरे दो चीनी मित्र हैं, एक का  
नाम चाङ् और एक का छन्  
है। जिसका नाम चाङ् है  
उसकी दो पुत्रियाँ हैं। दोनों  
बहुत प्रतिभाशाली (बुद्धिमान)  
हैं।

श्री चाङ् चित्रकला जानते हैं।  
प्रत्येक व्यक्ति उनके चित्रों को  
पसंद करता है। बड़ी पुत्री भी  
चित्रकारी सीखना चाहती थी।  
वह बोली “पिताजी, चित्रकारी  
अत्यधिक दिलचस्प है। मैं  
तनिक सीखना चाहती हूँ। क्या  
आप मुझे सिखा सकेंगे ?”  
उसके पिता बोले: “मैं अच्छी  
चित्रकारी नहीं करता। यहाँ  
एक छन् महाशय हैं वे बहुत  
अच्छी चित्रकारी करते हैं। तुम  
उनसे सिखाने के लिए पूछो।  
ठीक है न ?”

अळ<sup>४</sup> श्याव्<sup>३</sup> च्ये<sup>१</sup> ष्वो<sup>१</sup> चुङ्<sup>१</sup>-  
 क्वो<sup>२</sup> श्ये<sup>२</sup> षड् च<sup>२</sup> वै<sup>२</sup> आय्<sup>२</sup>  
 श्ये<sup>२</sup> वे<sup>२</sup> त ष्व<sup>२</sup> इङ्<sup>२</sup> वेन्<sup>२</sup> । था<sup>२</sup>  
 श्याङ्<sup>३</sup> च्याव्<sup>३</sup> था<sup>३</sup> मन्, ख<sup>३</sup>-  
 ष् था<sup>३</sup> त इङ्<sup>३</sup> वेन्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup>  
 हाव्<sup>३</sup> । था<sup>३</sup> छिङ्<sup>३</sup> था<sup>३</sup> मु<sup>३</sup> छिन्  
 च्याव्<sup>३</sup> था<sup>३</sup> । था<sup>३</sup> मु<sup>३</sup> छिन्  
 ष्वो<sup>१</sup> : “वो<sup>१</sup> त इङ्<sup>१</sup> वेन्<sup>१</sup> ये<sup>३</sup>  
 पु<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> । च<sup>२</sup> वै<sup>२</sup> हाव्<sup>३</sup>,  
 नि<sup>३</sup> छिङ्<sup>३</sup> च्याव्<sup>३</sup> इङ्<sup>३</sup> वेन्<sup>३</sup> त  
 ने<sup>२</sup> वै वाय्<sup>२</sup> क्वो<sup>२</sup> श्येन्<sup>२</sup> षड्  
 च्याव्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> ।”

दूसरी पुत्री कहती है कि चीनी  
 छात्र अधिकतम अंग्रेजी का अध्य-  
 यन करना पसंद करते हैं। वह  
 उन्हें पढ़ाना चाहती है। लेकिन  
 उसकी अंग्रेजी बहुत अच्छी नहीं  
 है। उसने अपनी मां से कहा  
 कि उसे पढ़ा दे। उसकी मां  
 बोली: “मेरी अंग्रेजी भी ज्यादा  
 अच्छी नहीं है। सबसे ज्यादा  
 अच्छी बात तुम्हारे लिए यह है  
 कि तुम उन विदेशी सज्जन से  
 पढ़ाने को कहो जो अंग्रेजी  
 पढ़ाते हैं।”

### नये शब्द

मा०  
 —श्ये<sup>१</sup> कुछ

—वै<sup>२</sup> (व्यक्तियों के लिये  
 नम्रताबोधक)

क्रि०

श्याङ्<sup>३</sup>

सोचना, बारे में सोचना,  
 इच्छा करना

(सहायक क्रिया--विचार  
 करना, योजना बनाना,  
 चाहना)

सं०

अळ<sup>४</sup> च् बेटा, पुत्र

न्येन्<sup>२</sup>

पढ़ना (उच्चारण करके),  
 पढ़ाई करना

न.यू<sup>३</sup> अळ बेटी, पुत्री

च्याव्<sup>३</sup>  
 ह्वा<sup>३</sup>  
 ह<sup>३</sup>

पढ़ाना  
 चित्रकारी करना  
 पीना

सं०	क्रिया-कर्म (क्रि० क०)
इङ् वेन् <sup>२</sup>	अंग्रेजी भाषा न्येन् <sup>१</sup> पू <sup>१</sup> पढ़ाई करना, स्कूल जाना
छा <sup>२</sup>	चाय
प्वै <sup>३</sup>	पानी, जल च्याव् <sup>१</sup> पू <sup>१</sup> अध्यापन करना ।
च्यु <sup>३</sup>	मदिरा, शराब

### क्रि० वि०

च.वै अधिकतम, तम  
छाङ्<sup>२</sup> (छाङ्<sup>२</sup>) प्रायः, हमेशा  
वि०

नान्<sup>२</sup> कठिन होना  
रुङ्<sup>२</sup>इ आसान होना, सरल  
छूङ्<sup>१</sup> मिङ् बुद्धिमान होना, चालाक  
हाव्<sup>३</sup> थिङ्<sup>१</sup> सुनने में अच्छा

### उदाहरणमाला

(क) सामान्य वाक्यों में वाक्य-खंड (प्रायः 'तौ' के साथ)

नमूने :

(१-५) नङ्<sup>२</sup> खान्<sup>१</sup> पु<sup>१</sup>त रन्<sup>२</sup>तौ<sup>१</sup> नङ्<sup>२</sup> इये<sup>३</sup> च्<sup>१</sup> मा ?

क्या जो पढ़ सकते हैं, वे लिखना भी जानते हैं ?

(६-१०) था<sup>१</sup> प्वो<sup>१</sup>त ह्वा<sup>१</sup> च.वै<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup> इ<sup>१</sup> स्च्

उसकी कही बात अत्यन्त मजेदार होती है ।

१- ह्वा<sup>१</sup> प्वो<sup>१</sup> चुङ्<sup>१</sup>क्वो<sup>२</sup> ह्वा<sup>१</sup>त चीनी भाषा बोल सकने वाले  
मैक्वो<sup>२</sup> रन्<sup>१</sup> पु<sup>१</sup>षाव्<sup>३</sup>, ख<sup>३</sup>पृ अमरीकी कम नहीं हैं । लेकिन



- ह<sup>१</sup>वै<sup>१</sup> श्ये<sup>३</sup> चुङ्<sup>१</sup>क्वो<sup>३</sup>च<sup>१</sup>त् पु<sup>१</sup>त्वो<sup>१</sup> । बहुत कम (अमरीकी) चीनी  
अक्षर लिख सकते हैं ।
- २- आय<sup>१</sup> ह<sup>१</sup> च्यु<sup>३</sup>त् रन्<sup>३</sup> छाङ्<sup>३</sup> शराब पीना पसंद करने वालों  
छाङ्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup> । के पास अक्सर पैसा नहीं  
होता ।
- ३- न्येन्<sup>१</sup>पु<sup>१</sup>त् तौ<sup>१</sup>षृ<sup>३</sup>वेषङ्<sup>३</sup> मा<sup>३</sup>? क्या पढ़ने वाले सब विद्यार्थी  
होते हैं ?
- ४- च<sup>१</sup>वो<sup>१</sup> माय<sup>३</sup>माय<sup>३</sup>त् तौ<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup> क्या सब व्यापारी धनी हैं ?  
छ्येन्<sup>३</sup> मा<sup>३</sup> ?
- ५- शि<sup>३</sup> ह्वान्<sup>३</sup> था<sup>१</sup>न्यु<sup>३</sup> अळ<sup>३</sup> त रन्<sup>३</sup> बहुत लोग उसकी पुत्री को  
पु<sup>१</sup>षाव् पसंद करते हैं ।
- ६- था<sup>१</sup> ष्वो<sup>१</sup> त ह्वो<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> तुङ्<sup>३</sup> उसकी सारी बात क्या आप  
मा<sup>३</sup> ? समझते हैं ?
- ७- वो<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> आय<sup>१</sup> खान<sup>१</sup> था<sup>१</sup> उसकी लिखी हुई किताबें  
च<sup>१</sup>वो<sup>१</sup>त् पू<sup>१</sup> । पढ़ना मैं पसंद करता हूं ।
- ८- नि<sup>३</sup>मन्<sup>३</sup> न्येन्<sup>१</sup>त् पू<sup>१</sup> नान्<sup>३</sup> आप जो किताब पढ़ रहे हैं  
पुनान्<sup>३</sup> ? क्या वह कठिन है ?
- ९- वो<sup>३</sup> ष्वो<sup>१</sup>त् त्वै<sup>१</sup> पु<sup>३</sup> त्वै<sup>१</sup> । मैं जो कहता हूँ वह ठीक है  
या नहीं ?
- १०- था<sup>१</sup>मन्<sup>३</sup> छाङ्<sup>३</sup> त षृ<sup>३</sup> षम्मा<sup>३</sup> वे लोग कौन सा गीत गा रहे  
कळ<sup>१</sup> । हैं ?

(ख) विशेष प्रकार के वाक्यों में वाक्यखंड ( हमेशा निश्चयवाचक शब्द के साथ)

नमूने :

(१-४) छाङ् कळत नेक रन्शिङ् लि<sup>३</sup> ।

गाने वाले व्यक्ति का नाम ली है ।

(५-८) था<sup>१</sup> छाङ् त नेश्ये कळ<sup>१</sup> चन्<sup>१</sup> हाव्<sup>३</sup> थिङ्<sup>१</sup> ।

वह जो गीत गा रहा है वह सचमुच मधुर है ।

(९-१०) नेक माय् थाङ् त ष् श्याङ् श्या रन्<sup>३</sup> ।

वह मिठाई बेचने वाला व्यक्ति ग्रामीण है ।

१- च्याव् इङ् वेन् त नेवै<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup> अंग्रेजी पढ़ाने वाली कुमारी  
च्ये शिङ् छन्<sup>३</sup> । महिला का नाम छन् है ।

२- छिङ् नि<sup>३</sup> छु<sup>१</sup> फ्रान् त नेवै तुम्हें भोजन पर निमंत्रित  
श्येन् षङ् षु<sup>१</sup> पुषु चाङ् करने वाले महाशय क्या मि०  
श्येन् षङ् ? चाङ् है ?

३- छाङ् कळत नेश्ये हाय् च् तौ गाने वाले वे सब बालक मेरे  
षु वो<sup>३</sup> त श्य वे षङ् । छात्र हैं ।

४- वो<sup>३</sup> याव् खान् नि<sup>३</sup> माय् त मैं तुम्हारी खरीद्री हुई उस नई  
नेक शिन् पि<sup>३</sup> । कलम को देखना चाहता हूँ ।

५- वो<sup>३</sup> श्येन् चाय् ताय् त चेक यह टोप जो मैं अभी पहने  
माव् च् थाय् नान्<sup>३</sup> खान् । हुए हूँ दिखने में बहुत खराब है ।

६- था<sup>१</sup> प्वो<sup>३</sup> त नेश्ये ह्वा<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> त्वै<sup>३</sup> । उसकी कही वे बातें सही नहीं  
हैं ।

७- निन् त न्यू<sup>३</sup> अळ श्ये<sup>३</sup> त नेश्ये आपकी पुत्री द्वारा लिखे हुए  
च् चन् हाव्<sup>३</sup> । वे अक्षर सचमुच सुन्दर हैं ।

८- नेक माय् पाव् त श्येन् चाय् समाचारपत्र का वह व्यापारी  
हन् यौ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup> । अब बहुत धनी है ।

- ६- ने<sup>१</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> क च<sup>१</sup>वो<sup>१</sup>फ्रान्<sup>३</sup>त, इ<sup>३</sup>क च्याव्<sup>३</sup> लाव्<sup>३</sup> चाङ्, इ<sup>३</sup>क च्याव्<sup>३</sup> लाव्<sup>३</sup> लि<sup>३</sup>।      उन दो खाना बनानेवालों में से एक का नाम लाव् (वृद्ध) चाङ् है और एक का नाम लाव् (वृद्ध) ली है ।

### द्रुत-पाठ

हाय्<sup>३</sup> च् हन्<sup>३</sup> छूङ्<sup>३</sup> मिङ्  
 श्याव्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च् हन्<sup>३</sup> छूङ्<sup>३</sup> मिङ्  
 ने<sup>१</sup>क श्याव्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च् हन्<sup>३</sup> छूङ्<sup>३</sup> मिङ्  
 न्येन्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>त नेक श्याव्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च् हन्<sup>३</sup> छूङ्<sup>३</sup> मिङ्  
 न्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>त नेक श्याव्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च् हन्<sup>३</sup> छूङ्<sup>३</sup> मिङ्  
 न्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>त ने ल्याङ्<sup>३</sup> क श्याव्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च् हन्<sup>३</sup> छूङ्<sup>३</sup> मिङ्  
 न्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>त ने ल्याङ्<sup>३</sup> क श्याव्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> च् चन्<sup>३</sup> छूङ्<sup>३</sup> मिङ्

### व्याकरण

६-१ चीनी भाषा में विशेषता-सूचक वाक्यखंड आम विशेषण जैसे ही कर्त्ता के पहले प्रयोग किया जाता है । लेकिन इसे कर्त्ता से जोड़ने के लिये 'त' का प्रयोग होना ही चाहिये । यह वाक्यखंड मुख्य रूप से क्रिया और विशेषण दोनों से ही बनता है तथा उद्देश्य और विधेय दोनों ही स्थान पर प्रयुक्त हो सकता है । अंग्रेजी में इसका अनुवाद 'हु', 'हुइच' 'दैट' आदि से होता है और वाक्यखंड कर्त्ता के बाद आता है । लेकिन हिंदी में इसका प्रयोग चीनी भाषा की तरह ही होता है । उदाहरण के तौर से 'कल आने वाला आदमी' चीनी भाषा में 'च<sup>१</sup>वो<sup>१</sup>-थ्येन् लाय<sup>३</sup>-त रन्<sup>३</sup>' (कल आने वाला आदमी) । चालू हिन्दी



भाषा में इसे इस तरह भी कहते हैं —‘वह आदमी जो कल आया था’, अंग्रेजी—दि मैंन हुआ कैम एसटर डे। ड्वो<sup>१</sup> ह्वा<sup>१</sup> त रन्<sup>२</sup>—बातें करता हुआ आदमी, (अथवा जो आदमी बातें कर रहा है)। था<sup>१</sup> ड्वो<sup>१</sup>-त ह्वा<sup>१</sup>—उसकी कही हुई बातें (अथवा जो बातें उस कहनीं)—दि थिंग्स (हुइच्) हि सेज। ‘चुड<sup>१</sup> ड्वो<sup>२</sup> ह्वा<sup>१</sup> हाव<sup>३</sup> त रन्<sup>२</sup>—चीनी भाषा में निपुण व्यक्ति (अथवा जो चीनी अच्छी तरह जानता हो)।

६-२ अगर वाक्यखंड निश्चयवाचक और संख्यावाचक शब्द के साथ प्रयुक्त हो तो वाक्यखंड पहले आता है।

(१) ने<sup>१</sup>क रन्<sup>२</sup>—वह आदमी,

ड्वो<sup>१</sup>-ह्वा<sup>१</sup>-त ने<sup>१</sup>क रन्<sup>२</sup>—बातों में लगा हुआ वह आदमी, (अथवा वह आदमी जो बातें कर रहा है)।

(२) ने<sup>१</sup>-वै<sup>१</sup> श्येन्<sup>१</sup>षड्,—वह अध्यापक।

च्याव<sup>१</sup> चुड<sup>१</sup>-वेन्<sup>२</sup>-त-ने<sup>१</sup>-वै<sup>१</sup> श्येन्<sup>१</sup>षड्,—चीनी भाषा पढ़ाने वाला वह अध्यापक (अथवा वह अध्यापक जो चीनी पढ़ाते हैं)

(३) चे<sup>१</sup> ल्याड्<sup>३</sup>क हाय्<sup>२</sup>-च्,—ये दो बच्चे।

न्येन्<sup>१</sup>-पू<sup>१</sup>-त-चे<sup>१</sup>-ल्याड्<sup>३</sup>क हाय्<sup>२</sup> च्,—पढ़ने वाले ये दो बच्चे, (अथवा ये दो बच्चे जो पढ़ाई करते हैं)। अंग्रेजी में उपरोक्त निश्चयवाचक शब्दों का अनुवाद ‘दि’ से होता है, ‘दैंट’ या ‘दोज़, से नहीं।

६-३ कुछ विशेषता-सूचक वाक्यखंड ऐसे हैं जो कोई व्यापार या अवस्था बताते हैं और उनके अंत में ‘त’ होता है। ऐसे वाक्यखंड संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होकर संज्ञा का कार्य संपन्न करते हैं; जैसे :—माय्<sup>१</sup>-पु<sup>१</sup>-त—पुस्तक बेचने वाला

च.वो<sup>४</sup>-माय्<sup>३</sup> माय् त—व्यापारी

माय्-पाव्<sup>४</sup>-त—अखबार वाला

च.वो<sup>४</sup> फ़ान्<sup>४</sup>-त—पाचक (खाना बनाने वाला)

संज्ञा की तरह इनके साथ निश्चयवाचक या संख्यावाचक शब्द का प्रयोग हो सकता है; जैसे—ने<sup>४</sup>-क माय्<sup>३</sup>पाव्<sup>४</sup> त शिङ्<sup>४</sup> चाङ्<sup>१</sup> —उस अखबार वाले का नाम मि० चाङ् है ।

था<sup>४</sup>मन यौ<sup>३</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>क च.वो<sup>४</sup>-फ़ान्<sup>४</sup>त—उसके पास दो पाचक हैं । यह बताना जरूरी है कि उपरोक्त शब्द बोलचाल की भाषा में ज्यादा प्रयुक्त होते हैं । वैसे इनके औपचारिक प्रयोग के लिये दूसरे शब्द भी हैं :—जैसे :—‘च.वो<sup>४</sup>-फ़ान्<sup>४</sup>-त’ के लिये दूसरे शब्द हैं ‘छु<sup>३</sup>-च्’, और ‘च.वो<sup>४</sup>-माय्<sup>३</sup>-माय-त’ के लिये ‘षाङ्<sup>३</sup>रन्<sup>३</sup> है ।

६-४ क्रिया का प्रयोग द्विरुक्ति करके भी किया जाता है । चीनी भाषा में क्रिया की द्विरुक्ति से लघु तथा शीघ्रता का भाव प्रकट होता है । कुछ परिस्थितियों में क्रिया की द्विरुक्ति कोई अनौपचारिक या निरुद्देश्य व्यापार भी प्रगट कर सकती है । एक शब्दांशिक क्रिया को द्विरुक्ति करते समय दोनों के बीच ‘इ<sup>१</sup>’ (एक) का प्रयोग कर सकते हैं ।  
उदाहरण :

खान्<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> या खान्<sup>४</sup> इ खान्<sup>४</sup>—एक झलक देखना या पढ़ना ।

श्याङ्<sup>३</sup> श्याङ्<sup>३</sup> या श्याङ्<sup>३</sup> इ श्याङ्<sup>३</sup>—विचार करना, सोचना  
वेन्<sup>४</sup>-वेन्<sup>४</sup> या वेन्<sup>४</sup> इ वेन्<sup>४</sup>—पूछना

## पाठ-१०

- क- लि<sup>३</sup> श्येन्<sup>१</sup> षड्, निन्<sup>३</sup> च्या<sup>१</sup> ली महोदय, आपका घर कहाँ  
चाय् ना<sup>३</sup> छ ? है ?
- ख- चाय् नान्<sup>३</sup> चिड्<sup>१</sup> । नानकिड में ।
- क- चाय् छड्<sup>३</sup> लि<sup>३</sup> थौ मा ? क्या शहर के अन्दर है ?
- ख- पु<sup>३</sup>, चाय् छड्<sup>३</sup> वाय्<sup>३</sup> थौ । नहीं, शहर के बाहर ।
- क- छड्<sup>३</sup> वाय्<sup>३</sup> थौ ष<sup>३</sup> म्मा ति<sup>३</sup>- शहर के बाहर किस स्थान पर  
फाड् ? है ?
- ख- छड्<sup>३</sup> वाय्<sup>३</sup> थौ यौ<sup>३</sup> इ<sup>३</sup> क शहर के बाहर एक स्कूल है ।  
श्वे<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup> । वो<sup>३</sup> मन् च्या<sup>३</sup> हमारा घर स्कूल के पीछे की  
च्यु<sup>३</sup> चाय् ने<sup>३</sup> क श्वे<sup>३</sup>- ओर है ।  
श्याव्<sup>३</sup> हौ<sup>३</sup> थौ ।
- क- निन्<sup>३</sup> चाय् ने<sup>३</sup> क श्वे<sup>३</sup>- क्या आप उस स्कूल में पढ़ाते  
श्याव्<sup>३</sup> लि च्याव्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> मा ? हैं ?
- ख- पु<sup>३</sup> । वो<sup>३</sup> ष<sup>३</sup> क च्चो<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup>- नहीं, मैं एक व्यापारी हूँ ।  
माय त ।
- क- नि<sup>३</sup> मन् त फु<sup>३</sup> च् चाय् आपकी दुकान कहाँ है ?  
ना<sup>३</sup> छ ?
- ख- चाय् छड्<sup>३</sup> लि<sup>३</sup> थौ । वो<sup>३</sup>- शहर के अन्दर । हमारी दुकान



- मन् त फु<sup>४</sup> च् हन्<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup> । बहुत छोटी है ।
- क- निन्<sup>३</sup> थाय्<sup>४</sup> ख<sup>४</sup> छि । निन्<sup>३</sup> आप बहुत नम्रता दिखा रहे हैं ।  
छाङ्<sup>३</sup> चाय्<sup>४</sup> च्या<sup>४</sup> छू<sup>४</sup> फ़ान्<sup>४</sup> आप क्या अक्सर घर पर भोजन  
मा ? करते हैं ?
- ख- वो<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> चाय्<sup>४</sup> च्या<sup>४</sup> छू । नहीं, मैं घर पर भोजन नहीं  
करता ।
- क- वै<sup>४</sup> ष<sup>३</sup>म्मा ? क्यों ?
- ख- इन्<sup>४</sup> वै<sup>४</sup> फु<sup>४</sup> च् लित ष् थाय्<sup>४</sup> क्योंकि दुकान में बहुत काम  
त्वो<sup>४</sup> । रहता है ।
- क- निन्<sup>३</sup> चाय्<sup>४</sup> ना<sup>३</sup>ळ छू<sup>४</sup> आप भोजन कहां करते हैं ?  
फ़ान्<sup>४</sup> ?
- ख- वो<sup>३</sup>मन् फु<sup>४</sup> च् छ्येन्<sup>३</sup>थौ हमारी दुकान के सामने एक  
यी<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>क श्याव्<sup>३</sup> फ़ान्<sup>४</sup>क्वा<sup>३</sup>- छोटा जलपान-गृह है । मैं अक्सर  
ळ । वो<sup>३</sup> छाङ्<sup>३</sup> चाय्<sup>४</sup> ना<sup>३</sup>- वहीं भोजन करता हूँ ।  
ळ छू<sup>४</sup>फ़ान्<sup>४</sup> ।

### नये शब्द

गतिशील क्रि० वि०		सं०	
वै <sup>४</sup> ष <sup>३</sup> म्मा	क्यों ? (किस कारण से)	ऊ <sup>४</sup> च्	कमरा
इन् <sup>४</sup> वै	क्योंकि, कारण से	ति <sup>४</sup> फ़ाङ	स्थान
	सं०	छङ् <sup>३</sup>	शहर
षाङ् <sup>३</sup> थौ	ऊपर	इ <sup>३</sup> य्वे <sup>३</sup> श्याव् <sup>३</sup>	स्कूल
श्या <sup>४</sup> थौ	नीचे	फु <sup>४</sup> च्	दुकान
लि <sup>३</sup> थौ	अन्दर	फु <sup>४</sup>	भण्डार, दुकान
वाय् <sup>४</sup> थौ	बाहर	फ़ान् <sup>४</sup> क्वाळ <sup>३</sup>	जलपान-गृह, रेस्टोरेंट

छयेन्<sup>२</sup> थौ सामने

क्रि०

हौ<sup>४</sup> थौ पीछे

चाय्<sup>४</sup> पर होना, अंदर होना

ति<sup>३</sup> श्या नीचे

(अव्यय—पर, अन्दर)

च<sup>४</sup> ळ यहां

स० श०

ना<sup>४</sup> ळ वहां

न (सकारात्मक वाक्यों

ना<sup>३</sup> ळ कहां ?

में कार्य चलते रहना

च्या<sup>१</sup> घर, परिवार

सूचित करने वाला

फ़ाङ्<sup>३</sup> च् मकान, इमारत

शब्द)

लौ<sup>३</sup> कई तल्ले की इमारत

लौ<sup>३</sup> षाङ् ऊपर के तल्ले पर

### उदाहरणमाला

(क) - 'थौ' के पहले स्थान-सूचक संज्ञाएं—अस्तित्व सूचित करने के लिए

नमूना : स्थान यौ संज्ञा

चवो<sup>१</sup> च् षाङ् यौ<sup>३</sup> पु<sup>१</sup> मेज़ के ऊपर पुस्तकें हैं ।

१- छङ्<sup>३</sup> बाय्<sup>४</sup> थौ मै<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> शहर के बाहर कोई जलपान-  
फ़ान्<sup>४</sup> क्वाळ<sup>३</sup> । गृह नहीं है ।

२- चवो<sup>१</sup> च् ति<sup>३</sup> श्या यौ<sup>३</sup> पु- मेज़ के नीचे चीज़े कम नहीं  
षाव्<sup>३</sup> तुङ्<sup>१</sup> शि । (काफी) हैं ।

३- च्या<sup>१</sup> लि यौ<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>- क्या घर में कोई है ?  
यौ<sup>३</sup> ?

४- नि<sup>३</sup> मन् च्या<sup>१</sup> लि यौ<sup>३</sup> त्वो<sup>१</sup>- आपके परिवार में कितने व्यक्ति  
षाव्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> ? हैं ?

५- नि<sup>३</sup> मन् र्खे<sup>३</sup> श्याव्<sup>४</sup> यौ<sup>३</sup> तुम्हारे स्कूल में कितने अध्यापक  
चि<sup>३</sup> वै<sup>४</sup> श्येन्<sup>१</sup> षङ्<sup>३</sup> ? यौ<sup>३</sup> हैं ? कितने विद्यार्थी हैं ?  
चवो<sup>१</sup> षाव्<sup>३</sup> र्खे<sup>३</sup> षङ्<sup>३</sup> ?

६- चुङ्क्वो<sup>३</sup> त श्याङ्क्<sup>३</sup> श्या यौ<sup>३</sup> क्या चीन के ग्रामीण इलाकों में  
श्यवे<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> ? स्कूल है ?

७- ना<sup>३</sup>ळ यौ<sup>३</sup> फान्<sup>३</sup> क्वा<sup>३</sup>ळ ? जलपानगृह कहां है ?

(ख)-स्थान-सूचक संज्ञाओं के साथ 'चाय्'-स्थान सूचित करने के लिए

नमूना : सं० चाय्<sup>३</sup> स्थान

वो<sup>३</sup> मन् च्या<sup>३</sup> चाय् छङ्क्<sup>३</sup> वाय्<sup>३</sup>थौ हमारा घर शहर  
के बाहर है ।

नि<sup>३</sup> मन् त फु<sup>३</sup> च् चाय् ना<sup>३</sup>ळ ? आप की दुकान  
कहां है ?

१- वौ<sup>३</sup> मन् श्याङ्क्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> त वह मकान गाँव में है जिसे हम  
ने<sup>३</sup> फाङ्क्<sup>३</sup> च् चाय् श्याङ्क्<sup>३</sup>- खरीदने की सोच रहे हैं ।  
श्या ।

२- हाय्<sup>३</sup> च् तौ<sup>३</sup> चाय वाय्<sup>३</sup>- सब बालक बाहर हैं ।  
थौ न ।

३- चाङ्क्<sup>३</sup> श्येन्षङ्क्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> चाय् च्<sup>३</sup>- मि० चाङ्क् यहाँ नहीं हैं, वे  
ळ, था<sup>३</sup> चाय वाय<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> । विदेश में हैं ।

४- था<sup>३</sup> मन् तौ<sup>३</sup> चाय लौ<sup>३</sup> षाङ्क् वे सब ऊपर की मंजिल में हैं,  
न । श्या<sup>३</sup> थौ<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> यौ रन्<sup>३</sup> । नीचे कोई नहीं है ।

५- श्येन्<sup>३</sup> षङ्क् चाय्<sup>३</sup> च्या<sup>३</sup> मा ? क्या महाशय घर पर हैं ?  
चाय्<sup>३</sup> च्या<sup>३</sup> । हां ।

६- वो<sup>३</sup> त पि<sup>३</sup> चाय ना<sup>३</sup>ळ ? मेरी कलम कहां है ? यहां  
चाय् च्<sup>३</sup>ळ न । हैं ।

७- षे<sup>३</sup> चाय् छ्येन्<sup>३</sup>थौ त ऊ<sup>३</sup>- सामने के कमरे में कौन है ?  
च्, लि ?



(ग) अव्यय के रूप में 'चाय'—मुख्य कार्य के लिए सहायक

- १- था<sup>१</sup>मन् चाय ने<sup>१</sup> क ऊ<sup>१</sup> च- वे उस कमरे में भोजन कर  
लि छू<sup>१</sup>फ़ान् न । रहे हैं ।
- २- हाय<sup>३</sup> च् मन्तौ<sup>१</sup>चाय् छड्<sup>३</sup>- बालक शहर के अन्दर के स्कूल  
लि<sup>३</sup>थौ न्येन्<sup>१</sup> पु<sup>१</sup> । में पढ़ते हैं ।
- ३- निन्<sup>३</sup> चाय् ना<sup>३</sup> ठ च<sup>३</sup>यो<sup>१</sup> आप कहां क्या काम करते हैं ?  
ष<sup>३</sup> ? चाय् नान्<sup>३</sup> चिड् । नानकिड् में ।
- ४- तिन्<sup>३</sup> चाय् नान्<sup>३</sup>चिड्<sup>१</sup> आप नानकिड् में क्या काम  
च<sup>३</sup>वो ष<sup>३</sup>म्मा ? करते हैं ?  
वो<sup>३</sup> चाय् नाळ<sup>३</sup> च्याव्<sup>१</sup> पू<sup>१</sup> । मैं वहां अध्यापन करता हूं ।
- ५- छिड्<sup>३</sup> तिन्<sup>३</sup> चाय् वो<sup>३</sup> मन् (कृपया) हमारे घर में कुछ जल-  
च्या<sup>३</sup>लि छू<sup>१</sup> इत्या<sup>३</sup>ळ पान कीजिए ।  
तुड्<sup>३</sup>शि ।
- ६- नि<sup>३</sup>श्येन्<sup>३</sup>चाय् नै<sup>३</sup> क फु<sup>३</sup>- आजकल आप किस दुकान में  
च<sup>३</sup>च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> ष<sup>३</sup> ? काम करते हैं ?

(घ) स्थान-सूचक संज्ञाओं के साथ कुछ और वाक्य

- १- पाव्<sup>३</sup> षाड्<sup>३</sup> ष्वो<sup>१</sup> ष<sup>३</sup>म्मा ? समाचार-पत्र क्या कहता है ?
- २- निन्<sup>३</sup> ष<sup>३</sup> ना<sup>३</sup> ठ त रन्<sup>३</sup> ? आप कहां के रहने वाले हैं ?
- ३- च<sup>३</sup>वो<sup>१</sup> च् ति<sup>३</sup> श्यात् तुड्<sup>३</sup>- मेज़ के नीचे की चीज़ें किसकी  
शि तौ<sup>१</sup> ष<sup>३</sup> ष<sup>३</sup> त ? हैं ?
- ४- फु<sup>३</sup>च् छयेन्<sup>३</sup>थौ त नै<sup>३</sup>वै स्टोर के सामने वाले व्यक्ति का  
श्येन्<sup>३</sup> षड् शिड्<sup>३</sup> चाव्<sup>३</sup> । नाम चाओ है ?
- ५- वो<sup>३</sup>मन् चेक श्य<sup>३</sup>वे<sup>३</sup>श्याव्<sup>३</sup> हमारे स्कूल में आधे विद्यार्थी  
लित श्य<sup>३</sup>वे<sup>३</sup>षड्, इ पान्<sup>३</sup> महिलाएं हैं ।  
ष<sup>३</sup> न्य<sup>३</sup> त ।

- ६- च<sup>०</sup> ळत रन्<sup>०</sup> पुछाङ्<sup>०</sup> खान्<sup>०</sup> यहां के लोग बहुधा समाचार पाव<sup>०</sup> । पत्र नहीं पढ़ते ।
- ७- फ़ाङ्<sup>०</sup> च<sup>०</sup> ही<sup>०</sup> थौ<sup>०</sup> त ने<sup>०</sup> क मकान के पीछे वाली गाड़ी छि<sup>०</sup> छ<sup>०</sup> षृ नि<sup>०</sup> त मा ? षृ । (कार) क्या आपकी है ? हां ?

### द्रुत-अभ्यास

वो<sup>०</sup> त प्याव<sup>०</sup> चाय<sup>०</sup> ना<sup>०</sup> ळ ?  
 वो<sup>०</sup> ने<sup>०</sup> क प्याव<sup>०</sup> चाय<sup>०</sup> ना<sup>०</sup> ळ ?  
 वो<sup>०</sup> त ने<sup>०</sup> क प्याव<sup>०</sup> चाय<sup>०</sup> ना<sup>०</sup> ळ ?  
 चाय<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>  
 निन्<sup>०</sup> त प्याव<sup>०</sup> चाय<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>  
 निन्<sup>०</sup> ने<sup>०</sup> क प्याव<sup>०</sup> चाय<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>  
 निन्<sup>०</sup> त ने<sup>०</sup> क प्याव<sup>०</sup> चाय<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>  
 चाय<sup>०</sup> नै<sup>०</sup> क इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup> ?  
 चाय<sup>०</sup> ने<sup>०</sup> क ता<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>  
 चाय<sup>०</sup> नै<sup>०</sup> क ता<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup> ?  
 चाय<sup>०</sup> ही<sup>०</sup> थौ<sup>०</sup> ने<sup>०</sup> क ता<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>  
 चाय<sup>०</sup> ऊ<sup>०</sup> च<sup>०</sup> ही<sup>०</sup> थौ<sup>०</sup> त ने<sup>०</sup> क ता<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>  
 निन्<sup>०</sup> त प्याव<sup>०</sup> चाय<sup>०</sup> ऊ<sup>०</sup> च<sup>०</sup> ही<sup>०</sup> थौ<sup>०</sup> त ने<sup>०</sup> क ता<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>  
 निन्<sup>०</sup> ने<sup>०</sup> क प्याव<sup>०</sup> चाय<sup>०</sup> ऊ<sup>०</sup> च<sup>०</sup> ही<sup>०</sup> थौ<sup>०</sup> त ने<sup>०</sup> क ता<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>  
 निन्<sup>०</sup> त ने<sup>०</sup> क प्याव<sup>०</sup> चाय<sup>०</sup> ऊ<sup>०</sup> च<sup>०</sup> ही<sup>०</sup> थौ<sup>०</sup> त ने<sup>०</sup> क ता<sup>०</sup> इ<sup>०</sup> च् षाङ्<sup>०</sup>

### व्याकरण

१०-१ स्थानवाचक संज्ञा : चीनी भाषा में कुछ संज्ञाओं का प्रयोग केवल स्थान सूचित करने के लिये किया जाता है; जैसे, लि<sup>०</sup>थी (लि<sup>०</sup>प्येळ)—अन्दर, छ्येन्<sup>०</sup>थौ (छ्येन्<sup>०</sup>प्येळ)—

सामने, 'चळ'—यहां; पाङ्<sup>३</sup>थौ (पाङ्<sup>३</sup>प्येळ)—ऊपर; इत्यादि अन्य संज्ञाओं की तरह स्थानवाचक संज्ञाओं का प्रयोग भी कर्त्ता के रूप में हो सकता है; जैसे,

पाङ्<sup>३</sup>थौ यौ<sup>३</sup>षू                      ऊपर किताब है ।

लि<sup>३</sup>थौ यौ<sup>३</sup>रन्<sup>३</sup>                      अन्दर आदमी है ।

कर्म के रूप में :—

श्य<sup>३</sup>वे<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup> तौ<sup>३</sup> चाय् वाय्थौ                      सभी छात्र बाहर हैं ।

वो<sup>३</sup>चाय् लि<sup>३</sup>प्येळ                      मैं अन्दर हूँ ।

विशेषण के रूप में :—

पाङ्<sup>३</sup>थौ त षू षृ<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>त                      ऊपर की किताब मेरी है ।

वो<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>खान्<sup>३</sup>श्या<sup>३</sup>थौ त पाव्<sup>३</sup>                      मैं नीचे वाला अखबार नहीं पढ़ूंगा ।

१०-२ स्थानवाचक संज्ञाओं को दूसरी संज्ञाओं के बाद प्रत्यय के रूप में प्रयोग करके उन्हें स्थानवाचक संज्ञा बनाया जाता है। बहु प्रचलित शब्दों के बाद और यदि संज्ञा के बाद 'पाङ्<sup>३</sup>थौ' (पाङ्<sup>३</sup> प्येळ) और (लि<sup>३</sup> थौ (लिप्येळ)) का प्रयोग किया जाय तो 'थौ<sup>३</sup> (प्येळ) अक्सर छोड़ दिया जाता है; जैसे,

ने<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>चाय् च्वोच्<sup>३</sup> पाङ्<sup>३</sup>                      वह किताब मेज के ऊपर है ।

इ<sup>३</sup>च्<sup>३</sup>षाङ्<sup>३</sup>त् चे<sup>३</sup>क पि<sup>३</sup>पृ<sup>३</sup>                      कुर्सी के ऊपर यह कलम किसका है ?

पै<sup>३</sup>त

था<sup>३</sup>चाय् श्य<sup>३</sup>वे<sup>३</sup>श्याव्<sup>३</sup>लि<sup>३</sup>                      वह स्कूल में (के अंदर) है ।

ऐसी अवस्थाओं में हम 'थौ<sup>३</sup>' (या 'प्येळ') का प्रयोग भी कर सकते हैं। लेकिन अन्य स्थानवाचक संज्ञाओं को इस प्रकार संक्षिप्त नहीं करना चाहिये क्योंकि थौ<sup>३</sup> (या 'प्येळ') छोड़ देने से उनका



अर्थ ही बदल सकता है। 'वो<sup>३</sup>मन् छ्येन्<sup>३</sup> थी' जैसे शब्दसमूह में 'त' छोड़ा जा सकता है किन्तु यदि 'लि<sup>३</sup>थी' और 'षाड्<sup>३</sup>थी' को संक्षिप्त करके 'लि<sup>३</sup> और 'षाड्' बनाया जा चुका हो तो 'त' का प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिये। कहने का अभिप्राय यह है कि 'चो<sup>३</sup>च् षाड्<sup>३</sup>' 'श्यवे<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup>लि' तो ठीक है किन्तु 'चो<sup>३</sup>च् त षाड्<sup>३</sup>' और 'श्यवे<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup>त लि<sup>३</sup>' ठीक नहीं है।

१०-३ अस्तित्व-सूचक "यौ<sup>३</sup>"; 'यौ' के संबंध में हम पहले बता चुके हैं। (देखिये व्याकरण नोट ८-५)। यहां कुछ और उदाहरण दिये जाते हैं :—

'उच्<sup>३</sup> हौ<sup>३</sup> थी यौ<sup>३</sup> पुषाव्<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>च् कमरे के बाहर अनेक कुर्सियां हैं।

वो<sup>३</sup>मन् च्या<sup>३</sup>लि मै<sup>३</sup>यौ श्याव्<sup>३</sup> हमारे घर में बच्चे नहीं है।  
हाय्<sup>३</sup>च्

चुड्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>यौ आजकल चीन में अधिक  
हन्<sup>३</sup>त्वो<sup>३</sup> ऋ<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> जापानी आदमी नहीं है।

१०-४ अस्तित्व सूचक 'चाय्<sup>३</sup>' : 'चाय्<sup>३</sup>' क्रिया है, जिसका अर्थ है 'होना' यानी रहना और इसके पश्चात् कोई स्थानवाचक शब्द कर्म के रूप में प्रयुक्त होता है; जैसे,

'नि<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> नाळ<sup>३</sup> तुम कहां हो ?

'वो<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> श्यवे<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup> मैं स्कूल में हूँ।

निन्<sup>३</sup>त षू<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>च् षाड्<sup>३</sup> आपकी किताब कुर्सी पर है।

१०-५ संबंध-सूचक उपसर्ग 'चाय्<sup>३</sup>': 'चाय्<sup>३</sup>' का प्रयोग संबंध-सूचक उपसर्ग के रूप में भी होता है। वाक्य में संबंधसूचक और इसका कर्म किसी स्थानवाचक शब्द या शब्दसमूह मिलकर एक संबंधसूचक शब्दसमूह बन जाता है जिसका प्रयोग बहुधा स्थानवाचक क्रिया विशेषण के समान किया जाता है।

वाक्य पढ़ते समय 'चाय्' पर जोर नहीं दिया जाता । उदाहरण के लिये :

था<sup>१</sup> चाय्<sup>२</sup> चुङ्क्वो<sup>३</sup> च्याव्<sup>४</sup> षू । वह चीन में अध्यापन करता है ।

'वो<sup>३</sup>मन् चाय्<sup>२</sup>चळ<sup>४</sup> श्य्वे<sup>२</sup> चुङ्<sup>१</sup>- हम यहां चीनी भाषा पढ़ते  
क्वो<sup>३</sup> ह्वा<sup>४</sup> हैं ।

'चाय्' का प्रयोग चाहे क्रिया के रूप में किया जाये, चाहे संबंध-सूचक के रूप में, उसका कर्म आमतौर से स्थानवाचक संज्ञा या सर्वनाम ही होता है ।

१०-६ अपूर्ण क्रिया 'न' के साथ वक्ता वाक्य के अंत में 'न' सहायक शब्द जोड़कर निरन्तरतासूचक वर्तमानकाल का अर्थ प्रगट कर सकते हैं; जैसे,

'था<sup>१</sup>मन् श्येन्<sup>४</sup> चाय्<sup>२</sup> छू<sup>३</sup> फ़ान्<sup>४</sup> न वे अभी खाना खा रहे हैं ।  
'नि<sup>३</sup> च्क्वो<sup>४</sup> षम्मन<sup>२</sup>? खान्<sup>४</sup> षू<sup>३</sup> न तुम क्या कर रहे हो ?  
किताब पढ़ रहा हूँ ।

इसी तरह 'न' के प्रयोग से निरन्तरतासूचक भूतकाल का अर्थ भी प्रकट होता है; जैसे,

'वो<sup>३</sup> छ्यू<sup>४</sup> था च्या<sup>२</sup>त षू<sup>३</sup>हौ था<sup>१</sup> जब मैं उसके घर गया  
चाय्<sup>२</sup>छू<sup>३</sup> फ़ान्<sup>४</sup> न तब वह खाना खा रहा था ।

उपरोक्त उदाहरणों में अगर 'न' के साथ 'चाय्' का प्रयोग किया जाय तो 'न' का प्रयोग वैकल्पिक है ।

१०-७ 'चाय्' के बाद 'लि<sup>३</sup>थौ' (या 'लि<sup>३</sup>प्येळ') के प्रयोग का नियम इस प्रकार है :

१- भौगोलिक शब्दों के साथ 'लि<sup>३</sup>थौ' (प्येळ) का प्रयोग नहीं होता; जैसे,

वो<sup>३</sup>मन् चाय्<sup>४</sup> इन्<sup>४</sup> तु<sup>४</sup>                      हम भारत में रहते हैं ।

यहां हम कभी नहीं कह सकते कि 'चाय्<sup>४</sup> इन्<sup>४</sup> तु<sup>४</sup> लि<sup>३</sup> थौ<sup>३</sup> (प्येळ)' या चाय्<sup>४</sup> इन्<sup>४</sup> तु<sup>४</sup> लि<sup>३</sup>,  
(प्येळ)'

२- अगर 'चाय्<sup>४</sup>' शब्द के बाद इमारत, संगठन आदि के नामों का बोध कराने वाली संज्ञाएँ आयें और अगर 'लि<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> (प्येळ)' का अर्थ उनमें लुप्त हो तो हम 'लि<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> (प्येळ)' को यदि चाहें तो छोड़ सकते हैं; जैसे, हाय्<sup>४</sup>च् चाय्<sup>४</sup> श्यवे<sup>४</sup>श्याव्<sup>४</sup>न — बच्चे पाठशाला में हैं ।

'था<sup>४</sup>पु<sup>४</sup>चाय्<sup>४</sup>च्या<sup>४</sup>                      वह घर पर नहीं है ।

'वो<sup>३</sup>मन् चाय्<sup>४</sup> नै<sup>३</sup> क<sup>३</sup> फान्<sup>४</sup>-                      हम कौन से भोजनालय में  
क्वाळ<sup>३</sup> छू<sup>४</sup>फान्<sup>४</sup> ?                      खाना खायेंगे ?

अगर वाक्य अंदर का अर्थ प्रगट नहीं करता तो हमें 'चाय्<sup>४</sup>-थौ<sup>३</sup> (प्येळ) 'हौ<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> (प्येळ)' आदि जैसे स्थानवाचक शब्दों का प्रयोग करना चाहिये इस बात का संकेत देने के लिये कि लोग 'घर' (च्या<sup>४</sup>) या 'पाठशाला' (श्यवे<sup>४</sup> श्याव्<sup>४</sup>) के बाहर हैं, या पीछे, या किसी और तरफ । यदि 'चाय्<sup>४</sup>' के कर्म के बाद कोई स्थानवाचक संज्ञा न हो तो 'लि<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> (प्येळ)' नियमतः लुप्त रहता है ।

३- कुछ संज्ञाओं जैसे उपकरणों का बोध कराने वाली संज्ञाओं के साथ स्थानवाचक संज्ञा अवश्य आनी चाहिये, क्योंकि एक ही वस्तु के कई पहलू होते हैं और बिना स्थानवाचक संज्ञा के यह निश्चित करना मुश्किल होता है कि किस पहलू के बारे में कहा जा रहा है । इसलिये 'लि<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> (प्येळ)' नहीं छोड़ा जा सकता है । उदाहरण के लिये :—

'ने<sup>४</sup> चाङ्<sup>४</sup> चू<sup>४</sup> चाय्<sup>४</sup> षू<sup>४</sup>लि (थौ<sup>३</sup>)                      वह कागज किताब के  
अन्दर है ।

इसी तरह अन्य स्थानवाचक संज्ञाएं भी नहीं छोड़ी जा सकतीं ।



## पाठ-११

- क- नि<sup>३</sup>मन् ताव् ना<sup>३</sup>ळ छयू ? आप लोग कहां जा रहे हैं ?
- ख- वो<sup>३</sup>मन् ताव् त<sup>३</sup>-लि<sup>३</sup> छयू । हम (लोग) दिल्ली जा रहे हैं ।
- क- नि<sup>३</sup>मन् च.वो ह्वोछ<sup>३</sup> छयू मा ? क्या आप (लोग) रेलगाड़ी से (द्वारा) जा रहे हैं ?
- ख- पु<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>मन् च.वो छि<sup>३</sup>छ<sup>३</sup> । नहीं, हम (लोग) मोटर गाड़ी (कार) से (द्वारा) जा रहे हैं ।
- क- नि<sup>३</sup>मन् ताव् ना<sup>३</sup>ळ छयू च.वो<sup>३</sup> ष<sup>३</sup>म्मा ? आप वहां क्या करने जा रहे हैं ?
- ख- वो<sup>३</sup>मन् छयू खा<sup>३</sup>न् ल्याङ<sup>३</sup>-क फ<sup>३</sup>ङ<sup>३</sup>यौ, ये<sup>३</sup> मायू<sup>३</sup> इत्याळ<sup>३</sup> तु<sup>३</sup>ङ्शि । हम दो मित्रों से मिलने जा रहे हैं । हम कुछ वस्तु भी खरीदने का विचार कर रहे हैं ।
- क- नि<sup>३</sup>मन् फ<sup>३</sup>ङ<sup>३</sup>यौ चाय् त<sup>३</sup>-लि<sup>३</sup> ष<sup>३</sup>म्मा ति<sup>३</sup>फाङ<sup>३</sup> ? दिल्ली में आपके मित्र किस स्थान पर हैं (रहते हैं) ?
- ख- चाय<sup>३</sup> छ<sup>३</sup>ङ<sup>३</sup>लि<sup>३</sup>थौ, इ<sup>३</sup> पाय<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>ष<sup>३</sup> च्ये<sup>३</sup> । (वे) शहर में रहते हैं, ११० वें मार्ग में ।
- क- नि<sup>३</sup>मन् हाय<sup>३</sup>च्, ये<sup>३</sup> तौ छ<sup>३</sup>यू मा ? क्या आपके सब बच्चे भी जा रहे हैं ?

- ख च॒वै॑ श्याव्॑त पु छयू॑, ता॑ सबसे छोटा (बच्चा) नहीं जा  
त तौ॑ छयू॑ । रहा है । बड़े (बच्चों में) सभी  
जा रहे हैं ।
- क- नि॑मन् वै॑ष॒म्मा पु छिङ्॑ नि॑मन्फ॒ङ्यौ ताव् चळ॑ के लिए निमन्त्रित क्यों नहीं  
लाय् ? करते ?
- ख- था॑मन् हन्॑ शि॑ह्वान् वे (मित्र लोग) (यहां) आना  
लाय् । ख॑ष॒ था॑मन् त षु- बहुत पसन्द करेंगे । परन्तु उनके  
छिङ्थाय् त्वो॑, हा॑य्च् पास काम (करने को) अधिक  
ये॑ थाय् श्याव्॑, स्वो॑इ॑ है और बच्चे बहुत छोटे हैं, इस  
श्येन् चाय् पु न॑ड् लाय् । लिए वे अभी नहीं आ सकते ।

### नये शब्द

सं०

छ॑	गाड़ी
छि॑छ॑	मोटर गाड़ी
ह्वो॑ छ॑	रेलगाड़ी
छ्वान्॑	नाव
फै॑ चि॑	हवाई जहाज
च॑ये॑	रास्ता, मार्ग, रोड
त॑ लि॑	दिल्ली

क्रि० वि०

स्वो॑इ॑ (गतिशील)	इसलिए,
इ॑तिङ्	जरूर, अवश्य, निश्चय ही
पु॑ इतिङ्	अनिश्चित, अनावश्यक
च॑म् (मा)	कैसे

## वि०

शिङ्

काफी है, ठीक है, पर्याप्त है ।

## संबंध सूचक (सं० सू०)

छूँड्

से

ताव्

तक

च०वो

से (वाहन से), चढ़कर (वाहन)

## क्रि०

च०वो

बैठना

लाय्

आना (यहां)

छूय्

जाना (वहां)

खान्

देखना, मुलाकात करना

चान् छिलाय्

खड़ा होना, खड़ा हो जाओ

च०वो श्या

बैठ जाना, बैठ जाओ

## स० क्रि०

याव्

चाहना, चाहिए

छिंड् च०वो

बैठ जाइए, बैठिए,

बैठ जाओ, बैठो ।

## उदाहरणमाला

(क) — 'छूँड्' व 'ताव्'-गति और दिशासूचक संबंधसूचक

नि<sup>३</sup> छूँड्<sup>३</sup> ष<sup>३</sup>म्मा ति<sup>३</sup>फ्राड् आप कहां से आए ? मैं दुकान  
लाय्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> छूँड्<sup>३</sup>फुच् लाय्<sup>३</sup> से आया ।था<sup>३</sup> छूँड्<sup>३</sup>ना<sup>३</sup>ळ लाय्<sup>३</sup> ? वह कहां से आया ? वह विद्या-  
था छूँड्<sup>३</sup> श्ये<sup>३</sup>वे<sup>३</sup>श्याव्<sup>३</sup> लय से आया ।लाय्<sup>३</sup> ।



ने<sup>३</sup>श्ये रन्<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> ती<sup>३</sup> छू<sup>३</sup>ड्<sup>३</sup> श्वे<sup>३</sup>स्याव्<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup> मा ?  
पु<sup>३</sup>, था<sup>३</sup>मन् छू<sup>३</sup>ड्<sup>३</sup> छड्<sup>३</sup>  
वाय्<sup>३</sup>थौ लाय्<sup>३</sup> ।

क्या वे सब लोग भी विद्यालय से आए हैं; नहीं, वे लोग शहर के बाहर से आए हैं ।

नि<sup>३</sup> ताव ष<sup>३</sup>म्मा ति<sup>३</sup>फ़ाड्<sup>३</sup> छयू<sup>३</sup>? वो<sup>३</sup> ताव श्याड्<sup>३</sup>श्या  
छयू<sup>३</sup> ।

तुम कहां जा रहे हो ? मैं गांव जा रहा हूँ ।

नि<sup>३</sup> छू<sup>३</sup>ड्<sup>३</sup> च्योलि छयू<sup>३</sup> मा ? पु<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup> छू<sup>३</sup>ड्<sup>३</sup> फु<sup>३</sup>च-  
लि छयू<sup>३</sup> ।

क्या तुम घर से जा रहे हो ? नहीं, (मैं) दुकान से (जा रहा हूँ) ।

नि<sup>३</sup> पु<sup>३</sup>ताव त<sup>३</sup>लि<sup>३</sup> छयू<sup>३</sup> मा ? पु छयू<sup>३</sup> ।

क्या तुम दिल्ली नहीं जा रहे हो ? नहीं, मैं नहीं जा रहा हूँ ।

### (ख) सम्बन्धसूचक 'च.वो'

नि<sup>३</sup>ताव इड्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> छयू<sup>३</sup>, च.वो<sup>३</sup> छ्वान्<sup>३</sup> मा ? पु<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup> श्याड्<sup>३</sup> च.वो फ़ै<sup>३</sup>चि<sup>३</sup> ।

क्या तुम नाव द्वारा (से) इंग्लैंड जा रहे हो ? नहीं, मैं वायुयान द्वारा जाने का विचार कर रहा हूँ ।

च.वो<sup>३</sup> फ़ै<sup>३</sup>चि<sup>३</sup> पुक्वै<sup>३</sup> मा ? पु हन्<sup>३</sup> क्वै<sup>३</sup> ।

क्या वायुयान द्वारा जाना महंगा नहीं है ? नहीं, बहुत महंगा नहीं है ।

च.वो<sup>३</sup> ह्वो<sup>३</sup>छ<sup>३</sup> छयू<sup>३</sup> शिड्<sup>३</sup> पु शिड्<sup>३</sup>, ? पु<sup>३</sup>शिड्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>थौ ह्वो<sup>३</sup>छ<sup>३</sup> ।

क्या रेलगाड़ी द्वारा जाया जा सकता है ? नहीं, यह सम्भव नहीं है । रेलगाड़ियां नहीं हैं (नहीं चलती हैं) ।

## (ग) — प्रयोजन-दर्शक 'लाय' व 'छ्यू'

नि<sup>३</sup>मन्ताव्<sup>४</sup> चेक इ<sup>२</sup>वे<sup>२</sup>श्याव्<sup>४</sup> तुम (लोग) इस स्कूल (में)  
 लाय्<sup>२</sup> इ<sup>२</sup>वे<sup>२</sup> ष<sup>२</sup>म्मा ? इ<sup>२</sup>वे<sup>२</sup> क्या सीखने (पढ़ने) आते हो ?  
 चुङ्क्वो<sup>२</sup> ह्वा<sup>४</sup> । चीनी बोली (सीखने आते हैं) ।  
 छिङ्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup> ताव्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>मन् च्या<sup>१</sup> कृपया हमारे घर आइए और  
 लाय्<sup>२</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>४</sup> च<sup>३</sup>वो । थोड़ी देर बैठिए ।

नि<sup>३</sup> ताव् छङ्<sup>३</sup> लि<sup>३</sup> थौ छ्यू<sup>४</sup> तुम शहर किससे मिलने जा रहे  
 खान्<sup>४</sup> पै<sup>२</sup> ? वो<sup>३</sup> याव् खान्<sup>४</sup> हो ? मैं ली नामक व्यक्ति से  
 ने वै शिङ्<sup>३</sup>लि<sup>३</sup> त । मिलना चाहता हूँ ।

था<sup>१</sup> ताव् ऋ<sup>४</sup>पन्<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>४</sup> क्या वह जापान व्यापार करने  
 माय्<sup>३</sup>माय्छ्यू<sup>४</sup> मा ? पु<sup>४</sup>, था<sup>१</sup> जा रहा है ? नहीं, वह अध्या-  
 च्याव्<sup>१</sup> पू<sup>१</sup> छ्यू<sup>४</sup> । पन कार्य करने जा रहा है ।

नि<sup>३</sup> ताव्ना<sup>३</sup>ळछ्यू<sup>४</sup> न्ये<sup>४</sup>न्<sup>४</sup>पू<sup>१</sup>? तुम पढ़ाई करने कहां जा रहे  
 वो<sup>३</sup> रवान्<sup>४</sup>इ ताव् पै<sup>३</sup>चिङ्<sup>३</sup>, हो ? मैं पेकिंग जाना चाहूंगा,  
 ख<sup>३</sup>पू वो<sup>३</sup> फु<sup>४</sup>मु<sup>३</sup> पुयवान्<sup>४</sup>इ परन्तु मेरे माता-पिता नहीं  
 वो<sup>३</sup> चाय् पै<sup>३</sup>चिङ्<sup>३</sup> न्येन्<sup>४</sup> चाहते कि मैं पेकिंग में पढ़ूँ ।  
 पू<sup>१</sup> ।

नि<sup>३</sup> वै<sup>४</sup> ष<sup>२</sup>म्मा पु<sup>३</sup> ताव् वाय्- तुम काम करने विदेश क्यों नहीं  
 क्वो<sup>२</sup> छ्यू<sup>४</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>४</sup> पू<sup>४</sup>छ्यू<sup>४</sup>? जाते ? धन (पैसे) नहीं हैं  
 मै<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup> । (हैं) ।

कक्षा में (अध्यापक और छात्र के बीच) व्यवहार करने योग्य वाक्य :

अध्यापक : छिङ्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> चान्- कृपया खड़े हो जाइए ।  
 छिलाय् ।

छात्र : वो<sup>३</sup> याव चान्<sup>४</sup>छिलाय् मैं खड़ा होने जा रहा हूँ ।

अ० : छिङ्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup> ताव् वो<sup>३</sup> चळ कृपया यहां मेरे पास आइए ।  
 लाय्<sup>२</sup> ।

- छात्र : वो<sup>३</sup> याव् ताव् नि<sup>३</sup> नाळ<sup>५</sup> छ्यू । मैं आपके पास (वहां) जा रहा हूँ ।
- अ० वो<sup>३</sup> याव् नि<sup>३</sup> ताव् उ<sup>१</sup>च्, हौ<sup>५</sup>थौ छ्यू मैं चाहता हूँ कि तुम पीछे की ओर जाओ ।
- छा० वो<sup>३</sup> याव् ताव् उ<sup>१</sup>च्, हौ<sup>५</sup>थौछ्यू मैं पीछे की ओर जा रहा हूँ ।
- अ० नि<sup>३</sup> श्येन्<sup>५</sup>चाय्<sup>५</sup> चाय्नाळ<sup>३</sup> ? तुम अब कहाँ हो ?
- छा० वो<sup>३</sup> चाय् उ<sup>१</sup>च् हौ<sup>५</sup>थौ न । मैं कमरे के पीछे की ओर हूँ ।
- अ० नि<sup>३</sup> शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>१</sup> चाय् हौ<sup>५</sup>थौ मा ? क्या तुम कमरे के पीछे की ओर (रहना) पसन्द करते हो ?
- छा० पु<sup>५</sup> शि<sup>३</sup>ह्वान्<sup>१</sup> नहीं, मैं पसन्द नहीं करता ।
- अ० नि<sup>३</sup> य्वान्<sup>३</sup>इ ताव् छ्येन्<sup>५</sup>थौ लाय्<sup>३</sup> मा ? क्या तुम सामने की ओर आना चाहते हो ?
- छा० वो<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> य्वान्<sup>३</sup>इ लाय्<sup>३</sup> मैं बहुत आना चाहूंगा ।
- अ० हाव्<sup>३</sup>, नि<sup>३</sup> ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> ताव् छ्येन्<sup>५</sup>थौ लाय्<sup>३</sup> ठीक है, तुम सामने की ओर आ सकते हो ।
- छा० वो<sup>३</sup> च्यु<sup>५</sup> याव् ताव् छ्येन्<sup>५</sup>थौ लाय्<sup>३</sup> मैं अभी सामने की ओर आने-वाला हूँ ।
- अ० नि<sup>३</sup> य्वान्<sup>३</sup>इ च्.वो<sup>५</sup>श्या मा ? क्या तुम बैठना चाहते हो ?
- छा० वो<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> य्वान्<sup>३</sup>इ च्.वो<sup>५</sup>श्या मैं बैठना चाहूंगा ।
- अ० हाव्<sup>३</sup>, नि<sup>३</sup> ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> च्.वो<sup>५</sup>श्या ठीक है, तुम बैठ सकते हो ।
- छा० श्ये<sup>५</sup> श्ये । धन्यवाद ।

### व्याकरण

११-१ 'लाय<sup>३</sup>' और 'छ्यू<sup>५</sup>' : 'लाय<sup>३</sup>' और 'छ्यू<sup>५</sup>' दोनों



गति और दिशा का अर्थ प्रगट करते हैं। यदि कोई व्यापार वक्ता की ओर हो (या उस वस्तु या वस्तुओं की ओर हो, जिनकी चर्चा हो रही है), तो हम क्रिया के बाद “लाय्” का प्रयोग करते हैं। यदि कोई कार्य विपरीत दिशा में हो, या वक्ता से दूर हो, तो हम लोग क्रिया के बाद ‘छ्यू’ का प्रयोग करते हैं, जैसे :

था<sup>१</sup> लाय्<sup>२</sup> च्या<sup>३</sup> वह घर आया  
 वो<sup>३</sup> छ्यू<sup>४</sup> इव्ये<sup>३</sup>श्याव्<sup>४</sup> मैं पाठशाला जाता हूँ।

११-२ ‘छूङ्’ (से) और ‘ताव्’ (तक) : ये दोनों संबंध-सूचक स्थानवाचक और काल-वाचक शब्दों के साथ प्रयुक्त होते हैं, इनकी मुख्य क्रिया ‘लाय्’ या ‘छ्यू’ होती हैं। ‘छूङ्’ क्रिया का उत्पत्ति स्थान या काल बताता है; और ‘ताव्’ क्रिया का लक्ष्य स्थान; अर्थात् ‘छूङ्’ यह बताता है कि क्रिया या कोई व्यापार कहाँ से या किस समय से शुरू हुआ और ‘ताव्’ यह बताता है कि क्रिया या व्यापार की गति कहाँ तक या किस समय तक है। यह वाक्य-विन्यास अन्य क्रिया विशेषण की तरह मुख्य क्रिया के पहले आता है। निषेधार्थक क्रिया विशेषण इन दोनों के पहले ही आता है। जैसे,

था<sup>१</sup> छूङ्<sup>२</sup> चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> लाय्<sup>२</sup>, वह चीन से आया और भारत  
 ताय्<sup>२</sup> इन्<sup>३</sup> तु<sup>४</sup> छ्यू<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> को गया, मैं वहाँ नहीं जाऊँगा।

ताव्<sup>२</sup> याळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>४</sup>  
 पो<sup>३</sup>मन छूङ्<sup>२</sup> इव्ये<sup>३</sup>श्याव्<sup>४</sup> हम पाठशाला से घर जाते हैं।  
 ताय्<sup>२</sup> च्या<sup>३</sup> छ्यू<sup>४</sup>

### कालवाचक

गा<sup>१</sup> छूङ्<sup>२</sup> इ<sup>३</sup> च्यु<sup>३</sup> ल्यु<sup>४</sup>सान<sup>३</sup> वह यहाँ १९६३ से १९६८  
 न्येन<sup>३</sup> ताय्<sup>२</sup> इ<sup>३</sup> च्यु<sup>३</sup> ल्यु<sup>४</sup> साल तक पढ़ा था।  
 च्यु<sup>३</sup> न्येन<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> चळ<sup>३</sup> न्येन्<sup>४</sup>

षु<sup>१</sup>(न्येन्<sup>२</sup>=साल, पाठ १३)

११-३ संबंधसूचक 'च.वो' : 'च.वो' जिसका क्रिया के रूप में अर्थ है "बैठना" संबंधसूचक के रूप में 'मे' 'से' के अर्थ में यात्रा के साधन बताता है। इसका कर्म कोई यान वाहन अर्थात् यात्रा का साधन होता है; जैसे,

था<sup>१</sup> च.वो<sup>२</sup> छ्वान्<sup>३</sup> लाय्<sup>४</sup> वह जहाज से आया

वो<sup>३</sup> पु<sup>३</sup>च.वो<sup>२</sup> फ<sup>१</sup>चि<sup>१</sup> छ्यू<sup>५</sup> मैं हवाईजहाज से नहीं जाऊंगा।

यह ध्यान में रखना चाहिए कि 'च.वो' का अर्थ "बैठना" है, इसीलिए जो यात्रा यात्री के रूप में (अर्थात् चालक के रूप में नहीं) किया जाता है, उसी क्षेत्र में इसका प्रयोग होता है, और उसी वाहन का प्रयोग होता है जिसमें बैठने की जगह हो।

१०-४ प्रयोजनदर्शक 'लाय' और 'छ्यू' : कहीं आने या जाने का उद्देश्य या प्रयोजन सूचित करने के लिए 'लाय' या 'छ्यू' के ठीक बाद में या पहले प्रयोजनदर्शक विन्यास प्रयुक्त होता है। कभी-कभी प्रयोजन बताने के बाद भी 'लाय' और 'छ्यू' दुहराये जाते हैं। जैसे,

था<sup>१</sup> ताव्<sup>२</sup> चळ<sup>३</sup> लाय्<sup>४</sup>न्येन्<sup>५</sup> वह यहां पढ़ने के लिए आया  
षु<sup>१</sup>। है।

वो<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> ताव्<sup>२</sup>चुङ्<sup>१</sup> क्वो<sup>२</sup> मैं चीन काम करने नहीं  
च.वो<sup>२</sup> षू<sup>१</sup> छ्यू<sup>५</sup>। जाऊंगा।

वो<sup>३</sup>मन् ताव्<sup>२</sup> छङ्<sup>३</sup>लि<sup>३</sup> हम चीजें खरीदने शहर जायेंगे।  
छ्यू<sup>५</sup>माय्<sup>३</sup> तुङ्<sup>३</sup>शि छ्यू<sup>५</sup>।

११-५ स्थानवाचक संज्ञा के साथ सर्वनाम : यदि संज्ञा या सर्वनाम से किसी प्राणी का बोध होता हो, तो उस कर्म को स्थानवाचक कर्म में बदलने के लिए 'चळ' और 'नाळ' का प्रयोग होता है। हिंदी के "मेरे यहां" "तुम्हारे वहां", "मित्र के पास"

इत्यादि वाक्याशों का अनुवाद इसी तरह करना चाहिए; जैसे,  
 छिङ्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> ताव्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> चळ<sup>३</sup> कृपया आप मेरे यहां आइये ।  
 लाय्<sup>३</sup> ।

वो<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> यवान्<sup>३</sup> ई ताव्<sup>३</sup> था<sup>३</sup> मैं उसके पास जाना नहीं चाहता  
 नाळ<sup>३</sup> छ्य<sup>३</sup> ।

वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup> षङ्<sup>३</sup> मेरी किताब गुरुजी के (अध्यापक  
 नाळ<sup>३</sup> । महोदय के) पास है ।

‘छूङ्’ के संबंध में भी ऐसा प्रयोग किया जाता है; जैसे,

वो<sup>३</sup> छूङ्<sup>३</sup> फङ्<sup>३</sup> यौ नाळ<sup>३</sup> मैं मित्र के वहां से (पास से)  
 लाय्<sup>३</sup> आ रहा हूँ ।



## पाठ-१२

### नये शब्द

#### गतिशील क्रि० वि०

च० <sup>३</sup> वो <sup>३</sup> थ्येन्	(सं० भी है)	कल (भूतकाल)
चिन् <sup>३</sup> थ्येन्	(सं० भी हैं)	आज
मिङ् <sup>३</sup> थ्येन्	(सं० भी है)	कल (भविष्यत्)
चाव् <sup>३</sup> षाङ्	(सं० भी है)	सबेरा
वान् <sup>३</sup> षाङ्	(सं० भी है)	शाम, रात
इ <sup>३</sup> -चिङ्	(क्रि० वि०)	पहले ही
हाय् <sup>३</sup>	(क्रि० वि०)	भी, अब भी

#### सं०

चाव् <sup>३</sup> फ़ान्	सबेरे का भोजन
चुङ् <sup>३</sup> फ़ान्	दोपहर का भोजन
वान् <sup>३</sup> फ़ान्	दिन का प्रधान भोजन,
	दिन का अन्तिम भोजन
कु <sup>३</sup> षृ	कहानी
प्ये <sup>३</sup> त	दूसरा, और (लोग या चीज़)
प्ये <sup>३</sup> रन्	दूसरा आदमी, और लोग या आदमी

#### क्रि०

चौ <sup>३</sup>	चलना, जाना, प्रस्थान करना ।
ह्वै <sup>३</sup> लाय्	लौटना, लौट आना

ध्वो<sup>१</sup> कु<sup>४</sup>षू (क्रि० क०) कहानी बतलाना, कथा कहना  
थिङ्<sup>१</sup> कु<sup>४</sup>षू (क्रि० क०) कहानी या कथा सुनना

— 'ल'

प्रत्यय या सहायक शब्द

मे<sup>२</sup> (यौ)

(उपसर्ग) निषेधार्थक

न

सहायक शब्द

मै<sup>३</sup>ष<sup>३</sup>म्मा

कोई बात नहीं,

पै<sup>३</sup>चिङ<sup>३</sup>

पेकिंग (चीन की राजधानी)

### उद्देशहरणमाला

(क) — 'ल' द्वारा गति व दिशा की सूचना

- १- नि<sup>३</sup>त फङ्<sup>३</sup>यौ लाय्<sup>३</sup>ल मै- क्या तुम्हारा मित्र आ गया है ?  
यौ ? थाङ्<sup>३</sup>चिङ्<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>ल । हां, वह पहले से ही आ गया है ।
- २- लि<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup> चौल मा ? क्या ली महोदय चले गये हैं ?  
चौ<sup>३</sup>न । नहीं, अभी तक नहीं ।
- ३- था<sup>३</sup>मन् च<sup>३</sup> बोध्येन्<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल क्या वे लोग कल चले गये थे ?  
मै<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ? मै<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup>, था<sup>३</sup>- नहीं, वे लोग नहीं गए । (वे  
मन् चिन्<sup>३</sup>ध्येन्<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> । लोग) आज जाएंगे) ।
- ३- ने<sup>३</sup>क रन्<sup>३</sup> ह्वै<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>ल मा ? क्या वह व्यक्ति (आदमी) लौट  
हाय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>न । आया है ? अभी तक नहीं ।
- ५- षै<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>ल ? नि<sup>३</sup>त फङ्<sup>३</sup>यौ कौन आया हैं । तुम्हारे मित्र  
चाङ्<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>ल । चांग महोदय (आए हैं) ।
- ६- नि<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>यू<sup>३</sup> मा ? मै<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> क्या तुम नहीं गए ? नहीं, मैं  
नहीं गया ।
- ७- निन्<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> क्या आपके पति अभी तक नहीं  
ह्वै<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> मा ? हाय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> लौटे ? अभी तक नहीं (लौटे

- ह्वै<sup>२</sup> लाय् न ।                      हैं) ।
- ८- रन्<sup>२</sup> तौ<sup>१</sup> चौल मा ?              क्या सब लोग चले गये हैं ? हाँ,  
तौ<sup>१</sup> चौ<sup>३</sup> ल ।                      सब लोग चले गए हैं ।  
मै<sup>२</sup> तौ<sup>१</sup> चौ<sup>३</sup> ।                      नहीं, सब लोग नहीं (गए हैं) ।  
तौ<sup>१</sup> मै<sup>२</sup> चौ ।                      कोई नहीं गया है ।
- वो<sup>३</sup> पु<sup>४</sup> चृ<sup>१</sup>ताव्<sup>४</sup> था<sup>१</sup>मन्      मुझे नहीं मालूम कि वे लोग चले  
चौ<sup>१</sup>ल मै<sup>२</sup>चौ ।                      गए हैं या नहीं ।
- ९- था<sup>१</sup> ताव् चुङ्क्वो<sup>३</sup> छ्यू<sup>४</sup>      वह चीन क्या करने गया है ?  
चवो<sup>४</sup> ष<sup>३</sup>म्मा छ्यू<sup>४</sup> ल ।      वह अध्यापन कार्य करने गया  
था<sup>१</sup> छ्यू<sup>४</sup> चयाव्<sup>१</sup> षू<sup>१</sup> है ।  
छ्यू<sup>४</sup>ल ।

### ख—विशेषण रहित कर्म और क्रिया के साथ 'ल'

- १- नि<sup>३</sup>मन् छृ<sup>१</sup>ल चाव्<sup>३</sup> फान्<sup>४</sup>      क्या आप (लोगों) ने नाश्ता कर  
ल मै<sup>२</sup>यौ ? वो<sup>३</sup>मन् इ<sup>३</sup>चिङ्      लिया है ? हम लोगों ने पहले ही  
छृ ल ।                      (नाश्ता) कर लिया है ।
- २- नि<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> ल चिन्<sup>१</sup>ध्येन् त      क्या तुमने आज का समाचार-  
पाव्<sup>४</sup> ल मा ? हाय्<sup>४</sup> मै<sup>२</sup>      पत्र पढ़ लिया है ? अभी तक  
खान्<sup>४</sup> न ।                      नहीं (पढ़ा है) ।
- ३- था<sup>१</sup> कै<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> नेक छ्येन्<sup>३</sup>      क्या उसने आपको धन दे दिया  
ल मा ? मै<sup>२</sup> यौ ।                      है ? नहीं, उसने नहीं दिया है ।
- ४- नि<sup>३</sup> छिङ्<sup>३</sup> था<sup>१</sup>मन् ल मै      क्या तुमने उन लोगों को निमं-  
यौ ? छिङ्<sup>३</sup> ल ।                      त्रित किया है, मैंने उन्हें निमंत्रित  
   किया है ।
- ५- नि<sup>३</sup> मै<sup>२</sup> छ्यू<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> था मा ?      क्या तुम उससे मिलने नहीं गए ?  
वो<sup>३</sup> छ्यू<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> था ल ।              मैं उससे मिलने गया तो था ।



- ६- तुङ्<sup>१</sup>शि तौ<sup>१</sup> माय्<sup>३</sup> ल मा ? क्या सभी वस्तुएं खरीद ली गई हैं ।
- मै<sup>२</sup> तौ<sup>१</sup> माय्<sup>३</sup> न । सभी वस्तुएं अभी तक नहीं (खरीदी गई हैं) ।
- तौ<sup>१</sup> मै<sup>२</sup> माय्<sup>३</sup> न । अभो तक कुछ भी नहीं (खरीदा गया है) ।
- ७- नि<sup>३</sup>त छि<sup>४</sup>छ<sup>४</sup> माय्<sup>५</sup>ल मै- क्या तुमने अपनी मोटर-गाड़ी यौ ? मै<sup>२</sup> न । मै<sup>२</sup>रन्<sup>३</sup> (कार) बेच दी है ? अभी तक नहीं (बेची है) । कोई भी उसे नहीं (खरीदना) चाहता है ।

(ग) — “पृ . . . .त” वाक्य

- १- निन<sup>३</sup>त् इङ्<sup>३</sup> वेन्<sup>३</sup> ष्वोत् आप सचमुच उत्तम अंग्रेजी बोलते हन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup>, चाय्<sup>३</sup> नाळ<sup>३</sup> हैं । आपने (यह भाषा) कहां श्यवे<sup>३</sup>त ? सीखी ?
- २- नि<sup>३</sup> नेक पि<sup>३</sup>षृ चाय्<sup>३</sup>नै<sup>३</sup>क तुमने अपना वह कलम किस दुकान फु<sup>३</sup>च्<sup>३</sup>लि माय्<sup>३</sup>त ? षृ पर खरीदा ? शहर को सबसे बड़ी चाय्<sup>३</sup> छङ्<sup>३</sup>लि नेक चवे<sup>३</sup> दुकान पर (खरीदा) । ता<sup>३</sup>त फु<sup>३</sup>च्<sup>३</sup>लि माय्<sup>३</sup>त
- २- ने<sup>३</sup>वे<sup>३</sup> श्याव्<sup>३</sup>च्ये षृ छङ्<sup>३</sup> यह महिला जर्मनी से आयी । त<sup>३</sup>ब्यो<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>त ।
- ४- वो<sup>३</sup>मन तौ<sup>१</sup>षृछङ्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>मन् हम सब लोग अपने घरों से गए, च्या<sup>३</sup>लि छ्य<sup>३</sup>त, ख<sup>३</sup>षृ लि- परन्तु ली महोदय विद्यालय से श्येन्<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup> षृ छङ्<sup>३</sup> श्यवे<sup>३</sup>- गये श्याव्<sup>३</sup> छ्य<sup>३</sup>त ।
- ५- निन्<sup>३</sup> षृ<sup>३</sup> पुषृ च.वो छ्वान्<sup>३</sup> क्या आप नाव (या जहाज) द्वारा

- लाय्त्त ? पु०षू, वो०षू आए ? नहीं, मैं मोटर गाड़ी  
 च०वो छि०छि लाय्त्त (कार) द्वारा आया ।
- ६- था०षू च०म्मा छ्यूत्त ? वह कैसे गया ? वह एक मित्र की  
 था०षू च०वो फड्क्यौ त मोटरगाड़ी (कार) में गया ।  
 छि०छि छ्यूत्त ।
- ७- था०षू वै०ष०म्मा लाय्त्त ? वह यहाँ किसलिए आया ? वह  
 था०षू खान् इक फड्क्यौ एक मित्र से मिलने आया ।  
 लाय्त्त
- ८- था० ताव् नाळ् छ्यूषूच०वो वह वहाँ क्या करने गया ? वह  
 ष०म्मा छ्यूत्त ? षू च०वो (वहाँ) व्यापार करने गया ।  
 माय्माय् छ्यूत्त

कक्षा में :

- क : छिङ् नि३ चान्छिलाय् कृपया खड़े हो जाइए ।  
 ख : वो३ चान्छिलाय् ल मैं खड़ा हो गया हूँ ।  
 ग : था० चान्छिलाय् ल वह खड़ा हो गया है ।  
 क : छिङ् नि३ ताव् चळ् लाय् कृपया यहाँ आइए ।  
 ख : वो३ ताव् चळ् लाय् ल मैं यहाँ आ गया हूँ ।  
 ग : था० ताव् नाळ् छ्यूल वह वहाँ चला गया है ।  
 क : छिङ् नि३ ताव् हौथौ छ्यूल कृपया पीछे की ओर जाइए ।  
 ख : वो३ ताव् हौथौ लाय् ल मैं पीछे की ओर आ गया हूँ ।  
 ग : था० ताव् हौथौ छ्यूल वह पीछे की ओर चला गया है ।  
 क : छिङ् नि३ ताव् छ्येन् थौलाय् कृपया सामने की ओर आ जाइए ।  
 ख : वो३ ताव् छ्येन् थौ लाय् ल मैं सामने की ओर आ गया हूँ ।  
 ग : था० ताव् छ्येन् थौ छ्यूल वह सामने की ओर चला गया है ।  
 क : नि३ ख३इ३ च०वोश्या तुम बैठ सकते हो ।  
 ख : वो३ च०वोश्याल मैं बैठ गया हूँ ।  
 ग : था० च०वोश्याल वह बैठ गया है ।

## व्याकरण

१२-१ पूर्णता-बोधक 'ल' : चीनी भाषा में किसी व्यापार का काल चाहे वह भूत हो या वर्तमान या भविष्यतः, मुख्यतः किसी कालवाचक शब्द या शब्द-समूह द्वारा प्रगट किया जाता है; जैसे,

वो<sup>३</sup>मन च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>थ्येन् खान्<sup>३</sup> था । हमने कल उसको देखा ।

वो<sup>३</sup>मिङ्<sup>३</sup>थ्येन् ताव्<sup>३</sup>था नाळ<sup>३</sup> मैं कल उसके पास जाऊँगा ।

यू<sup>३</sup>छ्यू<sup>३</sup>

लेकिन पूर्ण व्यापार का स्वरूप सूचित करने के लिये हम क्रिया के बाद प्रत्यय 'ल' का प्रयोग करते हैं, या वाक्य के अन्त में सहायक शब्द 'ल' (दोनों एक ही अक्षर हैं), या दोनों का प्रयोग करते हैं; उदाहरण के लिये :

था<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>ल वह आया है ।

वो<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>चिङ्<sup>३</sup>छिङ्<sup>३</sup> था<sup>३</sup>मन् ल मैंने पहले ही उसको निमंत्रण किया है (या दे दिया है)

था<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup> ल वह मुझे पैसे दिया है

प्रत्यय 'ल' का प्रयोग भविष्य में किसी व्यापार की पूर्णता पर जोर देने के लिये भी किया जाता है; जैसे,

मिङ्<sup>३</sup>थ्येन् नि<sup>३</sup>मन् ला<sup>३</sup>य् ल, कल तुम्हारे आने के बाद हम वो<sup>३</sup>मन च्यू<sup>३</sup> न्येन्<sup>३</sup>पु<sup>३</sup> पढ़ाई करेंगे ।

यह ध्यान में रखना चाहिये कि चाहे कार्य भूत काल में हुआ हो, फिर भी हम प्रत्यय 'ल' का प्रयोग तब तक नहीं कर सकते जब तक किसी व्यापार की पूर्णता पर जोर नहीं देना चाहते; जैसे,

था<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>-च्यू<sup>३</sup>-छि<sup>३</sup>-अळ<sup>३</sup> न्येन् चाय्<sup>३</sup> १९७२ साल में वह यहाँ

चळ<sup>३</sup> न्येन्<sup>३</sup> पू<sup>३</sup> पढ़ता था ।

छू<sup>३</sup>ङ्<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup> था छाङ्<sup>३</sup>छाङ्<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> पहले वह हमेशा आता था ।



‘ल’ और कर्म: साधारण कर्म हो (अर्थात् जिस कर्म के साथ कोई विशेषण न हो) तो क्रिया के साथ प्रत्यय ‘ल’ और कर्म के बाद अर्थात् वाक्य के अन्त में, सहायक शब्द ‘ल’ ये दोनों ‘ल’ के प्रयोग हो सकते हैं; जैसे,

निछू<sup>३</sup>ल फान्<sup>३</sup>ल मा ?      क्या तुम खा चुके हो ?  
 वो<sup>३</sup> कैल था<sup>३</sup> ने<sup>३</sup>पन् पू<sup>३</sup>ल      मैंने उसको किताब दी है ?

ऐसे वाक्यों में प्रत्यय ‘ल’ छोड़ा जा सकता है लेकिन सहायक शब्द ‘ल’ अर्थात् वाक्य के अन्त में आने वाला ‘ल’ कभी नहीं छोड़ा जा सकता; उपरोक्त दोनों वाक्य इस तरह भी लिखे जा सकते हैं :

नि<sup>३</sup> छू<sup>३</sup>-फान्<sup>३</sup> ल मा ?  
 वो<sup>३</sup> कै<sup>३</sup>ल था<sup>३</sup> ने<sup>३</sup>पन् पू<sup>३</sup> ल ।

जब कर्म के पहले विशेषतासूचक हो तो आमतौर से प्रत्यय ‘ल’ का प्रयोग होता है; जैसे,

वो<sup>३</sup> कै<sup>३</sup>ल था<sup>३</sup> ई<sup>३</sup>पन् पू<sup>३</sup>      मैंने उसको एक किताब दी ।  
 वो<sup>३</sup> मा<sup>३</sup>य्ल ई<sup>३</sup>क पि<sup>३</sup>      मैंने एक कलम खरीदी ।

१२-२ पूर्णताबोधक क्रिया का निषेधार्थक रूप : जब हम कोई ऐसा व्यापार प्रगट करना चाहते हैं जो नहीं हुआ, तो क्रिया के पहले सिर्फ ‘मै<sup>३</sup>’ (या ‘मै<sup>३</sup>यौ’) जोड़ देना चाहिये। हमें यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि ‘मै<sup>३</sup>यौ’ या ‘मै<sup>३</sup>’ पूर्णताबोधक स्वरूप का निषेधार्थक रूप है, इसलिए इसके साथ प्रत्यय ‘ल’ कभी भी नहीं जोड़ना चाहिए; जैसे,

था<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>लाय<sup>३</sup>      वह नहीं आया ।  
 (अथवा मै<sup>३</sup>यौ लाय<sup>३</sup>)  
 वो<sup>३</sup>मन् तौ मै<sup>३</sup> छू<sup>३</sup>यू ।      हममें से कोई भी नहीं गया ।

वो<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>खान्<sup>३</sup> पाव्<sup>३</sup> । मैंने समाचारपत्र नहीं पढ़ा ।

हम यहां 'था<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> ल', 'वो<sup>३</sup> मन् मै<sup>३</sup>छ्य<sup>३</sup> ल' या 'वो<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>खान्<sup>३</sup> पाव्<sup>३</sup> ल' कभी नहीं कह सकते ।

१२-३ अपूर्णार्थ बोधक 'न' : व्याकरण नोट १०-६ में हम बता चुके हैं कि वाक्य के अन्त में सहायक शब्द 'न' का प्रयोग करके हम बताते हैं कि व्यापार या क्रिया अभी जारी हैं । अगर कोई व्यापार पूरा नहीं हुआ है, लेकिन शीघ्र ही पूरा होने वाला है, तो हम 'मै<sup>३</sup>' या 'हाय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>' के साथ सहायक-शब्द 'न' का प्रयोग कर सकते हैं (अर्थात् '(हाय्<sup>३</sup>)मै<sup>३</sup>(यौ)न' 'अभी तक नहीं' ऐसे वाक्य विन्यास का प्रयोग करते हैं) । 'न' यहां भाव-दर्शक सहायक शब्द है; जैसे,

था<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> (यौ) लाय्<sup>३</sup> न । वह अभी तक नहीं आया ।

पू<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> (यौ) माय्<sup>३</sup> किताब अभी तक नहीं खरीदी न । गई ।

था<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup> न । उसने मुझे अभी तक पैसे नहीं दी ।

१२-४ पूर्णताबोधक क्रिया और प्रश्नार्थक वाक्य : पूर्णता-बोधक स्वरूप का निम्नलिखित प्रश्नार्थक रूप ध्यान में रखना चाहिए :—

(१) कर्मरहित साधारण वाक्य—

था<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>-ल मा ? क्या वह आ गया है ?  
(अथवा वह आया है या नहीं) ।

था<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>-ल मै<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup> ? ”

था<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>-ल मै<sup>३</sup> यौ ? ”

था<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup> मा ? क्या वह नहीं आया है ?

(२) वाक्य कर्म के साथ :

निन्<sup>२</sup> छृ<sup>१</sup> (ल) फा<sup>२</sup>न्ल मा ? क्या आपने खाना खाया है?  
(अथवा खा चुके हैं)

निन्<sup>२</sup> छृ<sup>१</sup> (ल) फा<sup>२</sup>न् ल मै<sup>२</sup>यौ ?

„

निन्<sup>२</sup> मै<sup>२</sup> छृ<sup>१</sup>-फा<sup>२</sup>न् मा ? क्या आपने खाना नहीं खाया है ?

(३) अगर कर्म वाक्य के शुरू में हो (जिसे अपवृत्त कर्म कहते हैं) तो सिर्फ प्रत्यय “ल” का प्रयोग होता है :

चिन्<sup>१</sup>-थ्येन्-त पाव्<sup>२</sup>, निन्<sup>२</sup>खान्<sup>२</sup>- क्या आपने आज का समा-  
ल मा ? चारपत्र पढ़ा है? (अथवा  
आज का समाचार पत्र आपने  
पढ़ा है या नहीं ।)

चिन्<sup>१</sup>-थ्येन्-त पाव्<sup>२</sup>, निन्<sup>२</sup>खान्<sup>२</sup>-  
ल मै<sup>२</sup>-खान् ?

„

चिन्<sup>१</sup>-थ्येन्-त पाव्<sup>२</sup>, निन्<sup>२</sup>  
खान्<sup>२</sup>-ल मै<sup>२</sup>-यौ ?

„

चिन्<sup>१</sup>-थ्येन्-त पाव्<sup>२</sup>, निन्<sup>२</sup> क्या आपने आज का समा-  
मै<sup>२</sup>-खान्<sup>२</sup> मा ? चारपत्र नहीं पढ़ा है ?

जब भी ‘मै<sup>२</sup>-यौ’ क्रिया के पहले प्रयुक्त हो इसे हमेशा ‘मै<sup>२</sup>’ के रूप में संक्षिप्त किया जा सकता है । लेकिन जब ‘मै<sup>२</sup>यौ’ का प्रयोग किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिये अकेले किया जाय तो इसे कभी भी संक्षिप्त नहीं करना चाहिये; जैसे,

था<sup>१</sup> लाय्<sup>२</sup>-ल मै<sup>२</sup>यौ ?

मै<sup>२</sup>यौ, (अथवा) मै<sup>२</sup>लाय्,

(अथवा) हाय्<sup>२</sup> मै<sup>२</sup> (यौ) लाय्<sup>२</sup> न ।



१२-५ प्रयोजन-दर्शक वाक्य पूर्णताबोधक क्रिया के साथ : हम ग्यारहवें पाठ में (व्याकरण नोट ११-५) तीन तरह के प्रयोजन-दर्शक वाक्य सीख चुके हैं, इन वाक्यों में 'लाय्' और 'छ्यू' का प्रयोग होता है। क्रिया की पूर्णता सूचित करने के लिये 'ल' का प्रयोग इन वाक्यों के अन्त में होता है, लेकिन उन्हीं दो प्रकार के वाक्यों के अन्त में इसका प्रयोग होता है जिनके अंत में 'लाय्' या 'छ्यू' हो; उदाहरण के लिये :

था<sup>१</sup> ताव् चुङ्क्वो<sup>२</sup> च्याव्<sup>३</sup>पु<sup>४</sup> वह चीन में पढ़ाने के लिये  
छ्यू<sup>५</sup>-ल<sup>६</sup> था<sup>१</sup> ताव् चुङ्क्वाय्- गया है। वह दोस्त से मिलने  
था<sup>१</sup> छ्यू<sup>५</sup> खान्<sup>७</sup> फङ्<sup>८</sup>यौ छ्यू- के लिये शहर से बाहर गया  
ल। हुआ है।

१२-६ "पृ-त" सहित क्रिया-विधेय वाक्य : व्यापार की पूर्णता पर जोर देने के लिये क्रिया के बाद हम प्रत्यय "ल" जोड़ देते हैं। लेकिन, अगर यह बात जाहिर हो कि व्यापार पहले ही हो चुका है और हम लोग खास तौर से उसके समय ('थ्येन्' 'न्येन्' इत्यादि), स्थान (स्थान वाचक संबंध-सूचक 'चाय्' 'छूङ्' इत्यादि के साथ), रीति (साधन-दर्शक संबंध 'युङ्' 'चवो' इत्यादि के साथ), प्रयोजन, या कार्य संपादन करने वाले कर्त्ता के ऊपर जोर देना चाहते हों तो विधेय में "पृ-त" इस विन्यास का प्रयोग करते हैं, और इस विशेष प्रकार के क्रिया-विधेय को 'पृ' और 'त' के बीच में रखते हैं; जैसे,

(स्थान) निन्<sup>१</sup>त माव्<sup>२</sup>चू<sup>३</sup> (पृ) आपका टोप कहां से खरीदा  
चाय्<sup>४</sup> नाळ<sup>५</sup> माय्<sup>६</sup>-त गया है ?

(स्थान) था<sup>१</sup> (पृ) छूङ्<sup>२</sup> वह कहां से आया है ?  
नाळ<sup>३</sup> लाय्<sup>४</sup>त ?

(रीति) वो<sup>१</sup> (पृ) चवो<sup>२</sup> मैं रेलगाड़ी  
ह्वो<sup>३</sup>छ<sup>४</sup> ह्वो<sup>५</sup>लाय्<sup>६</sup>त से आया हूं।

(प्रयोजन) वो<sup>३</sup>मन् (षृ) ताव्<sup>४</sup> हम लोग यहां पढ़ने के लिये  
चळ<sup>४</sup> लाय्<sup>३</sup> न्येन्<sup>४</sup>-षू<sup>३</sup>त (अथवा आये हैं ।  
न्येन्<sup>४</sup>-षू<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>त)

(कर्त्ता के ऊपर जोर) षू<sup>३</sup>(षृ) किताब उसने खरीदी है ।  
था माय्<sup>३</sup>त)

इस तरह के विन्यास में “षू<sup>४</sup>” का प्रयोग वैकल्पिक है । लेकिन  
निषेधार्थक रूप में “षू<sup>४</sup>” का प्रयोग अनिवार्य है; उदाहरण के लिए  
हम ‘वो<sup>३</sup> च वो<sup>४</sup> ह्वो<sup>३</sup>छ<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>-त’ कह सकते हैं, लेकिन इसके निषेधा-  
र्थक रूप में ‘वो<sup>३</sup> पू<sup>३</sup>षू च वो<sup>४</sup> ह्वो<sup>३</sup>छ<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>त’ कहना अनिवार्य है ।

निम्नलिखित उदाहरणों से “षू<sup>४</sup>... त” की विशेषता प्रगट  
होगी :

वो<sup>३</sup> फङ्<sup>३</sup>यी च वो<sup>४</sup>थ्येन् मेरा मित्र कल आया है ।  
लाय्<sup>३</sup>-ल ।

वो फङ्<sup>३</sup>यी च वो<sup>४</sup>थ्येन् कल मेरा मित्र आया है (अथवा  
लाय्<sup>३</sup>-त । मेरा मित्र कल के रोज आया है)

वो<sup>३</sup> चिन्<sup>४</sup>थ्येन् माय्<sup>३</sup> (ल) मैंने आज एक किताब खरीदी ।  
षू<sup>३</sup> ल ।

षू<sup>३</sup> षृ चिन्<sup>४</sup>थ्येन् माय्<sup>३</sup>-त । किताब आज खरीदी गई है ।

अगर “षू<sup>४</sup>...त” युक्त क्रिया-वाक्य में कोई कर्म हो तो उसे  
वाक्य के अन्त में यानी “त” के बाद या “त” के पहले रख सकते  
हैं; जैसे,

नि<sup>३</sup> ( षृ) चा<sup>४</sup>य् ना<sup>३</sup>ळ श्चवे<sup>३</sup>- तुमने चीनी भाषा कहां सीखी  
त चुङ्<sup>३</sup>वेन् है ?

था<sup>३</sup> पु<sup>३</sup>षृ चा<sup>४</sup>य् चळ<sup>४</sup> माय्<sup>३</sup> त उसने किताब यहां नहीं  
षू<sup>३</sup> खरीदी है ।

अगर कर्म पुरुष-वाचक सर्वनाम हो या क्रिया विधेय में क्रिया-कर्म विन्यास के बाद वाक्य के अन्त में दिशाबोधक पूर्ति आई हो तो कर्म अक्सर 'त' के पहले ही रखते हैं; जैसे,

वो<sup>३</sup> (पृ) च. वो<sup>३</sup> ध्येन् खान्<sup>४</sup> मैंने उसे कल देखा है ।  
था<sup>१</sup> त ।

था<sup>१</sup> (पृ) चिन्<sup>३</sup> ध्येन् ताव्<sup>४</sup> वह आज चीन गया है ।  
चुङ्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> छ्य<sup>४</sup> त ।



## पाठ-१३

इ<sup>१</sup> न्येन्<sup>२</sup> यौ<sup>३</sup>चि<sup>३</sup>क<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>वे<sup>३</sup> ? एक वर्ष में कितने मास होते हैं ?  
इ<sup>१</sup>न्येन्<sup>२</sup> यौ<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>अळ<sup>३</sup>क<sup>३</sup> रु<sup>३</sup>वे<sup>३</sup> । एक वर्ष में बारह मास होते हैं ।

यौ<sup>३</sup>त्वो<sup>३</sup>षाव्<sup>३</sup> थ्येन्<sup>३</sup> ? कितने दिन होते हैं ?  
सान्<sup>१</sup> पाय्<sup>३</sup> ल्यू<sup>३</sup>षू<sup>३</sup> ऊ<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> ३६५ दिन होते हैं ।  
इ<sup>१</sup>क<sup>३</sup> रु<sup>३</sup>वे<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup>त्वो<sup>३</sup>षाव्<sup>३</sup> थ्येन्<sup>३</sup> ? एक मास में कितने दिन होते हैं ?

यौ<sup>३</sup>त<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> सान्<sup>१</sup>षू<sup>३</sup> थ्येन्<sup>३</sup>, कुछ में ३० दिन, कुछ में ३१  
यौ<sup>३</sup>त<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> सान्<sup>१</sup>षू<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> । दिन होते हैं ।

अळ<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>वे<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup> सान्<sup>१</sup>षू<sup>३</sup> थ्येन्<sup>३</sup> पा ? फरवरी के महीने में ३० दिन  
नहीं होते । क्या होते हैं ?

मै<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup>, अळ<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>वे<sup>३</sup> च्यु<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> नहीं, नहीं होते । फरवरी में  
अळ<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> पा<sup>३</sup> थ्येन्<sup>३</sup> । केवल २८ दिन होते हैं ।

ति<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>क<sup>३</sup> रु<sup>३</sup>वे<sup>३</sup>, चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> चीनी भाषा में पहले महीने को  
ह्वा<sup>३</sup> च्याव्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>म्मा ? क्या बोलते हैं ।

च्याव्<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>वे<sup>३</sup> । इसे पहला महीना कहते हैं ।

ति<sup>३</sup>अळ<sup>३</sup>क<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>वे<sup>३</sup>च्यु<sup>३</sup> च्याव्<sup>३</sup> तो दूसरा महीना दूसरा महीना  
अळ<sup>३</sup>रु<sup>३</sup>वे<sup>३</sup> पा ? हीं कहलाता है । है ना ?

त्वैल ।

आप ठीक हैं ।

औ, ना<sup>३</sup>पु नान्<sup>३</sup> । इ<sup>३</sup>क ण्वे<sup>३</sup>

ओह ! यह तो कठिन नहीं है ।

यौ<sup>३</sup>चि<sup>३</sup>क लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup> ।

एक महीने में कितने सप्ताह होते हैं ?

स्च्<sup>३</sup> क लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup> । इन्<sup>३</sup>येन्<sup>३</sup>

चार सप्ताह । एक वर्ष में ५२

यौ<sup>३</sup>ऊ<sup>३</sup>षृ अळ<sup>३</sup>क लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup>,

सप्ताह होते हैं, एक सप्ताह में

इ<sup>३</sup>क लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> छि<sup>३</sup>-

७ दिन होते हैं ।

थ्येन् ।

‘इतवार’ चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> ह्वा<sup>३</sup>

चीनी भाषा में इतवार को क्या कहते हैं ।

च्याव् ष<sup>३</sup>स्मा ?

‘इतवार’ च्याव्<sup>३</sup> लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup>-

इतवार को “लिपाय् थ्येन्”

थ्येन्, ‘सोमवार’ च्याव्<sup>३</sup> लि<sup>३</sup>-

सोमवार को “लिपाय् ई” (सप्ताह का पहला दिन) कहते हैं ।

पाय् इ<sup>३</sup> ।

ना<sup>३</sup>ये<sup>३</sup>पुनान्<sup>३</sup> ।

यह भी कठिन नहीं है ।

स्वो<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>-

इसलिए मैं कहता हूँ कि चीनी

क्वो<sup>३</sup> ह्वा<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup> रुङ्<sup>३</sup>इ

भाषा पढ़ना बहुत आसान है ।

इय्वे<sup>३</sup> ।

### नये शब्द

यौ<sup>३</sup> (त) षृ<sup>३</sup> हौ (गतिशील क्रि० वि०) कभी-कभी

छ्य<sup>३</sup> न्येन्<sup>३</sup>

(गतिशील क्रि० वि०, सं०) पिछले वर्ष

चिन्<sup>३</sup> न्येन्<sup>३</sup>

(गतिशील क्रि० वि०, सं०) इस वर्ष

मिङ्<sup>३</sup> न्येन्<sup>३</sup>

(गतिशील क्रि० वि०, सं०) अगले वर्ष

ना<sup>३</sup>

(निश्चयवाचक सर्व०) वह

चि<sup>३</sup>

(निश्चयवाचक सर्व०) कितना

ध्येन् <sup>१</sup>	(सं०)	दिन
न्येन् <sup>२</sup>	(सं०)	वर्ष
हाव् <sup>३</sup>	(सं०)	दिन (महीने का), नंबर (घर का, कमरे आदि का) ।

व्वे <sup>४</sup>	(सं०)	महीना
लि <sup>३</sup> पाय् <sup>५</sup>	(सं०)	सप्ताह
षृ <sup>२</sup> हौ	(सं०)	समय
छ <sup>१</sup> चान् <sup>६</sup>	(सं०)	स्टेशन
ह्वो <sup>३</sup> छ <sup>१</sup> चान् <sup>६</sup>	(सं०)	रेलवे स्टेशन
छि <sup>१</sup> छ <sup>१</sup> चान् <sup>६</sup>	(सं०)	बस-स्टाप या अड्डा

ध्येन् <sup>१</sup> ध्येन् <sup>१</sup>	(क्रि० वि०)	प्रतिदिन
याव् <sup>७</sup> चिन् <sup>३</sup>	(वि)	आवश्यक (होना)
ताव् <sup>८</sup>	(क्रि०)	पहुँचना
शि <sup>१</sup> वाड्	(क्रि०)	की आशा करना, की आशा

	(सं०)	आशा, उम्मीद
ति <sup>९</sup>	उपसर्ग	(क्रमवाचक अंक बनाने के लिए)

पा	सहायक शब्द	(सम्भावना के अर्थ में)
(ना <sup>१</sup> )पु <sup>२</sup> याव् <sup>७</sup> -चिन् <sup>३</sup> ।		कोई बात नहीं, कुछ भी नहीं ।
त्वै <sup>१०</sup> ल ।		बिलकुल ठीक है (सहमति देना)

साल	महीना	दिन
इछ्येन् <sup>१</sup> -च्यु <sup>३</sup> पाय् <sup>३</sup> न्येन् <sup>२</sup> १९००	इ <sup>३</sup> व्वे <sup>४</sup> जनवरी	इ <sup>३</sup> हाव् <sup>३</sup> पहला
इछ्येन् <sup>१</sup> -पा <sup>१</sup> पाय् <sup>३</sup> त्यु <sup>३</sup> षृ <sup>२</sup>		



सान् न्येन् १८७३ अळ् एवे फरवरी अळ् हाव् दूसरा

सान् एवे मार्च सान् हाव् तीसरा

इछ् येन्-च्यु पाय् स्च्

षृ-छि न्येन्

१९४७ स्च् एवे अप्रैल स्च् हाव् चौथा

उ एवे मई उ हाव् पांचवा

ल्यु एवे जून ल्यु हाव् छठा

छि एवे जुलाई छि हाव् सातवाँ

(टेलीफोन के ढंग से)

इ-स्च्-च्यु-अळ् न्येन् १४९२ पा एवे अगस्त पा हाव् आठवाँ

इ-लिङ्-सान्-इ-

न्येन् १०३१ च्यु एवे सितंबर च्यु हाव् नौवाँ

इ-पा-लिङ्-लिङ्-

न्येन् १८०० षृ एवे अक्तूबर षृ हाव् दसवाँ

षृ इ एवे नवंबर षृ इ हाव् ग्यारहवाँ

षृ आळ् एवे दिसंबर षृ आळ्

हाव् बारहवाँ

षम्मा न्येन् कौन सा वर्ष चि एवे कौन सा चि हाव् कौन सा

महीना

दिन

(वर्ष का)

(महीने का)

छ्यु न्येन् पिछला वर्ष पाङ् एवे पिछला च् वो थ्येन् कल (बीता

महीना

हुआ)

चिन् न्येन् इस वर्ष चे एवे इस महीने चिन् थ्येन् आज

मिङ् न्येन् अगले वर्ष श्या एवे अगले मिङ् थ्येन् कल (आने

महीने

वाला)



ति<sup>१</sup> उ<sup>३</sup>वै<sup>४</sup> पांचवे व्यक्ति (अध्यापक आदि के लिये  
आदरसूचक प्रयोग)

ति<sup>१</sup> ल्यु<sup>१</sup>पन्<sup>३</sup> छठा खण्ड (पुस्तक आदि के लिए)

ति<sup>१</sup> छि<sup>१</sup> चाङ् सातवाँ ताव या तस्ता (कागज के लिए)

ति<sup>१</sup> चि<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> कौन सा खण्ड (ग्रंथ-खण्डों में से)

### उदाहरणमाला

(क) — क्रिया से पहले आने वाली काल-वाचक अभिव्यक्तियां  
(‘किस समय’)

नि<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>थ्येन् वान्<sup>३</sup>षाङ् क्या आप कल शाम को गये थे ?  
छ्यु<sup>१</sup>ल मा ? मै<sup>३</sup>छ्यु<sup>१</sup>। नहीं, मैं नहीं गया ।

चाङ्<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup>पङ् मिङ्<sup>३</sup>थ्येन् क्या मि० चांग कल आ रहे हैं ?  
लाय्<sup>३</sup>पु लाय्<sup>३</sup> ? पुलाय्<sup>३</sup>, नहीं, वह कल नहीं आ रहे हैं ।  
मिङ्<sup>३</sup>थ्येन् पुलाय्<sup>३</sup> ।

था<sup>३</sup> लि<sup>३</sup>पाय् अळ<sup>३</sup> त्वै<sup>३</sup>लाय् क्या वह मंगलवार को वापस  
ल मै<sup>३</sup>यौ ? लाय्<sup>३</sup>ल । नहीं आया ? हां, वह वापस  
आ गया ।

षाङ्<sup>३</sup>लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> चाय् पिछले सप्ताह आप कहां  
नाळ<sup>३</sup> ? षाङ्<sup>३</sup> लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup> थे ? पिछले सप्ताह मैं दिल्ली  
वो<sup>३</sup>चाय् त<sup>३</sup>लि<sup>३</sup> । में था ।

नि<sup>३</sup> श्या<sup>३</sup>वे पु<sup>३</sup>ताव्<sup>३</sup>इङ्- अगले महीने क्या आप इंगलैंड  
क्वो<sup>३</sup> छ्यु<sup>१</sup> मा ? नहीं जा रहे हैं ?

पु छ्यु<sup>१</sup> । नि<sup>३</sup> च<sup>३</sup>म्मा च<sup>३</sup>- नहीं । आपको कैसे मालूम हुआ  
ताव् वो<sup>३</sup> पुछ्<sup>३</sup> य<sup>१</sup> ? कि मैं नहीं जा रहा ?



छ्यूँ न्येन् लाय् त नेक जो व्यक्ति पिछले वर्ष आया  
 रन् ताव् नाळ छ्यूँ ल ? था वह कहाँ गया ?  
 वो शिवाङ् नि मिङ् थ्येन् मुझे आशा है कि आप कल आ  
 नङ् लाय् । सकते हैं (आएंगे) ।

(ख) — “पा” के साथ सम्भावना का अर्थ

निषू चाङ् श्येन् शङ् पा ? क्या आप मि० चांग हैं ?  
 षू । हाँ ।  
 निमन् पुमाय् वाय् क्वो आप दूसरे देश की चाय तो  
 छा पा ? नहीं बेचते ?  
 माय् । नि माय् त्वो- हाँ, हम बेचते हैं । आपको कितनी  
 षाव् ? चाहिए ?  
 श्ये वे षङ् तौ ह्वै च्या ल मेरे खयाल से सब छात्रगण घर  
 पा ? त्वै ल, तौ ह्वै वापस चले गये हैं ? ठीक है,  
 च्या ल । वे सब घर चले गये हैं ।  
 निचिन् थ्येन् पु छ्यूँ पा ? मेरे विचार से आज तुम नहीं  
 पु छ्यूँ । जा रहे हो, क्यों ? मैं नहीं जा  
 रहा हूँ ।  
 नि थ्येन् थ्येन् ताव् था मेरे विचार से आप प्रतिदिन  
 नाळ छ्यूँ, पा ? वो यौ उसके घर जाते हो ? कभी मैं  
 षू हौ छ्यूँ, यौ षू हौ पु वहाँ जाता हूँ, कभी नहीं जाता ।  
 छ्यूँ ।

(ग) — “षू.....त” वाक्य के साथ जोर देने के लिये

कालवाचक अभिव्यक्तियाँ

- १- नेक रन् षू नै थ्येन् चौत ? था षू च्वो थ्येन् चौत ।
- २- निन् थाय् थाय् षू लि पायचि ताव् मङ् माय् (बंबई)

- छ्यूत ? वो<sup>३</sup>थाय्<sup>३</sup>थाय्<sup>३</sup> पृ लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> छ्यूत ।  
 ३- चे<sup>३</sup>क च्वो<sup>३</sup>च् पृ नै<sup>३</sup>वे माय्<sup>३</sup>त ? पृ षाङ्<sup>३</sup>वे माय्<sup>३</sup>त ।  
 ४- चाव्<sup>३</sup>स्याव्<sup>३</sup>च्ये पृ चि<sup>३</sup>वे लाय्<sup>३</sup>त ? था<sup>३</sup> पृ पृ<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>वे लाय्<sup>३</sup>त ।  
 ५- नि<sup>३</sup>त फङ्<sup>३</sup>यौ पृ चि<sup>३</sup>हाव्<sup>३</sup> ह्वै<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> त ?  
 था<sup>३</sup> पृ उ<sup>३</sup>वे षउ<sup>३</sup>(हाव्<sup>३</sup>) ह्वै<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> त ।

### व्याकरण

१३-१ कालबोधक शब्द का प्रयोग हमेशा क्रिया-विशेषण के रूप में किया जाता है, जिससे उस समय का बोध होता है, जिस समय कोई व्यापार होता है या कोई अवस्था रहती है। ऐसी सूरत में, कोई भी काल-बोधक शब्द चाहे वह अवधि सूचित करता हो या निश्चित समय, क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त हो सकता है; जैसे,

वो<sup>३</sup> मि<sup>३</sup>ङ्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> । मैं कल जाऊंगा ।  
 चिन्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup>वान्<sup>३</sup>षाङ्<sup>३</sup> छिङ्<sup>३</sup> आज शाम को कृपया थोड़ा-सा  
 नि<sup>३</sup>मनताव्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>मन्<sup>३</sup>च्या<sup>३</sup> चीनी खाना खाने के लिए हमारे  
 लाय्<sup>३</sup> छु<sup>३</sup> इ त्या<sup>३</sup>ळ चु<sup>३</sup>ङ्- घर पधारिये ।  
 क्वो<sup>३</sup> फ़ान्<sup>३</sup> ।

‘मिङ्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup>’ और ‘चिन्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup>षाङ्<sup>३</sup>’ काल-बोधक शब्द हैं, जिनसे निश्चित समय सूचित होता है। जब हम यह प्रगट करना चाहते हैं कि ‘किस समय’ कोई बात हुई या नहीं हुई, तो क्रिया-विशेषण के रूप में ऐसे कालबोधक शब्द का प्रयोग कर सकते हैं जिससे एक निश्चित समय का बोध होता है। अन्य उदाहरण ये हैं :

था<sup>३</sup> पृ च्वो<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup> त वह कल के रोज आया ।

वो<sup>३</sup>चे<sup>४</sup>ल्याङ्<sup>३</sup>थ्येन् मै<sup>३</sup>षू<sup>४</sup> इन दो दिन मुझे कोई काम नहीं मिला (अथवा मेरे पास कोई काम नहीं है) ।

१३-२ सहायक शब्द 'पा (बा)' से अनिश्चय का भाव :

'पा' इस सहायक शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से किसी निर्णय में अनिश्चय प्रगट करने के लिए किया जाता है । जब हम किसी वस्तु का अनुमान लगाते हैं लेकिन निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते कि वह सच है या नहीं, तो हम वाक्य के अन्त में सहायक 'पा' का प्रयोग करते हैं; जैसे,

निन्<sup>२</sup> हन्<sup>३</sup> माङ्<sup>२</sup> मा ? क्या आप बहुत व्यस्त हैं ?  
निन्<sup>२</sup> हन्<sup>३</sup> माङ्<sup>२</sup> पा ? शायद आप बहुत व्यस्त हैं,  
हैं न ?

था<sup>१</sup> ताव् चुङ्क्वो<sup>१</sup> छ्य<sup>१</sup> ल मा ? क्या वह चीन चला गया है ?

था<sup>१</sup> ताव् चुङ्क्वो<sup>१</sup> छ्य<sup>१</sup> ल पा ? शायद वह चीन चला गया है ।  
है न ?

था<sup>१</sup> मै<sup>२</sup> छ्य<sup>१</sup> मा ? क्या वह नहीं गया है ?

था<sup>१</sup> मै<sup>२</sup> छ्य<sup>१</sup> पा ? मेरा विचार नहीं है कि वह गया ।  
क्या वह चला गया ? (या मुझे लगता है कि वह नहीं गया है,  
यह क्या ठीक है ?)

१३-३ क्रमवाचक अंक : चीनी भाषा में, ऊपसर्ग 'ति<sup>४</sup>' जोड़ देने से संख्या का क्रम सूचित होता है । गणनावाचक अंक के पहले 'ति<sup>४</sup>' लगा देने से क्रमवाचक अंक बन जाता है; जैसे,

ति<sup>४</sup>इ<sup>१</sup>-पहला (ली); ति<sup>४</sup>अळ<sup>१</sup>-दूसरा (री)



गणनावाचक अंकों की तरह क्रमवाचक अंक जब संज्ञा के साथ जोड़े जाते हैं तब क्रमवाचक अंक भी सामान्यतः मापक शब्दों की अपेक्षा करते हैं; जैसे,

ति<sup>१</sup> इ<sup>३</sup>क र<sup>२</sup>न्—पहला आदमी; ति<sup>१</sup> सान्<sup>१</sup> पन्<sup>३</sup>—तीसरा खंड (किताब का), इत्यादि ।

आमतौर से क्रमवाचक अंकों के पहले उपसर्ग 'ति' लगता है, लेकिन इस नियम के कुछ अपवाद हैं । नीचे हम कुछ ऐसी परिस्थितियाँ बता रहे हैं जिनमें अंक के पहले उपसर्ग नहीं लगाया जाता, फिर भी उससे क्रम सूचित होता है :

(१) जिस अंक से साल, महीना, दिन और समय का बोध होता है, उसके पहले उपसर्ग नहीं लगाया जाता । फिर भी वह कालक्रम सूचित करता है; जैसे,

अळ<sup>१</sup> ष<sup>१</sup>वे<sup>१</sup> अळ<sup>१</sup> ऋ<sup>१</sup>      फरवरी की दूसरी तारीख (अर्थात् दूसरा महीना, दूसरा दिन)

यह स्पष्ट है कि चाहे उपसर्ग 'ति' हो या न हो क्रमवाचक अंक के लिये केवल 'अळ' का प्रयोग किया जाता है, न कि 'ल्याङ्' का ।

(२) वस्तुओं के विभिन्न वर्गों को प्रगट करने के लिये उपसर्ग 'ति' का प्रयोग नहीं किया जाता; जैसे,

ई<sup>१</sup> न्येन्<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> ष<sup>१</sup>वे<sup>३</sup>षङ्      पहली श्रेणी के छात्र (अर्थात् पहले साल के विद्यार्थी)  
(चि<sup>३</sup>=पंक्ति, वर्ग)

सान्<sup>१</sup> तङ्<sup>३</sup>      तीसरी श्रेणी  
(तङ्<sup>३</sup>=श्रेणी, वर्ग)

(३) आमतौर से परिवार के सदस्यों और सम्बन्धियों को

सम्बोधित करने के लिये उपसर्ग 'ति' का प्रयोग नहीं होता; जैसे,  
सान्-क<sup>१</sup> (क) तीसरा बड़ा भाई, अर्थात् संभला भाई

उपसर्ग-रहित क्रमवाचक अंकों को आम गणनावाचक अंकों के साथ गड़बड़ नहीं करना चाहिये। हमें यह ध्यान में रखना चाहिये कि गणनावाचक अंकों के साथ मापक शब्द लगता है। लेकिन उपसर्ग-रहित क्रमवाचक अंक के साथ किसी मापक शब्द की जरूरत नहीं होती। इसलिये 'अठ<sup>४</sup> ढ़वे<sup>४</sup>' और 'सान्-क<sup>१</sup>' के साथ मापक शब्द नहीं लगा है। अगर हम लोग कहें, "दो महीने", और "तीन बड़े भाई" तो उनका अनुवाद होगा : "ल्याङ्-क<sup>१</sup> ढ़वे<sup>४</sup>" और "सान्-क<sup>१</sup> क<sup>१</sup>क<sup>१</sup>"।

१३-४ "षू" रहित वाक्य : बोलचाल की भाषा में साधारण और छोटे वाक्य में 'षू' का प्रयोग अक्सर नहीं किया जाता। इसके कुछ प्रचलित नियम इस प्रकार हैं :

(१) जब विधेय से काल प्रकट होता है; जैसे,  
मिङ्<sup>३</sup>थ्येन् (षू) लि<sup>३</sup>पाय्चि<sup>३</sup> कल कौन सा दिन है ?  
लि<sup>३</sup>पाय्ल्यु<sup>३</sup> शनिवार।  
चिन्<sup>१</sup>थ्येन् (षू) चि<sup>३</sup> हाव्<sup>४</sup>? आज कौन सी तारीख है ?  
(अथवा आज की तारीख क्या है) ?

चिन्<sup>१</sup>थ्येन् (षू) षू<sup>३</sup>सान्<sup>१</sup>हाव्<sup>४</sup> आज तेरह तारीख है।  
चिन्<sup>१</sup>न्येन्<sup>२</sup> (षू) षू<sup>३</sup>म्मान्येन्<sup>२</sup>? यह कौन सा साल है ?  
चिन्<sup>१</sup>न्येन्<sup>२</sup> (षू) ई<sup>१</sup>-च्यु<sup>३</sup>-छि<sup>१</sup> यह १९७४ का साल है।  
स्च्<sup>३</sup>-न्येन्<sup>२</sup>

(२) जब विधेय से जन्मस्थान प्रगट होता है, तब भी 'षू' का प्रयोग वैकल्पिक है; जैसे,

निन्<sup>२</sup> (षू) नाळ<sup>३</sup> रन्<sup>२</sup> आप कहां के रहने वाले हैं ?



(आपका जन्मस्थान कहाँ है?)

वो<sup>३</sup> (पृ) त<sup>३</sup>-लि<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup>

मैं दिल्ली का रहने वाला हूँ  
(त<sup>३</sup>-लि<sup>३</sup>==दिल्ली का चीनी  
रूप है) ।

१३-५ तारीख और पता : चीनी भाषा में तारीख और समय बताने के वक्त बड़ी इकाइयां पहले आती हैं और बाद में छोटी इकाइयां, यानी सबसे पहले 'न्यन्<sup>३</sup>' इसके बाद 'टवे<sup>३</sup>' फिर 'ऋ<sup>३</sup>' (हाव<sup>३</sup>) और अन्त में 'त्येन्<sup>३</sup> (पृ)'; जैसे,

ई<sup>१</sup>-च्यु<sup>३</sup>-छि<sup>१</sup>-ई<sup>१</sup>-न्येन्<sup>३</sup>

१४ अगस्त, १९७१

पा<sup>३</sup> टवे<sup>३</sup> पृ<sup>३</sup>स्च<sup>३</sup>

(या १९७१ के साल का १४  
अगस्त)

लि<sup>३</sup>पाय्-अळ<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup>षाङ्

मंगलवार, सायंकाल,

अगर तारीख में साल, महीना, दिन और समय सब साथ-साथ आए हों, तो शब्द-क्रम इस प्रकार होगा :

ई<sup>१</sup>-च्यु-छि<sup>१</sup>-स्च<sup>३</sup>-न्येन्<sup>३</sup> पृ<sup>३</sup>-

१ अक्टूबर, १९७४, मंगलवार,

ई<sup>१</sup>-ऋ<sup>३</sup> (हाव<sup>३</sup>) लि<sup>३</sup>पाय्-अळ<sup>३</sup>

दस बजे

पृ<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup>

पता : षाङ्<sup>३</sup>हाय्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>षान्<sup>१</sup>-

१० नं०, चुङ्<sup>३</sup>सान<sup>१</sup> (सान यात्  
सेन) मार्ग, शंघाइ ।

लु<sup>३</sup> पृ<sup>३</sup> हाव्

भौगोलिक शब्दों में भी यही तरीका अपनाया जाता है;  
जैसे,

चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> पै<sup>३</sup> चिङ्<sup>३</sup>

पैकिङ्, चीन देश

इन्तु<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> षङ्<sup>३</sup>ईन्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> अळ<sup>३</sup>

इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

जैसे कि पहले कहा जा चुका है (देखिये व्याकरण नोट,  
१३-३ (१)) साल, महीना, दिन और समय-बोधक शब्दों के साथ  
उपसर्ग 'ति<sup>३</sup>' का प्रयोग नहीं होता ।



## पाठ-१४

- क- चिन्<sup>१</sup>थ्येन् वान्<sup>३</sup>षाङ् वो<sup>३</sup> आज रात को मैं चीनी भोजन  
श्याङ् ताव् च्ये<sup>१</sup>षाङ् छ्यू<sup>३</sup> खाने के लिये बाहर जाने की  
छृ त्याळ<sup>३</sup> चुङ्<sup>१</sup>क्वो<sup>३</sup> सोच रहा हूँ ।  
फ़ान्<sup>५</sup>, षै<sup>१</sup> कन्<sup>१</sup> वो<sup>३</sup> मेरे साथ कौन चलेगा ?  
छ्यू<sup>५</sup> ?
- ख- वो<sup>३</sup> कन्<sup>१</sup> नि<sup>३</sup> छ्यू<sup>५</sup> मैं तुम्हारे साथ चलूंगा ।
- क- नि<sup>३</sup> ह्वै<sup>५</sup>युङ्<sup>५</sup> ख्वाय्<sup>५</sup>च् मा ? क्या तुम चौपस्टिक का प्रयोग  
कर सकते हो ? (चौपस्टिक से  
खा सकते हो) ?
- ख- इत्याळ<sup>३</sup> तो<sup>१</sup> पुह्वै<sup>५</sup> मैं बिलकुल नहीं जानता ।
- क- ना<sup>५</sup>पु<sup>५</sup>याव्चिन्<sup>३</sup> । नि<sup>३</sup>याव् चिन्ता की कोई बात नहीं । यदि  
युङ्<sup>५</sup> छा<sup>१</sup>च्, फ़ान्<sup>५</sup>क्वाळ<sup>३</sup> तुम छुरी कांटे का प्रयोग करना  
लि तो<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup> । नि<sup>३</sup> याव् चाहो तो जलपान गृह में वह भी  
श्वे<sup>१</sup> युङ्<sup>५</sup> ख्वाय्<sup>५</sup>च्, वो<sup>३</sup> है । यदि तुम चौपस्टिक का प्रयोग  
ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> च्याव्<sup>१</sup> नि<sup>३</sup> करना सीखना चाहो तो मैं सिखा  
सकता हूँ ।
- ख- वो<sup>३</sup>मन् ताव् नै<sup>३</sup>क फ़ान्<sup>५</sup>- हम लोग किस जलपान गृह में  
छ्यू<sup>५</sup> क्वाळ<sup>३</sup> ? जाएंगे ?

- क- छड्<sup>३</sup>लि<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> इक<sup>३</sup>श्याव्<sup>३</sup> नगर के अन्दर एक छोटा जल-  
फ़ान्<sup>३</sup>क्वाळ<sup>३</sup> च्याव्<sup>३</sup> शिन्<sup>३</sup>- पान गृह है जिसका नाम 'नवचीन'  
ह्वा<sup>३</sup> लौ<sup>३</sup>। वो<sup>३</sup> थिङ्<sup>३</sup>ष्वो<sup>३</sup> है। सुनने में आता है कि वहां  
नाळ<sup>३</sup>त छा<sup>३</sup>य् पुछ्<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> का भोजन काफी अच्छा है।
- ख- औ, वो<sup>३</sup> चृ<sup>३</sup>ताव् ने<sup>३</sup>क अरे ! मैं उस स्थान से परिचित  
ति<sup>३</sup>फ़ाङ् हूँ ।

### नये शब्द

वि०

- यौ<sup>३</sup>युङ् उपयोगी होना  
लाभदायक,  
पुछ्<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> अच्छा है, ठीक है  
बढ़िया।  
थिङ्<sup>३</sup>ष्वो<sup>३</sup> सुनने में आया कि  
वेन्<sup>३</sup>...हाव्<sup>३</sup> किसी की कुशलता के बारे में पूछ-  
ताछ करना।  
कौ<sup>३</sup>ल ! बहुत है, काफी है, पर्याप्त है।

मा०

- वान्<sup>३</sup> कटोरी  
च.यू<sup>३</sup> 'ह्वा<sup>३</sup>' शब्द के लिए  
संज्ञा  
छा<sup>३</sup>य् हरी सब्जियां, चीनी खाने की डिश  
रो<sup>३</sup> मांस  
यू<sup>३</sup> मछली  
थाङ्<sup>३</sup> सूप, भोल  
ताव्<sup>३</sup>च, छुरी, चाकू।

छा<sup>१</sup>च्  
षाब्<sup>२</sup>ळ  
ख्याय्<sup>४</sup>च्

वान्<sup>३</sup>  
शिन्<sup>४</sup>  
च्य<sup>४</sup>च्  
कुङ्<sup>१</sup>फु

क्रि० वि०

श्येन्<sup>१</sup>  
इ<sup>२</sup>खाळ<sup>४</sup>

सं० सू०

कन्<sup>१</sup>  
कं<sup>३</sup>  
थि<sup>४</sup>  
युङ्<sup>४</sup>  
त्वै<sup>४</sup>

क्रि०

युङ्<sup>४</sup>

वाळ<sup>२</sup>

कांटा

चम्मच

चौपस्टिक (चीन देश में भोजन करने में प्रयुक्त होनेवाली सलाइयां)

कटोरी

पत्र, चिट्ठी

वाक्य

अवकाश, फुरसत

पहले

एक साथ (संज्ञा भी है)

साथ, और

लिए, के लिए, को

के बदले, के स्थान पर

से

ओर, को, विषय में

उदाहरणमाला

(क) संबंध सूचक

(१) कन्<sup>१</sup> (साथ, से)



वो<sup>३</sup>मन् मि<sup>३</sup>ड्थ्येन् याव् कन्<sup>३</sup> हम कल शाम का भोजन श्री  
लि<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup> षड् लि<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> और श्रीमती ली के साथ करेंगे ।

इ<sup>३</sup> ख्वाळ्<sup>३</sup> छू<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup> फ़ान्<sup>३</sup>

नि<sup>३</sup> त चुड्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> ह्वा<sup>३</sup> ष तुम किससे चीनी भाषा सीखे  
कन्<sup>३</sup> पै<sup>३</sup> श्ये<sup>३</sup> वे<sup>३</sup> त । हो ?

(२) कै<sup>३</sup> (के लिए)

लि<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>- श्रीमती ली हमारे लिए चीनी  
मन् च<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> चुड्<sup>३</sup> क्वो<sup>३</sup> फ़ान्<sup>३</sup> भोजन बनायेंगी ।

(३) थि<sup>३</sup> (के बदले)

लि<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup> षड् याव्<sup>३</sup> थि<sup>३</sup> श्रीमती ली के बदले श्री ली  
लि<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> मांस और सब्जियाँ खरीद रहे हैं ।  
छाय्<sup>३</sup> ।

(४) त्वै<sup>३</sup> (की, ओर,)

लि<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup> षड् लि<sup>३</sup> थाय्<sup>३</sup>- श्री और श्रीमती ली हमारे प्रति  
थाय्<sup>३</sup> त्वै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> मन् हन्<sup>३</sup> बहुत अच्छे हैं ।  
हाव्<sup>३</sup> ।

(ख) अनिश्चय-सूचक प्रश्नार्थक शब्द

- १- नि<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> ष<sup>३</sup> म्मा ? वो<sup>३</sup> तुम्हें क्या चाहिए ? मुझे कुछ  
ष<sup>३</sup> म्मा तौ<sup>३</sup> पुयाव्<sup>३</sup> । नहीं चाहिए ।
- २- नि<sup>३</sup> ताव्<sup>३</sup> नाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ? वो<sup>३</sup> तुम कहां जा रहे हो ? मैं कहीं  
पु<sup>३</sup> ताव्<sup>३</sup> नाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> । नहीं जा रहा ।
- ३- नि<sup>३</sup> कन्<sup>३</sup> पै<sup>३</sup> ह्वो<sup>३</sup> ह्वा<sup>३</sup> ? वो<sup>३</sup> आपने किस के साथ बातें कीं ?  
मै<sup>३</sup> कन्<sup>३</sup> पै<sup>३</sup> ह्वो<sup>३</sup> ह्वा<sup>३</sup> । मैंने किसी के साथ बातें नहीं की ।

- ४- नि<sup>३</sup>मन् इव<sup>३</sup>श्याव् यौ<sup>३</sup> तुम्हारे स्कूल में कितने छात्र हैं ?  
 त्वो<sup>३</sup>षाव् इव<sup>३</sup>षड् ! मै<sup>३</sup> अधिक नहीं है ।  
 त्वो<sup>३</sup>षाव् ।

(ग) अंतर्गत व निषेधक के अर्थ में प्रश्नार्थक शब्द

- १- नि<sup>३</sup> याव् ष<sup>३</sup>म्मा ? वो<sup>३</sup> तुम्हें क्या चाहिए ? कुछ चाहिए,  
 ष<sup>३</sup>म्मातो<sup>३</sup> याव्, (अथवा) वो<sup>३</sup> या कुछ भी नहीं चाहिए ?  
 ष<sup>३</sup>म्मा तो<sup>३</sup> (या मे<sup>३</sup>) पुयाव्<sup>३</sup>
- २- षै<sup>३</sup> चू<sup>३</sup>ताव् चे<sup>३</sup>क षू<sup>३</sup>छिड् ? इसके विषय में कौन जानता है ?  
 षै<sup>३</sup> तो<sup>३</sup> चू<sup>३</sup>ताव् । प्रत्येक व्यक्ति जानता है ।  
 षै<sup>३</sup> तो<sup>३</sup> पुचू<sup>३</sup>ताव् । कोई भी नहीं जानता ।
- ३- नाळ<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> फ़ान्<sup>३</sup>क्वाळ<sup>३</sup> ? जलपानगृह किधर है ?  
 नाळ<sup>३</sup> तो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> । हर जगह है ।  
 नाळ<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup> । कहीं भी नहीं ।
- ४- नै<sup>३</sup>क छि<sup>३</sup>छ<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> नि<sup>३</sup>त ? नै<sup>३</sup> तुम्हारी कौन सी मोटरगाड़ी  
 क तो<sup>३</sup> पु<sup>३</sup>षू वो<sup>३</sup>त । वो<sup>३</sup>त है ? इनमें से कोई भी मेरी नहीं  
 माय्<sup>३</sup> ल । है । मेरी बिक गई है ।
- ५- नि<sup>३</sup> याव् खान्<sup>३</sup> नै<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> तुम कौन सी पुस्तक पढ़ना  
 षू<sup>३</sup> ? चाहते हो ?  
 नै<sup>३</sup>पन् तो<sup>३</sup> ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> । कोई सी भी ठीक रहेगी ।
- ६- नि<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup> नै<sup>३</sup>थ्येन् ची तुम बताओ जाने के लिए कौन-  
 हाव्<sup>३</sup> ? सा दिन अच्छा है ?  
 नै<sup>३</sup>थ्येन् तो<sup>३</sup> शिड्<sup>३</sup> । कोई भी दिन ठीक है ।

(घ) — निषेधक अर्थ पर बल का प्रयोग ('भी नहीं')

- १- नि<sup>३</sup> याव् त्वो<sup>३</sup>षाव् ? वो<sup>३</sup> तुम्हें कितना चाहिए ? बिल्कुल

- इत्याळ<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> (या ये<sup>३</sup>) नहीं ।  
 पु<sup>३</sup> याव<sup>३</sup>
- २- नि<sup>३</sup> त्वै<sup>३</sup> श्ये<sup>३</sup> त्वो<sup>१</sup>षाव<sup>३</sup> तुम कितने अक्षर लिख सकते हो?  
 च<sup>३</sup>? वो<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>क च<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> मैं एक अक्षर भी नहीं लिख  
 पु<sup>३</sup> त्वै<sup>३</sup> श्ये<sup>३</sup> । सकता ।
- ३- नि<sup>३</sup> खान<sup>३</sup> लचि<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> पू<sup>१</sup>ल? तुमने कितनी पुस्तकें पढ़ी ? मैंने  
 वो<sup>३</sup> इपन्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> मै<sup>३</sup> खान<sup>३</sup> एक भी पुस्तक अभी तक नहीं  
 न । पढ़ी ।
- ४- निन्<sup>२</sup> त्वै<sup>३</sup> ष्वो<sup>१</sup> इड्<sup>३</sup> वेन्<sup>२</sup> क्या आप अंग्रेजी बोल सकते हैं?  
 मा ? वो<sup>३</sup> इत्याळ<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> मैं बिल्कुल भी नहीं बोल  
 पु<sup>३</sup> त्वै<sup>३</sup> ष्वो<sup>१</sup> । सकता ।
- ५- नि<sup>३</sup> यौ त्वो<sup>१</sup>षाव<sup>३</sup> छयेन्<sup>२</sup>? तुम्हारे पास कितना पैसा है ?  
 इमाव<sup>२</sup> छयेन्<sup>२</sup> ये मैयौ<sup>३</sup> । एक सिक्का भी नहीं है ।
- ६- नि<sup>३</sup> नड्<sup>३</sup> छृ<sup>१</sup> चि<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup> फ़ान्<sup>३</sup>? तुम कितना चावल खा सकते  
 पान्<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> पु<sup>३</sup> नड्<sup>३</sup> छृ<sup>१</sup> हो ? आधी कटोरी भी नहीं खा  
 सकता ।
- ७- नि<sup>३</sup> याव<sup>३</sup> ष<sup>३</sup> म्मा ? यो<sup>३</sup> तुम्हें क्या चाहिए ? मुझे कुछ भी  
 ष<sup>३</sup> म्माये<sup>३</sup> (या तौ<sup>१</sup>) पुयाव<sup>३</sup> । नहीं चाहिए ।

### व्याकरण

१४-१ कन्<sup>३</sup>, कै<sup>३</sup>, थि<sup>३</sup>, युङ्<sup>३</sup> व त्वै<sup>३</sup> : संबंधसूचक 'चाय्' का प्रयोग हम पाठ १० में बता चुके हैं (देखिये व्याकरण नोट, १०-५) । यहाँ पांच और संबंधसूचकों के साथ परिचय कराया गया है । ये हैं, 'कन्' (के साथ, के पीछे), 'कै' (के लिये), 'थि' (के बदले, के बजाय, के लिये), 'युङ्' (से, में) और 'त्वै' (के प्रति, के लिये) । इनका प्रयोग 'चाय्' की तरह ही होता है । उदाहरण के लिये :



नि<sup>३</sup> कन्<sup>१</sup> षै<sup>२</sup> छ्यू<sup>४</sup>

तुम किसके साथ जा रहे हो

(अथवा जाओगे)

था<sup>१</sup> थ्येन्<sup>१</sup>-थ्येन्<sup>१</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>  
माय्<sup>३</sup> पाब्<sup>४</sup>

वह मेरे लिये हर रोज अखबार  
खरीदता है ।

वो<sup>३</sup> खै<sup>३</sup>ई<sup>३</sup> थि<sup>४</sup> नि<sup>३</sup> छ्यू<sup>४</sup>  
मा ?

क्या तुम्हारी जगह मैं जा सकता  
हूँ ?

थ्येन्<sup>१</sup>षड् युड्<sup>४</sup> चुड्<sup>४</sup>-  
वेन्<sup>३</sup> ष्वोह्वा<sup>४</sup>

अध्यापक महोदय चीनी भाषा में  
बोलते हैं ।

वो<sup>३</sup> त्वै<sup>४</sup> था<sup>१</sup>मन् ष्वो<sup>१</sup>वो<sup>३</sup>  
पुनड्<sup>४</sup> छ्यू<sup>४</sup>

मैंने उनसे कहा कि मैं नहीं जा  
सकूंगा ।

‘कै<sup>३</sup>’ का अनुवाक ‘के लिये’ है, और इससे सेवा का लक्ष्य  
सूचित होता है, जैसे,

क<sup>१</sup>-क कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup>ल  
ई<sup>४</sup>-पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>

मेरा बड़ा भाई मेरे लिए एक  
किताब खरीद लाया ।

‘कै<sup>३</sup>’ का प्रयोग कभी-कभी ‘थि<sup>४</sup>’ की जगह भी हो सकता  
है । उदाहरण के तौर पर हम उपरोक्त वाक्य को इस तरह भी  
लिख सकते हैं : ‘क<sup>१</sup>क थि<sup>४</sup> वो<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup>ल ई<sup>४</sup>-पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>’  
लेकिन इसका अर्थ होगा (मेरा) बड़ा भाई मेरे बदले एक किताब  
खरीद लाया (अथवा मेरे बजाय मेरा बड़ा भाई एक किताब खरीद  
लाया) ।

१४-२ अनिश्चय सूचक प्रश्नार्थक शब्द :

‘चि<sup>३</sup>’ (कितना), ‘षै<sup>२</sup>’ (कौन), ‘षै<sup>१</sup>म्मा’ (क्या), ‘नाळ<sup>३</sup>’  
(कहां), जैसे प्रश्नवाचक सर्वनामों को अनिश्चित प्राणियों, वस्तुओं,  
स्थानों परिमाणों या व्यापारों आदि को सूचित करने के लिये भी

प्रयोग करते हैं। ऐसे वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों के ऊपर जोर नहीं दिया जाता; जैसे,

- था<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> पू<sup>१</sup> ?      उसके पास कितनी किताबें हैं ?  
 था<sup>१</sup> यौ<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> पू<sup>१</sup> ।      उसके पास कुछ किताबें हैं ।  
 ने<sup>५</sup> वान्<sup>३</sup> लि यौ<sup>३</sup> ष<sup>३</sup>म्मा ?      उस कटोरी में क्या है ?  
 मै<sup>२</sup> ष<sup>३</sup>म्मा ।      कुछ नहीं ।  
 छ<sup>१</sup>पाङ् यौ<sup>३</sup> त्वो<sup>१</sup>षाव् रन्<sup>३</sup> ? मै<sup>२</sup> त्वो<sup>१</sup>-षाव् रन्<sup>३</sup> ।      उस ट्रेन में (रेलगाड़ी में) कितने आदमी हैं। ज्यादा नहीं ।  
 लि<sup>३</sup> पाय्<sup>५</sup> थ्येन्<sup>१</sup>वो<sup>३</sup> श्याङ्<sup>३</sup> ताव्<sup>५</sup> नाळ<sup>३</sup> छ्यू वाळ<sup>३</sup>-      मैं रविवार को कहीं खेलने के लिए जाना चाहता हूँ ।  
 बा<sup>२</sup>ळ ।

१४-३ 'षै<sup>२</sup> तौ<sup>१</sup>' 'ष<sup>३</sup>म्मा तौ<sup>१</sup>' इत्यादि : कभी-कभी प्रश्न-वाचक सर्वनाम बिना किसी अपवाद के 'हरेक' 'हर कोई' आदि अर्थ में और निषेधार्थक रूप में 'कोई भी नहीं' 'कुछ भी नहीं' इत्यादि के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

- षै<sup>२</sup> शि<sup>३</sup>ह्वान् था<sup>१</sup> ? षै<sup>२</sup> तौ<sup>१</sup>      उसको कौन पसन्द करता है ?  
 शि<sup>३</sup>ह्वान् था ।      उसको सभी पसन्द करते हैं ।  
 ष<sup>३</sup>म्मा रन्<sup>३</sup> याव्<sup>५</sup> चे<sup>५</sup>क ?      कौन आदमी इसे चाहता है ?  
 ष<sup>३</sup>म्मा रन्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> (या ये<sup>३</sup>)      कोई भी नहीं चाहता ।  
 पु<sup>३</sup>याव्<sup>५</sup> ।  
 षै<sup>२</sup> तौ<sup>१</sup> ह्वै<sup>५</sup> ।      हर कोई जानता है ।  
 षै<sup>२</sup> तौ<sup>१</sup> पु<sup>३</sup>ह्वै<sup>५</sup> ।      कोई भी नहीं जानता ।

१४-४ निषेधार्थक वाक्य में बल प्रगट करने का तरीका : निषेधार्थक वाक्य में, जिस संज्ञा पर हम बल देना चाहते हैं, उसके

पहले अक्सर 'इ' या बहुत थोड़ी संख्या या परिमाण सूचित करता हो ऐसा कोई शब्द और मापक शब्द प्रयुक्त करते हैं। संज्ञा के बाद, 'तौ' या 'ये' भी आता है, जिसके बाद क्रिया का निषेधात्मक रूप प्रयुक्त होता है; जैसे,

नि<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> च्वो<sup>४</sup>फ़ान<sup>४</sup> मा ? क्या तुम खाना बनाना जानते हो ?

वो<sup>३</sup> ई<sup>४</sup>-त्याळ<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup>(ये<sup>३</sup>)पु<sup>३</sup> मैं बिलकुल नहीं जानता ।  
ह्वै<sup>४</sup> ।

हाय्<sup>४</sup>च् छू<sup>१</sup>-ल चि<sup>३</sup>वान्<sup>३</sup> बच्चे ने कितने कटोरे चावल  
फ़ान्<sup>४</sup> ल ? खाया ?

पान्<sup>४</sup>वान्<sup>३</sup> तौ<sup>१</sup> (ये<sup>३</sup>) मै अभी तक आधा भी नहीं खाया ।  
छू<sup>१</sup> न ।

इ<sup>४</sup>क रन्<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> मै<sup>४</sup>लाय्<sup>३</sup> । कोई भी नहीं आया है ।

था<sup>१</sup> इ<sup>४</sup>च् यू<sup>४</sup> चुङ्क्वो<sup>३</sup> वह चीनी भाषा का एक शब्द भी  
ह्वै<sup>४</sup> तौ<sup>१</sup> पु<sup>३</sup> ह्वै<sup>४</sup> ज्वो<sup>१</sup> । नहीं बोल सकता ।



## पाठ-१५

वो<sup>३</sup> यो<sup>३</sup> इक फड्<sup>२</sup> यौ, शिङ्<sup>४</sup>  
षन्<sup>३</sup> । यो<sup>३</sup> इ<sup>४</sup>थ्येन्<sup>१</sup> षन्<sup>३</sup>  
श्येन्<sup>१</sup>षड् ताव् चुङ्<sup>१</sup>क्वो<sup>२</sup>  
छ्यूल ।

मेरा एक मित्र है जिसका नाम  
मि० सेन है । एक दिन सेन  
महोदय चीन गए ।

था<sup>१</sup>पु<sup>३</sup>ष इ<sup>२</sup>क रन्<sup>२</sup> छ्यूल,  
था<sup>१</sup> ष कन्<sup>१</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>क फड्<sup>२</sup>-  
यो इ<sup>४</sup>खाळ<sup>४</sup> छ्यूल ।

वह अकेले नहीं गए । वह दो  
मित्रों के साथ गए ।

था<sup>१</sup>मन् च<sup>१</sup>वो<sup>३</sup> छ्वान्<sup>२</sup>, चौल  
उ<sup>३</sup>थ्येन्<sup>१</sup> च्यु<sup>४</sup> ताव्<sup>१</sup>ल  
चुङ्<sup>१</sup>क्वो<sup>२</sup> ।

उन लोगों ने पांच दिन तक नाव  
द्वारा यात्रा की और चीन पहुंचे ।

ताव्<sup>१</sup>ल चुङ्<sup>१</sup>क्वो<sup>२</sup>, श्या<sup>४</sup> ल  
छ्वान्<sup>२</sup> था<sup>१</sup>मन् च्यु षाङ्<sup>१</sup>ल  
ह्वो<sup>३</sup>छ<sup>१</sup> ल ।

चीन पहुँचने पर वे लोग नाव  
से उतर गये और रेलगाड़ी पर  
बैठे ।

था<sup>१</sup>मन्त ह्वो<sup>३</sup>छ<sup>१</sup> ष<sup>४</sup>  
लि<sup>३</sup>पाय्<sup>१</sup>सान्<sup>१</sup> खाय्<sup>२</sup>त, ति<sup>४</sup>  
अळ<sup>४</sup>थ्येन् चाव्<sup>३</sup>षाङ् च्यु  
ताव्<sup>१</sup>ल पै<sup>३</sup>चिङ्<sup>१</sup> ल ।

उनकी रेलगाड़ी बुधवार को  
चली (छूटी), और दूसरे दिन  
सुबह वे लोग पेकिंग आ गए ।

ताव्<sup>१</sup>ल पै<sup>३</sup>चिङ्<sup>१</sup>, था<sup>१</sup>मन् च्यु  
चाय् छङ्<sup>२</sup> लि<sup>३</sup>थौ चाव्<sup>३</sup> ल

पेकिंग पहुँचने पर उन लोगों ने  
शहर में एक होटल की खोज

इक ल्यू<sup>३</sup>क्वन्<sup>३</sup> ।

की ।

था<sup>१</sup>मन् चाय् ने<sup>१</sup>क ल्यू<sup>३</sup>क्वा<sup>३</sup>-  
नलि चु<sup>१</sup>ल इ<sup>३</sup>कत्वो<sup>१</sup> लि<sup>३</sup>-  
पाय्<sup>१</sup>, हौ<sup>१</sup>लाय् च्यु ताव्<sup>१</sup>  
इक फङ्<sup>३</sup>यौ च्या<sup>१</sup> छ्य<sup>१</sup> लु<sup>३</sup> चु  
छ्य<sup>१</sup> ल ।

वे लोग उस होटल में लगभग  
एक सप्ताह तक रहे और बाद  
में एक मित्र के घर रहने चले  
गये ।

षन्<sup>३</sup> श्येन्<sup>१</sup>षङ् कन्<sup>१</sup> था<sup>१</sup>त  
फङ्<sup>३</sup>यौ चाय् ने<sup>१</sup>क रन्<sup>१</sup>त  
च्या<sup>१</sup>लि चु<sup>१</sup>ल पान्<sup>१</sup> न्येन्<sup>३</sup>,  
च्यु ह्वै<sup>३</sup> इन्<sup>१</sup>तु<sup>१</sup> ल ।

सेन महोदय व उनके दो मित्र  
उस व्यक्ति के घर पर आधे  
वर्ष तक ठहरे और तब भारत  
वापस आ गये ।

### नये शब्द

गतिशील क्रि० वि०

हौ<sup>१</sup>लाय

बाद में तत्पश्चात्

पान्<sup>१</sup>ध्येन्<sup>१</sup> (सं० भी है)

देर तक

इ<sup>१</sup>ध्येन्<sup>१</sup> (सं० भी है)

एक दिन, पूरे दिन

क्रि० वि०

च्यु<sup>१</sup>

तब

संख्या

हाव्<sup>३</sup> चि<sup>३</sup>

कई

हाव्<sup>३</sup> श्ये<sup>१</sup>

कई, काफी

मा०

-ख्वाय्<sup>१</sup>

रुपये पैसे के लिए

-ख<sup>१</sup>

पाठ

-फङ्<sup>३</sup>

पत्र के लिए

सं०

ल्य<sup>३</sup>क्वान्<sup>३</sup>

होटल,

सं० क्रि०

तै<sup>३</sup>

अवश्य, अवश्य चाहिए

पु<sup>३</sup>पि<sup>४</sup>

आवश्यकता नहीं, प्रयोजन नहीं

पु<sup>३</sup>युङ्<sup>४</sup>

कोई उपयोग या लाभ नहीं,

निरर्थक

इङ्<sup>१</sup> ताङ्<sup>१</sup>

चाहिए, उचित

प्ये<sup>३</sup>

नहीं (आज्ञासूचक,

पु<sup>३</sup>याव्<sup>४</sup>का संक्षिप्त रूप)

क्रि०

पाङ्<sup>४</sup>

जाना (ऊपर को), चढ़ना

इत्यादि (नीचे देखिए)

श्या<sup>४</sup>

नीचे जाना या आना

चु<sup>४</sup>

रहना, वास करना

ढै<sup>३</sup>

झूटना

चाव्<sup>३</sup>

ढूँढ़ना, खोजना

खाय्<sup>१</sup>

खोलना, चलना

या चलाना (गाड़ी जहाज

इत्यादि)

क्रि० क०

पाङ्<sup>४</sup> श्वे<sup>३</sup>

स्कूल आना, स्कूल में पढ़ना

पाङ्<sup>४</sup> ख्<sup>४</sup>

कक्षा में (पढ़ने) जाना

पाङ्<sup>४</sup> छ<sup>१</sup>

गाड़ी पर चढ़ना

पाङ्<sup>४</sup> च्ये

बाजार जाना



षाङ्<sup>१</sup>लौ<sup>१</sup>

मकान के ऊपरी खण्ड (मंजिल)

पर चढ़ना या जाना

ह्वै<sup>२</sup>च्या<sup>१</sup>

घर लौटना

ह्वै<sup>२</sup>क्वो<sup>२</sup>

(अपने) देश वापस जाना

षन्<sup>३</sup>

भारतीय पदवी 'सेन' के लिए  
प्रयुक्त

### उदाहरणमाला

(क) प्रत्यय "ल" साधारण कर्म के साथ

- १- वो<sup>३</sup>मन् षाङ्<sup>१</sup>ल लौ<sup>२</sup>च्यु च.वो<sup>४</sup>- हम लोग ऊपर पहुँच कर बैठ  
श्या<sup>१</sup>ल गए ।
- २- था<sup>१</sup>माय<sup>३</sup>ल थाङ्<sup>२</sup>च्यु ह्वै<sup>२</sup>- वह मिठाई (मिश्री) खरीद  
च्या<sup>१</sup>ल कर घर वापस लौटा ।
- ३- था<sup>१</sup>मन् श्या<sup>१</sup>ल छ<sup>१</sup>च्यु षाङ्<sup>४</sup> वे लोट रेलगाड़ी से उतर कर  
ल्यु<sup>३</sup>क्वान्<sup>३</sup> छ्यु होटल गए ।
- ४- वो<sup>३</sup>मन् ताव्<sup>१</sup>ल छ<sup>१</sup>चान्<sup>४</sup>, जब हम लोग स्टेशन पहुँचे तो  
ह्वै<sup>२</sup>छ<sup>१</sup> इ<sup>३</sup>चिङ्<sup>३</sup>खाय<sup>१</sup>ल रेलगाड़ी पहले ही जा (छूट)  
चुकी थी ।
- ६- था<sup>१</sup>मन ताव्<sup>१</sup>ल थ्येन्<sup>१</sup>चिङ्<sup>३</sup> जब वे लोग थियेन्चीङ्<sup>३</sup> पहुँचे  
च्यु मै<sup>२</sup>श्या<sup>१</sup>छ्वान्<sup>२</sup> तो नाव से नहीं उतरे ।
- ७- निन्<sup>२</sup>छूल फ़ान्, खान्<sup>१</sup>ल पाव्<sup>४</sup>, जब आप भोजन कर चुकें और  
च्यु छिङ्<sup>३</sup>निन्<sup>२</sup>षाङ्<sup>१</sup>लौ<sup>२</sup> समाचार पत्र पढ़ चुकें तो  
कृपया ऊपर आइए ।

(ख) एक या दो "ल" मापकयुक्त कर्म के साथ :

१- (क): वो षाङ्<sup>४</sup>वे खान्<sup>४</sup> ल सान्<sup>१</sup>पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> (क): मैंने पिछले महीने तीन पुस्तकें पढ़ीं ।

(ख): श्येन्<sup>१</sup>षङ्<sup>४</sup>याव्<sup>४</sup> वो<sup>३</sup>मन् खान्<sup>४</sup> उ<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup>, वो<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup>ल सानपन्<sup>३</sup>ल<sup>३</sup> (ख): अध्यापक महोदय चाहते हैं कि हम लोग पांच पुस्तकें पढ़ें । मैं अभी तक तीन (पुस्तकें) पढ़ चुका हूँ ।

२- (क): वो<sup>३</sup>वेन्<sup>४</sup>ल ल्याङ्<sup>३</sup>क रन्<sup>२</sup>, था<sup>१</sup>मन् तो<sup>१</sup> ष्वो<sup>१</sup> पु<sup>१</sup>चृताव्<sup>४</sup> (क) मैंने दो व्यक्तियों से पूछा । उन दोनों ने कहा कि उन्हें मालूम नहीं ।

(ख): वो<sup>३</sup> वेन्<sup>४</sup>ल ल्याङ्<sup>३</sup>क रन्<sup>२</sup>ल । वो<sup>३</sup> हाय्<sup>३</sup> तै<sup>३</sup> वेन्<sup>४</sup> चि<sup>३</sup>क रन्<sup>२</sup> (ख) मैं पहले ही दो व्यक्तियों से पूछ चुका हूँ । मुझे अभी कुछ और व्यक्तियों से अवश्य पूछना चाहिए ।

३- (क): था<sup>१</sup>मन् छ्य<sup>३</sup>न्येन्<sup>३</sup> चाय् वाय्<sup>४</sup> क्वो<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>कुङ्<sup>४</sup> ताव्<sup>४</sup>ल पा<sup>३</sup>क ति<sup>४</sup>फाङ् (क) पिछले वर्ष विदेश में रहते समय वे लोग आठ स्थानों को गये ।

(ख): था<sup>१</sup>मन् चिन्<sup>१</sup>न्येन्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>-चिङ् ताव्<sup>४</sup>ल सान्<sup>१</sup>क ति<sup>४</sup>फाङ्ल (ख) इस वर्ष वे लोग पहले ही तीन स्थानों को हो आये हैं ।

४- (क): वो<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup>-षाङ् माय्<sup>३</sup>ल इत्याळ<sup>३</sup> थाङ्<sup>३</sup> (क) : पिछली रात मैंने कुछ मिश्री (या मिठाई) खरीदी ।

(ख): वो<sup>३</sup>मन् इ<sup>३</sup>चिङ् छू<sup>१</sup>ल ईपान्<sup>४</sup>ल । (ख) : हम लोग पहले ही (उसकी) आधी खा चुके हैं ।

५- (क) वो<sup>३</sup> छ्य<sup>३</sup>न्येन्<sup>३</sup> चाय् (क) पिछले वर्ष मैंने चीन में चीनी-

चुङ्क्वो<sup>२</sup> श्वे<sup>२</sup>ल चि<sup>३</sup>च्यु<sup>२</sup> भाषा के कुछ वाक्य सीखे ।  
ह्वा<sup>४</sup> ।

(ख): वो<sup>३</sup>मन् न्येन्<sup>२</sup>ल षृ<sup>३</sup>उ<sup>३</sup>- (ख) हम लोग पन्द्रह पाठ  
ख<sup>४</sup> ल । पढ़ चुके हैं ।

(ग)—व्यतीत समय (काल वाचक शब्द क्रिया के साथ)

१- वो<sup>३</sup>श्येन्<sup>१</sup>षङ् चाय् वाय्<sup>४</sup>क्वो<sup>२</sup> मेरे पति अधिक समय से विदेश  
चु<sup>४</sup>ल पुषाव्<sup>३</sup>षृ<sup>३</sup>हौ ल । में रह रहे हैं ।

२- वो<sup>३</sup>श्याङ्<sup>३</sup> ल हन्<sup>३</sup>त्वो षृ<sup>३</sup>- मैं इसके बारे में एक लम्बे  
हौ ल । मिङ्<sup>३</sup>थ्येन् वो<sup>३</sup>चाय्<sup>४</sup> समय तक सोचता रहा हूँ । मैं  
श्याङ्<sup>३</sup>श्याङ् । कल इस पर और (अधिक)  
विचार करूँगा ।

३- था<sup>१</sup>लाय्<sup>२</sup>ल इ<sup>४</sup>थ्येन्<sup>१</sup> ल । उसका आना एक दिन हो गया ।

४- था<sup>१</sup>चवो<sup>४</sup> ल पान्<sup>४</sup>थ्येन्, हौ- वह देर तक बैठा रहा, फिर  
लाय् च्यु चौल । चला गया ।

५- वो<sup>३</sup>चाय् चळ<sup>४</sup> इ<sup>३</sup>चिङ् श्वे<sup>२</sup>- मैं यहां दो माह से अधिक  
ल ल्याङ्<sup>३</sup>कत्वो श्वे<sup>२</sup>त चीनी बोली सीखता रहा हूँ ।  
चुङ्क्वो<sup>२</sup> ह्वा<sup>४</sup>ल ।

अथवा—श्वे<sup>२</sup>चुङ्क्वो<sup>२</sup> ह्वा<sup>४</sup>  
श्वे<sup>२</sup>ल ल्याङ्<sup>३</sup>कत्वो<sup>१</sup>  
श्वे<sup>२</sup>ल ।

६- था<sup>१</sup>श्ये<sup>३</sup>ल हाव्<sup>३</sup> चि<sup>३</sup>न्येन्<sup>२</sup>- वह कई वर्षों तक अक्षर लिखता  
त<sup>२</sup>च<sup>४</sup>ल; अथवा—श्ये<sup>३</sup> रहा है, इसलिए उसके अक्षर  
च<sup>४</sup>श्ये<sup>३</sup>ल हाव्<sup>३</sup> चि<sup>३</sup>न्येन्<sup>२</sup> सबसे अच्छे हैं ।  
ल । स्वो<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> था<sup>१</sup>-



त च० च० वै० हाव्० ।

(घ) 'ल' व 'षृ'....त' वाक्यों की तुलना

- १- वो० छ्य० न्येन् ताव् त० वो० पिछले वर्ष मैं जर्मनी गया ।  
छ्य० ल । नि० षृ कन् पै० तुम किसके साथ गये ?  
छ्य० त ?
- २- वो० चिन् न्येन् इ० ये० ल इत्या- इस वर्ष मैंने थोड़ी जर्मन भाषा  
ळ० त० वेन् । नि० षृ कन् पै० सीखी । तुमने किसके साथ  
इ० वेत् । (जर्मन भाषा) सीखी ?  
(या किसके पास सीखी ?)
- ३- वो० पाङ् इ० वे० चाय् न्यु० इ० पिछले माह मैंने न्यूयार्क में  
माय् ल इ० क छि० छि० । नि० एक मोटर गाड़ी (कार)  
पृ कै० पै० माय् त ? खरीदी । तुमने (कार) किसके  
लिए खरीदी ?
- ४- वो० कै० था० इ० ये० ल हाव्० मैंने उसे (या उसके लिए) कई  
चि० फङ् शिन् । ने० इ० ये० शिन् पत्र लिखे । तुमने वे सब पत्र  
पृ कै० पै० इ० ये० त । किसको लिखे ?
- ५- वो० च० वो० इ० येन् च्याव् ल कल मैंने थोड़ा सा पढ़ाया ।  
इत्याळ० षृ । निन् षृ थि० तुमने किसकी जगह पढ़ाया ?  
पै० च्याव् त ?
- ६- वो० मन् चिन् इ० येन् चाय् इ० क आज हमने एक मित्र के घर  
फङ् यौ च्या० लि छि० चुङ्- चीनी भोजन किया । तुम  
वो० फान् । नि० मन् षृ युङ् लोगों ने चौपस्टिक से भोजन  
ख्याव् च् छि० त पा ? किया होगा, ठीक है न ?

### व्याकरण

१५-१ 'ल' का प्रयोग (२) : यदि क्रिया के बाद केवल प्रत्यय 'ल' हो और साधारण कर्म वाले वाक्य में क्रिया के साथ

प्रत्यय 'ल' हो और कर्म के बाद सहायक शब्द 'ल' न हो, तो वाक्य अपूर्ण रहता है। वाक्य पूरा करने के लिए उसमें कुछ और तत्त्व जोड़ने की आवश्यकता होती है। ऐसे अपूर्ण वाक्य हिन्दी के आश्रित वाक्य-खण्डों की तरह होते हैं जो "जब", "—के बाद" जैसे शब्दों से आरम्भ होते हैं। अर्थ पूर्ण करने के लिए बाद का कथन प्रायः क्रियाविशेषण 'च्यु' (तब) से आरम्भ होता है और उसका अनुवाद हिन्दी में नहीं होता और न ही बोलने में उस पर बल देते हैं। यहां क्रियाविशेषण 'च्यु' का प्रयोग हमेशा उत्तरोत्तर व्यापार या कार्य-कारण संबंध करने के लिए होता है; जैसे,

था<sup>१</sup> छृ<sup>१</sup>-ल फ़ान्<sup>५</sup> च्यु खान्<sup>५</sup> वह खाना खाने के बाद अख-  
पाव्<sup>५</sup> । बार पढ़ता है ।

था<sup>१</sup> छृ<sup>१</sup>-ल फ़ान्<sup>५</sup> च्यु खान्<sup>५</sup> वह खाना खाने के बाद अख-  
पाव्<sup>५</sup> छयू<sup>५</sup>-ल । बार पढ़ने गया ।

था<sup>१</sup> छृ<sup>१</sup>ल फ़ान्<sup>५</sup> च्यु श्याङ्<sup>३</sup> खाना खाने के बाद वह समा-  
खान्<sup>५</sup> पाव् । चार पत्र पढ़ना चाहता है ।

था<sup>१</sup> श्यवे<sup>३</sup>ल चुङ्<sup>३</sup>वेन्<sup>३</sup>च्यु नङ्<sup>३</sup> चीनी भाषा पढ़ने के बाद वह  
खान्<sup>५</sup> चुङ्<sup>३</sup>वेन्<sup>३</sup> षू<sup>१</sup> । चीनी किताब पढ़ सकेगा ।

१५-२ मापक के साथ कर्म और एक 'ल' या दो 'ल' का प्रयोग : किसी वाक्य में जब कर्म के पहले कोई अंक और मापक शब्द आए, तब उस हालत में 'ल' के प्रयोग पर ध्यान देना चाहिये। अगर सिर्फ प्रत्यय 'ल' (यानी क्रिया के साथ) हो, तो इसका मतलब होता है कि व्यापार पूरा हो चुका है, लेकिन अगर प्रत्यय 'ल' और सहायक शब्द 'ल' दोनों का प्रयोग साथ-साथ किया गया हो, तो इसका मतलब यह होता है कि व्यापार अभी जारी है, क्रिया को वर्तमान तक लाकर उससे किसी रूप में सम्बन्धित कर दिया जाता है। निम्नलिखित वाक्यों के जोड़ों में अन्तर समझिए :

था<sup>१</sup> छृ<sup>१</sup>-ल सान<sup>१</sup>-वान्<sup>३</sup> फ़ान् उसने तीन कटोरे चावल खाए ।  
 था<sup>१</sup> छृ<sup>१</sup>-ल सान<sup>१</sup> वान्<sup>३</sup> वह अब तक तीन कटोरे चावल  
 फ़ान्ल खा चुका है ।

वो<sup>३</sup> चाय्<sup>५</sup> चुङ्क्वो<sup>२</sup> चु<sup>५</sup>-ल मैं (एकबार) चीन में तीन वर्ष  
 सान्<sup>१</sup> न्येन्<sup>२</sup> । रहा ।

वो<sup>३</sup> चाय्<sup>५</sup> चुङ्क्वो<sup>२</sup> चु<sup>५</sup>-ल मुझे चीन में रहते तीन वर्ष हो  
 सान्<sup>१</sup> न्येन्<sup>२</sup>-ल चुके हैं (मैं चीन में तीन वर्ष से  
 रहता रहा हूँ) ।

१५-३ व्यतीत समय और पूर्ति के रूप में काल-बोधक शब्द :  
 जब हम यह प्रगट करना चाहते हैं कि कितनी देर तक कोई  
 व्यापार हुआ या कोई अवस्था रही, या वर्तमान समय तक होता  
 रहा या भविष्य में होता रहेगा, तो ऐसे कालवाचक शब्द क्रिया के  
 बाद पूर्ति के रूप में आते हैं। यह उस स्थिति से भिन्न है जब क्रिया-  
 विशेषण के रूप में कालबोधक शब्दों का प्रयोग क्रिया के पहले यह  
 बताने के लिये किया जाता है कि किस समय या किस अवधि में  
 कोई व्यापार हुआ या कोई अवस्था रही (देखिए व्याकरण नोट  
 १३-१); जैसे,

वो<sup>३</sup> छ्य<sup>५</sup> न्येन् चाय् चळ<sup>५</sup> चु<sup>५</sup> मैं पिछले वर्ष यहां रहा (किस  
 वो<sup>३</sup> चे<sup>५</sup> ल्याङ्क<sup>३</sup> क रवे<sup>५</sup> चाय् समय) । मैं पिछले दो महीने से  
 चळ<sup>५</sup> न्येन्-पू<sup>१</sup> यहां पढ़ता रहा हूँ (किस अवधि  
 वो<sup>३</sup> चाय् चळ<sup>५</sup> चु<sup>५</sup>-ल ल्याङ्क- में) । मुझे यहां रहते अब तक दो  
 क रवे<sup>५</sup> ल महीने हो चुके हैं (कितनी देर  
 तक) ।

अगर क्रिया के बाद कोई कर्म हो, तो तीन उपाय किये जा  
 सकते हैं, लेकिन अर्थ में कोई भिन्नता नहीं होगी :

(१) पहले बिना प्रत्यय 'ल' के क्रिया और उसके कर्म को



घोषित किया जाता है। फिर क्रिया को दुहरा कर (प्रत्यय 'ल' के साथ या बिना उसके, जैसा भी हो) उसके बाद कालबोधक शब्द को रखते हैं; जैसे,

वो<sup>३</sup>चाय् चळ<sup>४</sup>न्येन्<sup>५</sup>पू<sup>६</sup> न्येन्<sup>७</sup>-ल (शब्दार्थ : जहां तक मेरे यहां पढ़ने का संबंध है, मुझे पढ़ते हुए अब तक दो महीने हो चुके हैं) ।  
ल्याङ्<sup>३</sup>-क टवे<sup>४</sup>ल

यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि प्रत्यय और क्रिया-विशेषण को द्विरुक्त क्रिया के साथ रखना पड़ता है। दूसरी बात यह है कि व्यतीत समय बताने वाले शब्द मापक युक्त कर्म के रूप में प्रयुक्त होते हैं। इसलिये कितनी देर तक कोई व्यापार हुआ या कोई अवस्था रही इन तत्त्वों को प्रगट करने वाले कालबोधक शब्दों के साथ जो 'ल' आता है उसके संबंध में वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसा ऊपर नोट १५-२ में बताया गया है।

(२) अगर क्रिया की द्विरुक्ति न हो तो कालबोधक शब्दों को क्रिया और उसके कर्म के बीच रखा जाता है। ये कालबोधक शब्द कर्म के पहले विशेषता-सूचक की स्थिति में प्रयुक्त होते हैं। सहायक शब्द 'त' का प्रयोग कालबोधक शब्दों के बाद हो सकता है; जैसे,

वो<sup>३</sup>चाय् चळ<sup>४</sup>न्येन्<sup>५</sup>ल ल्याङ्<sup>३</sup>- मुझे यहाँ पढ़ते दो महीने हो चुके हैं (शब्दार्थ: दो महीने की अवधि समाप्त हो चुकी है और मेरी पढ़ाई अभी भी जारी है) ।  
क टवे<sup>४</sup>त पू<sup>६</sup>ल

वो<sup>३</sup>मन् ई<sup>३</sup>-चिङ्<sup>४</sup>इवे<sup>५</sup>ल ई<sup>३</sup>-क हमें अब तक चीनी पढ़ते एक  
त्वो<sup>४</sup>टवे<sup>५</sup>(त) चुङ्<sup>६</sup>वेन्<sup>७</sup>ल महीने से ज्यादा हो चुका है।

(३) कर्म, अपवृत्त कर्म की तरह, वाक्य के आरम्भ में रखा जा सकता है, विशेषकर यदि कर्म पर बल देना हो या यदि वह कुछ जटिल हो; जैसे,

चिन्<sup>१</sup>ध्येन्त<sup>२</sup> ख<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> मै<sup>२</sup>-न्येन्<sup>३</sup>-  
वान्<sup>३</sup>, च्यु<sup>२</sup> न्येन्<sup>३</sup>-ल इ<sup>३</sup>त्याळ<sup>३</sup> मैंने आज का पाठ अभी तक  
नहीं किया, सिर्फ थोड़ा सा  
ही पढ़ा है ।

नि<sup>१</sup> च<sup>२</sup> वो<sup>३</sup> न्येन्त<sup>२</sup> कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>-त पू<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>  
हाय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> खान्वा<sup>३</sup> च्यु<sup>३</sup> मैंने तुम्हारी दी हुई किताब  
अभी तक खत्म नहीं की है,  
खान्<sup>३</sup> लं ई<sup>३</sup>-पान्<sup>३</sup> केवल आधी ही पढ़ी है ।

## पाठ-१६

यौ<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>थ्येन्<sup>१</sup> चाड्<sup>१</sup> श्येन्<sup>१</sup>षड्<sup>१</sup> चाव्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>ल । वो<sup>३</sup>-छू<sup>३</sup>ड्<sup>३</sup>लौ<sup>३</sup>षाड्<sup>३</sup> श्या<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>, कै<sup>३</sup>था<sup>३</sup> खाय्<sup>३</sup>मन्<sup>३</sup> । वो<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup> : औ, चाड्<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup>षड्<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>ल । छिड्<sup>३</sup>चिन्<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> पा ।”

एक दिन श्री चाड् मुझसे मिलने आये । मैं ऊपर (की मंजिल) से उनके लिए दर-वाजा खोलने के लिए नीचे आया । मैंने कहा : चाड् महाशय, आइए कृपया अंदर आइए ।”

चाड्<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup>षड्<sup>३</sup> कन्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> ख<sup>३</sup>थिड्<sup>३</sup>लि थान्<sup>३</sup>ल ह्वा<sup>३</sup> । हौ<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>त हाय्<sup>३</sup>च्<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> लौ<sup>३</sup>षाड्<sup>३</sup> च्वाव्<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup> : “पा<sup>३</sup>पा, वो<sup>३</sup>मन्<sup>३</sup> ये<sup>३</sup> याव्<sup>३</sup> च्येन्<sup>३</sup>च्येन्<sup>३</sup> चाड्<sup>३</sup>श्येन्<sup>३</sup>-षड्<sup>३</sup> । वो<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup> :—“हाव्<sup>३</sup>, ख्वाय्<sup>३</sup> श्या<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> पा ।” हाय्<sup>३</sup>च्<sup>३</sup> च्यु<sup>३</sup> श्या<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> ल ।

श्री चाड् और मैं बैठक में बैठे, और थोड़ी देर बातचीत के बाद मेरे बच्चों ने मुझे ऊपर (की मंजिल) से बुलाकर कहा : “पिताजी, हम भी श्री चाड् से मिलना चाहते हैं।” मैंने कहा, : “अच्छा, जल्दी से नीचे आ जाओ” तब बच्चे नीचे आ गये ।

हाय्<sup>३</sup>च्<sup>३</sup>मन्<sup>३</sup> श्या<sup>३</sup>लौ<sup>३</sup>, श्या<sup>३</sup>-लाय्<sup>३</sup> त हन्<sup>३</sup> ख्वाय्<sup>३</sup>, कन्<sup>३</sup>-चाड्<sup>३</sup>श्येन्<sup>३</sup>षड्<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup>ल ल्याड्<sup>३</sup>-

बच्चे काफी तेज गति से नीचे आये, श्री चाड् से कुछ शब्द कहे और फिर खेलने के लिए



च॒यू ह्वाँ च्यु इयाङ्<sup>३</sup> छु<sup>१</sup>- बाहर जाना चाहा । उन्होंने  
छ्यू<sup>१</sup> वाळ<sup>३</sup> । था<sup>१</sup>मन् वेन्<sup>३</sup>- मेरी अनुमति मांगी । मैंने अनु-  
वो<sup>३</sup> ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> पु खइ । वो<sup>३</sup>प्वो<sup>१</sup> मति दे दी और वे बाहर की  
ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>, था<sup>१</sup>मन् च्यु फाव्<sup>३</sup>ताव् ओर खेलने के लिए दौड़े ।  
वाय्<sup>१</sup>थौ छ्यू<sup>१</sup> वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>१</sup> बच्चे सचमुच बहुत तेज भाग  
ल । हाय्<sup>३</sup>च्, फाव्<sup>३</sup>लु<sup>१</sup> सकते हैं ।  
फाव्<sup>३</sup>त चन् ख्वाय्<sup>१</sup> ।

### नये शब्द

सं०

इह्वैळ<sup>३</sup>

एक क्षण

(गतिशील क्रि० वि० भी है)

क्रि०

ख<sup>१</sup>थिङ्<sup>३</sup>

बैठक (मेहमानों च्येन्<sup>१</sup>  
का कमरा)

देखना, मिलना ('खान्'<sup>१</sup>  
से अधिक औपचारिक)

मन्<sup>३</sup>

दरवाजा

क्वान्<sup>१</sup>(पाङ्) बंद करना, ('खाय्'<sup>१</sup>  
का विलोम)

छ्वाङ्<sup>३</sup>हु

खिड़की

पान्<sup>१</sup>

हटाना (निवासस्थान  
बदलना)

लु<sup>१</sup>

खिड़की

पान्<sup>१</sup>च्या<sup>१</sup>

(क्रिया-कर्मपद) अपना  
निवास स्थान बदलना

वि०

स्वाय्<sup>१</sup>

तेज, जल्दी (क्रिया

चिन्<sup>१</sup>छङ्<sup>३</sup> (क्रियाकर्म पद) शहर  
जाना

विशेषण—जल्दी)

मान्<sup>१</sup>

धीरे

छु<sup>१</sup>मन्<sup>३</sup> (क्रियाकर्म पद) जाना (घर  
के बाहर)

क्रि०		सं० श०	
चान् <sup>४</sup>	खड़ा होना	पा	वाक्य प्रत्यय—प्रार्थना सूचक
च०वो <sup>४</sup>	बैठना	चि <sup>३</sup> ल	विशेषणों का प्रत्यय-- अधिकतम मात्रा सूचक
चिन् <sup>४</sup>	अन्दर जाना		
छु <sup>१</sup>	बाहर जाना		मुहावरेदार कथन
थान् <sup>३</sup>	बातचीत करना		त्वै <sup>४</sup> पुछि <sup>३</sup> क्षमा कीजिए । मुझे खेद है ।
थान् <sup>३</sup> ह्वा <sup>४</sup>	(क्रियाकर्म-पद) बात- चीत करते रहना		
फाव् <sup>३</sup>	दौड़ना		
तड् <sup>३</sup>	प्रतीक्षा करना		
च्याव् <sup>४</sup>	बुलाना (किसी को)		
(संबंधसूचक)	बताना, आज्ञा देना, (करने देना)		

### उदाहरणमाला

(क) गति सूचक क्रिया पद 'लाय्' और 'छय्' के साथ

पाड् <sup>४</sup> लाय्	ऊपर आना (यहाँ)	पाड् <sup>४</sup> छय्	ऊपर जाना (वहाँ)
श्या <sup>४</sup> लाय्	नीचे आना (यहाँ)	श्या <sup>४</sup> छय्	नीचे जाना (वहाँ)
चिन् <sup>४</sup> लाय्	अंदर आना (यहाँ)	चिन् <sup>४</sup> छय्	अंदर जाना (वहाँ)
छु <sup>१</sup> लाय्	बाहर आना (यहाँ)	छु <sup>१</sup> छय्	बाहर जाना (वहाँ)
ह्वै <sup>३</sup> लाय्	वापस आना (यहाँ)	ह्वै <sup>३</sup> छय्	वापस जाना (वहाँ)
पान् <sup>१</sup> लाय्	एक जगह से दूसरी जगह आना (यहाँ)	पान् <sup>१</sup> छय्	एक जगह से दूसरी जगह जाना (वहाँ)

नमूना: वो<sup>३</sup> याव् छु<sup>३</sup>छ्यू, इह्वैळ<sup>३</sup> च्यु ह्वै<sup>३</sup>लाय् ।

मैं बाहर जा रहा हूं और एक मिनट में वापस आ जाऊंगा ।

१- था<sup>३</sup>च्याव् नि<sup>३</sup> पाङ् छ्यू, नि<sup>३</sup> उसने तुम्हें ऊपर जाने को  
वै<sup>३</sup>ष<sup>३</sup>म्मा पु पाङ् छ्यू ? कहा । तुम ऊपर क्यों नहीं  
जाते ?

२- छिङ्<sup>३</sup>चिन्<sup>३</sup>लाय् च.वो इह्वैळ<sup>३</sup> । कृपया अंदर आइए और  
थोड़ी देर बैठिए ।

३- ने<sup>३</sup>क ऊ<sup>३</sup>च् वो<sup>३</sup>मन् पु नङ्<sup>३</sup> हम उस कमरे के अंदर नहीं  
चिन्<sup>३</sup>छ्यू जा सकते ।

४- चिन्<sup>३</sup>थ्येन् त पाव् हाय् मै<sup>३</sup>छु- आज का समाचारपत्र अभी  
लाय् न । तक नहीं आया है ।

५- निन्<sup>३</sup>फुछिन् ह्वै<sup>३</sup>ल मै<sup>३</sup>यौ ? क्या आपके पिताजी वापस  
आ गये ?

६- त्वै<sup>३</sup>पुछि<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup> तै<sup>३</sup>श्येन् ह्वै<sup>३</sup>- क्षमा कीजिए, अब मुझे  
छ्यू । अवश्य वापस जाना है ।

७- नि<sup>३</sup>मन् षृ नै<sup>३</sup>थ्येन् पान् लाय्त् ? आप किस दिन (यहां) जगह  
बदल कर आये ?

८- नि<sup>३</sup>मन् षृम्मा षृ<sup>३</sup>हौ पान् छ्यू ? आप कब (वहां) जगह बदल  
कर जाएंगे ?

(ख) स्थान-सूचक क्रियापदों के प्रत्यय के रूप में 'चाय्'

चान्<sup>३</sup>चाय् खड़ा होना (किसी जगह पर)

च.वो<sup>३</sup>चाय् बैठना (किसी जगह पर)

चु<sup>३</sup>चाय् रहना (किसी जगह पर)

नमूना: छिङ्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> चू<sup>३</sup>चाय वो<sup>३</sup>मन् चळ<sup>३</sup>

कृपया हमारे यहां रहिए ।



- १- छिड्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>चान्<sup>३</sup>चाय<sup>३</sup>च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>च् छयेन्<sup>३</sup>थौ । कृपया मेज के सामने खड़े होइए।
- २- नि<sup>३</sup> र<sup>३</sup>वान्<sup>३</sup>इ च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>चाय<sup>३</sup> आप कहां बैठना चाहते हैं ?  
ना<sup>३</sup>ळ ?
- ३- प्ये<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>चाय<sup>३</sup> ने<sup>३</sup>क इ<sup>३</sup>- उस कुर्सी पर मत बैठो ।  
च<sup>३</sup>षाड् ।
- ४- चिन्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup>षाड् नि<sup>३</sup> आज रात आप कहां ठहर रहे  
चु<sup>३</sup>चाय<sup>३</sup> नाळ<sup>३</sup> ? हैं ?

(ग) गति-सूचक क्रियापदों के प्रत्यय के रूप में 'ताव्'

- चिन्<sup>३</sup>ताव् (लाय्<sup>३</sup>या छ्य<sup>३</sup>) अंदर आना (यहां या वहां)
- ह्वै<sup>३</sup>ताव् (लाय्<sup>३</sup>या छ्य<sup>३</sup>) वापस आना (यहां या वहां)
- पान्<sup>३</sup>ताव् (लाय्<sup>३</sup>या छ्य<sup>३</sup>) जगह बदल कर (यहां या वहां)  
आना
- चौ<sup>३</sup>ताव् (लाय्<sup>३</sup>या छ्य<sup>३</sup>) चलना (यहां या वहां)
- फाव्<sup>३</sup>ताव् (लाय्<sup>३</sup>या छ्य<sup>३</sup>) दौड़ना या जल्दी जाना (यहां या  
वहां)
- न्येन्<sup>३</sup>ताव् (तक) पढ़ना या अध्ययन करना ।
- १- छिड्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup> चिन्<sup>३</sup>ताव् चे<sup>३</sup>क कृपया इस कमरे में आइए और  
ऊ<sup>३</sup>च् लाय्<sup>३</sup>खान्<sup>३</sup>खान् । एक नजर देखिए ।
- २- नि<sup>३</sup> ष<sup>३</sup>म्मा<sup>३</sup> ष<sup>३</sup>हौ ह्वै<sup>३</sup> आप अमरीका कब वापस जा  
(ताव्) मै<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> छ्य<sup>३</sup> ? रहे हैं ?
- ३- वो<sup>३</sup>मन् याव् चौ<sup>३</sup>ताव् फ़ै<sup>३</sup>- हम वायुयान के सामने तक  
चि<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup>थौ च्यु ह्वै<sup>३</sup> जाकर वापस आ जायेंगे ।  
लाय् ।
- ४- हाय्<sup>३</sup>च् ती<sup>३</sup>फाव्<sup>३</sup>ताव् सब बच्चे शहर से बाहर खेलने

छङ्वाय्थौ छ्य् वाळ् (दौड़कर) गए हैं ।  
छ्य् ल ।

५- निम्न इचिङ् न्येन्ताव तुमने कहाँ तक पढ़ा है ?  
नाळल ?

(घ) — किसी कार्य की रीति सूचित करना

(छृफान्) छृत थाय्खाय् बहुत शीघ्र खाता है ।  
(ष्वोत्ता) ष्वोत हन्मान् बहुत धीरे बोलता है ।  
ष्वोत योइस्च् मजेदार बातें करता है ।  
(श्येच्) श्येत हाव्चिल बहुत अच्छा लिखता है ।  
(छाङ्कळ) छाङ्त चन्- हाव् सचमुच अच्छा गाता है ।

(चवोषृ) चवोत हन्हाव् काम बहुत अच्छा करता है ।  
(चौलु) चौत पुमान् काफी तेज चलता है ।  
(खाय्छ) खाय्त पुछ्वो (गाड़ी) अच्छी चलाता है ।

नमूने :

‘त’ क्रि० विशेषण

था श्वे चुङ्क्वोत्ता, श्वेत हन्खाय् ।

वह चीनी भाषा बहुत शीघ्र सीखता है (शाब्दिक :—जहाँ तक उसके चीनी भाषा सीखने का संबंध है, वह.....)

या थात चुङ्क्वोत्ता, श्वेत हन्खाय् ।

(शाब्दिक : जहाँ तक उसकी चीनी भाषा का संबंध है, वह.....)

१- नेक हाय्च्, छृफान्, छृत वह बालक बहुत जल्दी खाना  
थाय्खाय् । खाता है ।

२- थात इङ्वेन् ष्वोत हन्- वह अंग्रेजी बहुत अच्छी बोलता  
हाव् । है ।

- ३- ल्यु<sup>३</sup>श्येन्<sup>१</sup>षड् श्ये<sup>३</sup>च्, श्ये<sup>३</sup>त श्री ल्यु सबसे अच्छे अक्षर  
च<sup>३</sup>वै<sup>३</sup>हाव<sup>३</sup> । लिखते हैं ।
- ४- चे<sup>३</sup>क षृ<sup>३</sup>छिड नि<sup>३</sup>च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>त पु- यह तुमने काफी अच्छी तरह  
छ<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> । से किया ।
- ५- लि<sup>३</sup>श्याव<sup>३</sup>च्ये च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> चुड<sup>३</sup>- कुमारी ली सचमुच स्वादिष्ट  
क्वो<sup>३</sup> फान्<sup>३</sup>, च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>त चन्<sup>३</sup>- चीनी भोजन बनाती हैं ।  
हाव<sup>३</sup>छ<sup>३</sup> ।
- ६- लाव<sup>३</sup>थाय<sup>३</sup>थाय्मन् चौ<sup>३</sup>लु<sup>३</sup>, अधिक आयु की महिलाएं बहुत  
चौ<sup>३</sup>त हन्<sup>३</sup> मान्<sup>३</sup> । धीरे चलती हैं ।
- ७- वो<sup>३</sup>खाय<sup>३</sup>छ<sup>३</sup>,खाय<sup>३</sup>त पु थाय<sup>३</sup> मैं गाड़ी अच्छी नहीं चलाता ।  
हाव<sup>३</sup> । वो<sup>३</sup>च्ये<sup>३</sup>च्ये खाय<sup>३</sup> त मेरी बड़ी बहन बहुत ही अच्छी  
हाव<sup>३</sup>चि<sup>३</sup>ल । चलाती है ।

(च) आज्ञा और प्रार्थना की रीति सूचित करना

नमूने : ख्वाय<sup>३</sup>षाड<sup>३</sup> छ<sup>३</sup> पा । छ<sup>३</sup>इह्वै<sup>३</sup>ल<sup>३</sup>च्यु खाय<sup>३</sup> ।

जल्दी बैठो (सवार हो) । गाड़ी जाने ही वाली है ।

ख्वाय<sup>३</sup>इत्याळ<sup>३</sup> फाव<sup>३</sup>, या फाव<sup>३</sup> ख्याय<sup>३</sup> इ त्याळ<sup>३</sup> ।

जरा तेज भागो ।

- १- ख्वाय<sup>३</sup>छ<sup>३</sup>यू<sup>३</sup>कन्<sup>३</sup>लि<sup>३</sup>श्येन्<sup>१</sup>षड् जल्दी जाओ और श्री ली से  
ष्वो<sup>३</sup>इष्वो । इसके बारे में बोलो ।
- २- छिड<sup>३</sup>नि<sup>३</sup> ख्वाय<sup>३</sup> खाय<sup>३</sup> खाय<sup>३</sup> कृपया यह दरवाजा (या खिड़की)  
(या क्वान्<sup>३</sup>षाड<sup>३</sup>)ने<sup>३</sup>क मन्<sup>३</sup> जल्दी खोलो (या बंद करो) ।  
(या छवाड<sup>३</sup>हु) ।
- ३- था<sup>३</sup>मु<sup>३</sup>छिन्<sup>३</sup>च्याव<sup>३</sup>था<sup>३</sup>ख्वाय<sup>३</sup> उसकी माँ ने उसे शीघ्र बैठने को  
च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>श्या, ख<sup>३</sup>षृ था<sup>३</sup>च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>- कहा, पर वह बहुत धीरे-धीरे  
श्यात हन्<sup>३</sup> मान्<sup>३</sup> । बैठा ।



- ४- फ्येन्<sup>२</sup>इ इत्याळ<sup>३</sup> पा । थोड़ा सस्ता दीजिए ।
- ५- छिङ्<sup>३</sup>निन्<sup>२</sup>मान्<sup>१</sup>इत्याळ<sup>३</sup>वो<sup>१</sup> कृपया थोड़ा धीरे बोलिए ।
- ६- वो<sup>३</sup>मन्<sup>२</sup>तै<sup>३</sup>चौ<sup>३</sup>ख्वाय्<sup>१</sup>इत्याळ<sup>३</sup> । हमें थोड़ा सा तेज चलना चाहिए ।
- ७- नि<sup>३</sup>चौ<sup>३</sup>तथाय्<sup>१</sup>ख्वाय्<sup>१</sup> । नि<sup>३</sup> तुम बहुत तेज चलते हो । क्या  
नङ्<sup>३</sup>मान्<sup>१</sup>इत्याळ<sup>३</sup>चौ<sup>३</sup>मा? तुम थोड़ा धीरे चल सकते हो ?
- ८- वो<sup>३</sup>शि<sup>१</sup>वाङ्<sup>३</sup>निन्<sup>२</sup>ख्वाय्<sup>१</sup> मैं आशा करता हूँ कि आप ज़रा  
इत्याळ<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup>लाय् । जल्दी वापस आएंगे ।

### (छ) कुछ अन्य सामान्य संयुक्त-क्रियापद

- १- था<sup>१</sup>मन्<sup>२</sup>तौ<sup>१</sup>ह्वै<sup>३</sup>च्या<sup>१</sup>ल । वे सब घर वापस चले गए हैं ।  
चळ<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>क रन्<sup>२</sup>तौ<sup>१</sup>मै<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> । यहाँ एक भी व्यक्ति नहीं है ।
- २- मा<sup>३</sup>श्येन्<sup>२</sup>पङ्<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup>ल । मि० मा अपने देश वापस चले  
गए हैं ।
- ३- वो<sup>३</sup>थाय्<sup>१</sup>थाय्<sup>१</sup>चिन्<sup>२</sup>छङ्<sup>३</sup> मेरी पत्नी चीजें खरीदने शहर  
माय्<sup>३</sup>तुङ्<sup>३</sup>शि छ्यूल । था<sup>१</sup> गई हैं । वे कुछ क्षणों में वापस  
इह्वै<sup>३</sup>ळ<sup>३</sup>च्यु ह्वै<sup>३</sup>लाय् । आ जाएंगी ।
- ४- वो<sup>३</sup>श्येन्<sup>२</sup>पङ्<sup>३</sup>छु<sup>३</sup>मन्<sup>२</sup>ल । मेरे पति यात्रा पर गए हैं ।  
था<sup>१</sup>वो<sup>३</sup>था<sup>१</sup>श्या<sup>१</sup>वे उन्होंने कहा है कि वे अगले महीने  
ह्वै<sup>३</sup>लाय् । वापस आ जाएंगे ।
- ५- चाङ्<sup>३</sup>थाय्<sup>१</sup>थाय्<sup>१</sup>पाङ्<sup>३</sup>- श्रीमती चाङ् चीजें खरीदने गई  
च्ये<sup>३</sup>ल । हैं ।
- ६- था<sup>१</sup>मन्<sup>२</sup>इ<sup>३</sup>चिङ्<sup>३</sup>पान्<sup>२</sup>च्या<sup>१</sup>ल वे (जगह बदलकर) चले गए हैं ।  
पान्<sup>२</sup>ताव् छङ्<sup>३</sup>वाय्<sup>१</sup>थौ वे शहर के बाहर चले गए हैं ।  
छ्यूल ।

## द्रुत-अभ्यास

हाय्<sup>३</sup>च् वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल ।

हाय्<sup>३</sup>च् छ्यू<sup>३</sup>वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल ।

हाय्<sup>३</sup>च् तौ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup>वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल ।

हाय्<sup>३</sup>च् तौ<sup>३</sup> ताव् वाय्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup>वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल ।

हाय्<sup>३</sup>च् तौ<sup>३</sup> ताव् छङ्<sup>३</sup>वाय्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup>वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल ।

हाय्<sup>३</sup>च् तौ<sup>३</sup> फाव्<sup>३</sup>ताव् छङ्<sup>३</sup>वाय्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup>वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल ।

वो<sup>३</sup>मन् हाय्<sup>३</sup>च् तौ<sup>३</sup> फाव्<sup>३</sup>ताव् छङ्<sup>३</sup>वाय्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup>वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल ।

वो<sup>३</sup>मन् श्याव्<sup>३</sup>हाय्<sup>३</sup>च् तौ<sup>३</sup> फाव्<sup>३</sup>ताव् छङ्<sup>३</sup>वाय्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup>वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल ।

वो<sup>३</sup>मन् त श्याव्<sup>३</sup>हाय्<sup>३</sup>च् तौ<sup>३</sup> फाव्<sup>३</sup>ताव् छङ्<sup>३</sup>वाय्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup>वाळ<sup>३</sup> छ्यू<sup>३</sup> ल ।

## व्याकरण

‘लाय्<sup>३</sup>’ और ‘छ्यू<sup>३</sup>’ दिशाबोधक के रूप में : ‘लाय्<sup>३</sup>’ और ‘छ्यू<sup>३</sup>’ इन दोनों क्रियाओं को किसी और क्रिया के साथ प्रत्यय के रूप में जोड़कर व्यापार की दिशा भी सूचित की जाती है। यदि कोई व्यापार वक्ता की ओर हो (या उस वस्तु या वस्तुओं की ओर हो, जिनकी चर्चा हो रही है), तो हम क्रिया के बाद दिशा-बोधक प्रत्यय ‘लाय्<sup>३</sup>’ जोड़ते हैं। यदि कोई कार्य विपरीत दिशा में हो, या वक्ता से दूर हो, तो हम क्रिया के बाद दिशाबोधक ‘छ्यू<sup>३</sup>’ प्रत्यय का प्रयोग करते हैं; जैसे,

वो<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>नङ्<sup>३</sup> श्या<sup>३</sup>छ्यू<sup>३</sup>, छिङ्<sup>३</sup> मैं नीचे नहीं जा सकता ।

नि<sup>३</sup> षाङ्<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> पा । मेहरबानी करके तुम ऊपर आ जाओ ।

इस तरह के संयुक्तपद के साथ कर्म नहीं आता, क्योंकि इनके अर्थ में ही “यहां” या “वहां” का अर्थ छिपा होता है। पढ़ते वक्त

दिशाबोधक 'लाय्' या 'छ्यू' पर जोर नहीं दिया जाता।

हिन्दी में भी इस तरह के संयुक्त पद हैं, जैसे "चले आना", "चले जाना", "आ जाना", "ले आना" इत्यादि।

१६-२ प्रत्यय 'चाय्' : 'चाय्' का प्रयोग न केवल मुख्य क्रिया और संबंधसूचक के रूप में होता है (देखिये पाठ १०), बल्कि कुछ अस्तित्वसूचक क्रियाओं के बाद परिणामबोधक प्रत्यय के रूप में भी होता है। 'चान्' (खड़ा होना), 'चवो' (बैठना), और 'चु' (वास करना, रहना) कुछ ऐसी अस्तित्वसूचक क्रियाओं में से हैं। इन क्रियाओं के बाद जोड़ने से प्रत्यय 'चाय्' का अपना अस्तित्व नहीं रहता यह अपना क्रिया का एक अभिन्न अंग बन जाता है। 'चाय्' के बाद हमेशा स्थानवाचक शब्द का प्रयोग होता है। उदाहरण :

छिड़ <sup>३</sup> नि <sup>३</sup> चान् <sup>३</sup> चाय् चळ <sup>३</sup>	कृपया यहां पर खड़े रहें।
वो <sup>३</sup> याव् च <sup>३</sup> वो <sup>३</sup> चाय् चे <sup>३</sup> क	मैं इस कुर्सी पर बैठना चाहता हूँ।
इ <sup>३</sup> च <sup>३</sup> षाड् ।	
वो <sup>३</sup> पुशि <sup>३</sup> ह्वान् चु <sup>३</sup> चाय् ल्यू <sup>३</sup> -	मैं होटल में रहना पसन्द नहीं
क्वान् <sup>३</sup> लि ।	करता।

१६-३ 'ताव्' प्रत्यय के रूप में : 'ताव्' एक प्रचलित क्रिया है, जैसे :

श्येन्<sup>३</sup>षड् तौव्<sup>३</sup>ल ।

अध्यापक पहुँच गये हैं।

इसके गतिसूचक व दिशाबोधक संबंधसूचक रूप का प्रयोग हम पहले ही सीख चुके हैं (पाठ ११) 'ताव्' परिणामबोधक प्रत्यय के रूप में 'ह्वै' (लौटना), 'पान्' (हटाना) आदि गति-सूचक क्रिया के बाद प्रयुक्त होता है। प्रत्यय 'ताव्' से बने संयुक्तपद का कर्म स्थानवाचक शब्द होता है, वह उस स्थान को सूचित करता है जहां व्यापार समाप्त हुआ है। कर्म के बाद दिशा-



बोधक 'लाय्' और 'छ्.यू' का प्रयोग भी हो सकता है; जैसे,

वो<sup>३</sup>मन् मिङ्<sup>३</sup>थ्येन् याव् पान्<sup>१</sup>- हम लोग अगले साल जगह  
ताव् नान्<sup>३</sup>चिङ् छ्.यू । बदलकर नानकिङ् चले जायेंगे ।

वो<sup>३</sup>मन् न्येन् ताव् चळ<sup>३</sup>ल । हमने यहां तक पढ़ा है ।

हाय्<sup>३</sup>च् मन् तौ<sup>१</sup>फाव् ताव् छङ्<sup>३</sup>- सभी बच्चे खेल कूद के लिये  
लि<sup>३</sup>थौ छ्.यू वाळ<sup>३</sup>छ्.यू ल । भागते हुए शहर को गये हैं ।

१६-४ मात्राबोधक पूर्ति : यह हम पहले ही बता चुके हैं कि क्रिया-विशेषण सदा मुख्य क्रिया के पहले आता है । लेकिन जब हम यह बताना चाहते हैं कि क्रिया किस तरह सम्पन्न हुई, किस मात्रा या सीमा (या परिणाम) तक कोई व्यापार हो चुका है, या, पहुंच चुका है, तो मात्राबोधक पूर्ति का प्रयोग करते हैं । ये पूरक तत्त्व क्रिया के बाद प्रयुक्त होते हैं । व्यापार अक्सर पहले ही पूरा हो चुकता है (या मान लिया गया होता है कि पूरा हो चुका है), या आदत के कारण यह व्यापार प्रायः होता रहता है, या किसी सीमा या परिणाम तक पहुंचता है; जैसे,

था<sup>१</sup>लाय्<sup>३</sup>त ख्वाय्<sup>३</sup> ।

वह जल्दी आया है ।

था<sup>१</sup>फाव्<sup>३</sup>त पु<sup>३</sup>मान्<sup>३</sup> ।

वह तेज चलता है ।

था<sup>१</sup>छाङ्<sup>३</sup>त हाव्<sup>३</sup>चि<sup>३</sup>ल ।

उसने बहुत ही अच्छा गाया ।

इस तरह की वाक्य रचना में क्रिया और मात्राबोधक पूर्ति के बीच 'त' का प्रयोग दोनों को जोड़ने के लिए किया जाता है । मात्राबोधक पूर्ति आमतौर से विशेषण से बनती है ।

इस तरह के वाक्यों के साथ उन वाक्यों का प्रभेद ध्यान में रखना चाहिए जिनमें विशेषतासूचकों के बाद संज्ञा नहीं आती (पाठ ८ देखिये); जैसे,

था<sup>१</sup>ल्लू<sup>३</sup>त (खाना) हन्<sup>३</sup>त्वो<sup>१</sup> वह बहुत खाता है ।

था<sup>१</sup>छाङ्<sup>३</sup>त (गाना) ष् चुङ्<sup>३</sup>- वह चीनी गाना गा रही है ।

क्वो<sup>२</sup> कळ<sup>१</sup> ।

(अथवा वह जो गाना गा रही  
है वह चीनी गाना है)

अगर क्रिया के बाद कोई कर्म हो तो क्रिया की द्विरुक्ति करनी पड़ती है, और पूर्ति को क्रिया को दुहराने के बाद रखना पड़ता है। इसका क्रम इस प्रकार है :

क्रिया-कर्म-द्विरुक्तक्रिया-त-पूर्ति

### उदाहरण

था<sup>१</sup>श्यवे<sup>२</sup>चुङ्<sup>३</sup>वेन्<sup>२</sup> श्यवे<sup>२</sup>त वह बड़ी शीघ्रता से चीनी  
खाय् भाषा सीखती है ।

श्येन्<sup>१</sup>षङ् च्याव्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup>वेन्<sup>२</sup>- अध्यापक बड़ी अच्छी तरह  
च्याव्<sup>३</sup>त हाव । चीनी भाषा पढ़ाते हैं ।

हम चाहें तो कर्म को क्रिया के पहले रख सकते हैं; जैसे,  
था<sup>१</sup> (त) च्<sup>३</sup> श्ये<sup>२</sup>त हाव<sup>३</sup> उसके लिखे हुए चीनी अक्षर  
बहुत अच्छे लगते हैं ।

नि<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>२</sup> ह्वा<sup>३</sup> प्वो<sup>३</sup>त तुम चीनी भाषा बहुत अच्छी  
हन्<sup>३</sup>हाव<sup>३</sup> तरह बोल लेते हो ।

वैकल्पिक प्रश्नार्थक वाक्य में, पूर्ति के सकारार्थक और निषेधा-  
र्थक दोनों रूप दिये जाते हैं, लेकिन क्रिया के दोनों रूप नहीं दिये  
जाते; जैसे :

था<sup>१</sup>छृ<sup>३</sup>त खाय्<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>खाय्<sup>३</sup> क्या वह जल्दी खाना खाता है?  
था<sup>१</sup> श्यवे<sup>२</sup>चुङ्<sup>३</sup>वेन्<sup>२</sup> श्यवे<sup>२</sup>त उसने चीनी भाषा अच्छी तरह  
हाव<sup>३</sup>पु हाव<sup>३</sup> पढ़ी है या नहीं ?

१६-५ आज्ञार्थक वाक्य में मात्राबोधक क्रिया विशेषण :  
आज्ञार्थक वाक्यों में मात्राबोधक क्रिया विशेषण पूर्ति के रूप में  
क्रिया के बाद नहीं आते, बल्कि क्रिया के पहले प्रयुक्त होते हैं।  
जैसे :—

ख्वाय्<sup>४</sup> श्या<sup>४</sup>लाय्

जल्दी नीचे आओ ।

ख्वाय्<sup>४</sup>लाय्<sup>३</sup> छृ<sup>३</sup>फान्<sup>४</sup>

जल्दी आकर खाना खाओ ।

क्रियाविशेषण पर ज्यादा या कम जोर देने के लिये मात्रासूचक 'ई<sup>४</sup>त्याळ<sup>३</sup>' अथवा 'त्याळ<sup>३</sup>' क्रियाविशेषण के बाद जोड़ दिया जाता है, और अपने विशेषतासूचक के साथ ये क्रियाविशेषण क्रिया के ठीक पहले या बाद में प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

छिङ्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup>मान्<sup>४</sup>ईत्याळ<sup>३</sup> ष्वो<sup>४</sup> कृपया जरा धीरे धीरे बोलें

छिङ्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>ष्वो<sup>४</sup> मान्<sup>४</sup> ईत्याळ<sup>३</sup> ”

ख्वाय्<sup>४</sup>त्याळ<sup>३</sup>चौ<sup>३</sup>

जरा जल्दी चलो

चौ<sup>३</sup>ख्वाय्<sup>४</sup>त्याळ

”

१६-४ पा (वा) : 'पा' एक भाव-दर्शक सहायक-शब्द है, जो वाक्य के अन्त में प्रयुक्त होता है । इसे आज्ञार्थक वाक्य के अन्त में प्रयोग करके आज्ञा को मृदु रूप दे दिया जाता है, या उसे सलाह, या प्रार्थना (अनुरोध) के रूप में बदल दिया जाता है । जैसे :

कै<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>पा

जरा मुझे दो

(कृपया मुझे दो)

वो<sup>३</sup>मन् चौ<sup>३</sup>पा

हमें जाना चाहिये ।

(या हम चलें) ।

वो<sup>३</sup>मन् श्येन्<sup>४</sup> छृ<sup>३</sup>फान्<sup>४</sup>पा

हम पहले खाना खा लें ।

(अथवा हमें पहले खाना खाने दो) ।



## पाठ-१७

- क- वो<sup>३</sup>मन् याव् पान्<sup>१</sup>च्या<sup>१</sup>, निन्<sup>३</sup>- थिङ्<sup>१</sup>ष्वो<sup>१</sup> ल मै यौ ? हम अभी घर बदल रहे हैं क्या आपने सुना है ?
- ख- थिङ्<sup>१</sup>ष्वो<sup>१</sup> ल, स्वो<sup>३</sup> ई<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> हां, मैंने सुना था, इसलिए मैं याव्<sup>२</sup>खान्<sup>१</sup> नि<sup>३</sup>मन् । तुङ्<sup>१</sup>शि तुमसे मिलना चाहता था । तौ<sup>१</sup>पान्<sup>१</sup>ताव् शिन<sup>१</sup> फाङ्<sup>३</sup>च् छ्यू ल मा ? क्या नए घर में सब चीजें चली गई हैं ?
- क- ता<sup>१</sup>तुङ्<sup>१</sup>शि तौ<sup>१</sup>पान्<sup>१</sup>छ्यू ल । सभी बड़ी-बड़ी चीजें चली हाय्<sup>२</sup>यौ<sup>३</sup> श्ये श्याव्<sup>३</sup>तुङ्<sup>१</sup>शि गई हैं । अभी कुछ छोटा-छोटा वो<sup>३</sup>मन् चङ्<sup>२</sup>चाय् पान्<sup>१</sup> न सामान है जिसे हम लोग ले जा रहे हैं ।
- ख- वो<sup>३</sup>ख<sup>३</sup>ई<sup>३</sup> षाङ्<sup>१</sup> नि<sup>३</sup>मन पा<sup>३</sup> कुछ छोटी चीजें ले जाने में मैं चि<sup>३</sup>च्येन् श्याव्<sup>३</sup> तुङ्<sup>१</sup>शि सहायता कर सकता हूँ । कैसा पान्<sup>१</sup>छ्यू, हाव्<sup>३</sup>पु हाव्<sup>१</sup> ? रहेगा ?
- क- निन्<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup> छि<sup>३</sup>छमा ? क्या आपके पास गाड़ी (कार) है ?
- ख- यौ<sup>३</sup> हां, हैं ।
- क- निन्<sup>३</sup>मै<sup>३</sup>कुङ्<sup>१</sup>फु पा ? आपके पास समय तो नहीं होगा, क्या है ?
- ख- वो<sup>३</sup>चिन्<sup>१</sup>थ्येन् इत्याळ<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>तौ<sup>१</sup> आज मुझे कोई भी काम नहीं

- मे यौ<sup>३</sup> । करना है ।
- क- वो<sup>३</sup>मन् च्या<sup>३</sup>लित षू<sup>३</sup> पुषाव्<sup>३</sup> । हमारे घर में काफी पुस्तकें हैं  
पु<sup>३</sup>चृताव्<sup>३</sup> निन्<sup>३</sup>नङ्<sup>३</sup>पुनङ्<sup>३</sup>  
पा<sup>३</sup> चेश्ये षू<sup>३</sup>कै<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>मन् पान्<sup>३</sup>  
छ्य<sup>३</sup> । मुझे मालूम नहीं कि आप हमारे  
लिए इन पुस्तकों को ले जा  
सकेंगे या नहीं ।
- ख- तौ<sup>३</sup> फाङ्<sup>३</sup>चाय्<sup>३</sup> षु<sup>३</sup>फाङ्<sup>३</sup>लि  
मा ? क्या वे सब पढ़ने के कमरे में  
रखनी हैं ?
- क- तौ<sup>३</sup>चाय्<sup>३</sup> षु<sup>३</sup>फाङ्<sup>३</sup>लि फाङ्<sup>३</sup>च  
पु शिङ्<sup>३</sup> । मै<sup>३</sup>ति<sup>३</sup>फाङ्<sup>३</sup> । वो<sup>३</sup>-  
मन् श्याङ्<sup>३</sup> पा छ्वाङ्<sup>३</sup>हु  
ति<sup>३</sup>श्या नैश्ये षू<sup>३</sup> फाङ्<sup>३</sup>चाय्<sup>३</sup>  
ख<sup>३</sup>थिङ्<sup>३</sup>लि सब की सब तो पढ़ने के कमरे  
में नहीं रखी जा सकेंगी । जगह  
नहीं है । हमारे विचार से जो  
पुस्तकें खिड़की के नीचे रखी हैं  
वे हम रहने के कमरे में रख  
देंगे ।
- ख- हाय्<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup>ष<sup>३</sup>म्मा ? और कोई चीज ?
- क- हाय्<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup>चे<sup>३</sup>ल्याङ्<sup>३</sup>क श्याव्<sup>३</sup>-  
च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>च् । अभी ये दो छोटी मेजें हैं ।
- ख- हाव्<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>श्येन्<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>चे<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> ठीक है, मैं पहले ये कुछ चीजें  
ले जाता हूँ, और वापस आकर  
दूसरी चीजे ले जाऊंगा ।  
च्येन्<sup>३</sup> सुङ्<sup>३</sup> छ्य<sup>३</sup>, ह्वै<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>  
चाय्<sup>३</sup>ना<sup>३</sup>प्ये<sup>३</sup> त ।
- क- लाव्<sup>३</sup>च्या<sup>३</sup>, लाव्<sup>३</sup>च्या<sup>३</sup> । मैं आपको बहुत कष्ट दे रहा हूँ ।
- ख- मै<sup>३</sup>ष<sup>३</sup>म्मा । यह तो कुछ भी नहीं है ।

### नये शब्द

#### मापक शब्द

च्येन् वस्तु, चीज, आदि

सं०

सं०

फ़ान् <sup>१</sup> थिङ् <sup>१</sup>	खाने का कमरा	थौ <sup>२</sup>	सिर
पु <sup>१</sup> फ़ाङ् <sup>२</sup>	पढ़ने का (किताबें रखने का) कमरा	खौ <sup>३</sup> ताळ	जेब
ति <sup>४</sup> (श्या)	जमीन, फर्श	षौ <sup>३</sup>	हाथ

क्रि० वि०

चङ्<sup>५</sup> (चाय्) (किसी काम के)

बीच में ।

क्रियापद

चाय् <sup>५</sup>	फिर (भविष्य में)	ना <sup>२</sup> छि लाय्	उठाना
यौ <sup>४</sup>	फिर (भूत में)	फाङ् <sup>५</sup> श्या (लाय्)	रखना

सं० सू०

सं० श०

पा <sup>३</sup>	कार्य को क्रिया से पहले रखने में प्रयुक्त	-च	क्रिया प्रत्यय, कार्य जारी है सूचित करने के लिए
-----------------	---	----	---

क्रि०

-ळ संज्ञाओं के लिए सूक्ष्म प्रत्यय

ना<sup>२</sup> पकड़ना (चीज़ को), ले जाना  
(छोटी चीज़ को)

मुहावरेदार कथन

फ़ाङ् <sup>५</sup>	रखना, जाने देना		
पान् <sup>१</sup>	हटाना, ले जाना (भारी सामान)	लाव् <sup>३</sup> च्या <sup>४</sup>	क्या मैं आपको कष्ट दे सकता हूँ ?
	एक जगह से दूसरी जगह		आभारी हूँ ?
ताय् <sup>५</sup>	साथ ले जाना या साथ लाना		
सुङ् <sup>५</sup>	भेजना, छोड़ के आना, बिदाई देना, साथ जाना		
सुङ् <sup>५</sup> (कै <sup>३</sup> )	भेंट देना (वस्तु)		



पाङ्<sup>१</sup>(चु) सहायता करना (किसी की)

पाङ्<sup>१</sup>माङ्<sup>२</sup> (क्रि० क०) सहायता देना

### उदाहरणमाला

#### (क) 'पा' विन्यास

- १- नि<sup>३</sup>मन् मिङ्<sup>२</sup>थ्येन् पा<sup>३</sup> नि<sup>३</sup>मन्त पु<sup>१</sup> तौ<sup>१</sup>ना<sup>३</sup>लाय् ।
- २- नि<sup>३</sup>ख<sup>३</sup>ई<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>त हाय्<sup>२</sup>च च्याव्<sup>१</sup>लाय् ।
- ३- नि<sup>३</sup>मन् चिन्<sup>१</sup>थ्येन् पा<sup>३</sup>पि<sup>३</sup> ताय्<sup>१</sup>लाय्ल मै-  
यौ ?
- ४- वो<sup>३</sup>च वो<sup>३</sup>थ्येन् मै<sup>२</sup>पा<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>हाय्<sup>२</sup>च ताय्<sup>१</sup>छ्<sup>१</sup>यू ।  
था<sup>१</sup>पु<sup>१</sup>ट् वान्<sup>१</sup>इ छ्<sup>१</sup>यू
- ५- नि<sup>३</sup>मन् इ<sup>३</sup>चिङ् पा<sup>३</sup>तुङ्<sup>१</sup>शि तौ<sup>१</sup>पान् छ्<sup>१</sup>यू ल मा ?
- ६- नि<sup>३</sup> पा<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>श्ये<sup>३</sup>त ने<sup>१</sup>फ्रङ् शिन्<sup>१</sup>सुङ्<sup>१</sup>छ्<sup>१</sup>यू ल  
मै यौ ?
- ७- ख्वाय्<sup>१</sup>इत्याळ<sup>३</sup> पा<sup>३</sup> चे<sup>१</sup>क रौ<sup>१</sup> ना<sup>३</sup>चौ<sup>३</sup> ।
- ८- षै<sup>२</sup> पा<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>त पि<sup>३</sup> ना<sup>३</sup>चौ<sup>३</sup> ल ?
- ९- प्ये<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>मन्<sup>२</sup> (अथवा  
छ्वाङ्<sup>१</sup>हु) खाय्<sup>१</sup>खाय् ।
- १०- लाव्<sup>१</sup>च्या<sup>१</sup>, छिङ्<sup>३</sup>निन्<sup>२</sup> पा<sup>३</sup>मन्<sup>२</sup> (अथवा  
छ्वाङ्<sup>१</sup>हु) ववान्<sup>१</sup>षाङ्<sup>१</sup> त्याळ<sup>३</sup> ।
- ११- नि<sup>३</sup>मन् पु<sup>१</sup>याव् पा<sup>३</sup>माव्<sup>१</sup>च ताय्<sup>१</sup>षाङ् ।
- १२- छिङ्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>षाङ्<sup>१</sup>थौत ने<sup>१</sup> ना<sup>३</sup>श्यालाय्, कै<sup>३</sup>  
पन्<sup>३</sup>पु<sup>१</sup> वो<sup>३</sup> ।
- १३- नि<sup>३</sup>मन् ख<sup>३</sup>ई<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>मन् त इ<sup>१</sup>स्च् श्ये<sup>३</sup>श्या लाय्

- १४- पा<sup>३</sup>ने<sup>३</sup>ल्याङ्<sup>३</sup>क इ<sup>३</sup>च् पा<sup>३</sup>न्<sup>३</sup>चिन्लाय् पा ।
- १५- वो<sup>३</sup>च्याव्<sup>३</sup>हाय्<sup>३</sup>च् पा<sup>३</sup>खौ<sup>३</sup>ताळलित तौ<sup>३</sup>ना<sup>३</sup> छुलाय् ।  
तुङ्<sup>३</sup>शि
- १६- नि<sup>३</sup>ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>त इ<sup>३</sup>स्च् ष्वो<sup>३</sup>छुलाय् ।
- १७- था<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>था<sup>३</sup>त इ<sup>३</sup>स्च् ष्वो<sup>३</sup>छुलाय् ल ।
- १८- लाव्<sup>३</sup>च्या<sup>३</sup>, छिङ्<sup>३</sup>निन्<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>त माव्<sup>३</sup>च् ना<sup>३</sup>षाङ् छय्
- १९- नि<sup>३</sup>वै ष<sup>३</sup>म्मा पु<sup>३</sup>पा<sup>३</sup>चे<sup>३</sup>क ता<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>न्<sup>३</sup>छु छय्  
च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>च्
- २०- छिङ्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>चे<sup>३</sup>क फाङ्<sup>३</sup>चाय् लौ<sup>३</sup>षाङ्
- २१- पा<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>त षौ<sup>३</sup> फाङ्<sup>३</sup>चाय् नि<sup>३</sup>त खौ<sup>३</sup>  
ताळ लि ।
- २२- नि<sup>३</sup>इङ्<sup>३</sup>ताङ्<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>चे<sup>३</sup>श्ये षू<sup>३</sup> कन्<sup>३</sup>ने<sup>३</sup>श्ये फाङ्<sup>३</sup>चाय्  
इख्वाळ<sup>३</sup> ।
- २३- पा<sup>३</sup>ने<sup>३</sup>चाङ् ह्वाळ<sup>३</sup> ना<sup>३</sup>ताव् वो<sup>३</sup>चळ<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup> ।
- २४- छिङ्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>पाङ्<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>चे चि<sup>३</sup>क इ<sup>३</sup>च् पा<sup>३</sup>न्<sup>३</sup>ताव् लौ<sup>३</sup>षाङ्  
छय् ।
- २५- प्ये<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>त फङ्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> ताय्<sup>३</sup>ताव् लौ<sup>३</sup>श्या<sup>३</sup>  
छय् ।

(ख) क्रिया-‘च’ के साथ कार्य जारी रहना

चान् <sup>३</sup> च्	खड़ा होना	चौ <sup>३</sup> च्	टहलना, चलना
च <sup>३</sup> वो <sup>३</sup> च्	बैठना	तङ् <sup>३</sup> च्	प्रतीक्षा करना
चु <sup>३</sup> च्	रहना, ठहरना	ताय् <sup>३</sup> च्	साथ ले जाते रहना
ना <sup>३</sup> च्	लेना, ले जाना	खाय् <sup>३</sup> च्	खुला रहना
फाङ् <sup>३</sup> च्	पड़ा रहना	क्वान् <sup>३</sup> च्	बंद रहना

(चीजों के लिए)

- १- नि<sup>३</sup> वै<sup>४</sup>ष<sup>३</sup>म्मा चान्<sup>३</sup>च ? तुम खड़े क्यों हो ? बैठ जाओ ।  
च<sup>३</sup>वो<sup>४</sup>श्या पा
- २- था<sup>३</sup>वो<sup>४</sup>छाड्<sup>३</sup>चाय् इ<sup>३</sup>क ति<sup>४</sup>- वह कहता है कि हमेशा एक  
फाड्<sup>३</sup> चु<sup>३</sup>च मै<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>स्व<sup>३</sup> । स्थान पर रहना नीरस होता है ।
- ३- नि<sup>३</sup>त पि<sup>३</sup>चाय् च्वो<sup>३</sup>च पाड्<sup>३</sup> तुम्हारा कलम मेज़ पर पड़ा  
फाड्<sup>३</sup>ल । है ।
- ४- नि<sup>३</sup>षो<sup>३</sup>लि ना<sup>३</sup>च ष<sup>३</sup>म्मा ? तुम हाथ में क्या उठाए हो ?
- ५- क्वान्<sup>३</sup>च छ्वाड्<sup>३</sup>हु पुहाव्<sup>३</sup> । खिड़की को बंद रखना अच्छा  
खाय्<sup>३</sup>च इत्याळ<sup>३</sup>हाव्<sup>३</sup> । नहीं होता । उसको थोड़ा  
खुला रखना अच्छा होता है ।
- ६- रन्<sup>३</sup>रन्<sup>३</sup>तौ<sup>३</sup>शि<sup>३</sup>ह्वान् च<sup>३</sup>वो<sup>४</sup>च हर आदमी बैठकर खाना पसंद  
छ्वा<sup>३</sup>फान्<sup>३</sup> करता है ।
- ७- था<sup>३</sup>मन् चाय् वाय्<sup>३</sup>थौ चान्<sup>३</sup>च वे काफी समय तक बाहर खड़े  
थान्<sup>३</sup>ल पु षाव्<sup>३</sup>त ह्वा<sup>३</sup> । होकर बातें करते रहे ।
- ८- नि<sup>३</sup>मन् मै<sup>३</sup>ताय्<sup>३</sup>च श्याव्<sup>३</sup>ति<sup>४</sup>- क्या तुम छोटे भाई को साथ  
ति छ्यू मा ? मै<sup>३</sup>यौ । नहीं ले गए ? नहीं, हम नहीं  
ले गए ।
- ९- वो<sup>३</sup>मन् चौ<sup>३</sup>च वो<sup>३</sup>पा । चलो, इसके बारे में चलते हुए  
बात करें ।
- १०- यौ<sup>३</sup>त रन्<sup>३</sup>खान्<sup>३</sup>च षू<sup>३</sup> छ्वा<sup>३</sup>फान्<sup>३</sup> । कुछ लोग खाते हुए पढ़ते हैं ।

वाक्य 'न' के साथ जारी रहना—पुनर्विचार

- १- था<sup>३</sup>चाय् च्या<sup>३</sup>च<sup>३</sup>वो<sup>४</sup>ष<sup>३</sup>म्मा न? वह घर पर क्या कर रहा है?  
छ्वा<sup>३</sup>फान्<sup>३</sup>न । खाना खा रहा है ।
- २- लि<sup>३</sup>थाय्<sup>३</sup>थाय् चाय् नाळ<sup>३</sup>न? श्रीमती ली कहां हैं ? वह  
था<sup>३</sup>चाय्<sup>३</sup>छ्वा<sup>३</sup>फाड्<sup>३</sup>लि च<sup>३</sup>वो<sup>४</sup>- रसोईघर में खाना बना रही



फान् न ।

हैं ।

३- नि<sup>३</sup>श्ये<sup>३</sup>ल ने<sup>३</sup>फड्<sup>३</sup> शिन्<sup>३</sup>ल मै<sup>३</sup>-  
यौ ? वो<sup>३</sup> चड्<sup>३</sup>श्ये<sup>३</sup> न ।

क्या तुमने वह पत्र लिख लिया  
है ? मैं अभी लिख रहा हूँ ।

४- प्ये<sup>३</sup>नाचौ, वो<sup>३</sup>हाय्<sup>३</sup>याव् न ।

(इसको) मत ले जाओ, मुझे  
कुछ और चाहिए ।

५- वो<sup>३</sup>मन् चळ<sup>३</sup>हाय्<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup>न । नि<sup>३</sup>-  
हाय्<sup>३</sup>याव् मा ?

हमारे पास अभी भी कुछ यहां  
पर है । क्या तुमको और  
चाहिए ।

(घ) 'च' और 'न' दोनों के साथ कार्य जारी रहना

१- था<sup>३</sup>मन् हाय्<sup>३</sup>चाय्<sup>३</sup>नाळ<sup>३</sup>चान्<sup>३</sup>-  
च ष्वो<sup>३</sup>त्वा<sup>३</sup>न ।

वे अभी भी खड़े होकर बातें  
कर रहे हैं ।

२- था<sup>३</sup>मु<sup>३</sup>छिन् चाय्<sup>३</sup>नान<sup>३</sup>चिङ्<sup>३</sup>-  
चु<sup>३</sup>च न ।

उसकी मां नान किङ में रह  
रही हैं ।

३- नि<sup>३</sup>षौ<sup>३</sup>लि ना<sup>३</sup>च ष<sup>३</sup>म्मा न ?

तुम अपने हाथ में क्या पकड़े  
हुए हो ?

४- नि<sup>३</sup>थाय्<sup>३</sup>थाय्<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup>श्ये<sup>३</sup>वे<sup>३</sup>-  
श्याव्<sup>३</sup> तड्<sup>३</sup>च नि<sup>३</sup>न् ।

तुम्हारी पत्नी स्कूल में तुम्हारी  
प्रतीक्षा कर रही हैं ।

५- मन्<sup>३</sup> खाय्<sup>३</sup>च न, ख<sup>३</sup>षृ था<sup>३</sup>-  
मन् पा<sup>३</sup> छवाङ्<sup>३</sup>हु तौ<sup>३</sup>क्वान्<sup>३</sup>-  
षाङ् ल ।

दरवाजा खुला हुआ है, पर  
उन्होंने सारी खिड़कियां बंद  
कर दी हैं ।

कक्षा में :

पा<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> ना<sup>३</sup>छिलाय् ।

कलम उठा लो ।

पा<sup>३</sup> पि<sup>३</sup> फाङ्<sup>३</sup>श्या

कलम नीचे रखो ।

चाय्<sup>३</sup> ना<sup>३</sup>छिलाय्

इसको फिर से उठा लो ।

चाय्<sup>३</sup> फाङ्<sup>३</sup>श्या ।

इसको फिर से नीचे रखो ।

पा <sup>३</sup> पि <sup>३</sup> कै <sup>३</sup> वो <sup>३</sup> ।	कलम मुझे दो ।
ना <sup>१</sup> हूँ छूँ ।	इसको वापस ले जाओ ।
चाय् कै <sup>३</sup> वो <sup>३</sup> ।	इसे फिर मुझे दो ।
ना <sup>२</sup> चौ <sup>३</sup> ।	इसे ले जाओ (उठाकर)
पा <sup>३</sup> पि <sup>३</sup> ना <sup>२</sup> ताव् वाय् <sup>४</sup> थौ छूँ	कलम को बाहर ले जाओ ।
ना <sup>२</sup> चिन्लाय् ।	उसको अन्दर ले आओ ।
चाय् <sup>४</sup> ना <sup>२</sup> छु छूँ ।	इसको फिर बाहर ले जाओ ।
ना <sup>२</sup> हूँ लाय् ।	उसको वापस ले आओ ।
पा <sup>३</sup> पि <sup>३</sup> फाङ् <sup>४</sup> चाय् नि <sup>३</sup> त थौ <sup>२</sup> -	कलम को अपने सिर पर रखो ।
षाङ् ।	
ना <sup>२</sup> श्यालाय् ।	उसको नीचे उतारो ।
पा <sup>३</sup> पि <sup>३</sup> फाङ् <sup>४</sup> चाय् नि <sup>३</sup> त खौ <sup>३</sup> -	कलम को अपनी जेब में रखो ।
ताळ लि ।	
ना <sup>२</sup> छु लाय ।	उसको बाहर निकालो ।
चाय् <sup>४</sup> फाङ् <sup>४</sup> चिन्छूँ ।	इसको फिर अन्दर रखो ।
पा <sup>३</sup> पि <sup>३</sup> फाङ् <sup>४</sup> चाय् ति <sup>४</sup> श्या ।	कलम को फर्श पर रखो ।
ना <sup>२</sup> छिलाय् ।	उसको उठाओ ।
पा <sup>३</sup> पि <sup>३</sup> कन् <sup>१</sup> षू फाङ् <sup>४</sup> चाय् इ-	कलम और पुस्तक को एक
खाळ <sup>४</sup> ।	साथ रखो ।
पा <sup>३</sup> पि <sup>३</sup> ना <sup>२</sup> ताव् वो <sup>३</sup> चळ	कलम को यहां मेरे पास ले
लाय् ।	आओ ।
फाङ् <sup>४</sup> चाय् वो <sup>३</sup> त षौ <sup>३</sup> षाङ् <sup>२</sup>	इसको मेरे हाथ पर रखो ।
ना <sup>२</sup> चौ <sup>३</sup>	इसको ले जाओ ।

### व्याकरण

१७-१ 'पा' विन्यास : आम तौर से क्रिया-विधेय वाक्य में क्रिया हमेशा अपने कर्म के पहले आती है। "पा-विन्यास" भी क्रिया-विधेय वाक्य होता है, लेकिन इसका शब्द क्रम इस तरह होता है :

कर्ता-पा<sup>३</sup>+कर्म-क्रिया-अन्य तत्त्व

संबंधसूचक शब्द 'पा<sup>३</sup>' का प्रयोग करके कर्म को क्रिया के ठीक पहले लाया जाता है। आमतौर से 'पा<sup>३</sup>' के कर्म से किसी विशेष प्राणी या वस्तु का बोध होता है। इस तरह के वाक्य हिंदी की वाक्य रचना से मिलता जुलता है, हिंदी में कर्म क्रिया से पहले आती है; जैसे,

पा<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>च् पा<sup>३</sup>न्-छुछ् यू ।

कुर्सी हटा ले जाओ ।

'पा<sup>३</sup>' का अनुवाद हिंदी में या अंग्रेजी में नहीं किया जाता है। 'पा<sup>३</sup>' विन्यास के कुछ नियम :

१- जब वक्ता किसी बात पर विशेष रूप से जोर देना चाहता है तो 'पा<sup>३</sup>' का प्रयोग होता है; जैसे,

था<sup>३</sup>पा<sup>३</sup>चिन्<sup>३</sup>-थ्येन्त पाव्<sup>३</sup>खान्<sup>३</sup>ल ।

आज का अखबार वह पढ़ चुका है ।

२- जटिल विधेय-वाले वाक्य में अगर प्रत्यय जैसे तत्त्व हो या क्रिया द्विरक्त रूप में हो, तो कर्म को 'पा<sup>३</sup>' की सहायता से क्रिया के पहले ले आना वाक्य रचना के ख्याल से अच्छा रहता है; जैसे,

छिड्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>पा<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>त पू<sup>३</sup> ना<sup>३</sup>ताव् वो<sup>३</sup>चळ लाय्

कृपया तुम अपनी किताब मेरे पास (इधर) लाओ ।

वो<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>चिड् पा<sup>३</sup>छि<sup>३</sup>छ् माय्<sup>३</sup>ल ।

मैंने मोटर गाड़ी (या कार) बेच दी है ।

२- दो कर्म वाले क्रिया वाक्यों में भी 'पा<sup>३</sup>' का प्रयोग प्रायः किया जाता है, मुख्य कर्म 'पा' के बाद रखा जाता है और गौण कर्म क्रिया के बाद रखा जाता है; जैसे,

वो<sup>३</sup>पा<sup>३</sup>पू<sup>३</sup> सूड्<sup>३</sup>कै था<sup>३</sup>ल । मैंने उसे किताब भेज दिया है ।

निषेधार्थक वाक्य में क्रिया-विशेषण 'पु<sup>३</sup>' और 'मै<sup>३</sup>यौ' का



प्रयोग हमेशा संबंधसूचक 'पा' के पहले करना चाहिए; जैसे-

वो<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>पा<sup>३</sup>षू<sup>३</sup> सुङ्<sup>३</sup>कै था<sup>३</sup>      मैं उसे किताब नहीं भेजूंगा ।  
वो<sup>३</sup>मै<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>पाव<sup>३</sup>खान्<sup>३</sup> मैंने अभी तक अखबार पढ़  
वान्<sup>३</sup>न ।      कर खत्म नहीं किया है ।

१७-२ संयुक्त दिशा-बोधक प्रत्यय : 'लाय्' और 'छ्यू' से बने 'छू<sup>३</sup>लाय्' 'चिन्<sup>३</sup>लाय्' जैसे संयुक्त पद के बारे में हम पहले ही बता चुके हैं (पाठ १६) । इन संयुक्त पदों को 'ना' (लेना) 'ताय' (लाना), 'पान्' (हटाना) 'चौ<sup>३</sup>; (चलना), 'फाव्' (दौड़ना), जैसे दूसरी क्रियाओं के बाद दिशाबोधक प्रत्यय के रूप में प्रयोग कर सकते हैं । इनसे बने पद को हम दिशाबोधक संयुक्तपद कह सकते हैं । उदाहरण के लिये :

वो<sup>३</sup>मन् ष्ट चौ<sup>३</sup>षाङ्<sup>३</sup>छ्यू<sup>३</sup>न हम चलकर उपर गये ।

पा<sup>३</sup>चवोच्<sup>३</sup>च<sup>३</sup>पान्<sup>३</sup>चिन्<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup> मेज़ को हटाकर अंदर लाओ ।

ऊपर के अनुवाद से यह पता लग जाता है कि चीनी दिशा-बोधक शब्दों का हिंदी अनुवाद चीनी भाषा की तरह ही होता है जैसे "ऊपर गया", "अंदर लाया", इत्यादि ।

संयुक्त दिशाबोधक प्रत्यय के बाद आने वाले कर्म को 'लाय' या 'छ्यू' के पहले रखना चाहिये; जैसे,

था<sup>३</sup>फाव्<sup>३</sup>ह्वैच्या<sup>३</sup>छ्यू<sup>३</sup> ल वह दौड़कर घर वापस गया ।

पा<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>च्<sup>३</sup> पान्<sup>३</sup>चिन्<sup>३</sup> फान्<sup>३</sup>- कुर्सी को हटाकर खाने के कमरे  
थिङ्<sup>३</sup>लि लाय्<sup>३</sup> में लाओ ।

अगर कर्म द्वारा सूचित कोई प्राणी अथवा वस्तु व्यापार से प्रभावित होकर अपना स्थान बदल देता है, और आमतौर से जब वह व्यापार पूर्ण होता है, तब कर्म को संयुक्त दिशाबोधक प्रत्यय के बाद रख सकते हैं; जैसे,

था<sup>१</sup>माय<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup>लाय् प्वै<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup>ल वह फल खरीद कर वापस  
आया । (प्वै<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup>==फल)

लेकिन 'पा<sup>३</sup>' विन्यास की विधि के अनुसार इन वाक्यों में  
'पा<sup>३</sup>' का प्रयोग करना मुहावरेदार भाषा की दृष्टि से कहीं अच्छा  
होता है :

था<sup>१</sup>पा<sup>३</sup>प्वै<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> माय<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup>लाय् ल  
पा<sup>३</sup>चे<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup>पु<sup>३</sup> ना<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup>श्ये<sup>३</sup>वे<sup>३</sup>स्याव्<sup>३</sup> इस किताब को स्कूल वापस  
छू.यू ले जाओ ।

१७-३ निरंतरता बोधक प्रत्यय—'च' चीनी भाषा में क्रिया  
के बाद प्रत्यय 'च' जोड़कर निरंतरताबोधक स्वरूप सूचित किया  
जाता है । अगर वाक्य में कोई कर्म हो तो उसे क्रिया और प्रत्यय  
'च' के बाद रखना चाहिये; जैसे,

वो<sup>३</sup>च्यु<sup>३</sup>चाय् चळ<sup>३</sup> चान्<sup>३</sup>च पा मैं यहीं पर खड़ा रहूँगा ।  
था<sup>१</sup>चाय् इ<sup>३</sup>च पाङ् च्वो<sup>३</sup>च वह कुर्सी पर बैठा हुआ है ।  
था<sup>१</sup>छ्ट<sup>३</sup>च फान् (न) वह खाना खा रहा है ।

'च' के कुछ और नियम :

१- कभी-कभी अगर व्यापार हो चुका है और व्यापार का  
फल जारी है तो भी क्रिया के बाद 'च' का प्रयोग होता है; जैसे,

पू<sup>३</sup>पाङ् श्ये<sup>३</sup>च चि<sup>३</sup>क चुङ्क्वो<sup>३</sup>च् किताब पर कुछ चीनी  
शब्द लिखे हुए हैं ।

यहां लिखने (श्ये<sup>३</sup>) का व्यापार पूरा हो चुका है और  
चीनी शब्द अब भी किताब पर लिखे हुए हैं, इसलिये यहां निरंतरता  
प्रगट करने के लिये प्रत्यय 'च' का प्रयोग किया गया है ।

२- अगर दो व्यापार साथ-साथ हो रहे हों और पहला  
व्यापार दूसरे व्यापार की विधि या रीति का विधान करता है तो  
पहली क्रिया के बाद प्रत्यय 'च' जोड़ दिया जाता है; जैसे,

वो<sup>३</sup>मन् ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> च वो<sup>३</sup>च थान्<sup>३</sup>ह्वा<sup>३</sup> हम बैठकर बातें कर सकते हैं ।

श्येन्<sup>३</sup>षड् चान्<sup>३</sup>च च्याव्<sup>३</sup>षू<sup>३</sup> अध्यापक खड़े होकर पढ़ाते हैं ।

वो<sup>३</sup>मन् षू चौ<sup>३</sup>च छ्यू<sup>३</sup>त हम पैदल गये थे ।

३- वाक्य में प्रत्यय 'च' के साथ सहायक शब्द 'न' का प्रयोग भी कर सकते हैं; जैसे,

छवाङ्<sup>३</sup>हू क्वान्<sup>३</sup>च न खिड़की खुली है ।

वो<sup>३</sup>मन् चङ्<sup>३</sup>चाय् छू<sup>३</sup>च फान्<sup>३</sup>न हम अभी खाना खा रहे हैं ।

४- निरन्तरता बोधक स्वरूप के निषेधार्थक रूप में आम तौर से क्रिया के साथ क्रिया-विशेषण 'मै<sup>३</sup>यौ' का प्रयोग करते हैं :—

छवाङ्<sup>३</sup>हू मै<sup>३</sup>यौ क्वान्<sup>३</sup>च खिड़की बंद नहीं है,  
मन् क्वान्<sup>३</sup>च न दरवाजा बंद है ।

१७-४ प्रत्यय 'ळ' : चीनी भाषा में बहुत से ऐसे शब्द हैं जिनके अंत में स्वरों का उच्चारण 'ळ' के साथ किया जाता है । 'ळ' और उसके पूर्ववर्ती स्वर को जोड़कर एक शब्दांश बना दिया जाता है । कुछ शब्द 'ळ' को स्वर में जोड़कर बनाये जाते हैं, और कुछ मूल शब्दांश में से अंतिम स्वर या व्यंजन निकाल कर और मुख्य स्वर में 'ळ' मूल शब्दांश के बाद रख कर किया जाता है । यह 'ळ' 'अळ' (बच्चा, धुद्रता) से आया है, लेकिन इस तरह के शब्दों में यह अर्थ मुख्यतः प्रयुक्त नहीं होता । उदाहरण के लिये :

ह्वाळ<sup>३</sup>, कळ<sup>३</sup>, चळ<sup>३</sup>, नाळ<sup>३</sup>, नाळ<sup>३</sup> ?

षाव्<sup>३</sup>ळ<sup>३</sup>, श्याव्<sup>३</sup>हाळ<sup>३</sup>, फान्<sup>३</sup>क्वाळ<sup>३</sup>, इत्याळ<sup>३</sup>, इह्वाळ<sup>३</sup>,



## इस्वाय्ळ

ध्यान में रखना चाहिये कि दूसरी संज्ञाओं के साथ भी, जो हम पढ़ चुके हैं, 'ळ' का प्रयोग होता है; जैसे, षृ<sup>३</sup>हौ (समय) = षृ<sup>३</sup>हौळ, षृ<sup>३</sup> (बात, मामला) = षळ<sup>३</sup>

१७-५ "चाय् और यौ" इन दोनों क्रिया-विशेषणों से पुनरुक्ति सूचित होती है। लेकिन प्रयोग में ये दोनों एक दूसरे से भिन्न हैं :—

१- 'यौ' यह सूचित करता है कि किसी व्यापार या अवस्था की पुनरुक्ति या पुनरावृत्ति हो गई है,

च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>थ्येन् था<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>ल, वह कल आया था, आज भी  
चिन्<sup>३</sup>थ्येन् था<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>ल आया।

२- 'चाय्' भी पुनरुक्ति प्रगट करता है जिसका अर्थ होता है "एक बार और" आमतौर से इसका अर्थ यह होता है कि पुनरुक्ति होने वाली (या नहीं होने वाली) है, जैसे,

था<sup>३</sup> छृ<sup>३</sup>ल ल्याङ्<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup>फ़ान्<sup>३</sup>, उसने दो कटोरी खाना खा  
चाय्<sup>३</sup> याव् छृ<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>वान्<sup>३</sup> लिया है, और एक कटोरी  
चाहता है।

३- कभी कभी किसी व्यापार (खास तौर से नियतकालिक) की पुनरुक्ति अभी तक नहीं हुई है किन्तु वक्ता को पूर्ण विश्वास है कि पुनरुक्ति होकर रहेगी। ऐसी सूरत में भी "यौ" का प्रयोग होता है; जैसे,

मिङ्<sup>३</sup>थ्येन् यौ<sup>३</sup>षृ<sup>३</sup> लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup>ल्यु<sup>३</sup>- फिर से कल शनिवार आ  
ल। गया।

ह्वै<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup>त षृ<sup>३</sup>हौळ यौ<sup>३</sup> ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> देश लौटते समय फिर से मित्रों

खान<sup>४</sup>च्येन् फङ्<sup>५</sup>यौ ल के साथ मुलाकात होगी ।

४- अगर हम यह बताना चाहते हैं कि किसी व्यापार की पुनरुक्ति भूतकाल में नहीं हुई तो 'यौ<sup>४</sup>' की जगह 'चाय्<sup>४</sup>' का प्रयोग करते हैं । 'चाय्<sup>४</sup>' को 'मै<sup>३</sup>यौ' के बाद और क्रिया के पहले रखा जाता है; जैसे,

चुङ्<sup>३</sup>वेन्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>न्येन्<sup>३</sup>ल ई<sup>४</sup>न्येन्<sup>३</sup>, मैंने एक साल चीनी भाषा मै<sup>३</sup>यौ चाय्<sup>४</sup>न्येन्<sup>४</sup> । पढ़ी, उसके बाद और नहीं पढ़ी ।

## पाठ-१८

वो<sup>३</sup>यो<sup>३</sup>इक मै<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup>फड्<sup>३</sup>यौ ।  
था यौ इक श्याव्<sup>३</sup> न्यू<sup>३</sup> हाय्-  
च्, च्याव्<sup>३</sup>, आय्<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>वाड्<sup>३</sup>ल ।  
ना<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>याव्चिन्<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>मन ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>-  
च्याव्<sup>३</sup>था श्याव्<sup>३</sup>माव्ळ<sup>३</sup> ।

श्याव्<sup>३</sup>माव्ळ<sup>३</sup>चिन्<sup>३</sup>न्येन् पा<sup>३</sup>-  
स्वै<sup>३</sup>ल । यौ<sup>३</sup>इथ्येन्<sup>३</sup> था<sup>३</sup> चाय्  
लौ<sup>३</sup>षाड् कन् था ति<sup>३</sup>तिवाळ<sup>३</sup> ।  
था मु<sup>३</sup>छिन् चाय् छु<sup>३</sup>फाड्<sup>३</sup>लि  
च्. वो<sup>३</sup>फ्रान्<sup>३</sup> ।

ने<sup>३</sup>थ्येन् था मु<sup>३</sup>छिन् हन्<sup>३</sup>माड्<sup>३</sup>,  
स्वो<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> था श्याड्<sup>३</sup> चाव्<sup>३</sup>  
श्याव्<sup>३</sup>माव्ळ<sup>३</sup> षाड्<sup>३</sup>माड्<sup>३</sup>,  
“श्याव्<sup>३</sup>माव्ळ<sup>३</sup> नि<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>पाड्<sup>३</sup>-  
वो<sup>३</sup>इत्याळ<sup>३</sup> माड्<sup>३</sup> ।”

“लाय्<sup>३</sup>ल । लाय्<sup>३</sup>ल ।”—ख<sup>३</sup>-  
षु श्याव्<sup>३</sup>माव्ळ<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>छ्.यू<sup>३</sup> ।  
था<sup>३</sup>मु<sup>३</sup>छिन् यौ<sup>३</sup> च्याव्<sup>३</sup>था,

मेरा एक अमरीकी मित्र है ।  
उसकी एक छोटी (सी)  
लड़की है, जिसका नाम--ओह,  
मैं भूल गया । कोई बात नहीं,  
हम लोग उसे किटी कह  
सकते हैं ।

किटी इस वर्ष आठ वर्ष की  
हो गई है । एक दिन वह  
ऊपर अपने छोटे भाई के साथ  
खेल रही थी । उसकी माँ  
रसोईघर में खाना पका (बना)  
रही थी ।

उसकी माँ उस दिन बहुत  
व्यस्त थी, इसलिए वह किटी  
की सहायता चाहती थी ।  
“किटी, आओ और मेरी  
सहायता करो ।”

“आ रही हूँ, आ रही हूँ ।”  
परन्तु वह गई नहीं ।

उसकी माँ ने उसे फिर पुकारा



“श्याव्<sup>३</sup>माव्<sup>३</sup>ळ<sup>३</sup>, खाव्<sup>३</sup>श्या-  
लाय्<sup>३</sup>।” “लाय्<sup>३</sup>ल<sup>३</sup>।” ख<sup>३</sup>षृ  
था<sup>३</sup>हाय्<sup>३</sup>षृ मै<sup>३</sup>छ्यू<sup>३</sup>।

मु<sup>३</sup>छिन् ति सान्<sup>३</sup>छ् च्याव्<sup>३</sup>  
थात न्यू<sup>३</sup>अळः “श्याव्<sup>३</sup> मा-  
वळ<sup>३</sup>, नि<sup>३</sup>च<sup>३</sup>म्मा पुलाय्<sup>३</sup>?  
श्येन्<sup>३</sup>चाय्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>पि लाय्<sup>३</sup>ल<sup>३</sup>।  
वो<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>युङ्नि<sup>३</sup>पाङ्<sup>३</sup>माङ्<sup>३</sup>ल<sup>३</sup>।”

श्याव्<sup>३</sup>माव्<sup>३</sup>ळ<sup>३</sup> थिङ्<sup>३</sup>च्येन् चेक  
त्वा<sup>३</sup>च्यु श्या<sup>३</sup>छ्यू<sup>३</sup>ल<sup>३</sup>। था मु<sup>३</sup>-  
छिन् हन्<sup>३</sup> षङ्<sup>३</sup>छि<sup>३</sup>, “वो<sup>३</sup>-  
च्याव्<sup>३</sup>नि<sup>३</sup>, नि<sup>३</sup> वै<sup>३</sup>ष<sup>३</sup>म्मा  
पुलि<sup>३</sup>ख<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>? ”

श्याव्<sup>३</sup>माव्<sup>३</sup>ळ<sup>३</sup> खु<sup>३</sup>च त्वै<sup>३</sup>था मु<sup>३</sup>-  
छिन् ष्वो<sup>३</sup> “मा<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>चन् त्वै<sup>३</sup>-  
पुछि<sup>३</sup> निन्<sup>३</sup>। निन्<sup>३</sup>श्या<sup>३</sup>छ्  
चाय्<sup>३</sup> च्याव्<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>तिङ्  
लि<sup>३</sup>ख<sup>३</sup> च्यु<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>।”

था मु<sup>३</sup>छिन् थिङ्<sup>३</sup>च्येन् चे<sup>३</sup>क  
त्वा<sup>३</sup>च्यु पु<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup>छि<sup>३</sup>ल<sup>३</sup>।

(बुलाया), “किटी, जल्दी करो  
और नीचे आओ।” “आ रही  
हूँ, आ रही हूँ।” परन्तु वह  
फिर भी नहीं गई।

माँ ने अपनी पुत्री को तीसरी  
बार पुकारा (बुलाया), “किटी,  
तुम आती क्यों नहीं हो ?  
अब तुम्हें आने की आवश्यकता  
नहीं है। अब मुझे तुम्हारी  
सहायता नहीं चाहिए।”

जब किटी ने यह सुना तो वह  
नीचे गई। उसकी माँ बहुत  
नाराज थी। “मैं जब पुका-  
रती (बुलाती) हूँ तो तुम  
तुरन्त क्यों नहीं आती हो !”

किटी ने रोते हुए अपनी माँ  
से कहा: “माँ मुझे बहुत  
पश्चात्ताप है। आप जब मुझे  
अगली बार फिर पुकारेंगी  
(बुलाएंगी) तो मैं तुरन्त आ  
जाऊंगी।”

जब उसकी मा ने यह सुना तो  
वह नाराज नहीं रही।

### नये शब्द

त्वा<sup>३</sup> (मा) एक समय, घटना  
(बार)

मै<sup>३</sup> (संख्या) प्रत्येक छ<sup>३</sup> (मा) एक समय अवसर  
(बार)

स्वै<sup>४</sup> (मा.) वर्ष (आयु) क्रि०  
पिङ्<sup>४</sup> (सं०) बीमारी षङ्<sup>३</sup>छि<sup>४</sup> नाराज होना  
त्येन्<sup>३</sup>शिन् (सं०) स्वल्पहार यौ<sup>३</sup>पिङ्<sup>४</sup> अस्वस्थ होना  
छु<sup>३</sup>फाङ्<sup>३</sup> (सं०) रसोईघर खु<sup>३</sup> रोग

क्रि० वि०

छू<sup>३</sup>ङ्<sup>३</sup>छ्येन्<sup>३</sup> पहले वाङ्<sup>४</sup> भूलना  
(गतिशील)  
पु<sup>३</sup>ता<sup>४</sup> बहुत नहीं मिङ्<sup>३</sup>पाय् समझना (स्पष्ट रूप से)  
च्यु<sup>४</sup> तुरंत खान्<sup>४</sup>च्येन् देखना  
लि<sup>४</sup>ख<sup>४</sup> (च्यु) तुरंत थिङ्<sup>३</sup>च्येन् सुनना  
च<sup>३</sup>म्मा क्यों? ऐसा पिङ्<sup>४</sup>ल अस्वस्थ या बीमार  
कैसे है कि ? होना या हो गया

वि०

छिङ्<sup>३</sup>ल्ल हाव्<sup>३</sup>ल फिर से स्वस्थ हो  
छिङ्<sup>३</sup>ल्ल स्पष्ट जाना, तैयार रहना,  
(अर्थ में) तैयार है (खाना  
काव्<sup>३</sup>शिङ्<sup>४</sup> प्रसन्न आदि)  
ह्वाय्<sup>३</sup>ल खराब हो जाना  
षु<sup>३</sup>फु आराम से (खाना आदि),  
(रहना) ठीक से कार्य करने  
पु पु<sup>३</sup> फु कष्ट में होना,  
अस्वस्थ की दशा में न रहना

क्रि०

क०

- ह्वाय् बुरा होना थौ<sup>२</sup>(उप०) प्रथम(देखिए नोट ५)  
 पु ह्वाय् बुरा न होना, च<sup>३</sup>म्(मा)ल क्या हुआ ? क्या  
 अच्छा होना । मामला है ?

### उदाहरणमाला

(क) 'ल' के साथ अवस्था-परिवर्तन

- १- श्येन्<sup>१</sup>चाय्<sup>२</sup> तुङ्<sup>३</sup>शि तौ<sup>४</sup> क्वै<sup>५</sup>ल सभी वस्तुएं अब महंगी हो गई हैं ।
- २- वो<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup>त रौ<sup>४</sup> इ<sup>३</sup>चिङ्<sup>३</sup> ह्वाय्<sup>३</sup>ल । जो मांस मैंने कल खरीदा था वह पहले ही खराब हो चुका है ।
- ३- था<sup>१</sup>कु<sup>२</sup>छिन्<sup>३</sup> लाव्<sup>३</sup>ल, पुनङ्<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>षू<sup>३</sup>ल । उसके पिता वृद्ध हो गए हैं । अब काम नहीं कर सकते ।
- ४- था<sup>१</sup>च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> हन्<sup>३</sup>हाव्<sup>३</sup>, ख<sup>३</sup>- षृ<sup>३</sup>चिन्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> था<sup>१</sup>यौ<sup>४</sup> पु हाव्<sup>३</sup>- ल । कल वह बहुत अच्छा था, परन्तु आज वह फिर अस्वस्थ हो गया है ।
- ५- च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> था<sup>१</sup> ष्वो<sup>३</sup>था<sup>१</sup>इ<sup>३</sup>- तिङ्<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup>, चिन्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> था<sup>१</sup>ष्वो<sup>३</sup> पु लाय्<sup>३</sup>ल । कल उसने कहा था कि वह अवश्य आयेगा । आज वह कहता है कि वह नहीं आ रहा है ।
- ६- निन्<sup>३</sup>हाय्<sup>३</sup>याव्<sup>३</sup>षम्मा । पु<sup>३</sup>- याव्<sup>३</sup> षम्मा ल । आपको और क्या चाहिए ? अब कुछ नहीं (चाहिए) ।
- ७- वो<sup>३</sup>छूङ्<sup>३</sup>छ्येन्<sup>३</sup> ह्वै<sup>३</sup>ष्वो<sup>३</sup> फा<sup>३</sup>- वेन्<sup>३</sup> । श्येन्<sup>१</sup>चाय्<sup>२</sup> पु<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup> ल । पहले मैं फ्रेंच (भाषा) बोल सकता था । अब मैं नहीं बोल सकता हूँ ।



- ८- छूङ्<sup>२</sup>छ्येन्<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> पु<sup>२</sup>आय् छू<sup>१</sup> पहले मैं चीनी भोजन पसन्द  
चुङ्<sup>१</sup>वो<sup>२</sup> फ़ान्<sup>१</sup> । श्येन्<sup>१</sup>- नहीं करता था । अब मैं बहुत  
चाय्<sup>१</sup>वो<sup>३</sup>हन्<sup>३</sup>आय्<sup>१</sup>छू<sup>१</sup>ल । पसन्द करता हूँ ।
- ९- था<sup>१</sup>छ्यू<sup>१</sup>न्येन्<sup>३</sup>मै<sup>३</sup>छ्येन्<sup>३</sup>, ख<sup>३</sup>- पिछले वर्ष वह निर्धन था,  
पृ था<sup>१</sup>चिन्<sup>१</sup>न्येन्<sup>३</sup>यौ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>३</sup>- परन्तु इस वर्ष वह धनी हो  
ल । गया है ।

(ख) 'ल' के साथ आसन्न भविष्यकाल

- १- छू<sup>१</sup>फ़ान्<sup>१</sup>त पृ<sup>३</sup>हौ ख्वाय्<sup>१</sup>ताव्<sup>१</sup>- अब भोजन का समय है ।  
ल ।
- २- ख्वाय्<sup>१</sup>खाय्<sup>१</sup>छू<sup>१</sup>ल । छिङ्<sup>३</sup> रेलगाड़ी छूटने वाली है ।  
पाङ्<sup>१</sup>छ । कृपया (सब लोग) गाड़ी पर  
सवार हो जाइए ।
- ३- वो<sup>३</sup>मन् इ<sup>१</sup>ह्वै<sup>३</sup>छ<sup>३</sup> च्यु<sup>१</sup>पाङ्<sup>१</sup>- हम लोग थोड़े समय में कक्षा  
ख<sup>१</sup>ल । में जाने वाले हैं ।
- ४- लि<sup>३</sup>श्येन्<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup>च्यु<sup>१</sup>याव् चौ ल । ली महोदय अभी जाने ही  
वाले हैं ।
- ५- त्वै<sup>१</sup>पु छि<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>तै<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup>छ्यू<sup>१</sup>ल । मुझे दुःख है, परन्तु मुझे  
वापस जाना ही है ।
- ६- पृ<sup>३</sup>हौ ताव्<sup>३</sup>ल, वो<sup>३</sup>मन् तै चौ ल । समय समाप्त हो गया है, हमें  
जाना चाहिए ।

१. क्रियापद के पहले ('किस समय') क्रियाभापक शब्द

- १- श्या<sup>१</sup>ह्वै वो<sup>३</sup> इ<sup>१</sup>तिङ्<sup>१</sup>कन्<sup>१</sup>नि<sup>३</sup> अगली बार मैं तुम्हारे साथ  
छ्यू<sup>१</sup> । अवश्य जाऊंगा ।
- २- चे<sup>१</sup>पृ वो ति अळ<sup>१</sup>ह्वै छू<sup>१</sup>चुङ्<sup>१</sup>- यह दूसरी बार है कि मैंने  
वो<sup>३</sup> फ़ान्<sup>१</sup>, थौ<sup>३</sup>इह्वै<sup>३</sup>पृ चीनी भोजन किया है । पहली

- चाय्\* लि<sup>३</sup>श्येन्<sup>१</sup>षड् च्या<sup>१</sup>छ्- त । बार ली महोदय के घर पर किया था ।
- ३- वो<sup>३</sup>मै<sup>३</sup>छ् ताव्<sup>१</sup> था च्या<sup>१</sup>छ्, हर बार जब मैं उसके घर था<sup>१</sup> तौ<sup>१</sup> कै<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>छा<sup>३</sup> ह<sup>१</sup>, कै<sup>३</sup> जाता हूँ, वह मुझे चाय और वो<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup>शिन् छ्<sup>१</sup> । मिठाई देता है ।

२. क्रिया के बाद ('व्यतीत समय') क्रिया-मापक शब्द

- १- नि<sup>३</sup>ताव् मड्<sup>३</sup>माय् छ्यल् त्वो- तुम बंबई कितनी बार गये  
षाव् ह्वै<sup>३</sup>ल । हो ?
- २- वो<sup>३</sup> ताव् था<sup>१</sup>च्या<sup>१</sup> छ्यल् मैं उसके घर कई बार गया  
हाव्<sup>३</sup>चि<sup>३</sup>छ् ल । हूँ ।
- ३- था<sup>१</sup>ष्वो<sup>१</sup>ल स्च्उ<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>- उसने चार या पांच बार कहा,  
हाय्<sup>३</sup>षृ पुमिड्<sup>३</sup>पाय् था<sup>१</sup>त इ<sup>३</sup>- परन्तु मैं उसका अर्थ नहीं  
स्च् । समझा ।
- ४- छिड्<sup>३</sup>निन्<sup>३</sup> चाय्<sup>१</sup>ष्वो<sup>१</sup> इह्वै<sup>३</sup> । कृपया फिर कहिए ।\*

## व्याकरण

१८-१ हम पाठ १२ व १५ में सीख चुके हैं कि 'ल' का प्रयोग क्रिया-प्रत्यय के रूप में किया जा सकता है, जिससे कि क्रिया की पूर्णता सूचित होती है। इसका प्रयोग भावदर्शक सहायक शब्द के रूप में किसी व्यापार की पूर्णता सूचित करने के लिए भी किया जाता है।

१. इसके अलावा, 'ल' का प्रयोग कोई नई परिस्थिति या अवस्था सूचित करने के लिए भी विशेष्य (विधेय) वाक्य में किया जाता है; जैसे,

- चिन्<sup>१</sup>ध्येन् त ईन्<sup>३</sup>तु<sup>३</sup> षृ<sup>३</sup> ईन्<sup>३</sup>- आजका भारत भारत-  
तु<sup>३</sup>रन्<sup>३</sup>मिन्<sup>३</sup>त ल । वासी का हो गया है, (पहले

नहीं था) ।

था<sup>१</sup> हाव<sup>३</sup>ल

वह अब अच्छा हो गया है,  
(पहले नहीं था) ।

कौ<sup>१</sup>पु<sup>३</sup>कौ ? कौ<sup>३</sup>ल ।

पर्याप्त है या नहीं ? पर्याप्त है ।

श्येन्<sup>३</sup>चाय<sup>३</sup> पुनान्<sup>३</sup>ल

अब मुश्किल नहीं (है) ।

था<sup>१</sup> मै<sup>३</sup>शि<sup>३</sup>वाङ् ल

अब उसके लिए कोई आशा  
नहीं है ।

यहां ध्यान रखने योग्य बात यह है कि क्रिया-कर्म पद 'मै<sup>३</sup>शि<sup>३</sup>-वाङ्' को विशेषण पद भी मान सकते हैं; (यो<sup>३</sup>छ्येन्<sup>३</sup>, यौ<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>स्च्, इत्यादि तुलनीय है) ।

२. विशेष्य-वाक्य व विशेषण-वाक्य के अलावा दूसरी क्रियाओं के साथ भी 'ल' का प्रयोग इस अर्थ में होता है; जैसे,

च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> वो यौ छ्येन्<sup>३</sup>, कल मेरे पास पैसे थे, आज  
चिन्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>यौल, चिन्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> नहीं हैं, इसलिए आज किताबें  
पु<sup>३</sup>नङ्<sup>३</sup>माय<sup>३</sup>षू<sup>३</sup> । नहीं खरीद सकता ।

यह बताना उचित होगा कि 'पु<sup>३</sup>' और 'मै<sup>३</sup>यौ' के प्रयोग से वाक्यों के "अब नहीं", "आखिरकार नहीं" जैसे अर्थ होते हैं । कुछ और उदाहरण :

था<sup>१</sup>पु<sup>३</sup>याव<sup>३</sup>ल

वह अब नहीं चाहता ।

वो<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>छ्यूल

आखिरकार मैं नहीं जा रहा हूँ ।

वो<sup>३</sup>मन् पु<sup>३</sup>चाय<sup>३</sup> चळ<sup>३</sup>चु<sup>३</sup>ल

हम अब यहां नहीं रह रहे हैं  
(या रहते हैं) ।

३- सहायक क्रिया युक्त कुछ वाक्यों के साथ 'ल' जोड़ देने से भी किसी नई परिस्थिति अथवा अवस्था का बोध होता है; जैसे,



वो<sup>३</sup>मन तौ<sup>१</sup>ह्वो<sup>१</sup> इत्याळ<sup>३</sup> अब हम थोड़ी सी चीनी बोल  
चुङ्<sup>३</sup>कवो<sup>३</sup>ह्वा ल । लेते हैं ।

वो<sup>३</sup>पुइयाङ्<sup>३</sup>छ्यू<sup>३</sup>ल । अब मैं नहीं जाना चाहता ।  
नी<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>पि लाय्<sup>३</sup>ल अब तुम्हें आने की जरूरत  
नहीं ।

वो<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>आय् छू<sup>३</sup>थाङ्<sup>३</sup>ल अब मैं मिठाई (या मिश्री)  
खाना पसन्द नहीं करता ।

१८-२ 'ल' का भविष्य काल में प्रयोग : जब हम कोई ऐसा व्यापार या अवस्था व्यक्त करना चाहते हैं जो कि अभी होने ही वाली है, तो हम विधेय में 'ख्याय्' 'च्यु' आदि क्रिया-विशेषण या 'याव्', (चाहना, चाहिये) आदि सहायक क्रिया के साथ सहायक शब्द 'ल' का प्रयोग करते हैं। ऐसे वाक्यों का मतलब होता है "(करने) वाले हैं", और इस तरह के वाक्यों का प्रयोग तभी किया जाता है जबकि कोई व्यापार या अवस्था होना निश्चित है और वक्ता यह सोचता है कि व्यापार या अवस्था तुरन्त हो जाएगी; जैसे,

लि<sup>३</sup>श्येन्<sup>३</sup>षङ्<sup>३</sup>ख्याय्<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>ल मि० ली जल्दी ही आ जाएंगे ।

हाय्<sup>३</sup>च् ख्वाय्<sup>३</sup>हाव्<sup>३</sup>ल बच्चा जल्दी अच्छा हो जाएगा ।

वो<sup>३</sup>तै<sup>३</sup>चौ<sup>३</sup>ल । चाय्<sup>३</sup>च्येन्<sup>३</sup>पा मुझे जाना है । नमस्ते ।

जब 'याव्' के पहले 'च्यु' या 'ख्याय्' आता है तो व्यापार तुरन्त होने की भावना और गहरी हो जाती है, और "च्यु<sup>३</sup>याव्<sup>३</sup>... ल" द्वारा व्यक्त व्यापार और भी जल्दी हो जाता है; जैसे,

था<sup>३</sup>मन् च्यु<sup>३</sup>याव् ताव्<sup>३</sup>ल—वे लोग अभी-अभी आ जाएंगे  
(या सेकंडों में आ जाएंगे) ।

ख्याय्<sup>३</sup>याव् षाङ्<sup>३</sup>ख<sup>३</sup>ल—क्लास शुरू होने वाली ही है ।  
(या पाठ शुरू होने वाला ही है) ।

यहां एक बात ध्यान में रखनी चाहिए कि “ख्वाय् याव्... ल” के साथ कोई कालवाचक शब्द या वाक्यखंड क्रियाविशेषण के रूप में प्रयुक्त नहीं हो सकता । हम “सान् फन् चुङ् इ<sup>३</sup>हौ<sup>३</sup> च्यु<sup>३</sup>याव्<sup>३</sup>षाङ्- ख<sup>३</sup>ल” (तीन मिनट बाद ही पाठ शुरू होने वाला है) कह सकते हैं, लेकिन यह नहीं कह सकते : “सान् फन् चुङ् इ<sup>३</sup>हौ<sup>३</sup> ख्वाय् याव्<sup>३</sup>षाङ् ख<sup>३</sup>ल” । (फन् = मिनट, पाठ १६ देखिए; इ<sup>३</sup>हौ<sup>३</sup> = बाद में, पाठ २० देखिए) ।

१८-३ किया मापक शब्द ‘छ्<sup>३</sup>’ और ‘ह्वै<sup>३</sup>’ : चीनी भाषा में संज्ञामापक शब्दों के अलावा क्रिया मापक शब्द भी होते हैं, लेकिन प्रयोग में वो एक समान नहीं है । संज्ञा मापक शब्द और अंक विशेषण के रूप में संज्ञा के पहले साथ-साथ प्रयुक्त होते हैं । लेकिन क्रिया मापक शब्द ‘छ्<sup>३</sup>’ और ‘ह्वै<sup>३</sup>’ क्रिया के पहले और बाद में दोनों स्थान पर प्रयुक्त होते हैं । नियम इस प्रकार है :

१- जब कोई निश्चित समय के लिए निश्चय वाचक शब्दों के साथ ‘छ्<sup>३</sup>’ और ‘ह्वै<sup>३</sup>’ जोड़े जाते हैं तो ये क्रिया के पहले प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

वो<sup>३</sup> ति इ<sup>३</sup>छ्<sup>३</sup>यू<sup>३</sup>, था<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>चाय् च्या<sup>३</sup> मैं जब पहली बार गया तब वह घर पर नहीं था ।

था<sup>३</sup>चे<sup>३</sup>चि<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup>लाय् मै<sup>३</sup>ताय् च पू<sup>३</sup> पिछले कई बार आने के वक्त वह बगैर किताब लिये ही आया था ।

२- अन्य स्थान पर ‘छ्<sup>३</sup>’ और ‘ह्वै<sup>३</sup>’ क्रिया के बाद जोड़े जाते हैं; जैसे,

षाङ् लि<sup>३</sup>पाय् था<sup>३</sup>लाय् ल त्याङ् छ्<sup>३</sup> पिछले हफ्ते वह दो बार आया था ।

वो<sup>३</sup>छ्<sup>३</sup>यू<sup>३</sup>ल हाव् चि<sup>३</sup>ह्वै<sup>३</sup>ल मैं अब तक कई बार जा चुका हूँ ।



अगर कर्म हो तो क्रिया मापक शब्दों के बाद ही प्रयुक्त होता है; जैसे,

वो<sup>३</sup>छू<sup>१</sup>ल ल्याङ्<sup>३</sup>छ<sup>४</sup> चुङ्<sup>१</sup>क्वो<sup>२</sup> फ़ान्<sup>१</sup>ल मैंने दो बार चीनी खाना खाया ।

लेकिन अगर यह कर्म पुरुषवाचक संज्ञा या स्थानवाचक शब्द हो तो वह क्रिया मापक शब्द के पहले जोड़ा जाता है; जैसे,

वो<sup>३</sup>छू<sup>१</sup>यू<sup>१</sup>न्येन् खान्<sup>१</sup>च्येन् था<sup>१</sup> षू<sup>२</sup> मैंने पिछले साल उसे दस चि<sup>३</sup>ह्वै<sup>२</sup> । पन्द्रह बार देखा था ।

वो<sup>३</sup>षाङ्<sup>१</sup>पै<sup>३</sup>चिङ्<sup>१</sup> पु<sup>१</sup>षाव्<sup>३</sup> छल । मैं अब तक अनेक बार पेकिंग जा चुका हूँ ।

वो<sup>३</sup>काव्<sup>१</sup>सु (ल) था<sup>१</sup>हाव्<sup>३</sup> चि<sup>३</sup> मैं उसको बहुत बार बता ह्वै<sup>२</sup>ल । चुका हूँ ।

१८-४ क्रियाओं की रिरुक्ति : हम यह सीख चुके हैं कि क्रियाओं की द्विरुक्ति करके उनका प्रयोग किया जा सकता है । (व्याकरण नोट ६-५) । क्रिया की द्विरुक्ति से लघु तथा शीघ्र व्यापार का भाव प्रकट होता है । क्रिया की पूर्णता व्यक्त करने के लिए प्रत्यय 'ल' का प्रयोग सिर्फ द्विरुक्त क्रियाओं के दोनों रूपों में से पहले के साथ ही होता है; जैसे;

वो<sup>३</sup>मन् चाय् वाय्<sup>१</sup>थौ चौ<sup>३</sup>ल हम (थोड़ी देर के लिए) बाहर इ चौ<sup>३</sup> से टहल कर आए ।

वो<sup>३</sup>श्याङ्<sup>३</sup>ल इश्याङ्<sup>३</sup>च्यु छ्यू<sup>१</sup>ल मैंने सोचा और चल दिया ।

१८-५ क्रमवाचक उपसर्ग 'ति<sup>१</sup>' व 'थौ<sup>२</sup>' : उपसर्ग 'ति<sup>१</sup>' का अर्थ हिन्दी के (पह) ला, (दूस) रा, (तीस) रा, (चौ) था, (पांच) वाँ, जैसा है; इससे किसी एक प्राणी, वस्तु, समय अथवा किसी भी श्रेणी या किसी भी वर्ग की एक ही इकाई सूचित होती है । जैसे "ति<sup>१</sup>इ<sup>१</sup>" (नंबर एक, पहला) "ति<sup>१</sup>अळ<sup>१</sup>क" (दूसरा), आदि है ।



लेकिन क्रमवाचक 'थौ२' पहला एक या एक से ज्यादा व्यक्ति या वस्तु सूचित करता है; जैसे, थौ३इ३क३ (पहला आदमी), थौ३ल्याइ३क३ रन्३ (पहले दो आदमी) थौ३पृ३थ्येन्३ (पहले दस दिन), इत्यादि।

१८-६ 'च्यु३पृ' इत्यादि : हम लोग जानते हैं कि योजक 'पृ३' का प्रयोग केवल विशेष्य-विधेय वाक्य में होता है। लेकिन 'पृ३' बल भी प्रगट कर सकता है, अगर इसका प्रयोग किसी भी वाक्य के विधेय में किया जाए। यहां 'पृ३' का अर्थ होता है "ही" "सचमुच" या "वास्तव में"; जैसे,

था३ पृ३छुइ३मिड् वह सचमुच बुद्धिमान हैं।

पृ३चेक३हाव्३ वास्तव में यह अच्छा है।

बल प्रगट करने के लिए 'पृ३' के पहले 'च्यु३' 'हाय्३' इत्यादि भी प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

वो३च्यु३पृ पु३शि३ह्वान् च३वो३ मैं सचमुच खाना बनाना पसंद फान्३ नहीं करता।

हाय्३पृ चे३क हाव्३ (वास्तव में) यही अच्छा है।

चे३क हाय्३च३ चन्३पृ छुइ३मिड् यह बच्चा सचमुच बुद्धिमान है।

नि३च्यु३ पृ वो३त शि३वाइ३ तुम्हीं मेरा भरोसा हो।

हम यह बता चुके हैं कि बोलचाल की भाषा में कुछ साधारण और छोटे वाक्यों में योजक 'पृ३' का प्रयोग नहीं होता (व्याकरण नोट १३-४)

उम्र पूछने के समय भी वाक्य में 'पृ३' का प्रयोग जरूरी नहीं है। इसका कारण यह है कि जब विधेय में एक अंक या कई अंक होते हैं तब योजक का प्रयोजन नहीं होता; जैसे,

नि३अळ३पृ३चि३ स्वै३ आप कितने साल के हैं।

(शब्दार्थ : आप बीस के ऊपर कितने साल के हैं)

वो३अळ३पृ३छि३ स्वै३ मैं सत्ताईस साल का हूँ।

## पाठ-१६

- क- नि<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>थ्येन् चाव्<sup>३</sup>षाड् ष<sup>३</sup>म्मा  
पृ<sup>३</sup>हौ छि<sup>३</sup>लाय् ? प्रत्येक दिन प्रातः तुम कितने  
बजे उठते हो ?
- ख- वो<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>थ्येन् छा<sup>३</sup>पुत्वो<sup>३</sup> ल्यु<sup>३</sup>-  
त्येन्चुड्<sup>३</sup> छि<sup>३</sup>लाय् । प्रत्येक दिन मैं लगभग ६ बजे  
उठता हूँ ।
- क- नि<sup>३</sup> चि<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुड्<sup>३</sup> छू<sup>३</sup> चाव्<sup>३</sup>-  
फान्<sup>३</sup> ? तुम नाश्ता किस समय करते  
हो ?
- ख- ल्यु त्येन्<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> ख<sup>३</sup> । पौने सात बजे ।
- क- नि<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>थ्येन् च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup> षृ<sup>३</sup>च<sup>३</sup>वो  
चि<sup>३</sup>क चुड्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> ? तुम प्रत्येक दिन कितने घंटे  
काम करते हो ?
- ख- छि<sup>३</sup>क चुड्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup> । षाड्<sup>३</sup> उ<sup>३</sup>,  
छूड्<sup>३</sup> पा<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>पान्<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो-  
ताव् षृअळ<sup>३</sup>त्येन्, श्या<sup>३</sup>उ<sup>३</sup>,  
छूड्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup> ख<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>  
ताव् स्क्<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>सान्<sup>३</sup>ख<sup>३</sup> । याव्<sup>३</sup>  
षृ षृछिड्<sup>३</sup> माड्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> च्यु  
च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>ताव् उ<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>त्वो<sup>३</sup>चुड्<sup>३</sup> । सात घंटे । मैं दोपहर से  
पहले ८.३० से १२ बजे  
तक काम करता हूँ, दोपहर  
के बाद १.१५ से ४.४५ तक ।  
यदि ज्यादा काम हो तो ५  
बजे के बाद तक काम करता  
हूँ ।
- क- नि<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>षृ<sup>३</sup>त षृ<sup>३</sup>हौ च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>  
ष<sup>३</sup>म्मा ? तुम जब काम नहीं कर रहे  
होते हो तो क्या करते हो ?

ख- यौ<sup>३</sup>त षृ<sup>३</sup>हौचाय् षृ<sup>३</sup>फाङ्<sup>३</sup>लि कभी मैं अध्ययन कक्ष में पढ़ता  
 खान्<sup>४</sup>खान्<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup>, यौ<sup>३</sup>त षृ<sup>३</sup>हौवो<sup>३</sup> हूँ, कभी मैं ऊपर बच्चों के  
 चाय् लौ<sup>३</sup>षाङ् कन् हाय्<sup>३</sup>च्मन् साथ खेलता हूँ ।  
 वाळ<sup>३</sup> ।

## नये शब्द

### क्रि० वि०

षाङ् <sup>४</sup> उ <sup>३</sup>	(गतिशील) (सं० भी है)	दोपहर से पहले
चुङ् <sup>३</sup> उ <sup>३</sup>	" "	दोपहर
श्या उ <sup>३</sup>	" "	दोपहर के बाद
पाय् <sup>२</sup> थ्येन्	" "	दिन के समय, दिन में
ये <sup>४</sup> लि	" "	रात के समय, रात में
इ <sup>२</sup> ये <sup>४</sup>	" "	एक रात, पूरी रात
काङ् <sup>३</sup> छाया <sup>२</sup>	(गतिशील)	कुछ ही क्षण पहले
याव् <sup>४</sup> षृ	(गतिशील)	यदि
काङ् <sup>३</sup> (काङ्)		अभी, इसी मिनट
छा <sup>४</sup>		कम (होना)
ख <sup>३</sup>		वास्तव में, अवश्य,
		फिर भी

### मा०

-त्येन् <sup>३</sup>	घंटा
-ख <sup>४</sup>	१५ मिनट
-फन् <sup>३</sup>	मिनट
-ये <sup>४</sup>	रात

### सं०

ऋ <sup>४</sup> च्	दिन, एक विशेष दिन
-------------------	-------------------



चुङ्<sup>१</sup> थौ<sup>२</sup>  
उ<sup>३</sup> फान्<sup>४</sup>

वि०

चाव्<sup>३</sup>  
वान्<sup>३</sup>  
है<sup>१</sup>

पाय्<sup>२</sup>  
ल्याङ्<sup>४</sup>

एक घंटा  
दोपहर का खाना

शीघ्र होना  
देर होना  
काला होना, गहरा  
अंधकार  
सफेद होना, सफेद  
प्रकाशित या चमकीला  
होना (अंधकार के  
विपरीत)

क्रि०

क्वो<sup>४</sup>  
छि<sup>३</sup> लाय्  
काव्<sup>४</sup> सु (ङ्)  
ष्वै<sup>४</sup> च्याव्<sup>४</sup> (क्रि० क०)  
छा<sup>४</sup>पुत्वो<sup>१</sup> (मुहावरेदार वाक्य)  
च<sup>३</sup>म्मा पान्<sup>४</sup> ?       "

गुजरना, अतीत  
खड़ा होना, उदय होना  
बताना, सूचित करना  
सोना  
लगभग  
इसके बारे में क्या हो  
सकता है ?

समय

इ<sup>४</sup> त्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>१</sup>  
इ<sup>४</sup> त्येन्<sup>३</sup> षू<sup>२</sup> फन्<sup>१</sup>  
इ<sup>४</sup> त्येन्<sup>३</sup> षू<sup>२</sup> उ<sup>३</sup>फन्  
(अथवा इ<sup>४</sup> त्येन्<sup>३</sup> इ<sup>२</sup> ख<sup>४</sup>)  
इ<sup>४</sup> त्येन्<sup>३</sup> अळ<sup>४</sup> षू<sup>२</sup> फन्<sup>१</sup>  
इ<sup>४</sup> त्येन्<sup>३</sup> सान्<sup>१</sup> षू<sup>२</sup> फन्  
(अथवा इ<sup>१</sup> त्येन्<sup>३</sup> पान्<sup>४</sup>)

एक बजे  
एक दस (एक बजकर  
दस मिनट)  
सवा बजे या एक बज-  
कर १५ मिनट  
एक बीस  
एक तीस या डेढ़

इ<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> स्च्<sup>४</sup> ष<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> फन्<sup>३</sup>  
(अथवा इ<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> ख<sup>३</sup>)

इ<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> ष<sup>३</sup> फन्<sup>३</sup>

ल्याङ्<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

ल्याङ्<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

इ<sup>३</sup> फन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

ल्याङ्<sup>३</sup> फन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

स्च्<sup>४</sup> उ<sup>३</sup> फन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

षृ<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> फन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

(या इ<sup>३</sup> ख<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>)

सान्<sup>३</sup> षृ<sup>३</sup> फन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

(या पान्<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>)

स्च्<sup>४</sup> षृ<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> फन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

(या सान्<sup>३</sup> ख<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>)

इ<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

इ<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> त्वो<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

इ<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> (लिङ्<sup>३</sup>) षृ<sup>३</sup> फन्<sup>३</sup>

इ<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> ख<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>

पान्<sup>३</sup> क चुङ्<sup>३</sup> थौ<sup>३</sup>

इ<sup>३</sup> क चुङ्<sup>३</sup> थौ<sup>३</sup>

इ<sup>३</sup> क त्वो<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> थौ<sup>३</sup>

इ<sup>३</sup> क पान्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> थौ<sup>३</sup>

स्च्<sup>४</sup> उ<sup>३</sup> क चुङ्<sup>३</sup> थौ<sup>३</sup>

एक पैतालीस, या दो  
बजने में १५ मिनट

एक पचास

दो बजे

दो बजे के पश्चात्

एक मिनट

दो मिनट

४ या ५ मिनट

१५ मिनट (या चौथाई  
घंटा)

३० मिनट (या आधा  
घंटा)

४५ मिनट (या पौना  
घंटा)

एक घंटा

एक घंटे से अधिक

एक घंटा १० मिनट

१ घंटा ४५ मिनट

आधा घंटा

एक घंटा

एक घंटे से अधिक

डेढ़ घंटे

४ या ५ घंटे

## उदाहरणमाला

(क) 'किस समय'

१- छ<sup>३</sup> ष<sup>३</sup> म्मा षृ<sup>३</sup> हौ रेलगाड़ी कितने बजे आती  
ताव<sup>३</sup> ? इया<sup>३</sup> उ<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> है ? दोपहर के बाद ३-५०

उ<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>फन् ताव् ।

पर ।

- २- वो<sup>३</sup>मन् मिङ्<sup>३</sup>थ्येन् चि<sup>३</sup> कल किस समय पर हम चलेंगे ?  
 त्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> छू<sup>३</sup>यू<sup>३</sup>? सुबह ९ बजे के लिए क्या विचार  
 चाव्<sup>३</sup>पाङ् च्यु<sup>३</sup>त्येन् है ?  
 चुङ्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> पुहाव् ?
- ३- नि<sup>३</sup>श्या<sup>३</sup> लि<sup>३</sup>पाय् सान्<sup>३</sup> अगले बुधवार को कितने बजे यहाँ  
 चि<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> ताव् आ रहे हो ? मैं पौने ग्यारह बजे  
 वो<sup>३</sup>चळ<sup>३</sup> लाय्<sup>३</sup> ? वो आ रहा हूँ ।  
 षू<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>सान्<sup>३</sup>ख लाय्<sup>३</sup> ।
- ४- वाङ्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup>षङ् षू षम्मा मि० वांग कितने बजे गये ? वह  
 षू<sup>३</sup>हौ चौ<sup>३</sup>त ? था<sup>३</sup> षू आज दोपहर से पहले ११ बज कर  
 चिन्<sup>३</sup>थ्येन् षाङ्<sup>३</sup>उ<sup>३</sup> षू- १० मिनट पर गये ।  
 इ<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup> षू<sup>३</sup>फन् चौ<sup>३</sup>त ।
- ५- छी<sup>३</sup> षू चि<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup> ताव् (रेल) गाड़ी कितने बजे यहाँ आई  
 चळ<sup>३</sup>त ? (या ताव्<sup>३</sup>त चळ<sup>३</sup>?) थी (पहुंची थी) ? सवा चार बजे ।  
 स्च्<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup> इ ख<sup>३</sup>

### (ख) व्यतीत समय

- १- वो<sup>३</sup> चिन्<sup>३</sup>थ्येन् इ<sup>३</sup>चिङ् आज मैं पहले ही ८ घंटे पढ़ चुका  
 न्येन्<sup>३</sup>ल पा<sup>३</sup>क चुङ्<sup>३</sup>थौ त हूँ । यह तो वास्तव में बहुत है ।  
 षू<sup>३</sup> ल । ना<sup>३</sup> ख<sup>३</sup> चन्<sup>३</sup>  
 पुषाव्<sup>३</sup> ।
- २- था<sup>३</sup> कन्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> थान्<sup>३</sup> ल उसने एक घंटे से अधिक मुझसे  
 इ<sup>३</sup>कत्वो<sup>३</sup> चुङ्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup>त ह्वा<sup>३</sup> बातें की और फिर लौट गया ।  
 च्यु ह्वै<sup>३</sup>छ्यू ल ।
- ३- था<sup>३</sup> कन्<sup>३</sup> वो<sup>३</sup>मन् हाय्<sup>३</sup>च् वह हमारे बच्चों के साथ लगभग  
 वाळ<sup>३</sup>ल छा<sup>३</sup>पुत्वो<sup>३</sup> सान्<sup>३</sup> ३ घंटे खेला ।  
 क चुङ्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup>ल ।



- ४- वो<sup>३</sup> तड्<sup>३</sup> था सान्<sup>१</sup>ख चुङ्<sup>१</sup>ल । वो<sup>३</sup> चाय्<sup>१</sup>तड्<sup>३</sup> पान्<sup>१</sup>त्येन्<sup>३</sup> चुङ्<sup>१</sup> । याव्<sup>१</sup>- ष्<sup>१</sup> था<sup>१</sup> पु लाय्<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup> च्यु तै<sup>३</sup> चौ<sup>३</sup> । मैं उसकी पौन घंटे से प्रतीक्षा कर रहा हूँ । मैं आधा घंटा और प्रतीक्षा करूंगा, और यदि वह नहीं आता है तो मैं अवश्य चला जाऊंगा ।
- ५- नि<sup>३</sup> थ्येन्<sup>१</sup>थ्येन्<sup>१</sup> ष्वै<sup>१</sup> च्याव्<sup>१</sup>, ष्वै<sup>१</sup> चि<sup>३</sup>क चुङ्<sup>१</sup>- थौ<sup>३</sup> ? वो<sup>३</sup> ष्वै<sup>१</sup> छि<sup>३</sup>क चुङ्<sup>१</sup> थौ<sup>३</sup> च्यु छि<sup>३</sup>लाय् । हर रोज तुम कितने घंटे सोते हो ? मैं ७ घंटे सोता हूँ, और फिर उठ जाता हूँ ।

### (ग) 'छा' व 'क्वो' का प्रयोग

- १- ताव्<sup>१</sup> (ल) षाङ्<sup>१</sup> ख<sup>१</sup> त ष्ट<sup>१</sup> हौ ल मा ? क्या यह क्लास का समय है ?  
 हाय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> ताव्<sup>१</sup> न अभी नहीं ।  
 हाय्<sup>३</sup> चाव्<sup>३</sup> न अभी तो जल्दी है ।  
 हाय्<sup>३</sup> छा<sup>१</sup>पान्<sup>१</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>१</sup>न<sup>३</sup> अभी तो आधा घंटा है ।  
 ताव्<sup>१</sup> ल हाँ ठीक है  
 इ<sup>३</sup>चिङ्<sup>१</sup> ताव्<sup>१</sup>ल समय हो गया है ।  
 चाव्<sup>३</sup> ताव्<sup>१</sup>ल बहुत पहले समय हो चुका था ।  
 काङ्<sup>३</sup>काङ्<sup>३</sup> ताव्<sup>१</sup> ष्ट<sup>१</sup>हौ अभी अभी समय हो गया है ।  
 क्वो<sup>१</sup>ल समय गुजर चुका है ।  
 चाव्<sup>३</sup> क्वो<sup>१</sup> ष्ट<sup>१</sup>हौल समय बहुत पहले गुजर चुका है ।
- २- ताव्<sup>१</sup> (ल) ल्याङ्<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>- चुङ्<sup>१</sup>ल मै यौ ? क्या अभी २ बजे हैं ?  
 मै<sup>३</sup> ताव्<sup>१</sup>न अभी नहीं ।  
 हाय्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> ताव्<sup>१</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>- अभी २ नहीं बजे ।  
 त्येन्<sup>३</sup>न

हाय् छा त्वोषाव् ?

(या चिफन् ?)

हाय् छा पृ फन् चुङ्

इ चिङ् क्वो ल

चाव् क्वो ल ?

क्वो त्वो पावल् ?

क्वो (ल) इ ख चुङ् ल

३- हाय् छा त्वो पाव् छ्येन्

हाय् छा सान् माव्

छ्येन् न

(घ) 'जैसे ही—वैसे ही' (बल प्रगट करने के लिये)

१- वो ई थिङ् वो वो मु छिन्  
पिङ् ल, वो लि ख च्यु त्वै  
च्या ल

२- वो पा छ्येन् इ कै था, था  
च्यु चौल

३- वो इ खान् च्येन् नि च्यु चृ-  
ताव् नि ई तिङ् षू क छूङ्-  
मिङ् रन्

४- हाय् च् ई पुन्येन् षू, फु मु  
च्यु पु काव् शिङ्

५- रन् इ ह च्यु, च्यु हन् रुङ् इ  
पा षू छिङ् वाङ् ल

कितने समय में २ बज जाएंगे?

१० मिनट की कमी है ।

अभी तो २ से अधिक का समय  
हो गया है ।

२ बहुत पहले बज चुके थे ।

कितने पहले ।

पन्द्रह मिनट पहले

(या पन्द्रह मिनट गुजर चुके हैं)

(मुझे तुमको) अभी और  
कितना देना है ?

(तुमको मुझे) अभी ३०  
सेन्ट देने हैं ।

ज्योंही मैंने सुना कि मेरी मां  
बीमार है, मैं घर लौट गया ।

ज्योंही मैंने उसको पैसे दिये  
वह चला गया ।

जैसे ही मैं तुमसे मिला, मैं  
जान गया कि तुम अवश्य ही  
एक बुद्धिमान व्यक्ति हो ।

जब भी बच्चे नहीं पढ़ते हैं,  
माता-पिता नाराज हो जाते हैं ।

जब भी लोग शराब पीते हैं  
वह आसानी से बातें भूल जाते  
हैं ।

६- वो<sup>३</sup>मन् इताव<sup>३</sup>ल न्यु<sup>३</sup>वे,  
वो<sup>३</sup>च्यु याव<sup>३</sup>श्येन्<sup>३</sup> छयू खान्<sup>३</sup>  
इक फड<sup>३</sup>यो

ज्योंही हम न्यूयार्क पहुंचेंगे,  
मैं एक मित्र से मिलने  
जाना चाहता हूँ ।

(च) '(याव<sup>३</sup>षृ)'—च्यु<sup>३</sup> (शर्त या अनुमान-विषयक)

- १- (याव<sup>३</sup>षृ) नि<sup>३</sup>मन् पुमिड<sup>३</sup>पाय् यदि तुम मेरा अर्थ नहीं  
वो<sup>३</sup>त इ<sup>३</sup>स्च, वो<sup>३</sup>च्यु ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> समझते हो, मैं एक बार  
चाय<sup>३</sup>ष्वो<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>त्वे<sup>३</sup> फिर कह सकता हूँ ।
- २- (याव<sup>३</sup>षृ) वो<sup>३</sup>ष्वो<sup>३</sup>त थाय<sup>३</sup> यदि मैं बहुत तेज बोलता हूँ  
ख्वाय<sup>३</sup>, छिड<sup>३</sup> नि<sup>३</sup>काव<sup>३</sup>सु(इ) तो कृपया मुझे बता देना,  
वो<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>च्यु ख<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>ष्वो<sup>३</sup> मान् और मैं और धीरे बोलूंगा ।  
इत्याळ<sup>३</sup>
- ३- नि<sup>३</sup>याव<sup>३</sup>षृ मै<sup>३</sup>षृ, नि<sup>३</sup>नड<sup>३</sup> यदि तुम कुछ नहीं कर रहे  
पुनड<sup>३</sup>पाड<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>इत्याळ<sup>३</sup> हो, तो क्या तुम मेरी थोड़ी  
माड<sup>३</sup>? सहायता कर सकते हो ?
- ४- (याव<sup>३</sup>षृ) नि<sup>३</sup>चन्<sup>३</sup>खान्<sup>३</sup> यदि तुम वास्तव में उससे  
च्येन्<sup>३</sup>था ल, छिड<sup>३</sup>काव<sup>३</sup>सु(इ) मिल चुके हो तो कृपया मुझे  
वो<sup>३</sup>था<sup>३</sup>हाव<sup>३</sup>पुहाव<sup>३</sup>। बताना कि वह ठीक है या  
नहीं ।
- ५- था<sup>३</sup>(याव<sup>३</sup>षृ) इ<sup>३</sup>चिड<sup>३</sup>चौ ल, यदि वह पहले ही जा चुका है  
वो<sup>३</sup>मन् च्यु पु<sup>३</sup>पि तड<sup>३</sup>था ल तो हमें उसकी प्रतीक्षा करने  
की कोई आवश्यकता नहीं है ।
- ६- याव<sup>३</sup>षृ वो<sup>३</sup>वाड<sup>३</sup>ल च<sup>३</sup>म्मा यदि मैं भूल जाता हूँ (या  
पान्<sup>३</sup>? भूल गया होता) तो क्या  
किया जायेगा (या किया  
जाता )?



- ७- (याव्<sup>४</sup> षृ) नि<sup>३</sup> च<sup>३</sup>वो<sup>३</sup>थ्येन् यदि तुम कल उससे मिलने  
मै<sup>३</sup>छ्यू<sup>३</sup> खान्<sup>४</sup> था, नि<sup>३</sup> च<sup>३</sup>म्मा नहीं गये तो तुम कैसे जानते  
चू<sup>३</sup>ताव्<sup>४</sup> था पिङ्<sup>४</sup>ल हो कि वह बीमार है ?
- ८- था<sup>३</sup> याव्<sup>४</sup> षृ हाय्<sup>३</sup> व्वै<sup>३</sup>च्याव्<sup>४</sup> यदि वह अभी सो रहा है तो  
न, नि<sup>३</sup> च्यु<sup>३</sup> प्ये<sup>३</sup> च्याव्<sup>४</sup> था । उसको मत बुलाओ ।

### व्याकरण

१६-१ समय : चीनी भाषा में समय बताने के लिए काल-  
बोधक मापक शब्द '-त्येन्<sup>३</sup>' (बजे), 'ख<sup>३</sup>' (घन्टे का एक चौथाई)  
'फन्' (मिनट) इस्तेमाल होते हैं, इन मापक शब्दों के पहले समय  
सूचक अंक और बाद में 'चुङ्<sup>३</sup>' (घड़ी) आते हैं। पूर्ण अंकों में  
समय बताने पर बाद में अक्सर 'चुङ्<sup>३</sup>' का प्रयोग होता है। लेकिन  
अगर बड़ी इकाई के बाद छोटी इकाई आये तो प्रायः 'चुङ्<sup>३</sup>' का  
प्रयोग नहीं किया जाता। उदाहरण के लिए :

इ<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup>

एक बजे

ई<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>सान्<sup>३</sup>ख<sup>३</sup>

पौने दो बजे, अथवा एक बज-  
कर पैंतालीस मिनट ।

अगर पूर्ण अंक दस से ऊपर की संख्या में हो तो अक्सर 'चुङ्<sup>३</sup>'  
का प्रयोग नहीं किया जाता; जैसे :

षृ<sup>३</sup>अळ<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup> (चुङ्<sup>३</sup>) बारह बजे

१६-२ 'त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup>' व 'चुङ्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup>' :—'त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup>' समय का  
परिमाण या समय का कोई निश्चित बिंदु सूचित करता है। लेकिन  
'चुङ्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup>' साठ मिनट का समय सूचित करता है। लेकिन 'पान्<sup>३</sup>-  
त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup>' और 'पान्<sup>३</sup>क चुङ्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup>' दोनों का अर्थ आधा घंटा है;  
जैसे :

वो<sup>३</sup>व्वै<sup>३</sup>ल पान्<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup> त च्याव्<sup>४</sup> च्यु छि<sup>३</sup>लाय्ल ।

वो<sup>३</sup>ष्वै<sup>३</sup>ल पान्<sup>३</sup>क चुङ्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup>त च्याव्<sup>३</sup>च्यु छि<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>ल ।

वो<sup>३</sup>ष्वै<sup>३</sup>ल पान्<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup>त कुङ्<sup>३</sup>फू च्यु छि<sup>३</sup>लाय्<sup>३</sup>ल ।

इन तीनों वाक्यों का अर्थ है :—“वह आधे घंटे के लिए सो-  
कर उठ गया”, लेकिन “वो<sup>३</sup>मन ल्याङ्<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup>षाङ्<sup>३</sup>ख्” का  
अर्थ है “हम लोगों का पाठ दो बजे से शुरू होगा” (या पढ़ाई शुरू  
होगी); और “वो<sup>३</sup>मन् षाङ्<sup>३</sup>ल्याङ्<sup>३</sup>क चुङ्<sup>३</sup>थौ<sup>३</sup>त ख्” का अर्थ है  
“हम दो घन्टे के लिए कक्षा में जाते हैं।”

तारीख में साल, महीना, दिन और समय सब साथ-साथ हों  
तो इनका शब्दक्रम कैसा होगा यह हम पहले ही सीख चुके हैं  
(व्याकरण नोट १३-५) । घड़ी का समय सूचित करते वक्त  
भी हमें बड़ी इकाई पहले और छोटी इकाई बाद में देनी चाहिए;  
जैसे :—

चिन्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> श्या<sup>३</sup>उ<sup>३</sup>स्त्वेन्<sup>३</sup>- आज शाम चार बजकर पंद्रह  
इ<sup>३</sup>ख । षाङ्<sup>३</sup>लि<sup>३</sup>पाय्<sup>३</sup>थ्येन्<sup>३</sup> मिनट(पर) । पिछले रविवार  
चाव्<sup>३</sup>षाङ्<sup>३</sup> पा<sup>३</sup> त्येन्<sup>३</sup>पान्<sup>३</sup> । सबेरे साढ़े आठ बजे ।

१६-३ समय पूछने का तरीका : कीमत (पाठ-८), तारीख (पाठ  
१३), उम्र (पाठ-१८) पूछने के वक्त किसी क्रिया (पृ<sup>३</sup>) की जरूरत  
नहीं होती । इसी तरह समय पूछने के लिए क्रिया का सहारा नहीं  
लेना पड़ता, हालांकि कभी-कभी ‘पृ<sup>३</sup>’ या ‘यौ<sup>३</sup>’ का प्रयोग होता है ।  
पूर्णताबोधक ‘ल’ भी कभी कभी प्रयुक्त होता है; जैसे,

ष<sup>३</sup>म्मापृ<sup>३</sup>हौ (ल) ।

कितना समय हुआ है ? (या  
कितने बजे हैं ?)

उ<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>पान्<sup>३</sup> (ल)

साढ़े पांच ।

श्येन्<sup>३</sup>चाय्<sup>३</sup> चि<sup>३</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup>  
(ल) ?

अभी कितने बजे हैं ?



सान्<sup>१</sup>त्येन्<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>ख<sup>४</sup> (ल)

तीन बजकर पंद्रह मिनट हुए हैं, (या सवा तीन बजे हैं)।

१६-४ “याव्<sup>४</sup>षृ<sup>४</sup>.....च्यु<sup>४</sup>” : चीनी भाषा में शर्त जाहिर करने के लिए वाक्यांश “याव्<sup>४</sup>षृ<sup>४</sup>. . . . च्यु<sup>४</sup>” का प्रयोग किया जाता है, इसका अर्थ ‘मानो’ “यदि ऐसा हो तो”, “अगर (यदि)..... तो (तब)” इन वाक्यांशों से प्रगट किया जाता है। “याव्<sup>४</sup>षृ<sup>४</sup>” (अगर, यदि) को पहले हिंदी के तरह वाक्यांश में कर्ता के पहले या बाद में रखा जा सकता है, लेकिन ‘च्यु<sup>४</sup>’ को दूसरे वाक्यांश में विधेय के पहले जरूर रखना चाहिए। ‘याव्<sup>४</sup>षृ<sup>४</sup>’ छोड़ा जा सकता है, लेकिन आमतौर से ‘च्यु<sup>४</sup>’ छोड़ा नहीं जाता। अंग्रेजी के इस तरह के वाक्य में ठीक इससे विपरीत होता है, उदाहरण के लिए :—

(याव्<sup>४</sup>षृ<sup>४</sup>) नि<sup>३</sup>पुलाय्<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup>मन् (अगर) तुम नहीं आओगे तो च्यु<sup>४</sup>पु छ्.यू<sup>४</sup>ल । हम नहीं जायेंगे ।

(याव्<sup>४</sup>षृ<sup>४</sup>) नि<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>काव्<sup>३</sup>सु वो<sup>३</sup> (अगर) तुम मुझे यह बात चे<sup>४</sup>च्येन्<sup>४</sup>षृ<sup>४</sup> (छिड़) वो<sup>३</sup>- नहीं बताते तो मुझे पता नहीं च्यु<sup>४</sup>पुचृ<sup>४</sup>ताव् । चलता ।

अगर दूसरे वाक्यांश में क्रिया विशेषण हो तो ‘च्यु<sup>४</sup>’ अक्सर छोड़ा जाता है; जैसे :—

(याव्<sup>४</sup>षृ<sup>४</sup>) नि<sup>३</sup>पु<sup>३</sup>काव्<sup>३</sup>सु वो<sup>३</sup> (अगर) तुम मुझे इसके बारे चे<sup>४</sup>च्येन्<sup>४</sup>षृ<sup>४</sup> (छिड़) वो<sup>३</sup>इ<sup>३</sup>तिङ्<sup>४</sup> में नहीं बताते तो मुझे कतई पु चृ<sup>४</sup>ताव्<sup>४</sup> । पता नहीं चलता ।

१६-६ “इ<sup>३</sup> . . . . च्यु<sup>४</sup>” : हिंदी के “जैसे ही—वैसे ही” “ज्योंही—त्योंही” “जभी-तभी” इस तरह की शर्त जाहिर करने वाले आश्रितार्थक वाक्य को चीनी भाषा के ‘इ<sup>३</sup>’ (एक) और ‘च्यु<sup>४</sup>’ (तब), दोनों के सहारे रूपान्तरित किया जाता है। यहाँ ‘इ<sup>३</sup>’ और ‘च्यु<sup>४</sup>’ दोनों क्रिया विशेषण हैं, और सापेक्ष योजी के रूप में



प्रयुक्त हैं। इस विन्यास का प्रयोग मुख्यतः दो प्रकार से किया जाता है :—(१) जब दो व्यापार समय की दृष्टि से घनिष्टता-पूर्वक जुड़े होते हैं; जैसे :—

वो<sup>३</sup>इक्न्<sup>१</sup>था ष्वो<sup>१</sup> ह्वा<sup>१</sup> था<sup>१</sup> च्यु<sup>४</sup> मैंने ज्योंही उसके साथ बातें  
षड्<sup>१</sup>छि<sup>१</sup>ल की त्योंही वह गुस्से में आ  
गया।

नि<sup>३</sup> क<sup>१</sup>क इ ह्वा<sup>१</sup>लाय् वो च्यु<sup>४</sup> जैसे ही तुम्हारा बड़ा भाई  
याव् च्येन्<sup>४</sup> था (आयेगा वैसे ही) मैं उससे  
मिलना चाहता हूँ।

२- जब उससे शर्त प्रगट होती है; जैसे :

वो<sup>३</sup>इ छृ<sup>१</sup>यू<sup>२</sup>च्यु<sup>४</sup>पू पु<sup>१</sup>फू मैं अभी मछली खाता हूँ (तभी)  
बीमार सा हो जाता हूँ।

यहां विन्यास “याव्<sup>४</sup>पृ.....च्यु<sup>४</sup>” तुलनीय है। “याव्<sup>४</sup>पृ.....च्यु<sup>४</sup>” भी शर्त प्रगट करता है, इसलिए इस तरह के वाक्य में “ई—च्यु<sup>४</sup>” की जगह इसका प्रयोग हो सकता है। लेकिन एक अंतर है; “ई—च्यु<sup>४</sup>” एक आम शर्त प्रगट करता है, यानी अमुक परिस्थिति में अमुक बात हमेशा होती है, पर “याव्<sup>४</sup>पृ—च्यु<sup>४</sup>” न केवल एक आम शर्त प्रगट करता है, बल्कि एक विशेष शर्त भी प्रगट करता है। उदाहरण के लिए “याव्<sup>४</sup>पृ नि<sup>३</sup>पु लाय् वो<sup>३</sup>च्यु<sup>४</sup>पु छ्यु<sup>४</sup>ल” (अगर तुम नहीं आओगे तो मैं नहीं जाऊंगा), इस वाक्य में हम केवल “याव्<sup>४</sup>पृ—च्यु<sup>४</sup>” का ही प्रयोग कर सकते हैं, “ई—च्यु<sup>४</sup>” का प्रयोग कभी नहीं करते। लेकिन “वो<sup>३</sup>इ छृ<sup>१</sup>यू<sup>२</sup>च्यु<sup>४</sup>पुपु<sup>१</sup>फू” इस वाक्य में “याव्<sup>४</sup>पृ—च्यु<sup>४</sup>” का प्रयोग भी कर सकते हैं।

## पाठ-२०

वो<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup> इक इन<sup>३</sup>तु<sup>३</sup> फङ्<sup>३</sup>-  
यौ । वो<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup>षृ<sup>३</sup> था हाव्<sup>३</sup>चि<sup>३</sup>-  
न्येन्<sup>३</sup> ल । यौ<sup>३</sup> इन्येन्<sup>३</sup> था  
तास्वान् ताव् चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup>  
छ्.यू<sup>३</sup> । था<sup>३</sup> श्ये<sup>३</sup> शिन्<sup>३</sup> काव्<sup>३</sup>-  
सुङ् वो<sup>३</sup> था<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>छ्येन्<sup>३</sup> मै<sup>३</sup>-  
ताव् चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> छ्.यू<sup>३</sup>क्वो ।

वो<sup>३</sup> त फङ्<sup>३</sup>यौ चाय् छ्वान्<sup>३</sup>-  
षाङ् त षृ<sup>३</sup>हौ श्ये<sup>३</sup> ल चि<sup>३</sup>-  
च.यू चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> छाङ्<sup>३</sup>  
युङ् त ह्वा<sup>३</sup> । श्या<sup>३</sup> छ्वान्<sup>३</sup>  
इ<sup>३</sup>छ्येन्<sup>३</sup> था<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>चिङ् ह्वै<sup>३</sup>  
ष्वो<sup>३</sup> : निन्<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> आ, श्ये<sup>३</sup>-  
श्ये, चाय्<sup>३</sup> च्येन्<sup>३</sup> । श्या<sup>३</sup> ल  
छ्वान्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>हौ<sup>३</sup> था<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup>  
श्ये<sup>३</sup> वे<sup>३</sup> ल हाव्<sup>३</sup> श्ये<sup>३</sup> ।

था श्येन्<sup>३</sup> चाय्<sup>३</sup> षाङ् हाय्<sup>३</sup>  
चु<sup>३</sup> ल श्ये ऋ<sup>३</sup>च, हौ<sup>३</sup>-  
लाय् च्यु ताव् नान्<sup>३</sup>चिङ्<sup>३</sup>  
छ्.यू<sup>३</sup> ल । ता<sup>३</sup>चाङ् इ<sup>३</sup>-

मेरा एक भारतीय मित्र है ।  
मैं उसको कई सालों से जानता  
हूँ । एक साल उसने चीन  
जाने की योजना बनाई ।  
उसने मुझे लिखा कि वह  
पहले कभी चीन नहीं गया  
है ।

जब मेरा (भारतीय) मित्र  
पानी के जहाज पर था,  
उसने चीनी भाषा के कुछ  
सामान्य वाक्य सीखे । जहाज  
से उतरने से पहले वह कह  
सकता था : “आप कैसे हैं”,  
“धन्यवाद” “फिर मिलेंगे ।”  
जहाज से उतरने के बाद उसने  
और अधिक सीखा ।

वह पहले कुछ दिन शंघाई में  
ठहरा । उसके बाद वह नान-  
किङ गया । युद्ध से पहले इस  
शहर की जनसंख्या अधिक

छ्येन्<sup>२</sup> छङ्<sup>२</sup> लि<sup>३</sup>थौ त रन्<sup>२</sup>  
हन्<sup>३</sup> त्वो । ता<sup>३</sup> चाङ्<sup>३</sup> त षृ<sup>२</sup>  
हौ रन्<sup>२</sup> च्यु षाव्<sup>३</sup> ल । व्येन्<sup>२</sup>-  
चाय्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> ता<sup>३</sup>चाङ्<sup>३</sup>ल, रन्<sup>२</sup>  
तौ<sup>३</sup> ह्वै<sup>३</sup>लाय् ल ।

वो<sup>३</sup> फङ्<sup>३</sup>यौ हन्<sup>३</sup> श्याङ्<sup>३</sup>  
च्येन्<sup>२</sup>च्येन् चि<sup>३</sup> वै<sup>३</sup> यौ<sup>३</sup>मिङ्<sup>३</sup>-  
त चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>२</sup> रन्<sup>२</sup> । इन्<sup>३</sup>वै  
था<sup>३</sup> पु रन्<sup>३</sup>षृ था<sup>३</sup>मन्, पु हाव्<sup>३</sup>  
च्<sup>३</sup>चि<sup>३</sup> छ्यु च्येन्<sup>२</sup> था<sup>३</sup>मन्,  
स्वो<sup>३</sup>इ<sup>३</sup> था<sup>३</sup> चाव्<sup>३</sup> ल इक  
फङ्<sup>३</sup>यौ कै<sup>३</sup> था च्ये<sup>३</sup>षाव् ।

था<sup>३</sup> च्येन्<sup>२</sup> ल था<sup>३</sup>मन् इ<sup>३</sup>हौ<sup>३</sup>  
च्यु ह्वै<sup>३</sup> इन्<sup>३</sup>तु<sup>३</sup> छ्यु<sup>३</sup> ल ।  
था<sup>३</sup> चौ<sup>३</sup> त षृ<sup>२</sup>हौ च्छ्वे<sup>३</sup>त  
हन्<sup>३</sup> काव्<sup>३</sup>शिङ्<sup>३</sup> । यौ<sup>३</sup> चि<sup>३</sup>क  
फङ्<sup>३</sup>यौ सुङ्<sup>३</sup> था षाङ्<sup>३</sup>  
छ्वान्<sup>३</sup>, खाय् छ्वान्<sup>३</sup> त षृ<sup>२</sup>हौ  
त्वै<sup>३</sup> था ष्वो : चाय्<sup>३</sup> च्येन्<sup>२</sup>,  
ई<sup>३</sup> लु<sup>३</sup> फिङ्<sup>३</sup> आन्<sup>३</sup> ।

थी । युद्ध में जनसंख्या बहुत  
कम रह गई । अब युद्ध के  
समाप्त होने पर सब लोग  
वापस लौट आये हैं ।

मेरा मित्र चीन के कुछ प्रसिद्ध  
व्यक्तियों से मिलने का इच्छुक  
था । क्योंकि वह उनको नहीं  
जानता था और उनसे मिलने  
के लिए स्वयं सुगमता से नहीं  
जा सकता था, उसने एक  
मित्र ढूँढ़ा जो उसको उनसे  
परिचित करवा सकता था ।

उनसे मिलने के पश्चात् वह  
भारत वापस गया । जब वह  
वापस लौटा तो बहुत प्रसन्न  
था । कुछ मित्र उसको विदा  
करने आए थे जिन्होंने जहाज  
चलने पर कहा : फिर मिलेंगे ।  
आपकी यात्रा प्रसन्नतापूर्वक  
हो ।

### नये शब्द

#### गतिशील क्रि० वि०

इ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>२</sup>

—इ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>२</sup>

इ<sup>३</sup> हौ<sup>३</sup>

पहले

पहले, -के पहले

इस (उस) के पश्चात्



—इ० ही०	बाद में,—के बाद
पन् <sup>३</sup> लाय् <sup>२</sup>	मूलतः, प्रारम्भ से
छ्येन् <sup>२</sup> थ्येन् (संज्ञा भी है)	परसों (बीता हुआ)
ही० थ्येन् (संज्ञा भी है)	परसों (आने वाला)

## संज्ञा

छ्येन् <sup>२</sup>	सामने, पहले वाला
च् <sup>४</sup> चि <sup>३</sup>	स्वयं, अपने आप
श्याव् <sup>४</sup> ह्वा	मज़ाक

## क्रि० वि०

त्ताव् <sup>३</sup>	सदैव, जारी रखना
---------------------	-----------------

## वि०

फिङ् <sup>२</sup> छाङ् <sup>२</sup>	साधारण (होना)
थ् <sup>४</sup> प्ये <sup>२</sup>	विशेष (होना), भिन्न (होना)
यौ <sup>३</sup> मिङ् <sup>२</sup>	प्रसिद्ध (होना)

## क्रि०

रन् <sup>४</sup> त	जानना, पहचानना,
रन् <sup>४</sup> ष्ट	परिचित होना
च्ये <sup>१</sup> वे <sup>१</sup> त	अनुभव करना, विचारना
खान् <sup>४</sup>	देखना, सोचना, विचारना
ता <sup>३</sup> स्वान् <sup>४</sup>	योजना बनाना
च्ये <sup>४</sup> षाव्	परिचय करना
श्याव् <sup>४</sup>	हंसना या मुस्कराना
श्याव् <sup>४</sup> (ह्वा)	हंसना (किसी पर)
ता <sup>३</sup> चाङ् <sup>४</sup>	(क्रि० कर्म) लड़ना, युद्ध करना

## स० श०

क्वो <sup>४</sup>	अनुभव सूचक क्रिया प्रत्यय
-------------------	---------------------------

आ

वाक्य प्रत्यय (देखिए व्याकरण  
नोट २०-४)

## मुहावरेदार वाक्य-खण्ड

पुं कान् ताङ् ।

तुम बिना बात मेरी प्रशंसा करते  
हो, धन्यवाद ।

इं लुं फिङ् आन्

यात्रा प्रसन्नतापूर्वक हो, यात्रा  
सकुशल हो ।

## उदाहरणमाला

## (क) क्रिया प्रत्यय-‘क्वो’

नमूने : (१-६) निं छुं क्वो क्त्तपन् फ्रान् मै यौ ? छुं क्वो ।

क्या तुमने कभी जापानी खाना खाया है ? हां,  
खाया है ।

(७-८) निं छुं क्वो फ्रान् ल मा ? छुं क्वो ल, श्ये श्ये ।

क्या तुमने खाना खा लिया है ? हां, खा लिया है, धन्यवाद ।

१- निं ताव् क्वो चुङ् क्वो मै क्या तुम कभी चीन गए हो ?  
यौ ? मै ताव् क्वो । वो नहीं, मै नहीं गया । मै इस  
तास्वान् चिन् न्येन् छ्यू । साल जाने की योजना बना

रहा हूँ ।

२- था च्या चुङ् क्वो चुं क्वो क्या वह कभी चीन में रहा  
मा ? चुं क्वो । है ? हां, वह रहा है ।३- निं मै खान् क्वो चे पन् क्या तुमने यह पुस्तक कभी  
पू मा ? खान् क्वो । वो नहीं पढ़ी है ? हां, मैंने पढ़ी है,  
छवेत्त चे पन् पू थाय् मै- और मेरे विचार से यह पुस्तक  
इस्च् । रोचक नहीं हैं ।४- था च्या लि मै छ्येन्, स्वो उसके परिवार के पास पैसा  
इं नेक हाय् च् मै न्येन्- नहीं है, इसलिए वह बच्चा  
क्वो पू । कभी स्कूल नहीं गया है ।

- ५- नि<sup>३</sup> च्येन्<sup>४</sup> क्वो लि<sup>३</sup> श्येन्<sup>३</sup> षड् मा ? मै<sup>२</sup> च्येन्<sup>४</sup> क्वो, छिड्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> कै<sup>३</sup> च्ये<sup>४</sup> षाव् च्ये<sup>४</sup> षाव् । क्या तुम ली महोदय से पहले मिले हो ? नहीं, मैं नहीं मिला । कृपया मुझे उनसे परिचित करवा दीजिए ।
- ६- मै<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> कन्<sup>१</sup> चुड्<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> ता<sup>३</sup> क्वो चाड्<sup>४</sup> मै<sup>२</sup> यौ ? मै<sup>२</sup> यौ । क्या अमेरिका और चीन कभी लड़े हैं ? नहीं, वे नहीं लड़े ।
- ७- नि<sup>३</sup> युड्<sup>३</sup> क्वो ख्वाय्<sup>४</sup> च् मै<sup>२</sup> यौ ? वो<sup>३</sup> युड्<sup>३</sup> क्वो चि<sup>३</sup> ह्वै<sup>२</sup> (ल), ख<sup>३</sup> षृ हाय्<sup>३</sup> षृ पु<sup>३</sup> ता ह्वै<sup>४</sup> युड्<sup>३</sup> । क्या तुमने कभी चौपस्टिक का प्रयोग किया है ? हाँ, कई बार, परन्तु मैं अभी भी (इसके विषय में) पूरी तरह नहीं जानता हूँ ।
- ८- नि<sup>३</sup> छ्यू<sup>४</sup> खान्<sup>४</sup> था<sup>१</sup> मन् ल मै<sup>२</sup> यौ ? छ्यू<sup>४</sup> क्वो ल, ख<sup>३</sup> षृ च्या<sup>१</sup> लि मै<sup>२</sup> रन्<sup>२</sup> । क्या तुम उन (लोगों) से मिलने गए हो ? हाँ, परन्तु घर पर कोई नहीं था ।

### (ख) सामान्य सापेक्ष समय

- १- ने<sup>१</sup> क रन्<sup>२</sup> इ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>२</sup> हन्<sup>३</sup> व<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup> इ च् वो<sup>४</sup> षृ<sup>४</sup> । था<sup>१</sup> हौ<sup>४</sup> लाय् यौ<sup>४</sup> छ्येन्<sup>२</sup> ल, च्यु पु<sup>३</sup> वान्<sup>३</sup> इ च् वो<sup>४</sup> षृ<sup>४</sup> ल । वह व्यक्ति पहले काम करना बहुत चाहता था । बाद में उसके पास पैसा हो गया और वह काम करने का इच्छुक नहीं रहा ।
- २- इ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>२</sup> वो<sup>३</sup> मन् चु<sup>४</sup> चाय् न्यु<sup>३</sup> व<sup>३</sup> वे<sup>१</sup> । हौ<sup>४</sup> लाय् वो<sup>३</sup> मन् पान्<sup>१</sup> ताव् चळ<sup>४</sup> लाय् ल । पहले हम न्यूयार्क में रहते थे । बाद में यहां आ गए ।
- ३- नि<sup>३</sup> छूड्<sup>३</sup> छ्येन्<sup>२</sup> छाड्<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup> चुड्<sup>३</sup> क्वो<sup>२</sup> ह्वै<sup>४</sup> । नि<sup>३</sup> च<sup>३</sup> म्मा श्येन्<sup>४</sup> चाय्<sup>३</sup> पु<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup> ल । पहले तुम चीनी भाषा बहुत बोलते थे । अब तुम क्यों नहीं बोलते हो ?



- ४- छूङ्छ्येन्<sup>२</sup> वो<sup>३</sup> पु रन्<sup>२</sup> त पहले मैं उसको नहीं जानता था ।  
था । श्येन्<sup>४</sup> चाय्<sup>४</sup> वो<sup>३</sup> मन् अब हम अच्छे मित्र हैं ।  
ष हाव्<sup>३</sup> फङ् यौ ।
- ५- वो<sup>३</sup> पन्<sup>३</sup> लाय् ये<sup>३</sup> ता<sup>३</sup>- मैंने पहले जाने की योजना बनाई  
स्वान् छ्य<sup>४</sup> । हौ<sup>४</sup> लाय् थी । बाद में क्योंकि काम बहुत  
षूछिङ् माङ्<sup>३</sup> ल, वो<sup>३</sup> च्यु बढ़ गया, मैंने जाने का विचार  
पु नङ् छ्य<sup>४</sup> ल । छोड़ दिया (या, जा नहीं सका) ।
- ६- छ्येन्<sup>२</sup> चि<sup>३</sup> श्येन्<sup>१</sup> वो<sup>३</sup> थ<sup>४</sup>- मैं कुछ दिन पहले विशेष तौर से  
प्ये<sup>२</sup> माङ्<sup>३</sup> । चे<sup>४</sup> ल्याङ्<sup>३</sup>- व्यस्त था । इन दो दिनों से कुछ  
श्येन् हाव्<sup>३</sup> इ त्याळ<sup>३</sup> ल । कम व्यस्त हूँ ।
- ७- क्वो<sup>४</sup> ल्याङ्<sup>३</sup> श्येन् चाय्<sup>४</sup> कुछ दिनों बाद फिर इस पर विचार  
खान्<sup>४</sup> पा । करेंगे ।

### (ग) निश्चित सापेक्ष समय

१- —इ<sup>३</sup> छ्येन्<sup>२</sup> (पहले,—के पहले)

- १- ष्वै<sup>४</sup> च्याव्<sup>४</sup> इ<sup>३</sup> छ्येन्, वो<sup>३</sup> मैं सोने से पहले कभी-कभी थोड़ा  
यौ<sup>३</sup> षू<sup>३</sup> हौ खान्<sup>४</sup> इत्याळ<sup>३</sup> पढ़ लेता हूँ ।  
षू<sup>३</sup>
- २- ताव् वाय्<sup>४</sup> क्वो<sup>२</sup> छ्य<sup>४</sup> इ<sup>३</sup>- विदेश जाने से पहले हमें कुछ  
छ्येन्<sup>२</sup> वो<sup>३</sup> मन् तै<sup>३</sup> माय्<sup>३</sup> वस्तुएं अवश्य खरीदनी चाहिए ।  
पु षाव्<sup>३</sup> तुङ् शि ।
- ३- नि<sup>३</sup> षाङ्<sup>४</sup> छ्वान्<sup>२</sup> इ<sup>३</sup>- मुझे तुम जहाज पर सवार होने से  
छ्येन्<sup>२</sup> प्ये<sup>२</sup> वाङ्<sup>३</sup> ल श्ये<sup>३</sup>- पहले (पत्र) लिखना न भूलना कि  
शिन<sup>४</sup> काव्<sup>४</sup> मुङ् वो<sup>३</sup> नै<sup>३</sup> तुम किस दिन रवाना हो रहे हो ।  
श्येन् चौ<sup>३</sup>

- ४- था<sup>१</sup>मन् पान्<sup>१</sup>च्या<sup>१</sup> इ<sup>३</sup>छ्येन्<sup>२</sup> जगह बदलने से पहले वे  
चु<sup>४</sup> चाय् थ्येन्<sup>२</sup>चिङ् । थ्येनचींग में रहते थे ।
- ५- वो<sup>३</sup>मन् सान्<sup>१</sup>क यवे<sup>४</sup> इ<sup>३</sup>छ्येन्<sup>२</sup> तीन महीने पहले हम चीनी  
इ<sup>२</sup> च्यु<sup>४</sup> चुङ्क्वो<sup>२</sup> ह्वा<sup>४</sup> भाषा का एक शब्द भी नहीं  
ये<sup>३</sup> पु<sup>२</sup> ह्वै<sup>४</sup> ष्वो<sup>१</sup> । श्येन्<sup>२</sup>- बोल सकते थे । अब आप  
चाय्<sup>४</sup> नि<sup>३</sup>खान्<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup>मन् देखिए, हम कितना समझ  
तुङ्<sup>३</sup> त्वो<sup>१</sup>षाव् ल । सकते हैं ।
- ६- था<sup>१</sup> षू पान्<sup>१</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>१</sup> ई<sup>३</sup>- वह आधा घंटा पहले वापस  
छ्येन्<sup>२</sup> ह्वै<sup>४</sup>लाय् त । आया ।

२- “... त षू<sup>१</sup>हौ” (जब, के समय)

- १- चुङ्क्वो<sup>२</sup> रन्<sup>२</sup> छूफ़ान्<sup>४</sup> त खाना खाते समय चीनी लोग  
षू<sup>१</sup>हौ पु<sup>२</sup> ता आय्<sup>४</sup> ष्वो<sup>१</sup> बातचीत करना पसन्द नहीं  
ह्वा<sup>४</sup> । करते ।
- २- प्ये<sup>२</sup>रन् छाङ्क्ळ<sup>१</sup>त षू<sup>१</sup>हौ, जब दूसरे लोग गाना गा रहे  
पु<sup>२</sup> याव् ष्वो<sup>१</sup>ह्वा<sup>४</sup> । हों, हमें बातें नहीं करनी  
चाहिए ।
- ३- वो<sup>३</sup> पा<sup>१</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>१</sup> षाङ्क्<sup>४</sup> ख जब मैं आठ बजे कक्षा में  
त<sup>४</sup> षू<sup>१</sup> हौ, हाय्<sup>४</sup> च्ये<sup>२</sup>वे<sup>४</sup>त जाता हूँ तो मुझे तब भी  
लै<sup>४</sup> । थकान महसूस होती है ।
- ४- निन्<sup>२</sup>छ्येन्<sup>२</sup> थ्येन्<sup>२</sup> लाय्<sup>४</sup>खान्<sup>४</sup> जब तुम परसों मुझसे मिलने  
वो<sup>३</sup> त षू<sup>१</sup>हौ, वो<sup>३</sup> षाङ्क्<sup>४</sup> आए थे तो मैं पेकिंग गया था ।  
पै<sup>३</sup>चिङ्<sup>१</sup> छ्यू ल ।
- ५- वो<sup>३</sup> ष्वो<sup>१</sup> चुङ्क्वो<sup>२</sup> ह्वा<sup>४</sup> त जब मैं चीनी भाषा बोलूँ तो  
षू<sup>१</sup> हौ, छिङ्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> प्ये<sup>२</sup>श्याव्<sup>४</sup> कृपया मुझ पर हँसें नहीं ।  
(ह्वा) वो<sup>३</sup> ।

३- “..... इ<sup>३</sup> हौ<sup>४</sup>” (बाद में, -के बाद)

- १- मै<sup>३</sup> थ्येन् छु<sup>३</sup> ऊ<sup>३</sup> फ़ान्<sup>४</sup> इ<sup>३</sup> हौ<sup>४</sup> दोपहर का खाना खाने के  
वो<sup>३</sup> तै<sup>३</sup> ध्वै<sup>४</sup> इह्वैळ<sup>३</sup>। पु ध्वै<sup>४</sup> बाद में थोड़ी देर अवश्य सोता  
पुशिङ<sup>३</sup>। हूँ। न सोने से काम नहीं  
चलता।
- २- वो<sup>३</sup>मन् पान्<sup>४</sup>च्या<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>हौ<sup>४</sup> जब हम घर बदल लें तो  
छिङ<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> ताव् वो<sup>३</sup>मन् च्या<sup>३</sup> कृपया हमारे घर खाने के लिए  
लाय् छु<sup>३</sup>फ़ान्<sup>४</sup>। आइए।
- ३- वो<sup>३</sup> च्चि<sup>३</sup> मिङ्<sup>३</sup>पायल इ<sup>३</sup>- (इसको) स्वयं ठीक से सम-  
हौ<sup>४</sup>, च्यु रुङ्<sup>३</sup>इ च्याय्<sup>३</sup> रन्<sup>३</sup> भने के बाद मैं दूसरों को  
ल। आसानी से पढ़ा सकता हूँ।
- ४- था<sup>३</sup> चौ<sup>३</sup> ल इ<sup>३</sup>हौ<sup>४</sup> वो<sup>३</sup>मन् उसके जाने के बाद हमने खाना  
च्यु छु<sup>३</sup>फ़ान्<sup>४</sup> ल। खाया।
- ५- तुङ्<sup>३</sup>शि माय्<sup>३</sup>ल इ<sup>३</sup> हौ<sup>४</sup>, वो<sup>३</sup>- वस्तुएं खरीदने के बाद हम  
मन् च्यु ताव् छु<sup>३</sup>चान्<sup>४</sup> छ्यु लोग स्टेशन गए।  
ल।
- ६- वो<sup>३</sup> पान्<sup>४</sup>त्येन्<sup>३</sup>चुङ्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup>हौ<sup>४</sup> मैं आधे घंटे में वापस आ  
च्यु ह्वै<sup>४</sup>लाय्। जाऊंगा।
- ७- पान्<sup>४</sup>न्येन्<sup>३</sup> इ<sup>३</sup> हौ<sup>४</sup> वो<sup>३</sup>मन् हम छः महीने बाद चीन  
च्यु याव्<sup>४</sup> ताव् चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup> जाएंगे।  
छ्यु ल।
- ८- चाय्<sup>४</sup>क्वो<sup>४</sup> सान्<sup>३</sup> कःवे<sup>४</sup> (इ<sup>३</sup>- और तीन महीने बाद हमारी  
हौ<sup>४</sup>), वो<sup>३</sup>मन् त चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>३</sup>ह्वै<sup>४</sup> चीनी भाषा अवश्य अच्छी हो  
इतिङ्<sup>३</sup> च्यु पु छ्वो<sup>४</sup> ल। जाएगी।



## व्याकरण

२०-१ प्रत्यय 'क्वो' : क्रियाविधेय वाक्य में जब हम किसी भूतकालिक व्यापार जो एक बार या कई बार हो चुका हो, पर जोर देना चाहते हैं, तो क्रिया के बाद प्रत्यय 'क्वो' जोड़ते हैं;

था<sup>१</sup> छूङ्<sup>२</sup> छ्येन्<sup>२</sup> लाय्<sup>२</sup> क्वो वह पहले आ चुका है ।

वो<sup>१</sup> छ्यू<sup>२</sup>क्वो नेक<sup>३</sup> फ़ान्- मैं उस भोजनालय में जा  
क्वाळ<sup>३</sup> । चुका हूँ ।

निन्<sup>२</sup> खान्<sup>२</sup>क्वो चे<sup>३</sup>पन्<sup>३</sup> पू<sup>१</sup> क्या तुम वह किताब पढ़ चुके  
मा ? हो ?

खान्<sup>२</sup>क्वो, यौ इ<sup>३</sup>स्चि<sup>३</sup>ल । पढ़ चुका हूँ, बड़ी ही रोचक  
है ।

हम यह सीख चुके हैं कि प्रत्यय 'ल' का प्रयोग पूर्णता-बोधक स्वरूप सूचित करने के लिए किया जाता है, इसलिये यदि भूतकालिक अनुभव के रूप में किसी व्यापार की पूर्णता पर जोर देना हो, तो 'क्वो' और 'ल' का प्रयोग साथ-साथ किया जा सकता है । आम तौर से प्रत्यय 'क्वो' प्रत्यय 'ल' के पहले आता है; जैसे,

नि<sup>३</sup> ताव्<sup>३</sup> था च्या छ्यू<sup>२</sup>ल क्या तुम उसके घर गये थे ?  
मा ?

छ्यू<sup>२</sup>क्वोल । हाँ, गया था ।

चिन्<sup>३</sup> थ्येन्त पाव्<sup>३</sup> नि<sup>३</sup> क्या तुम आज का अखबार  
खान्<sup>३</sup> ल मा ? खान्<sup>२</sup>क्वोल । पढ़ चुके हो ? हाँ, पढ़ चुका  
मै<sup>२</sup> प<sup>३</sup>म्मा याव्<sup>३</sup>चिन्<sup>३</sup>त षू<sup>३</sup> हूँ । कोई खास समाचार नहीं  
है (अथवा कोई महत्वपूर्ण  
समाचार नहीं है) ।

था<sup>१</sup> छ्येन्<sup>२</sup>थ्येन् लाय्<sup>२</sup>क्वोल वह (गत) परसों आया था ।

निषेधार्थक वाक्य में क्रिया के ठीक पहले 'मै<sup>३</sup>(यौ)' लगाते हैं, और क्रिया के ठीक बाद प्रत्यय 'क्वो<sup>३</sup>' लगा रहता है । इसमें और पूर्णता बोधक स्वरूप में यह फर्क है कि निषेधार्थक वाक्य में 'क्वो<sup>३</sup>' लगाये रखना पड़ता है, लेकिन पूर्णता-बोधक स्वरूप वाले वाक्य में 'ल' को नहीं रख सकते; उदाहरण के लिये—

था <sup>३</sup> मै <sup>३</sup> यौ लाय् <sup>३</sup> क्वो	वह (कभी भी) नहीं आया है ।
नि <sup>३</sup> च्क्वो <sup>३</sup> क्वो फ्रै <sup>३</sup> चि <sup>३</sup>	क्या तुम कभी भी हवाई जहाज
मै <sup>३</sup> यौ ? मै <sup>३</sup> च्क्वो <sup>३</sup> -क्वो ।	पर चढ़े हो ? अभी तक नहीं
	(अथवा कभी भी नहीं चढ़ा हूँ) ।

२०-२ 'छू<sup>३</sup>ङ्<sup>३</sup>छ्येन्<sup>३</sup>', 'हौ<sup>३</sup>लाय्', इत्यादि सामान्य काल वाचक शब्द : नीचे दिये संयुक्तपद सामान्यतः भूतकाल या भविष्यकाल की सूचना देते हैं :

छू <sup>३</sup> ङ् <sup>३</sup> छ्येन् <sup>३</sup>	अतीत में, पहले
श्येन् <sup>३</sup> चाय् <sup>३</sup>	अभी, इस समय
ई <sup>३</sup> छ्येन् <sup>३</sup>	अतीत में, पहले
ई <sup>३</sup> हौ <sup>३</sup>	बाद में, तत्पश्चात्
हौ <sup>३</sup> लाय्	बाद में, तत्पश्चात्

ये गतिमान् क्रिया-विशेषण हैं, इसलिये ये मुख्य क्रिया के पहले प्रयुक्त होते हैं; जैसे,

ई <sup>३</sup> छ्येन् <sup>३</sup> वो <sup>३</sup> मै <sup>३</sup> छू <sup>३</sup> क्वो	मैंने पहले कभी खाना नहीं खाया ।
चुङ् <sup>३</sup> क्वो <sup>३</sup> फ्रान् <sup>३</sup> ई <sup>३</sup> हौ <sup>३</sup>	बाद में (अब) अक्सर खाने की
वो <sup>३</sup> याव् छाङ् <sup>३</sup> छू <sup>३</sup>	इच्छा रखता हूँ (खाना चाहता हूँ) ।

उपरोक्त काल-वाचक शब्द, क्रिया-विन्यास या किसी और वाक्यांश के बाद भी प्रयुक्त हो सकते हैं, इस प्रकार ये ऐसे विन्यास बन जाते हैं जिससे काल का बोध होता है और इनका प्रयोग क्रिया-विशेषण के रूप में होता है; जैसे,



पृ<sup>२</sup> ई<sup>१</sup> त्येन्<sup>३</sup> ई<sup>३</sup> छ्येन्<sup>२</sup> वो  
याव्<sup>५</sup> षाङ्<sup>५</sup> ख<sup>५</sup>

मैं ग्यारह बजे के पहले कक्षा में  
जाना चाहता हूँ (या क्लास में  
जाना चाहता हूँ) ।

निन्<sup>२</sup> षाङ्<sup>५</sup> छ्वान्<sup>२</sup> ई<sup>३</sup>-  
छ्येन्<sup>२</sup> ख<sup>३</sup>ई<sup>३</sup>कै<sup>३</sup> वो<sup>३</sup> ई<sup>२</sup>क  
शिन्<sup>५</sup>, वो<sup>३</sup> श्याङ्<sup>३</sup> सूङ्<sup>५</sup>  
सुङ् निन्<sup>२</sup>

(पानी के) जहाज में चढ़ने से पहले  
मुझे खत दीजियेगा, (क्योंकि)  
मैं विदा करना चाहता हूँ ।

सान्<sup>१</sup> न्येन्<sup>२</sup> ई<sup>३</sup>छ्येन्<sup>२</sup> वो  
पु<sup>३</sup>चाय् चळ

तीन साल पहले मैं यहाँ नहीं था ।

पान्<sup>५</sup> न्येन्<sup>२</sup> ई<sup>३</sup> हौ था<sup>१</sup>  
च्यु<sup>५</sup> याव् लाय्<sup>३</sup> ल

वह छह महीने बाद आएगा ।

वो<sup>३</sup> ताव्<sup>५</sup>ल चुङ्<sup>३</sup>क्वो<sup>२</sup>  
ई<sup>३</sup>हौ<sup>५</sup> च्यु<sup>५</sup> काव्<sup>१</sup>-  
शिङ्<sup>५</sup> ल

चीन पहुँचने के बाद मुझे खुशी  
हुई (अथवा, जब मैं चीन  
पहुँचा, तब बहुत खुश हुआ) ।

इस प्रकार के विन्यास की एक विशिष्टता है कि 'ई<sup>३</sup>छ्येन्<sup>२</sup>' के पहले का विन्यास चाहे सकारार्थक हो या निषेधार्थक, लेकिन उसके अर्थ में कोई अन्तर नहीं आता, इसलिये 'वो<sup>३</sup> छृफान्<sup>५</sup> ई<sup>३</sup>छ्येन्<sup>२</sup> खान्<sup>५</sup> पाव्' (मैं खाना खाने के पहले अखबार पढ़ता हूँ), इस वाक्य को इस प्रकार भी लिखा जा सकता है : 'वो<sup>३</sup> मै<sup>२</sup> छृफान्<sup>५</sup> ई<sup>३</sup>छ्येन्<sup>२</sup> खान्<sup>५</sup> पाव्' । ऊपर की उदाहरणमाला '(ग)' के १-४ नंबर तक के उदाहरणों (जिसमें 'ई<sup>३</sup> छ्येन्<sup>२</sup>' है) को भी इसी ढाँचे में, बिना अर्थ परिवर्तन के ढाल सकते हैं ।

२०-३ 'त<sup>२</sup>पृ<sup>३</sup>हौ' (ळ) : यह विन्यास हिन्दी के 'जब' या '—के समय' का समानार्थी है । यह 'छु.ङ्<sup>२</sup>छ्येन्<sup>२</sup>' इत्यादि कालवाचक शब्दों की तरह किसी शब्द, वाक्यांश या किसी जटिल विन्यास के बाद रखा जाता है, और इसका प्रयोग क्रियाविशेषण के रूप में मुख्यक्रिया के पहले होता है; जैसे,



पाङ्<sup>४</sup> ख<sup>४</sup> त षू<sup>३</sup>हौ प्ये<sup>३</sup> ष्वो<sup>३</sup> जब कक्षा चल रही हो तब  
 इङ्<sup>३</sup> वेन्<sup>३</sup> अंग्रेजी में बात मत करो (अथवा,  
 क्लास के वक्त अंग्रेजी में बात  
 मत करो) ।

(अधिक उदाहरणों के लिये उदाहरणमाला (ग) २ देखिये)

२०-४ सहायक शब्द 'आ' : सहायक शब्द 'आ' के प्रयोग से वाक्य के अर्थ में कोई मूल परिवर्तन नहीं होता, लेकिन वक्ता के भाव में कुछ हल्का सा परिवर्तन सूचित होता है । 'नि<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> आ' एक ऐसा ही सुप्रचलित वाक्य है जौ 'नि<sup>३</sup> हाव्<sup>३</sup> आ' की जगह प्रयुक्त होता है । 'लाव्<sup>३</sup> चाव्<sup>४</sup> आ' जैसे वाक्य किसी निकट मित्र जैसे व्यक्ति को संबोधित करने में प्रयुक्त होते हैं । इसके कुछ आलंकारिक प्रयोग भी हैं; जैसे,

नि<sup>३</sup> मै<sup>३</sup> काव्<sup>४</sup> सु वो<sup>३</sup>, वो<sup>३</sup> तुमने मुझे बताया नहीं, मुझे  
 नाळ<sup>३</sup> चू<sup>३</sup>ताव् नि<sup>३</sup> चाय् चळ<sup>४</sup> कैसे मालूम हो कि तुम यहां  
 आ । हो ।

( 'नाळ<sup>३</sup>' का प्रयोग बल प्रगट करने के लिए ) ।

## परिशिष्ट १

इस पुस्तक में प्रयुक्त मुख्य व्याकरण संबंधी शब्दों की सूची  
(कोष्ठक में संक्षिप्त रूप दिये गये हैं)

अंतर्गतार्थक	Inclusive
अपवाद	Exception
अपवृत्त कर्म	Inverted object
अवधि (कालबोधक)	Period (of time)
अस्तित्व	Location
आश्रितार्थक वाक्यांश	Dependent (clause)
आश्रित वाक्य	Conditional sentence
इकाई	Unit
एकान्वयी संज्ञा	Noun in apposition, appositive noun
एक शब्दांशिक शब्द	Mono-Syllabic word
काष्ठा	Pitch
क्रमवाचक अंक	Ordinal number
क्रियापद (क्रि०)	Verb
क्रिया-विशेषण (क्रि० वि०)	
या क्रियापद-विशेषण	Adverb
क्रिया-कर्म संयुक्त पद (क्रिया० क०)	Verb-object compound
गणनावचक अंक	Cordial number
गतिशील क्रिया-विशेषण	Movable adverb
दिशाबोधक	Directional
नियतकालिक व्यापार	Periodic action
निरन्तरताबोधक स्वरूप	Continuous aspect
निश्चयवाचक सर्वनाम	Specifiers (pronouns)
निषेधक	Exclusiveness
निषेधार्थक (वाक्य)	Negative (sentence)
पूर्ण व्यापार	Completed action

पूर्ति	Complement
प्रत्यय	Suffix
प्रयोजन	Purpose
मात्रा	Degree
मापकशब्द (मा०)	Measure word
रीति	Manner
लगभग संख्या	Indefinite numbers
लुप्त संज्ञा	Noun understood
वर्णनात्मक वाक्य	Descriptive sentence
विधानार्थक वाक्य	Declarative sentence
विन्यास	Construction
विशेषण (वि)	Adjective
विशेषण रूपी विशेषता-सूचक, या विशेषण के रूप में प्रयुक्त शब्द	Adjective modifiers
व्यतीत समय	Time spent
शब्दांश	Syllable
शून्यस्वर	Neutral Tone
श्रेणीबद्ध	In series
सकारार्थक वाक्य	Affirmative sentence
सर्वनाम (सर्व०)	Pronoun
सहायक शब्द (स० श०)	Particle
सहायक क्रिया (स० क्रि०)	Auxiliary verb
सापेक्ष योजी	Relative Connective
सापेक्ष समय	Relative Time
सीमावाचक क्रिया-विशेषण	Adverb of extent
संख्या	Number
संज्ञा (सं)	Noun
संबंध सूचक (सं० सू०)	Preposition
संयुक्त पद	Compound
स्वर	Tone



परिशिष्ट-२

पेकिंग-बोली की भाषणध्वनियों की (चीन द्वारा  
स्वीकृत रोमन लिपि 'फिन्डिन्' और नागरीलिपि में

तुलनात्मक सारणी)

फिन्डिन्	देवनागरी	फिन्डिन्	दे०ना०
a	आ	cen	छन्
ai	आय्	ceng	छङ्
an	आन्	cha	छा
ang	आङ्	chai	छाय्
ao	आव्	chan	छान्
ba	पा	ehange	छाङ्
bai	पाय्	chao	छाव्
ban	पान्	che	छ
bang	पाङ्	chen	छन्
bao	पान्	cheng	छङ्
bei	पे	chi	छू
ben	पन्	chong	छुङ्
beng	पङ्	chou	छौ
bi	पि	chu	छु
bian	प्येन्	chuai	छ्वाय्
biao	प्याव्	chuan	छ्वान्
bie	प्ये	chung	छ्वाङ्
bin	पिन्	chui	छ्वे
bing	पिङ्	chun	छुन्
bo	पो	chuo	छ्वो
bou	पौ	ci	छ् (श्छ)
bu	पु	cong	छुङ्
ca	छा (श्छा)	cou	छौ
cai	छाय्	cu	छु
can	छोय्	cuan	छ्वान्
cang	छाङ्	cui	छ्वे
cao	छाव्	cun	छुन्
ce	छ (श्छ)	cuo	छ्वो

फिन्इन्	दे० ना०	फिलइन्	दे० ना०
da	तां	gan	कान्
dai	ताय्	gang	काङ्
dan	तान्	gao	काव्
dang	ताङ्	ge	क
dao	ताव्	gei	कै
de	त	gen	फन्
dei	तै	geng	कङ्
deng	तङ्	gong	कुङ्
di	ति	gou	कौ
dian	त्येन्	gu	कु
diao	त्याव्	gua	क्वा
die	त्ये	guai	क्याय्
ding	तिङ्	guan	क्वान्
diu	त्यु	guang	क्वाङ्
dong	तुङ्	gui	क्वे
dou	तौ	gun	कुन्
du	तु	guo	क्वो
duan	त्वान्	ha	हा
dui	त्वै	hai	हाय्
dun	तुन्	han	हान्
duo	त्वो	hang	हाङ्
e	अ	hao	हाव्
ei	ऐ	he	ह
eu	अन्	hei	है
eng	अङ्	hen	हन्
er	अळ	heng	हङ्
fa	फा	hong	हुङ्
fan	फान्	hou	हौ
fang	फाङ्	hu	हु
fei	फै	hua	ह्वा
fen	फन्	huai	ह्वाय्
feng	फङ्	huan	ह्वान्
fo	फो	huang	ह्वाङ्
fou	फौ	hui	ह्वै
fu	फु	hun	हुन्
ga	का	huo	ह्वो
gai	काय्	ji	चि

## फिन्इन्

jia  
jian  
jiang  
jiao  
jie  
jin  
jing  
jiong  
jiu  
ju  
juan  
jue  
jun  
ka  
kai  
kan  
kang  
kao  
ke  
ken  
keng  
kong  
kou  
ku  
kua  
kua  
kuan  
kuang  
kui  
kun  
kuo  
la  
lai  
lan  
lang  
lao  
le  
lei

## देवनागरी

च्या  
च्येन्  
च्याङ्  
च्याव्  
च्ये  
चिन्  
चिङ्  
चियुङ्  
च्यु  
च्यु  
च्यु  
च्यवान्  
च्यवे  
च्यून्  
खा  
खाय्  
खान्  
खाङ्  
साव्  
ख  
खन्  
खङ्  
खुङ्  
खौ  
खु  
ख्वा  
ख्वाय्  
खवान्  
ख्वाङ्  
ख्वै  
खुन्  
ख्वो  
ला  
लाय्  
लान्  
लाङ्  
लाव्  
ल  
लै

## फिन्इन्

leng  
long  
lou  
li  
lia  
lian  
liang  
liao  
lie  
lin  
ling  
liu  
lu  
luan  
iun  
luo  
lu  
luan  
lue  
m  
ma  
mai  
man  
mang  
mao  
mei  
men  
meng  
mi  
mian  
miao  
mie  
min  
ming  
miu  
mo  
mou  
mu

## दे० ना०

लङ्  
लुङ्  
लौ  
लि  
ल्या  
ल्येन्  
ल्याङ्  
ल्याव्  
ल्ये  
लिन्  
लिङ्  
ल्यु  
ल्यु  
ल्वान्  
लुन्  
ल्वो  
ल्य  
ल्यवान्  
ल्यवे  
म्  
मा  
माय्  
मान्  
माङ्  
माव्  
मै  
मन्  
मङ्  
मि  
म्येन्  
म्याव्  
मिन्  
म्ये  
मिङ्  
म्यु  
मो  
मौ  
मु



## फिन्डन्

n  
na  
na  
nan  
nang  
nao  
ne  
nei  
nen  
neng  
nong  
nou  
ni  
nian  
niang  
niao  
nie  
nin  
ning  
niu  
nu  
nuan  
nuo  
nu  
nue  
o  
ou  
pa  
pai  
pan  
pang  
pao  
pei  
pen  
peng  
po  
pou  
pi  
pian

## दे० ना०

न्  
ना  
नाय्  
नान्  
नाङ्  
नाव्  
न  
नै  
नन्  
नङ्  
नुङ्  
नो  
नि  
न्येन्  
न्याङ्  
न्याव्  
न्ये  
निन्  
निङ्  
न्यु  
नु  
न्नान  
न्वो  
न्यु  
न्ये  
ओ  
औ  
फो  
फाय्  
फान्  
फाङ्  
फाव्  
फे  
फन्  
फङ्  
फो  
फौ  
फि  
पयेन्

## फिन्डन्

piao  
pie  
pin  
ping  
pu  
qi  
qia  
qian  
qiang  
qiao  
qie  
qin  
qing  
qiong  
qiu  
qu  
quan  
que  
quu  
ran  
rang  
rao  
re  
ren  
reng  
ri  
rong  
rou  
ru  
rua  
ruan  
rui  
run  
ruo  
sa  
sai  
san  
sang

## देवनागरी

प्याव्  
प्ये  
फिन्  
फिङ्  
फु  
छि  
छ्या  
छ्येन्  
छ्याङ्  
छ्याव्  
छ्ये  
छिन्  
छिङ्  
छ्युङ्  
छ्यु  
छ्य  
छ् य्वान्  
छ् य्वे  
छ् य्वन्  
रान्  
राङ्  
राव्  
र(रर)  
रन्  
रङ्  
रु  
रुङ्  
रौ  
रु  
रवा  
रवान्  
रव  
रुन्  
रुवो  
सा  
साय्  
सान्  
साङ्

## फिन् इन्

sao  
se  
sen  
seng  
sha  
shai  
shan  
shang  
shao  
she  
shei  
shen  
Sheng  
Shi  
shou  
shu  
shua  
shuai  
shuan  
shuang  
shui  
shun  
shuo  
si  
song  
sou  
su  
suan  
sui  
sun  
suc  
ta  
tai  
tan  
tang  
tao  
te  
teng

## दे० ना० फिन् इन्

साव् ti  
स tian  
सन् tiao  
सङ् tie  
षा ting  
षाय् tong  
षान् tou  
षाङ् tu  
षाव् tuan  
ष tui  
षै tun  
षन् tuo  
षङ् wa  
षू wai  
षी wan  
षू wang  
ष्वी wei  
ष्वाय् wen  
ष्वान् weng  
ष्वोङ् wo  
ष्वै wu  
षुन् xi  
ष्वो xia  
स्च xian  
सुङ् xiang  
सौ xiao  
सु xie  
स्वान् xin  
स्वै xing  
सुन् xiong  
सौ xiu  
था xu  
थाय् xuan  
थान् xue  
थाङ् xun  
थाव् ya  
थ yai  
थङ् yan

## देवनागरी

थि  
थ्येन्  
थ्याव्  
थ्ये  
थिङ्  
थुङ्  
थो  
थु  
थ्वान्  
थ्वे  
थुन्  
थ्वो  
वा  
वाय्  
वान्  
वाङ्  
वै  
वेन्  
वङ्  
वो  
उ  
शि  
इया  
इथेन्  
इयाङ्  
इयाव्  
इथे  
शिन्  
शिङ्  
इयुङ्  
इयु  
इयू.  
इयवान्  
इयवे  
इयून्  
या  
याय्  
येन्

## फिन्इन्

yang  
yao  
ye  
yi  
yin  
ying  
yo  
yong  
you  
yu  
yuan  
yue  
yun  
za  
zai  
zan  
zang  
zao  
ze  
zei  
zen  
zeng  
zha  
zhai  
zhan

## दे० ना०

याङ्  
याव्  
ये  
इ  
इन्  
इङ्  
यो  
युङ्  
यी  
य  
यवान्  
यवे  
यन्  
चा  
चाय्  
चान्  
चाङ्  
चाव्  
च (त्वं)  
चै  
चन्  
चङ्  
चा  
चाय्  
चान्

## फिन्इन्

zhang  
zhao  
zhe  
zhei  
zhen  
zheng  
zhi  
zhong  
zhou  
zhu  
zhua  
zhuai  
zhuan  
zhuang  
zhui  
zhun  
zhuo  
zi  
zong  
zou  
zu  
zuan  
zui  
zun  
zuo

## दे० ना०

चाङ्  
चाव्  
च  
चै  
चन्  
चङ्  
चृ  
चुङ्  
चौ  
चु  
च्वा  
च्वाय्  
च्वान्  
च्वाङ्  
च्वै  
चुन्  
च्वो  
च  
चुङ्  
चौ  
च  
चवान्  
च्वै  
चुन्  
च्वो



परिशिष्ट ३

वर्णानुक्रमिक शब्द सूची

चीनी शब्द	संज्ञा, विशेषण आदि पद संक्षिप्त रूप में	अर्थ	पाठ संख्या
अळ <sup>४</sup>	(ग० वा० अं)	दो	३
अळ <sup>२</sup> चू	(सं)	बेटा, पुत्र	६
अळ <sup>४</sup> षू <sup>२</sup>	(ग० वा० अं)	वीस	३
अळ <sup>४</sup> षू <sup>२</sup> इ <sup>१</sup>	(ग० वा० अं)	इक्कीस	३
आ	(स० श०)	वाक्य प्रत्यय	२०
आय् <sup>४</sup>	(क्रि०)	प्यार करना	७
आय् <sup>४</sup>	(स० क्रि०)	पसन्द करना या चाहना	७
इ <sup>१</sup>	(ग० वा० अं)	एक	३
इ <sup>२</sup> कुङ् <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	कुल	६
इ <sup>२</sup> ख्वाळ <sup>४</sup>	(सं)	एक साथ	१४
इ <sup>२</sup> ख्वाळ <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	एक साथ	१४
इङ् <sup>१</sup> ताङ् <sup>१</sup>	(स० क्रि०)	चाहिए, उचित	१५
इङ् <sup>१</sup> वेन् <sup>२</sup>	(सं)	अंग्रेजी भाषा	१
इङ् <sup>३</sup> चिङ् <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	पहले ही	१२
इङ् <sup>३</sup> चू	(सं)	कुर्सी	४
...इङ् <sup>३</sup> छयेन् <sup>२</sup>	(गतिशील क्रि० वि०)	पहले	२०
इङ् <sup>३</sup> छयेन् <sup>२</sup>	(गतिशील क्रि० वि०)	”,-के पहले	२०
इङ् <sup>२</sup> तिङ् <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	जरूर, आवश्यक,	
इङ् <sup>४</sup> त्येन् <sup>३</sup> चुङ् <sup>१</sup>		निश्चय ही	११
इङ् <sup>४</sup> त्येन् <sup>३</sup> षू <sup>२</sup> उङ् <sup>३</sup> फन् <sup>१</sup>		एक बजे	१६
(अथवा इङ् <sup>४</sup> त्येन् <sup>३</sup>		सवा बजे या	
इङ् <sup>२</sup> ख <sup>४</sup> )		एक बज कर	
इङ् <sup>४</sup> त्येन् <sup>३</sup> षू <sup>२</sup> फन् <sup>१</sup>		१५ मिनट	१६
		एक दस (एक बज कर दस मिनट)	१६
इङ् <sup>४</sup> थ्येन् <sup>१</sup>	(सं, क्रि० वि०)	एक दिन,	
		पूरा दिन	१५
इन् <sup>४</sup> तु <sup>४</sup>	(सं)	भारत	२
इन् <sup>१</sup> वै <sup>४</sup>	(गति० क्रि० वि०)	क्योंकि,	
		कारण से	१०
इङ् <sup>२</sup> ये <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	एक रात,	
		पूरी रात	१६

इ <sup>२</sup> लु <sup>४</sup> फिङ् <sup>२</sup> आन् <sup>१</sup>	(मुहावरेदार वाक्य)	यात्रा प्रसन्नता पूर्वक हो (स- कुशल हो)	२०
इ <sup>४</sup> र्च्	(सं)	अर्थ, मतलब	८
इ <sup>३</sup> हो <sup>४</sup>	(गतिशील क्रि० वि०)	इसके (या उसके)	
...इ <sup>३</sup> हो <sup>४</sup>	(गतिशील क्रि० वि०)	पश्चात्	२०
इह्वैळ <sup>३</sup>	(सं क्रि० वि०)	बाद में.....,	
(अथवा इ <sup>१</sup> ह्वैळ <sup>४</sup> )		के बाद	२०
उ <sup>३</sup>	(सं क्रि० वि०)	एक क्षण	१६
उ <sup>१</sup> च्	(ग० वा० अं)	पांच	३
उ <sup>३</sup> फान्	(सं)	कमरा	१०
ऋ <sup>४</sup> च्	(सं)	दोपहर का खाना	१६
क <sup>१</sup> क	(सं)	दिन, एक विशेष	
क (ग)	(मा० श०)	दिन	१६
कन्	(सं० सू०)	बड़ा भाई	८
क <sup>१</sup> (ळ)	(सं)	प्राणियों अथवा	
काङ् <sup>१</sup> (काङ्)	(क्रि० वि०)	वस्तुओं से संबद्ध	
काङ्छाय <sup>२</sup>	(क्रि० वि०)	मापक शब्द	४
काव् <sup>१</sup>	(वि०)	साथ, और	१४
काव् <sup>१</sup> शिङ् <sup>४</sup>	(वि०)	गाना	७
काव् <sup>४</sup> सु (ङ)	(क्रि०)	अभी, इसी मिनट	१६
कुङ् <sup>१</sup> फु	(सं)	कुछ ही क्षण पहले	१६
कु <sup>४</sup> पृ	(सं)	लम्बा, ऊँचा	१
कै <sup>३</sup>	(सं सू०)	प्रसन्न	१८
कै <sup>३</sup>	(क्रि०)	बताना, सूचित	
कौ <sup>४</sup>	(वि०)	करना	१६
कौ <sup>४</sup> ल		अवकाश, फुरसत	१४
ववान् <sup>१</sup> (पाङ्)	(क्रि०)	कहानी	१२
ववै <sup>४</sup>	(वि०)	लिये, के लिये,	
ववै <sup>४</sup> शिङ् <sup>४</sup>		को	१४
		देना	३
		काफी, पर्याप्त,	
		यथेष्ट	६
		बहुत है, काफी है,	१४
		पर्याप्त है	
		बंद करना	
		(‘खाय’ का विलोम)	१६
		कीमती	२
		आपका शुभ	
		(कुल) नाम ?	५

क्वो <sup>२</sup>	(सं)	देश, राज्य	५
क्वो <sup>४</sup>	(क्रि०)	गुजरना, अतीत	१६
क्वो <sup>४</sup>	(स० श०)	अनुभव सूचक क्रिया	२०
ख <sup>३</sup>	(क्रि० वि०)	प्रत्यय	
—ख <sup>४</sup>	(मा०)	वास्तव में, अवश्य,	
—ख <sup>४</sup>	(मा०)	फिर भी	१६
ख <sup>३</sup> इ <sup>३</sup>	(सं० क्रि०)	१५ मिनट	१६
ख <sup>४</sup> छि	(वि०)	पाठ के लिए प्रयुक्त	१५
ख <sup>४</sup> थिङ् <sup>१</sup>	(सं)	सकना, सकना	
ख <sup>३</sup> षु	(गति० क्रि० वि०)	(आज्ञा मांगना या देना)	७
खान् <sup>४</sup>	(क्रि०)	विनम्र होना,	
खान् <sup>४</sup>	(क्रि०)	शराफत दिखाना	७
खान् <sup>४</sup> च्येन्	(क्रि०)	बैठक (मेहमानों का	
खाय् <sup>१</sup>	(क्रि०)	कमरा)	१६
खु <sup>१</sup>	(क्रि०)	लेकिन	४
खो <sup>३</sup> ताळ	(सं)	देखना, मुलाकात	
ख्वाय् <sup>४</sup>	(मा०)	करना	११
—ख्वाय् <sup>४</sup>	(मा०)	देखना, सोचना,	
ख्वाय् <sup>४</sup>	(वि०)	विचारना	२०
ख्वाय् <sup>४</sup> च	(सं)	देखना, पढ़ना	
—च	(स० श०)	(अखबार आदि)	२
चङ् <sup>४</sup> (चाय्)	(क्रि० वि०)	देखना	१८
चन् <sup>१</sup>	(क्रि० वि०)	खोलना, चलना या	
		चलाना (गाड़ी, जहाज	
		इत्यादि)	१५
		रोना	१८
		जब	१७
		डालर	६
		रुपये पैसे के लिए	
		प्रयुक्त	१५
		तेज, जल्दी	१६
		जल्दी	१६
		चौपस्टिक (चीन देश	
		के भोजन में प्रयुक्त	
		होने वाली सलाइयां)	१४
		क्रिया-प्रत्यय, कार्य	
		जारी है सूचित करने	
		के लिये	१७
		(किसी काम के)	१७
		बीच में	
		सचमुच, ठीक	७



चळ <sup>४</sup>	(सं)
चाङ् <sup>१</sup>	(मा०)
चान् <sup>४</sup>	(क्रि०)
चान् <sup>४</sup> छिलाय्	(क्रि०)
चाव् <sup>३</sup>	(क्रि०)
चि <sup>३</sup>	(नि० सर्व०)
चिन् <sup>४</sup>	(क्रि०)
चिन् <sup>४</sup> छड् <sup>१</sup>	(क्रि० क०)
चिन् <sup>४</sup> थ्येन	(सं, क्रि० वि०)
चिन् <sup>४</sup> न्येन् <sup>२</sup>	(सं, क्रि० वि०)
शि <sup>२</sup> ल	(सं श०)
चु <sup>४</sup>	(क्रि०)
चुङ् <sup>१</sup> उ <sup>३</sup>	(क्रि० वि०)
चुङ् <sup>१</sup> क्वो <sup>२</sup>	(सं)
चुङ् <sup>१</sup> थो	(सं)
चुङ् <sup>१</sup> फान् <sup>४</sup>	(सं)
चु <sup>३</sup>	(सं)
च <sup>१</sup> ताव्	(क्रि०)
चे <sup>४</sup> (च <sup>४</sup> )	(नि० वा० सर्व०)
च्या <sup>१</sup>	(सं)
च्याव् <sup>१</sup>	(क्रि०)
च्याव् <sup>४</sup>	(क्रि०)
	(सं०सू०)
च्याव् <sup>४</sup>	(यो०क्रि०)
च्याव् <sup>१</sup> वू <sup>१</sup>	(क्रि०क०)
च्यु <sup>३</sup>	(ग०वा०अ०)
च्यु <sup>३</sup>	(सं)
च्यु <sup>४</sup>	(क्रि०वि०)
च्यु <sup>४</sup>	(क्रि०वि०)
च्यु <sup>४</sup>	(क्रि०वि०)
च्ये <sup>१</sup>	(सं०)
च्ये <sup>३</sup> च्ये	(सं०)
च्येन् <sup>४</sup>	(क्रि०)
च्ये <sup>४</sup> पाव् <sup>४</sup>	(क्रि०)

यहाँ	१०
कागज़, चित्र, मेज़	
आदि के लिये मापक	६
शब्द	
खड़ा होना	१६
खड़ा होना, खड़ा हो	
जाओ	११
ढूँढ़ना, खोजना	१५
कितना ?	१३
अन्दर जाना	१६
शहर के अंदर जाना	१६
आज	१२
इस वर्ष	१३
विशेषणों का प्रत्यय,	
अधिकतम मात्रा सूचक	१६
रहना, वास करना	१५
दोपहर	१६
चीन (देश)	२
(एक) घण्टा	१५
दोपहर का भोजन	१२
कागज़	६
जानना	५
यह, (यहाँ)	४
घर, परिवार	१०
पढ़ाना	६
बुलाना (किसी को)	
बताना, आज्ञा देना,	
करने देना	१६
नाम होना	५
अध्यापन करना	६
नौ	३
मदिरा, शराब	६
तब	१५
केवल, फौरन, अभी	६
तुरन्त	१५
रास्ता, मार्ग, रोड	११
बड़ी बहन	५
देखना, मिलना	
('खान्' से अधिक	
औपचारिक)	१६
परिचय करना	२०

च॒य <sup>४</sup>	(मा०)	शब्द के लिये प्रयुक्त	
च॒यु <sup>४</sup> च	(सं०)	मापक शब्द	१४
च॒यै <sup>२</sup> त	(क्रि०)	वाक्य	१४
च्यो <sup>१</sup> च	(सं)	अनुभव करना,	
च <sup>४</sup>	(सं)	विचारना	२०
च <sup>४</sup> चि <sup>३</sup>	(सं)	मेज़	४
च <sup>३</sup> म्मा	(क्रि० वि०)	अक्षर (लिखा हुआ	
च <sup>३</sup> म्मा	(क्रि० वि०)	अक्षर), चीनी रेखा-	
च <sup>३</sup> म्मा पान् <sup>४</sup>	(मुहावरेदार वाक्य)	अक्षर	७
चम् <sup>३</sup> (मा) ल	(क्रि०)	स्वयं, अपने आप	२०
चाय <sup>४</sup>	(सं० सू०)	कैसे	११
चाय <sup>४</sup>	(क्रि०)	क्यों ? ऐसा कैसे है कि	१८
चाय <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	इसके बारे में क्या हो	
चाय <sup>४</sup> च्येन् <sup>४</sup>		सकता है ?	१६
चाव <sup>३</sup>	(वि०)	क्या हुआ ? क्या	
चाव <sup>३</sup> फ़ान्	(सं०)	मामला है ?	१८
चाव <sup>३</sup> षाङ्	(सं०, क्रि० वि०)	पर, अन्दर	१०
चो <sup>३</sup>	(क्रि०)	पर होना, अंदर होना	१०
च्वै <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	फिर (भविष्य में)	१७
च्वो <sup>४</sup>	(क्रि०)	नमस्ते (अथवा फिर	
च्वो <sup>४</sup>	(सं० सू०)	मिलेंगे)	६
च्वो <sup>४</sup> श्च्येन्	(सं०, क्रि० वि०)	शीघ्र होना	१६
च्वो <sup>४</sup> श्या	(क्रि०)	सबरे का भोजन	१२
छ <sup>१</sup>	(सं)	सबेरा	१२
छ इ <sup>२</sup>	(सं)	चलना, जाना,	
छ <sup>१</sup> चान् <sup>४</sup>	(सं)	प्रस्थान करना	१२
छा <sup>२</sup>	(सं)	अधिकतम, —तम	६
छा <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	करना, बनाना	७
छाङ् <sup>४</sup>	(क्रि०)	बैठना	११
छाङ् <sup>२</sup> (छाङ् <sup>२</sup> )	(क्रि० वि०)	से (वाहन से), चढ़कर	
		(वाहन)	११
		कल (भूतकाल)	१२
		बैठ जाना, बैठ	११
		जाओ	
		गाड़ी	११
		शहर	१०
		स्टेशन	१३
		चाय	६
		कम (होना)	१६
		गाना	७
		प्रायः (हमेशा)	६

छा <sup>१</sup> च्	(सं)	काँटा	१४
छा <sup>४</sup> पुत्वो <sup>१</sup>	(मुहावरेदार वाक्य)	लगभग	१६
छि <sup>१</sup>	(ग० वा० अ०)	सात	३
छिङ् <sup>३</sup>	(क्रि०)	तिमंत्रित करना,	
		कृपया, पूछना,	
		निवेदन करना	
छिङ् <sup>३</sup> च् वो <sup>४</sup>		बैठ जाइए, बैठिए,	
		बैठ जाओ, बैठो	११
छिङ् <sup>१</sup> छु	(वि०)	स्पष्ट (अर्थ में)	१८
छि <sup>४</sup> छ <sup>१</sup>	(सं०)	मोटरगाड़ी	११
छि <sup>४</sup> छ <sup>१</sup> चान् <sup>४</sup>	(सं०)	बसस्टाप या अड्डा	१३
छि <sup>३</sup> लाय्	(क्रि०)	खड़ा होना,	
		उदय होना	१६
छु <sup>१</sup>	(क्रि०)	बाहर जाना	१६
छु <sup>२</sup> फाड़ <sup>२</sup>	(सं)	रसोईघर	१८
छु <sup>१</sup> मन् <sup>२</sup>	(क्रि० क०)	जाना, (घर के	१६
		बाहर जाना)	
छु <sup>१</sup>	(क्रि०)	खाना	७
छयेन् <sup>१</sup>	(संख्या)	हजार	६
छयेन् <sup>२</sup>	(स)	धन, पैसा (पैसे)	३
छयेन् <sup>२</sup>	(सं०)	सामने, पहलेवाला	२०
छयेन् <sup>२</sup> थौ	(सं०)	सामने	१०
छयेन् <sup>२</sup> थ्येन् <sup>१</sup>	(गतिशील क्रि०	परसों, (बीता	
	वि०, सं०)	हुआ)	२०
छ् य् <sup>४</sup>	(क्रि०)	जाना (वहाँ)	११
छ्य <sup>४</sup> न्येन् <sup>२</sup>	(सं०, क्रि० वि०)	पिछले वर्ष	१३
छ्वान् <sup>२</sup>	(सं०)	नाव	११
छ् वाङ् <sup>१</sup> हु	(सं)	खिड़की	१६
छ् <sup>४</sup>	(मा०)	एक समय,	
		अवसर (बार)	१८
छाय् <sup>४</sup>	(सं)	हरी सब्जियाँ, चीनी	
		खाने की डिश	१४
छ् ड् <sup>३</sup>	(सं० सू०)	से	११
छ् ड् <sup>३</sup> छयेन् <sup>२</sup>	(क्रि० वि०)	पहले	१८
छ् ड् <sup>३</sup> मिङ्	(वि०)	बुद्धिमान होना,	
त (द)	(सं० श०)	चालाक	६
		संज्ञा और क्रियापद	
तङ् <sup>३</sup>	(क्रि०)	विशेषता सूचक प्रत्यय	८
त <sup>२</sup> लि <sup>३</sup>	(सं)	प्रतीक्षा करना	१६
ता <sup>४</sup>	(वि०)	दिल्ली	११
		बड़ा	१४



ता <sup>३</sup> चाङ् <sup>४</sup>	(क्रि० क०)	लड़ना, युद्ध करना	२०
ताय् <sup>४</sup>	(क्रि०)	पहनना (घड़ी, टोप आदि)	८
ताय् <sup>४</sup>	(क्रि०)	साथ ले जाना या साथ लाना	१७
ता <sup>४</sup> रन् <sup>२</sup>	(सं)	जवान, प्राप्तवयस्क (आदमी), बालिग	७
ताव् <sup>४</sup>	(क्रि)	पहुँचना	१३
ताव् <sup>४</sup>	(सं० सू०)	तक	११
ताव् <sup>१</sup> च्	(सं)	छुरी, चाकू	१४
ता <sup>३</sup> स्वान्	(क्रि०)	योजना बनाना	२०
ति <sup>४</sup>	(उपसर्ग)	क्रमवाचक अंक	
ति <sup>४</sup> ति	(सं)	बनाने के लिए श्रयुक्त	१३
ति <sup>४</sup> फाङ्	(सं)	छोटा भाई	८
ति <sup>३</sup> श्या	(सं)	स्थान	१०
तुङ् <sup>३</sup>	(क्रि०)	नीचे	१०
तुङ् <sup>१</sup> शि	(सं)	समझना	४
तै <sup>३</sup>	(सं० क्रि०)	वस्तु, चीज, विषय	५
तौ <sup>१</sup>	(क्रि० वि०)	अवश्य,	१५
— त्येन् <sup>३</sup>	(मा०)	सब, सारा, उभय, दोनों	२
त्येन् <sup>३</sup> शिन्	(सं)	घंटा	१६
त्वै <sup>४</sup>	(सं० सू०)	स्वल्पाहार	१८
त्वै <sup>४</sup>	(वि०)	ओर, की, विषय में	१४
त्वै <sup>४</sup> पुछि <sup>३</sup>	(मुहावरेदार कथन)	ठीक (होना), गुद्ध (होना)	४
त्वै <sup>४</sup> ल		क्षमा कीजिये, मुझे खेद है ।	१६
त्वो <sup>१</sup>	(वि०)	बिल्कुल ठीक है (सहमति देना)	१३
त्वो <sup>१</sup> पाव्	(संख्या)	अधिक, बहुत	८
थ <sup>४</sup> प्ये <sup>२</sup>	(वि०)	कितना	६
था <sup>१</sup>	(सर्व०)	विशेष (होना), भिन्न (होना)	२०
थाङ् <sup>१</sup>	(सं०)	वह, उसे	१
थाङ् <sup>२</sup>	(सं)	सूप, झोल	१४
थान् <sup>२</sup>	(क्रि०)	चीनी, चीनी से बनी मिठाई	७
थान् <sup>२</sup> ह्वा <sup>४</sup>	(क्रि० क०)	बातचीत करना	१६
था <sup>१</sup> मन्	(सर्व०)	बातचीत करते रहना	१६
		वे, उन्हें	१

थाय् <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	ज्यादा, अतिरिक्त, अत्यधिक	२
थाय् <sup>४</sup> -थाय्	(सं)	महिला, साहिबा, महोदया, बीबी, श्रीमती, पत्नी के लिए शिष्ट प्रयोग	५
थि <sup>४</sup>	(सं० सू०)	के बदले, के स्थान पर	१८
थिङ् <sup>१</sup> कु <sup>४</sup> पृ	(क्रि० क०)	कहानी या कथा	
थिङ् <sup>१</sup> च्येन्	(क्रि०)	सुनना	१२
थिङ् <sup>१</sup> ष्वो <sup>१</sup>		सुनना	१८
थौ <sup>२</sup>	(सं)	सुनने में आया कि	१४
थौ <sup>२</sup>	(उपसर्ग)	सिर	१७
थ्येन् <sup>१</sup>	(स)	प्रथम	१८
थ्येन् <sup>१</sup> थ्येन् <sup>१</sup>	(क्रि० वि०)	दिन	१३
न	(स० श०)	प्रतिदिन	१३
नङ् <sup>२</sup>	(स० क्रि०)	सकारार्थक वाक्यों में कार्य चलते रहना सूझित करने वाला शब्द	१०
ना <sup>२</sup>	(क्रि०)	सकना, समर्थ या योग्य होना	७
ना <sup>४</sup>	(नि० सर्व०)	पकड़ना (चीज़ की)	
ना <sup>२</sup> छि क्षाय्	(क्रि०)	ले जाना (छोटी	
नान् <sup>२</sup>	(सं, वि,)	चीज़ को)	१७
नान् <sup>२</sup>	(वि)	वह	१३
नाळ <sup>३</sup>	(सं)	उठाना	१७
नाळ <sup>४</sup>	(सं)	पुरुष संबंधी, पुरुष (पुल्लिंग)	५
नि <sup>३</sup>	(सर्व०)	कठिन होना	६
नि <sup>३</sup> मन	(सर्व०)	कहाँ ?	१०
ने <sup>४</sup> (ना <sup>४</sup> )	(नि० वा० सर्व०)	वहाँ	१०
नै <sup>३</sup>	(नि० वा० सर्व०)	तुम (एक व०)	१
न्येन् <sup>२</sup>	(सं)	तुम (लोग), तुम्हें	१
न्येन् <sup>४</sup>	(क्रि०)	वह (वहाँ), दूसरा	४
न्येन् <sup>४</sup> पू <sup>१</sup>	(क्रि० क०)	कौन सा	४
न्यू <sup>३</sup>	(सं, वि०)	वर्ष	१३
		पढ़ना (उच्चारण करके), पढ़ाई करना	६
		पढ़ाई करना स्कूल	६
		जाना	
		स्त्री, स्त्रीजाति संबंधी (स्त्रीलिंग)	५

न्यू <sup>३</sup> अळ	(मा० श०)	बेटी, पुत्री	६
पन् <sup>३</sup>		प्रति, किताबों से संबद्ध	
पन् <sup>३</sup> लाय् <sup>२</sup>	(गतिशील क्रि० वि०)	मापक शब्द	४
पा	(स० श०)	मूलतः, प्रारम्भ से	२०
		वाक्य प्रत्यय—	१६
पा	(स० श०)	प्रार्थनासूचक	
		सम्भावना के अर्थ में	१३
पा <sup>१</sup>	(ग० वा० अं०)	प्रयुक्त	
पा <sup>३</sup>	(सं० सू०)	आठ	३
		कर्म को क्रियासे पहले	
पाङ् <sup>१</sup> (चू)	(क्रि०)	रखने में प्रयुक्त	१७
		सहायता करना	१७
		(किसी की)	
पाङ् <sup>१</sup> माङ् <sup>२</sup>	(क्रि० क०)	सहायता देना	१७
पान् <sup>१</sup>	(क्रि०)	हटाना (निवास	
		स्थान बदलना,	१६
पान् <sup>१</sup>	(क्रि०)	हटाना, ले जाना	
		(भारी सामान एक	
		जगह से दूसरी जगह),	१७
पान् <sup>४</sup>	(संख्या)	आधा	६
पान् <sup>१</sup> च्या <sup>१</sup>	(क्रि० क०)	अपना निवास स्थान	
		बदलना	१६
पान् <sup>४</sup> थ्येन् <sup>१</sup>	(सं०, क्रि० वि०)	देर तक	१५
पाय <sup>३</sup>	(संख्या)	सौ	६
पाय् <sup>२</sup>	(वि०)	सफेद होना, सफेद	१६
पाय् <sup>२</sup> थ्येन्	(क्रि० वि०)	दिन के समय, दिन में	१६
पाव् <sup>४</sup>	(सं०)	अखबार, समाचार-पत्र	२
पि <sup>३</sup>	(सं०)	कलम, पेंसिल, कोई	
		भी लेखनी	२
पिङ् <sup>४</sup>	(सं०)	बीमारी	१८
पिङ् <sup>४</sup> ल	(क्रि०)	अस्वस्थ या बीमार	१८
		होना या हो गया	
पु <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	मत, नहीं	१
पु <sup>४</sup> इ तिङ् <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	अनिश्चित, अनावश्यक	११
पु <sup>४</sup> कान् <sup>३</sup> ताङ् <sup>१</sup>	(मुहावरेदार वाक्य)	तुम बिना बात मेरी	
		प्रशंसा करते हो,	
		धन्यवाद	२०
पु <sup>२</sup> छ् <sup>४</sup> वो <sup>४</sup>	(वि)	अच्छा है, ठीक हैं,	
		बढ़िया	१४
पु <sup>२</sup> ता <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	बहुत नहीं	१८
पु <sup>२</sup> पि <sup>४</sup>	(सं० क्रि०)	आवश्यकता नहीं,	
		प्रयोजन नहीं	१५



(ना<sup>४</sup>) पु<sup>२</sup> याव<sup>४</sup> चिन्<sup>३</sup>पु<sup>२</sup> युङ्<sup>४</sup> (स० क्रि०)पु पु<sup>१</sup> फु (वि०)पु<sup>२</sup> ह्याय<sup>४</sup> (वि०)पै<sup>३</sup> चिङ्<sup>१</sup> (सं०)प्याव<sup>३</sup> (सं०)प्ये<sup>२</sup> (स० क्रि०)प्ये<sup>२</sup> त (सं०)प्ये<sup>२</sup> रन् (सं०)फङ्<sup>२</sup> यौ (मं)फाव<sup>३</sup> (क्रि०)फिङ्<sup>२</sup> छाङ्<sup>२</sup> (वि०)—फु<sup>४</sup> (सं)फु<sup>४</sup> च् (सं)फयन्<sup>२</sup> ई (वि०)—फङ्<sup>१</sup> (मा०)फन्<sup>१</sup> (मा०)

—फन् (मा०)

फाङ्<sup>४</sup> (क्रि)फाङ्<sup>२</sup> च् (सं)फाङ्<sup>४</sup> श्या (लाय्) (क्रि०)

फान् (सं)

फान्<sup>४</sup> क्वाळ<sup>३</sup> (सं)फान्<sup>४</sup> थिङ्<sup>१</sup> (सं)फु<sup>४</sup> छिन् (सं)फु<sup>४</sup> मु (सं)फ्रि<sup>१</sup> चि<sup>१</sup> (सं)मन्<sup>२</sup> (सं)

मा (स० श०)

माङ्<sup>२</sup> (वि०)मान्<sup>४</sup> (वि०)

कुछ भी नहीं, कोई बात नहीं १३

कोई उपयोग या लाभ नहीं, निरर्थक १५

कष्ट में होगा, अस्वस्थ बुरा न होना, अच्छा होना १८

पेकिंग (चीन की राजधानी) १२

कलाई घड़ी ३

नहीं (आज्ञासूचक पु<sup>२</sup> याव<sup>४</sup> का संक्षिप्त रूप) १५

दूसरा, और (लोग या वस्तु, चीज) १२

दूसरा आदमी, और लोग या आदमी १२

दोस्त, मित्र ४

दौड़ना १६

साधारण (होना) २०

दुकान, भण्डार १०

दुकान, भण्डार १०

सस्ता ८

पत्र के लिए प्रयुक्त १५

सेन्ट ६

मिनट १६

रखना, जाने देना १७

मकान, इमारत १०

रखना १७

खाना (पके हुए चावल) ७

जलपान-गृह, रेस्टोरेंट १०

खाने का कमरा १७

पिता ८

पिता-माता ८

हवाई जहाज ११

दरवाजा १६

प्रश्नार्थक सहायक १

शब्द १

व्यस्त (होना) १

धीरे १६

माय <sup>३</sup>	(क्रि)	खरीदना	२
माय <sup>४</sup>	(क्रि)	वेचना	६
माय <sup>३</sup> माय	(सं)	व्यापार (खरीदना वेचना)	७
माव <sup>२</sup>	(मा)	डालर का एक दसांश	
		दस सेन्ट	६
माव <sup>४</sup> च्	(सं)	टोप	८
मिड <sup>२</sup> थ्येन्	(सं०, क्रि० वि०)	कल (भविष्यत्)	१२
मिड <sup>२</sup> न्येन्	(सं०, क्रि० वि०)	अगले वर्ष	१३
मिड <sup>२</sup> पाय	(क्रि०)	समझना (स्पष्ट रूप से)	१८
मु <sup>३</sup> छिन्	(सं)	माता	८
मै <sup>३</sup>	(संख्या)	प्रत्येक	१८
मै <sup>३</sup> क्वो <sup>२</sup>	(सं)	अमरीका (सं० राष्ट्र)	२
मै <sup>४</sup> मै	(सं)	छोटी बहन	८
मै <sup>२</sup>	(क्रि)	(निषेधार्थक उपसर्ग)	१२
मै <sup>३</sup> यौ <sup>३</sup>		के पास नहीं होना (यौ <sup>३</sup> का निषेधार्थक रूप)	३
मै <sup>२</sup> ष <sup>३</sup> मा		कोई बात नहीं	१२
याव <sup>४</sup>	(सं० क्रि०)	चाहना, चाहिए	११
याव <sup>४</sup>	(क्रि०)	चाहना	२
याव <sup>४</sup> चिन् <sup>३</sup>	(वि०)	आवश्यक (होना)	१३
याव <sup>४</sup> षृ	(क्रि० वि०)	यदि	१६
युड <sup>४</sup>	(सं० सू०)	से	१४
युड <sup>४</sup>	(क्रि०)	प्रयोग या इस्तेमाल करना, काम में लाना	१४
ये <sup>३</sup>	(क्रि० वि०)	भी, और	३
—ये <sup>४</sup>	(मा०)	रात	१६
ये <sup>४</sup> लि	(क्रि० वि०)	रात के समय, रात में	१६
यौ <sup>३</sup>	(क्रि०)	के पास होना	३
यौ <sup>३</sup>	(क्रि०)	होना (अस्तित्वसूचक)	८
यौ <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)	फिर (भूत में)	१७
यौ <sup>३</sup> त		कुछ, कोई-कोई	४
यौ <sup>३</sup> (त) षृ <sup>२</sup> हौ	(क्रि० वि०)	कभी-कभी	१३
यौ <sup>३</sup> मिड <sup>२</sup>	(वि०)	प्रसिद्ध (होना)	२०
यौ <sup>३</sup> पिड <sup>४</sup>	(क्रि०)	अस्वस्थ होना	१८
यौ <sup>३</sup> युड <sup>४</sup>	(वि०)	उपयोगी होना, लाभदायक	१४
यू <sup>२</sup>	(सं०)	मछली	१४

र वान् <sup>३</sup> इ	(स० क्रि०)
र वे <sup>४</sup>	(सं०)
रन् <sup>२</sup>	(सं०)
रन् <sup>४</sup> त	(क्रि०)
रन् <sup>२</sup> रन् <sup>२</sup>	
रन् <sup>४</sup> ष	(क्रि०)
रुड् <sup>२</sup> इ	(वि०)
रौ <sup>४</sup>	(सं)
ल	(प्रत्यय व सहायक शब्द)
लाय <sup>२</sup>	(क्रि०)
लाव् <sup>३</sup>	(वि०)
लाव् <sup>३</sup>	(क्रि० वि०)
लाव् <sup>२</sup> च्या <sup>४</sup>	(मुहावरेदार कथन)

लि <sup>४</sup> ख <sup>४</sup> (च्यु)	(क्रि० वि०)
लिङ् <sup>२</sup>	(संख्या)
लि <sup>३</sup> थौ	(सं)
लि <sup>३</sup> पाय् <sup>४</sup>	(सं)
लु <sup>४</sup>	(सं)
लौ <sup>२</sup>	(सं)
लौ <sup>२</sup> षाङ्	(सं)
ल्याङ् <sup>४</sup>	(वि०)

ल्यु <sup>४</sup>	(ग० वा० अं०)
ल्यु <sup>३</sup> ववान् <sup>३</sup>	(सं)
वाङ् <sup>४</sup>	(क्रि०)
वान् <sup>३</sup>	(सं)
वान् <sup>३</sup>	(वि०)
—वान् <sup>३</sup>	(मा०)
वान् <sup>४</sup>	(संख्या)
वान् <sup>३</sup> फ़ान्	(सं)

वान् <sup>३</sup> षाङ्	(सं, क्रि० वि०)
वाय् <sup>४</sup> थौ	(सं)

चाहना, इच्छुक होना	७
महीना	१३
आदमी	४
जानना, पहचानना,	२०
परिचित होना	
हर आदमी (केवल	४
कर्त्ता के रूप में),	
प्रत्येक आदमी	
जानना, पहचानना,	२०
परिचित होना	
आसान होना, सरल	६
मांस	१४
आना (यहां)	११
पुराना (वर्षों में)	८
सदैव, जारी रखना	२०
क्या मैं आपको कष्ट	
दे सकता हूं ? आभारी	
हूं ।	१७
तुरन्त	१८
शून्य	६
अन्दर	१०
सप्ताह	१३
सड़क	१६
कई तल्ले की इमारत	१०
ऊपर के तल्ले पर	१०
प्रकाशित या चम-	
कीला होना (अंध-	
कार के विपरीत)	१६
छः	३
होटल	३५
भूलना	१८
कटोरी	१४
देर होना	१६
कटोरी	१४
दस हजार	६
दिन का प्रधान	
भोजन, दिन का	
अन्तिम भोजन	१२
शाम, रात	१२
बाहर	१०



वाळ <sup>२</sup>	(क्रि०)	खेलना	१४
वेन् <sup>४</sup>	(क्रि०)	पूछना	५
वेन् <sup>४</sup> ..... हाव् <sup>३</sup>		किसी की कुशलता के बारे में पूछताछ करना	१४
वै <sup>४</sup>	(मा०)	व्यक्तियों के लिए नम्रताबोधक मापक शब्द	६
वै <sup>४</sup> ष <sup>२</sup> म्मा	(गति० क्रि० वि०)	क्यों ? (किस कारण से)	१०
वो <sup>३</sup>	(सर्व०)	मैं, मुझे	१
वो <sup>३</sup> मन्	(सर्व०)	हम (लोग), हमें	१
शिङ् <sup>२</sup>	(वि०)	काफी है, ठीक है, पर्याप्त है	११
शिङ् <sup>४</sup>	(यो० क्रि०)	का (कुल) नाम	५
शिङ् <sup>४</sup>	(सं)	कुलनाम	५
शिन् <sup>१</sup>	(सं)	कुलनाव भारतीय पदवी 'सिंह' के लिये प्रयुक्त	७
शिन् <sup>४</sup>	(सं)	पत्र, चिट्ठी	१४
शि <sup>१</sup> वाङ् <sup>४</sup>	(क्रि०)	आशा करना कि, की आशा, आशा, उम्मीद	१३
शि <sup>३</sup> ह्वान् <sup>१</sup>	(क्रि०)	पसंद करना या होना	३
शि <sup>३</sup> ह्वान् <sup>१</sup>	(क्रि०)	पसंद करना	८
श्या <sup>४</sup>	(क्रि०)	नीचे जाना या आना	१५
श्या <sup>४</sup> उ <sup>३</sup>	(क्रि० वि०)	दोपहर के बाद	१६
श्याङ् <sup>३</sup>	(क्रि०)	सोचना, बारे में सोचना, इच्छा करना	६
श्याङ् <sup>३</sup>	(स० क्रि०)	विचार करना, योजना बनाना, चाहना	६
श्याङ् <sup>१</sup> श्या	(सं)	देश (ग्रामीण क्षेत्र)	८
श्या <sup>४</sup> थौ	(सं)	नीचे	१०
श्याव् <sup>३</sup>	(वि०)	छोटा	४
श्याव् <sup>४</sup>	(क्रि०)	हंसना या मुस्कराना	२०
श्याव् <sup>३</sup> च्ये	(सं)	कुमारी, पुत्री या किसी की लड़की के लिए शिष्ट प्रयोग	५
श्याव् <sup>४</sup> (ह्वा)	(क्रि०)	हंसना (किसी पर)	२०

श्याव् <sup>४</sup> ह्वा	(सं०)
—श्ये <sup>१</sup>	(मा)
श्ये <sup>३</sup>	(क्रि०)
श्येन् <sup>१</sup>	(क्रि० वि०)
श्येन् <sup>४</sup> चाय् <sup>४</sup>	(क्रि० वि०)
श्ये <sup>४</sup> श्ये	(क्रि०)
श्येन् <sup>१</sup> षड्	(सं)
श्ट वे <sup>२</sup>	(क्रि०)
श्ट वे <sup>२</sup> श्याव् <sup>४</sup>	(सं०)
श्ट वे <sup>२</sup> षड्	(सं)
षड् <sup>१</sup> छि <sup>४</sup>	(क्रि०)
पन् <sup>३</sup>	(सं)
षम् <sup>२</sup> मा	(सं)
षाड् <sup>४</sup>	(क्रि०)
षाड् <sup>४</sup> उ <sup>३</sup>	(क्रि० वि०)
षाड् <sup>४</sup> ख <sup>४</sup>	(क्रि० क०)
षाड् <sup>४</sup> च्ये <sup>१</sup>	(क्रि० क०)
षाड् <sup>४</sup> छ <sup>१</sup>	(क्रि० क०)
षाड् <sup>४</sup> थौ	(सं)
षाड् <sup>४</sup> लौ <sup>२</sup>	(क्रि० क०)
षाड् <sup>४</sup> श्ट वे <sup>२</sup>	(क्रि० क०)
षाव् <sup>३</sup>	(वि०)
षाव् <sup>४</sup> ळ <sup>२</sup>	(सं)
षू <sup>१</sup>	(सं)
षू <sup>१</sup> फाड् <sup>२</sup>	(सं)
षु <sup>१</sup> कु	(वि०)
षृ <sup>२</sup>	(ग० वा० अं)
षृ <sup>४</sup>	(यो० क्रि०)

मजाक	२०
मात्रा, कुछ	६
लिखना	७
पहले	१४
अभी, इसी वक्त	७
धन्यवाद देना या	
करना, धन्यवाद	३
महाशय, साहब, जी,	
अध्यापक, भद्रपुरुष,	
सज्जन, श्रीमानजी,	
पति के लिये शिष्ट	
प्रयोग	५
पढ़ना, सीखना	८
स्कूल	१०
विद्यार्थी सीखने	
वाला)	८
नाराज होना	१८
भारतीय पदवी 'सेना	
के लिये प्रयुक्त	१५
क्या	५
जाना (ऊपर को)	१५
चढ़ना, इत्यादि	
दोपहर से पहले	१६
कक्षा में (पढ़ने)	
जाना	१५
बाजार जाना	१५
गाड़ी पर चढ़ना	१५
ऊपर	१०
मकान का ऊपरी खंड,	
(मंजिल) पर चढ़ना	
या जाना	१५
स्कूल जाना, स्कूल	
में पढ़ना	१५
मात्रा में कम, कम	८
चम्मच	१४
किताब, पुस्तक	२
पढ़ने का (किताबें	
रखने का) कमरा	१७
आराम से (रहना)	१८
दस	३
होना (है, हैं, हूँ)	५



पृ <sup>२</sup> अळ <sup>४</sup>	(ग० वा० अं)	वारह	३
पृ <sup>२</sup> इ <sup>१</sup>	(ग० वा० अं)	ग्यारह	३
पृ <sup>२</sup> (छिड़)	(सं)	काम	७
पृ <sup>२</sup> हौ	(सं)	समय	१३
पृ <sup>२</sup>	(सं)	कौन	५
पौ <sup>३</sup>	(सं)	हाथ	१७
प्वै <sup>३</sup>	(सं)	जल, पानी	६
प्वै <sup>४</sup> च्याव <sup>४</sup>	(क्रि० क०)	सोना	१६
प्वो <sup>१</sup>	(क्रि०)	कहना	४
प्वो <sup>१</sup> कु <sup>४</sup> पृ	(क्रि० क०)	कहानी बतलाना	
सानु <sup>१</sup>	(ग० वा० अं)	कथा कहना	१२
सुङ <sup>४</sup>	(क्रि०)	तीन	३
		भेजना, छोड़ के आना,	१७
		बिदाई देना, साथ	
		जाना	
सुङ <sup>४</sup> (कै <sup>३</sup> )	(क्रि०)	भेंट देना (वस्तु)	१७
स्वै <sup>४</sup>	(मा०)	वर्ष (आयु)	१८
स्वो <sup>३</sup> इ <sup>३</sup>	(क्रि० वि०)	इसलिए	११
स्त् <sup>४</sup>	(ग० वा० अं)	चार	३
ह <sup>१</sup>	(क्रि०)	पीना	६
हन् <sup>३</sup>	(क्रि० वि०)	बहुत, अधिक, ज्यादा	१
हाय <sup>२</sup>	(क्रि० वि०)	भी, अब भी	१२
(श्याव <sup>३</sup> ) हाय <sup>२</sup> .व्	(सं)	बच्चा	५
हाव <sup>३</sup>	(वि०)	अच्छा, ठीक (होना)	१
हाव <sup>४</sup>	(सं)	दिन (महीने का)	
		नंबर (घर, कमरे	
		आदि का)	१३
हाव <sup>३</sup> चि <sup>३</sup>	(संख्या)	कई	१५
हाव <sup>३</sup> खान <sup>४</sup>	(वि०)	देखने में सुन्दर,	
		खूबसूरत	२
हाव <sup>३</sup> थिङ <sup>१</sup>	(वि०)	सुनने में अच्छा,	६
हाव <sup>३</sup> पु <sup>४</sup> हाव		ठीक है या नहीं	
		(ठीक है न ?)	६
हाव <sup>३</sup> ल	(क्रि०)	फिर से स्वस्थ हो	
		जाना, तैयार रहना	
		तैयार है (खाना	
		आदि)	१८
हाव <sup>३</sup> श्ये <sup>१</sup>	(संख्या)	कई, काफी	१५
है <sup>१</sup>	(वि०)	काला होना, गहरा	
		अन्धकार	१६
हौ <sup>४</sup> श्येन् <sup>१</sup>	(गतिशील क्रि० वि० सं)	परसों (आने वाला)	२०



हौ <sup>४</sup> थो	(सं)	पीछे	१०
हौ <sup>४</sup> लाय्	(क्रि० वि०)	बाद में, तत्पश्चात्	१५
ह्वा <sup>४</sup>	(क्रि०)	चित्रकारी करना	६
ह्वा <sup>४</sup>	(सं)	भाषण, बोले हर	
		शब्द, भाषा, बोली	७
ह्वाय् <sup>४</sup>	(वि०)	बुरा होना	१८
ह्वाय् <sup>४</sup> ल	(क्रि०)	खराब हो जाना,	
		ठीक से कार्य करने	
		की दशा में न रहना	१८
ह्वाळ <sup>४</sup>	(सं)	चित्र, तस्वीर	६
ह्व <sup>४</sup>	(सं)	सकना, जानना	
		(कोई काम)	७
ह्वे <sup>२</sup>	(मा०)	एक समय, घटना	१८
		(बार)	
ह्वे <sup>२</sup>	(क्र०)	लौटना	१५
ह्वे <sup>२</sup> क्वो <sup>२</sup>	(क्रि० क०)	(अपने) देश	
		वापस जान	१५
ह्वे <sup>२</sup> च्या <sup>१</sup>	(क्रि० क०)	घर लौटना	१५
ह्वे <sup>२</sup> लाय्	(क्रि०)	लौटना, लौट आना	१२
ह्वो <sup>३</sup> छ <sup>१</sup>	(सं)	रेलगाड़ी	११
ह्वो <sup>३</sup> छ <sup>१</sup> चान् <sup>४</sup>	(सं)	रेलवे स्टेशन	१३
—ळ	(सं० श०)	संज्ञाओं के लिये	१७
		सूक्ष्म प्रत्यय	



